देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
August 2023
Vol.-18, Issue-2(3)

Impact Factor
7.523

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

प्रधान सम्पादक :
डॉ. तपस्या चौहान

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 18 **ISSUE-2 (3)** **(अगस्त 2023)** **ISSN : 2395-7115**

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

प्रधान सम्पादक :

डॉ. तपस्या चौहान

15/167 सोरों कटरा , शाहगंज,

आगरा - 282010, उत्तर प्रदेश।

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान।

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. विनोद कुमार
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल
यूनिवर्सिटी, पंजाब

डॉ. मो. रियाज़ खान
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

डॉ. वनिता कुमारी
च. दादरी (हरियाणा)

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराम
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. पायल लिल्हारे
अमरशहीद चंद्रेशेखर आजाद
शा.स्ना.महा. निवाड़ी, मध्यप्रदेश

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. मनमीत कौर
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
डीन फिजिकल एजुकेशन
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. शबाना हबीब
त्रिवन्तपुरम, केरल

डॉ. शिवकरण निमल
राजस्थान

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
वाराणसी

डॉ. मानसिंह दहिया
हरियाणा

डॉ. नीलम आर्या
उत्तर प्रदेश

डॉ. रवि सुण्डयाल
जम्मू कश्मीर

प्रो. नरेन्द्र सोनी
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. रोहतास
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य, कैलिफोर्निया।

डॉ. इस्पाक अली
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

प्रो. रेखा रानी
गवर्नमेंट कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्हौत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा
शासकीय महाविद्यालय,
लवकुश नगर, मध्य प्रदेश

डॉ. परमानन्द त्रिपाठी
एचओडी एजुकेशन, एल.एन.डी.
कालेज, मोतिहारी, बिहार

डॉ. करमजीत कौर
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब

*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

शोध–पत्र प्रकाशन के लिए निर्देश मंजूषा

गुगनराम सोसायटी (पंजीकृत) द्वारा शोधार्थियों व अध्येताओं के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतू बोहल शोध मंजूषा ISSN 2395-7115 नामक बहुभाषिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबंध, प्रौद्योगिकी, विधि, भूगोल, शिक्षा, पत्रकारिता पर केन्द्रीत इस शोध पत्रिका को विषय विशेषज्ञों तथा मनीषी विद्वानों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 1100 रु. है।

आप अपना शोध पत्र कम्प्यूटर से मुद्रित फोन्ट साईज 14, कृतिदेव-10, कृतिदेव-21 में व अंग्रेजी के **Arial, Times New Roman** में पेज मेकर या माइक्रोसोफ्ट वर्ल्ड में हमारी **Email ID : grsbohal@gmail.com** पर भेजें। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व दिये गये सन्दर्भ, मात्रा आदि की पूर्णतया जाँच कर लें।

नोट :- उर्दू, पंजाबी आदि भाषा के शोध पत्र पेपर साईज **7x9.5** पर टाईप कराकर **JPG** या **PDF** फाईल हमारी ईमेल आई.डी. पर भेज सकते हैं।

हमारी पत्रिका में शोध पत्र लेखक के फोटो सहित प्रकाशित किये जाते हैं। इसलिए आप अपने शोध पत्र के साथ पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, सम्पर्क सूत्र : टेलीफोन, मोबाईल नं., ई-मेल तथा पिनकोड सहित पत्र व्यवहार का पूरा पता (हिन्दी व अंग्रेजी) कम्प्यूटर द्वारा टाईप करवाकर भेजें।

★ शोध पत्र 2000-2500 शब्दों (4-6 पेज) से अधिक नहीं होनी चाहिए, यदि शब्द सीमा अधिक होती है तो सम्पादक को अधिकार होगा यथा स्थान संक्षिप्तीकरण कर दें। अस्वीकृत शोध पत्र की वापसी संभव नहीं है।

★ पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ शोध पत्र को हमारी सोसायटी/पत्रिका की ओर से बहुउपयोगी श्रीमती गिना देवी शोधश्री सम्मान प्रदान किया जायेगा।

★ शोध पत्र में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं। उनसे सम्पादक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। शोध पत्र में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। पत्रिका में शोध आलेख प्रकाशन के लिए भेजने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना लेखक का दायित्व है। प्रत्येक विवाद का न्यायक्षेत्र भिवानी (हरियाणा) होगा।

★ सम्पादकीय पद अव्यावसायिक और अवैतनिक हैं। पत्रिका में केवल शोध पत्र ही प्रकाशनार्थ भेजें। शोध पत्र का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय व प्रकाशित समस्त शोध पत्रों का सर्वाधिकार समिति/सम्पादक के पास सुरक्षित होगा।

नोट :

सहयोग/सदस्यता राशि 1100/- रू. का ड्राफ्ट/चैक/आई.पी.ओ. 'गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी' के नाम भेजें तथा ऑनलाईन बैंक में सहयोग जमा राशि की रसीद की फोटोप्रति अपने आलेख के साथ हमें मेल कर सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर रसीद भेजी जा सके। ऑनलाईन सहयोग राशि के साथ 50/- रू. अतिरिक्त अवश्य जमा करवायें। प्रकाशन सहयोग शुल्क वापिस देय नहीं।

बैंक का नाम	:	पंजाब नैशनल बैंक, हालु बाजार, भिवानी (हरियाणा)
खाता धारक का नाम	:	गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी
बैंक खाता संख्या	:	1182000109078119
IFSC Code	:	PUNB0118200
MICR CODE	:	127024003

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc,.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	08 per paper	10 per paper
2.	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

अगस्त 2023

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. तपस्या चौहान	10–10
2.	हिंदी–साहित्य में मुसलमान कवियों का योगदान	डॉ. प्रतिभा राजहंस	11–16
3.	राजनीतिक चिंतन के इतिहास का मूल्यांकन	म्होर सिंह मीणा, पूरण मल मीणा	17–20
4.	Beyond Dominant Paradigms: Unraveling Power Dynamics in Ben Okri's Literary Worlds	Anshul	21-25
5.	EFFECTIVENESS OF INTERVENTION PROGRAMME ON ACHIEVEMENT IN SCIENCE OF STANDARD IX STUDENTS OF KURUKSHETRA CITY	NISHA SAINI, DR. G. PONMENI	26-31
6.	The Dynamic Effects of Digital Media on Childhood Development: A Sociological Study	Deepika	32-36
7.	Geographical Diasporas: An overview of the Research Areas of Migration	Kajal	37-39
8.	मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीय चेतना	नेहा यादव	40–43
9.	Motivation: The Key to Unlocking Peak Employee Performance	Pankaj Kumar Singh, Dr. Ved Prakash	44-50
10.	संत कवि लिखमीदासजी महाराज की भक्ति भावना	दिनेश गहलोत	51–59
11.	आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के व्यक्तियों की जीविकोपार्जन में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की भूमिका : उज्जैन जिले के विशेष सन्दर्भ में	नेहा राठौर, डॉ. जी.एल. खांगोड़े	60–72
12.	भारत में कोयला : प्रकार व क्षेत्र	कैलाश प्रजापत	73–76
13.	ਵੇਦਾਂ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦਾ ਸਰੂਪ : ਇੱਕ ਅਧਿਐਨ	ਸਿੰਪਲ ਰਾਣੀ ਮਿੱਤਲ	77–86
14.	'झूठा–सच', और 'तमस' उपन्यास में भारत–विभाजन की त्रासदी और स्त्री संघर्ष	सुमन वर्मा	87–93
15.	ਪੁਨਰ ਜਾਗ੍ਰਿਤੀ ਲਹਿਰਾਂ ਅਤੇ ਨਾਰੀ ਸੁਧਾਰ : ਬ੍ਰਹਮੋ ਸਮਾਜ ਅਤੇ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਦੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸੰਦਰਭ ਵਿਚ	ਸਿੰਪਲ ਰਾਣੀ ਮਿੱਤਲ	94–103
16.	राजस्थान : धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि	जेठाराम	104–106
17.	GENDER ISSUES IN INDIAN WRITING IN ENGLISH	Jyoti Soni	107-118
18.	अध्यापकों की अध्येता बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति का अध्येता उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन	डॉ. महेश कुमार शर्मा	119–123
19.	भारत में पंचायती राज : विकास एवं कार्यप्रणाली Development and Mode of working of Panchayati Raj Structure in India	राम अवतार	124–126

20.	पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास का समग्र अध्ययन	समित कुमार सुडा, डॉ. महेन्द्र कुमार	127–130
21.	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर सोशल नेटवर्किंग के प्रभाव का अध्ययन	संगीता, डॉ० सीमा शर्मा	131–136
22.	दलित स्त्री अस्मिता और सुशीला डाकभौरे की कविता	डॉ. एन.आर. सजिला	137–143
23.	মল্লিকা সেনগুপ্তের কবিতা: প্রসঙ্গ নারীচেতনাবাদ	ড. উত্তম পালুয়া	144–152
24.	रणेन्द्र के 'गायब होता देश' में आदिवासी अस्मिता और अस्तित्व का संघर्ष	आशारानी सुन्डी	153–159
25.	शिक्षा एवं समाज में मीडिया की भूमिका	DEEPA BHARTI	160-164
26.	అక్కినపల్లి సుబ్బారావు నవలల్లో మూఢనమ్మకాలు వాటి ప్రభావాలు	యం. వెంకటేష్ నాయక్	165–167
27.	DISCERNMENT OF SPIRITS IN CHRISTOPHER MARLOWE'S DOCTOR FAUSTUS	Anil Kumar Tiriya	168-172
28.	A STUDY OF GENERATIONAL CONFLICTS IN STORIES AND NOVELS OF JHUMPA LAHIRI	Jyoti Soni	173-178
29.	वैश्वीकरण से जनजातीय समाज में सामाजिक परिवर्तन	ओमप्रकाश जारोडिया	179–181
30.	रेगुलेटिंग एक्ट का भारतीय प्रशासन पर प्रभाव : ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में	Dr. Vikram Singh Deol	182–184
31.	जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना : स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के विशेष सन्दर्भ में	नारायण दास वैष्णव	185–188
32.	राजा + इन्द्र काव्य में नारी चेतना	डॉ. राजेन्द्र	189–192
33.	भारतीय साहित्य में स्त्रियों की भूमिका	सुधीर सिंह	193–197
34.	मृदुला गर्ग के समाज शास्त्रीय अध्ययन के सन्दर्भ में नाटकों का योगदान	रीना राठौर, डॉ. आदित्य कुमार गुप्ता	198–202
35.	प्राचीन भारतीय समाज में वैवाहिक मान्यता की स्थिति एवं विवाह के प्रकार	सचिन	203–207
36.	അരികുവൽക്കരിക്കപ്പെടുന്ന ഭിന്നശേഷി ജീവിതവും മാധ്യമ ധർമ്മവും- 'കൃഷ്ണഗാഥ 'യെ മുൻനിർത്തിയുള്ള വിശകലനം	Tinu Alex. K	208-213
37.	हरियाणा में प्रमुख फसलों के उत्पादन तथा क्षेत्र का बदलता स्वरूप	सरिता देवी, नीरज	214–218
38.	Women Empowerment through Social Media especially YouTube : with special reference to Folk Singers	Dr Shashi Punam, Ms Anjana Gautam	219-230
39.	Cyber Terrorism– An emerging military threat	Dr. Makhan Singh Manjhu	231-236
40.	हिन्दी दलित कहानियों की स्त्री पात्र में अंतर्द्वंद्व	डॉ. तपस्या चौहान	237–239

प्रधान सम्पादक डॉ. तपस्या चौहान की कलम से.....

'बोहल शोध मंजूषा पत्रिका : अनुसंधान अभिवृद्धि की प्रेरणा देने वाली अन्तरराष्ट्रीय शोध पत्रिका है जिसका फैलाव नेपाल, श्रीलंका, जापान, यू.एस.ए., यूक्रेन आदि देशों तक है। आधुनिक युग में साहित्य का महत्व न केवल मनोरंजन के लिए है, बल्कि यह समाज में सुधार और उत्कृष्टता की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस संदर्भ में, 'बोहल शोध मंजूषा' पत्रिका ने अपने विशेष योगदान से साहित्यिक अभिवृद्धि की प्रेरणा दी है। पत्रिका के प्रवासी, दलित, आदिवासी, नारी, किंनर, काव्य आदि विषयों पर अनेक बहु–उपयोगी विशेषांक प्रकाशित किऐ हैं जिनकी साहित्य जगत में काफी सराहना की गई है। भविष्य में भी विशेषांक प्रकाशन का सिनशिला इसी प्रकार से जारी रहेगा।

यह पत्रिका न केवल विभिन्न लेखकों द्वारा लिखे गए लेखों का प्रकाशन करती है, बल्कि नवाचारी विचारों को प्रोत्साहित करने और उन्हें साझा करने का मंच भी प्रदान करती है। इसके माध्यम से विभिन्न विषयों पर आलेख और गोषिठयों का आयोजन कर उनमें प्रस्तुत आलेखों को प्रकाशित करती हैं, जिनसे पाठक नए दृष्टि–कोण और नवीनतम विचारों से परिचित होते हैं।

'बोहल शोध मजूषा' पत्रिका का उद्देश्य सिर्फ साहित्यिक रूपरेखा को प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि यह युवा लेखकों को भी अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है। इससे न केवल वे अपने कौशल को सुधारते हैं, बल्कि समाज के मुद्दों पर भी उनकी दृष्टि से सुधार करने की कौशिष करते हैं। हमने देखा है कि हमारी पत्रिका में प्रकाशित बहुत से लेखक समाज में उच्च पदवी प्राप्त कर चुके हैं । जो विभिन्न माध्यमों से समाज सुधार नव निर्माण में योगदान दे रहे हैं।

बोहल शोध पत्रिका ने साहित्य, सामाजिक जागरूकता, शोध और शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके माध्यम से युवा पीढ़ी को साहित्यिक रूपरेखा, अनुसंधान के साथ–साथ समाज में जागरूकता फैलाने का अवसर मिलता है, जिससे उनकी सोच में सकारात्मक परिवर्तन आ रहा है।

शोध, ज्ञान के प्रगति की मुख्य चाबी होती है। यह विशिष्ट विषय के अध्ययन के माध्यम से नए ज्ञान की खोज में मदद करता है और समस्याओं के समाधान के लिए नए दिशा–निर्देश प्रदान करता है। आजकल, विभिन्न क्षेत्रों में शोधकर्ताओं का काम महत्वपूर्ण हो रहा है जो समाज और विज्ञान में नए सुधार करने का काम कर रहे हैं।

शोध विषय का चयन करते समय, एक रुचिकर विषय चुनना महत्वपूर्ण है, जिससे न सिर्फ आपकी रुचि उस क्षेत्र में बढेगीं, बल्कि वह समस्याओं का समाधान भी प्रदान करेगी । शोधकर्ताओं को विषय के चयन में सावधानी बरतनी चाहिए ताकि उनका समय और प्रयास बेकार न जाए। शोधकर्ताओं द्वारा किए गये शोध कार्य से समाज की भलाई हो, मानव मात्र का विकास हो। ऐसी अपेक्षा हम करते हैं।

शोधकर्ता को शुरू से लेकर अंतिम परिणाम तक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि वे अपने उद्देश्यों की प्राथमिकताओं को नकारात्मकता से पार करें और निरंतर प्रयत्नशील रहें।

समाज और विज्ञान में नए दिशा–निर्देश प्रदान करने वाले शोधकर्ताओं का समर्थन करना और उनके प्रयासों को प्रोत्साहित करना हम सभी की जिम्मेदारी है। इस प्रकार, हम समृद्धि और उन्नति की ओर एक मजबूत कदम बढ़ा सकते हैं।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 11-16

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी–साहित्य में मुसलमान कवियों का योगदान

डॉ. प्रतिभा राजहंस

प्रो. हिन्दी– विभाग, मारवाड़ी महाविद्यालय, भागलपुर।

हिन्दी–साहित्य की चर्चा हिंदी के मुसलमान साहित्यकारों की चर्चा के बिना पूरी नहीं हो सकती। अलग विचार–पद्धति, जीवन दृष्टि तथा संप्रदाय विशेष की अलग मानसिकता के होकर भी उन्होंने हिंदी की सांस्कृतिक –साहित्यिक परंपरा का निर्वाह करते हुए अपनी अविस्मरणीय सेवा से इसे समृद्ध किया। उन्होंने अपना लगाव, तन्मयता तथा कल्पनाशीलता इत्यादि के योग से विशिष्ट रचनाओं के उदाहरण पेश किए। हिन्दी के आरंभिक काल–अपभ्रंश काल से ही उनकी महत्वपूर्ण रचनाएँ प्राप्त होती हैं। 12वीं सदी में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा पैशाची भाषाओं के जानकार प्रथम मुस्लिम कवि अब्दुल रहमान ने 'संदेश रासक' जैसा खंडकाव्य लिखकर कालिदास के 'मेघदूत' की परंपरा में एक संदेश काव्य का प्रणयन किया। हिंदी साहित्य में 'संदेश रासक' (सनेह रासउ) का विशिष्ट महत्त्व है। पुरानी हिंदी (अपभ्रंश) में रचित 'संदेश रासक' काल्पनिक कथा पर लिखा गया महत्त्वपूर्ण विरह काव्य है। मात्र 223 छंदों की इस रचना में सूक्ष्म अनुभूतियों की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। खंडकाव्य के छोटे कलेवर में कवि की कवित्व कुशलता, परंपरा का ज्ञान तथा लोकवादिता की पूर्ण प्रतिष्ठा हुई है। अब्दुल रहमान तथा उनके संदेश रासक की प्रशंसा में डॉक्टर वीरेंद्र श्रीवास्तव लिखते हैं– 'भारतवर्ष में मुसलमान आधिपत्य से पूर्व भारतीय दृष्टि से 'म्लेच्छ' देश के वासी और पामर 'आरद्द' कौलिक (जुलाहे) मुसलमान कवि ने खंडकाव्य की पद्धति पर 'संदेश रासक' की रचना की– यह एक अभूतपूर्व घटना है।'[1]

हिंदी के पहले मुस्लिम कवि होने का गौरव अमीर खुसरो को प्राप्त है। इनकी महत्ता का प्रतिपादन करते हुए डॉ. रामकुमार वर्मा ने अपने 'हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' में लिखा है– 'जबकि लौकिक साहित्य के आदर्श निश्चित नहीं थे और रचनाएँ धर्म या राजनीति के संकेतों पर नाचती थीं, उस समय विनोद और मनोरंजन की प्रवृत्तियों को जन्म देना साधारण काम नहीं था। यही अमीर खुसरो की विशेषता थी। अमीर खुसरो ने साहित्य के लिए एक नवीन मार्ग का अन्वेषण किया और वह था जीवन को संग्राम और प्रशासन की सुदृढ़ और कठोर श्रृंखला से मुक्त कर आनंद और विनोद के स्वच्छंद वायुमंडल में विहार करने की स्वतंत्रता देना। यही अमीर खुसरो की मौलिकता थी।'[2]

खुसरो ने जनसाधारण की भाषा में अंतर्लापिका (पहेली में ही उत्तर होना), बहिर्लापिका (पहेली से बाहर उत्तर होना), मुकरी (निषेध शैली में उत्तर होना), दो सखुने जैसी विभिन्न शैली की रचनाओं से हिन्दी को सजाया, संवारा। अरबी–फारसी तथा हिंदी शब्दों का विशाल समुच्चय 'खालिक बारी', हिंदी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। खुसरो की एक पहेली तत्कालीन हिंदी की सुंदर परिचायिका है– 'एक थाल मोती से भरा।

सबके सिर पर औंधा धरा/चारों ओर वह थाल फिरे। मोती उससे एक न गिरे।'

हिन्दी भाषा को अमीर खुसरो के अवदान का उल्लेख करते हुए डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है– 'भाषा की दृष्टि से उनकी पहेलियाँ साहित्य के इतिहास का सदा महत्वपूर्ण अंग रहेंगी। वस्तुतः उनके काव्य में खड़ी बोली काव्य भाषा बनने का सफल प्रयास कर रही थी।'[3]

भक्ति कालीन निर्गुण धारा के अंतर्गत 'ज्ञानाश्रयी शाखा' के प्रवर्तक कबीर की जाति और धर्म को लेकर काफी विवाद है। कबीर के अपने शब्दों में :–

'तू बाह्मन मैं काशी का जुलहा बूझहु मोर गियाना।'

तथा

'पिता हमरो बड्ड गोसाईं।'

वास्तविकता है कि कबीर न हिंदू थे न मुसलमान। जाति–धर्म के कटघरे से बाहर इन्होंने ज्ञानामृत की सरिता बहाई। 'साखी, 'सबद' और 'रमैनी' जैसी रचनाओं से कबीर ने ज्ञानमार्ग का सूक्ष्म दर्शन बतलाते हुए तत्कालीन समाज की कुरीतियों पर भी प्रहार किया। उनके कटु शब्द यथार्थ के धरातल पर सही होने के कारण समाज के लिए अग्राह्य नहीं थे। आ. शुक्ल के अनुसार– 'उपासना के बाह्य स्वरूप पर आग्रह करने वाले और कर्मकांड को प्रधानता देने वाले पंडितों और मुल्लों दोनों को उन्होंने खरी–खोटी सुनाई और 'राम रहीम' की एकता को समझाकर हृदय को शुद्ध और प्रेममय करने का उपदेश दिया।... उनकी उक्तियों में विरोध और असंभव का चमत्कार लोगों को बहुत आकर्षित करता था।'[4]

आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी इसी बात को और स्पष्ट करते हुए लिखा– '15वीं शताब्दी में कबीर सबसे शक्तिशाली और प्रभावोत्पादक व्यक्ति थे। संयोग से वे ऐसे युग संधि के समय उत्पन्न हुए थे, जिसे हम विविध धर्म साधनाओं का चौराहा कह सकते हैं।

जहाँ से एक ओर हिन्दुत्व निकल जाता है और दूसरी ओर मुसलमानत्वय जहाँ एक ओर ज्ञान निकल जाता है, दूसरी ओर अशिक्षाय जहाँ एक ओर योगमार्ग निकल जाता है, दूसरी ओर भक्ति मार्गय जहाँ से एक ओर निर्गुण भावना निकल जाती है, दूसरी ओर सगुण साधना। वे दोनों ओर देख सकते थे और परस्पर विरुद्ध दिशा में गये मार्गों के दोष–गुण उन्हें स्पष्ट दिखाई दे जाते थे।'[5]

'प्रेमाश्रयी' शाखाएं प्रायः पूरी–की–पूरी मुसलमान सूफी कवियों की ही है। इसमें मुल्ला दाऊद, कुतुबन, मंझन, उसमान इत्यादि उल्लेखनीय कवि हुए हैं। इनमें मुल्ला दाऊद 'प्रेमाश्रयी' शाखा की छोटी किंतु प्रथम कड़ी हैं। 'चंदाबन' या 'चंदायन' उनकी साहित्य–साधना का एकमात्र प्रमाण है। उसी प्रकार, संवत 1559 में ठेठ अवधी में रचित 'मृगावती' भी शेख कुतबन की कृति है। इसी शाखा के मंझन ने भी 'मधुमालती' नामक प्रेम काव्य का प्रणयन किया। इनके अतिरिक्त प्रेमाश्रयी शाखा के अन्य कवियों में उसमान, नूरमोहम्मद, शेख नबी तथा कासिम शाह उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने क्रमशः 'चित्रावली' – कल्पना प्रधान प्रेमाख्यानक (संवत 1660), 'इंद्रावती' (संवत 1801), 'ज्ञानदीप' (संवत 1675) तथा 'हंस जवाहिर' (संवत 1788) नामक प्रेमाख्यानक काव्य लिखे। इनमें उस्मान की 'चित्रावली' तथा नूर मोहम्मद की 'इंद्रावती' जायसी की रचना पद्धति पर रचित हैं। 'चित्रावली' में वर्णित प्रेम–गांभीर्य कवि के प्रेमी–रूप का पर्यवेक्षक है :–

'प्रेम के अति दुर्गम ऊँचा। / सहस माँह कोउ एक पहुँचा।।'

इसी तरह नूर मोहम्मद ने प्रेम की गहनता का सम्यक निरूपण किया।

'प्रेम–समुद्र अथाह है बूड़े मिले न अंत। / तेहि समुद्र में हौं परा तीर न मिलत तुरंत।।'

प्रेमाश्रयी शाखा के ही जायसी ने 'पद्मावत', 'अखरावट' तथा 'आखिरी कलाम' नामक तीन ग्रंथ हिंदी को दिए। इतिहास तथा कल्पना का मिश्रण 'पद्मावत' लौकिकता में अलौकिकता का सुंदर आख्यान है। भाषा एवं काव्योदात्तता की दृष्टि से यह ग्रंथ हिंदी–साहित्य के प्रति निवेदित एक बहुमूल्य उपहार है। राग, बुद्धि एवं कल्पना–तीनों काव्यांगों, शृंगार के उभयपक्षी वर्णन के चारुत्व तथा पद–लालित्य और अनुप्रासों, उपमा, उत्प्रेक्षाओं के सहज निवेश के कारण 'पद्मावत' की महत्ता भली–भाँति सिद्ध है। अवधी का चारु प्रयोग दर्शनीय है। इनके अन्य तत्व–ज्ञान विषयक ग्रंथ हैं– 'अखरावट' तथा 'आखिरी कलाम'। आचार्य शुक्ल ने जायसी का महत्वांकन करते हुए लिखा है : 'कबीर ने केवल प्रतीत होती हुई एकता का आभास दिया था। अप्रत्यक्ष जीवन की एकता को सामने रखने के लिए दृश्य की आवश्यकता पड़ी थी, जिसको जायसी ने पूरा किया।'[6]

'कृष्णाश्रयी शाखा' की आधारशिला भी कुछ सीमा तक मुस्लिम कवि ही हैं। इस शाखा की प्रथम उल्लेख्य कवि हैं रसखान। नाम और काम में साम्य स्थापित करने वाले रसखान कान्हा की रूप–गुण–माधुरी पर रीझने वाले रस सिद्ध प्रेमी कवि थे। 'सुजान रसखान' तथा 'प्रेम वाटिका' में अपने आराध्य कृष्ण की 'लकुटी' और 'कामरिया' पर त्रिलोक का सुख न्यौछावर करने वाले रसखान भाव, भाषा और कला–पक्ष के वैशिष्ट्य के कारण काव्य रसिकों के अंतर में सदैव विद्यमान रहेंगे। दोहा शैली में प्रणीत इनकी 'प्रेम–वाटिका' में प्रेम का सच्चा उदाहरण मिलता है। देखा जाए–

'कहा रसखान सुख–संपति सुधार कहा / कहा तन जोगी ह्वै लगाये तक छारि करें।।

बिनु गुन जोवन रूप धन, बिनु स्वारथ हित जानि। / सुद्ध कामना तें रहित, प्रेम सकल 'रसखानि'।।'[7]

शब्द – योजना में इस प्रकार का नैपुण्य प्राप्त करने वाला मुसलमान कवि हिंदी साहित्य के इतिहास में दुर्लभ है। रसखान के 'दानलीला' तथा 'अष्टयाम', दो और ग्रंथ भी हैं। तत्पश्चात कृष्णचंद्र के प्रेमी के रूप में हिन्दी के सच्चे साधक रहीम हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं। रहीम प्रणीत ग्रंथ हैं : 'रहीम–दोहावली', 'रहीम–सतसई', 'बरवै नायिका–भेद', 'शृंगार सोरठ', 'नगर शोभा', 'रस पंचाध्यायी' इत्यादि। इनमें 'बरवै नायिका–भेद' इनकी प्रख्याति का प्रमुख स्तंभ है। बरवै छंद का हिंदी में सर्वप्रथम सूत्रपात करने वाले रहीम ही हैं। छंद, रस तथा पद–लालित्य की दृष्टि से यह 'नायिका–भेद' अद्वितीय है। पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं :–

'लहरत लहर लहरिया लहर बहार।
मोतिन जड़ी किनरिया बिथुरे बार।।
लागे आनि नवेलिहिं मनसिज बान।
उकसन लाग उरोजवा दृग तिरछान।।'

ब्रज और अवधी भाषाओं का मणिकांचन योग इनकी कविताओं में प्राप्त होता है। रहीम का वैविध्यपूर्ण व्यक्तित्व यदि एक ओर हमें नीतियाँ–रीतियाँ सिखाता है तो दूसरी ओर भक्ति के पयोधि में डुबाता है और तीसरी और शृंगार के पीयूष–वर्षण से हमें तृप्त भी करता है। भाषा पर तुलसी जैसा अधिकार प्राप्त करने वाले रहीम मरकर भी अमर रहेंगे।

कृष्ण भक्त ताज का जन्म शिव सिंह संवत 1652 में मानते हैं। श्री कृष्ण के प्रति इनकी प्रसिद्ध पंक्तियाँ

हैं :– 'सुनो दिल जानी मेरे दिल की कहानी।'

तब दस्त की बिकानी बदनामी भी सहूँगी मैं। / स्यामला सलोना सिरताज सिरकुल्ले दिये। / तेरे नेहदाग में निदाघ हो दहूँगी मैं।/

नंद के कुमार कुर्बान तेरी सूरत पे।/टहौं तो मुगलानी हिन्दुवानी ह्वै रहूँगी मैं।।'[8]

प्रीतम कृष्ण की दीवानी ताज वह पिकी है जो अहर्निश बेकली, बेबसी का इजहार करती रहती है। इनकी लिखी हुई एक पुस्तक सीहोर निवासी गोविंद गिल्लाभाई को मिली थी, जिसमें निम्न विषयों पर रचनाएँ हैं– 'गणेश स्तुति', 'सरस्वती समाराधन', 'भवानी बंदना', 'दशावतार वर्णन', 'बारहमासा' इत्यादि। ध्यातव्य है कि मुस्लिम साहित्यकारों में गणेश की स्तुति सर्वप्रथम ताज ने ही की थी।

सहृदय मुस्लिम कवि जमाल अपने नीति और शृंगार विषयक दोहों तथा शब्द–क्रीड़ा के नैपुण्य के लिए ख्यात हैं। इनका कोई प्रामाणिक ग्रंथ नहीं है। कादिर भी अपनी फुटकर कविताओं के लिए ही प्रसिद्ध हैं। मुबारक की हिंदी सेवा का प्रमाण 'अलक–शतक' तथा 'तिल–शतक' नाम की दो काव्य पुस्तकें हैं। स्पष्ट है कि मुसलमान साहित्यकारों ने कृष्ण को ही आलंबन मानकर हिंदी साहित्य की साधना की। कृष्ण काल को समृद्ध करने में इनका योगदान अविस्मरणीय है।

भक्तिकाल के अलावा रीतिकाल तथा आधुनिक काल में भी मुस्लिम साहित्यकारों की विशिष्ट रचनाएँ प्राप्त होती हैं।

रीतिकालीन मुस्लिम साहित्यकारों में अली मुहिब्ब खाँ 'प्रीतम', रसलीन, आलम, शेख आदि के नाम लिए जा सकते हैं। प्रीतम की रचना 'खटमल बाईसी' है। यह संवत 1787 में रचित है। हास्य रस के साहित्य को समृद्ध करने में इनका अभिनंदनीय योगदान है। इनकी प्रशंसा में आ. शुक्ल ने लिखा है– 'खाँ साहेब ने शिष्ट हास का एक बहुत अच्छा मैदान दिखाया।'

मुहिब्ब खाँ की प्रसिद्धि के आधार दो ग्रंथ हैं– 'अंग–दर्पण' तथा 'रस–प्रबोध', जिनकी रचना क्रमशः 1794 तथा 1798 में हुई। 'अंग दर्पण' हमें अंगों के चमत्कार पूर्ण वर्णन से जहाँ चमत्कृत कर देता है वहाँ 'रस–प्रबोध' हमें रस सागर में डुबो देता है। रसलीन का प्रसिद्ध दोहा है :–

'अमिय हलाहल मद भरे सेत स्याम रतनार। /जियत मरत झुकि–झुकि परत जेहि चितबत इक बार।।'[9]

प्रेम की पीर से पीड़ित आलम की रचना है : 'माधवानल काम कदली' या 'आलम केली'। शृंगार वर्णन में कवि की कुशलता को प्रमाणित करने वाले उच्च कोटि के प्रेम काव्य से एक उदाहरण द्रष्टव्य है :–

'कनक छरी सी कामिनी काहे को कटि छीन। /कटि को कंचन काटि विधि कुचन मध्य धरि दीन।।'[10]

'आलम केलि' में संकलित कतिपय कवित्त शेख के भी हैं। यहाँ इस कवित्त में प्रथम तीन चरण आलम के हैं तथा अंतिम तीन शेख के :–

'प्रेम रंग पगे जगमगे जगे जामिनी के।
जोबन की ज्योति जगी जोर उमगत हैं।।
मदन के माते मतवारे ऐसे घुमत हैं।
झूमत हैं झुकि–झुकि झंपि उघरत हैं।।
आलम सो नवल निकाई इन नैनन की।

पाँखुरी पदुम पै भँवर थिरकत हैं।।
चाहत है उडिबे को देखत मयंक मुख।
जानत हैं रैनि तातें ताहि में रहत हैं।।'

प्रेम की तन्मयता की दृष्टि से इन दोनों की प्रेमपरक कविताएँ किसी हिंदू कवि की प्रेम–विषयक रचना से किसी प्रकार कम नहीं।

हिंदी के आधुनिक मुस्लिम साहित्यकारों में इंशा अल्लाह खान का स्थान सर्वोपरि है। हिंदी गद्य का प्रवर्तन करने वालों में इनका महान योगदान है। 'उदयभान–चरित' या 'रानी केतकी की कहानी' हिंदी गद्य के विकास की दिशा में स्तुत्य प्रयास है। इसके मूल में उनकी हिंदी प्रचार भावना ही निहित थी। इंशा अल्लाह खान का कवि रूप भी महत्वपूर्ण है। ब्रजभाषा में उन्होंने फुटकर कवित्त और सवैये लिखे। परंतु, गद्यकार के रूप में जो ख्याति मिली, वह कवि के रूप में नहीं मिली। फिर भी, यह तो निर्विवाद है कि इनका कवि रूप मौलिक है, प्राचीन है। इनके गद्य में भी इनके कवित्व की झाँकी मिलती रहती है, यथा : 'जब दोनों महाराजाओं में लड़ाई होने लगी रानी केतकी सावन भादो के रूप में रोने लगी और दोनों के जी में यह आ गई यह कैसी चाहत है जिसमें लहू बरसने लगा और अच्छी बातों को जी तरसने लगा।'

हिन्दी के अर्वाचीन मुस्लिम कवियों में मीर का स्थान सर्वोच्च कहा जा सकता है। 'स्वाबलंबन', 'देसी रोजगार', 'स्वदेश प्रेम', :'व्यापारोन्नति' इत्यादि रचनाओं से भली–भाँति विदित है कि भारतीय सभ्यता–संस्कृति एवं हिंदी के प्रति इनके अंतस्सागर में कैसी अनुरक्ति थी। मीर रचित ग्रंथ हैं : 'बूढ़े का ब्याह', 'बच्चे का ब्याह', 'नीति–दर्पण', 'सदाचारी बालक', 'काव्य संग्रह' इत्यादि। इनका एक मात्र गद्य ग्रंथ है : 'गद्य लेख माला'। इनके काव्य की भाषा ब्रजभाषा है तथा इनका गद्य है खड़ी बोली में।

उर्दू के कवि होते हुए भी नजीर का हिंदी से गहरा अनुराग था। 'कुल्लियाते नजीर' में इनकी सारी कविताएँ संकलित हैं। कृष्ण चरित्र पर इनकी कविताएँ ब्रजभाषा का पुट लिये हुए हैं :–

'दधि चोर गोपीनाथ बिहारी की बोलो जय। तुम भी नजीर कृष्ण बिहारी की बोलो जय।।'

खड़ी बोली में रचित 'रोटी की प्रशंसा' नामक इन की कविता हास्य रस–सिक्त है। यथार्थता का आधार लिए हुए ये पंक्तियाँ देखी जा सकती हैं :–

'रोटी ना हो पेट में तो कुछ जतन न हो।
मेले की सैर ख्वाहिशें बागो चमन न हो।।
भूखे गरीब दिल को खुदा से लगन न हो।
सच है कहा किसी ने भूखे भजन न हो।
अल्लाह की भी याद दिलाती हैं रोटियाँ।'[11]

हिंदी के आधुनिक मुसलमान कवियों में मीर के बाद यदि किसी का स्थान है तो सैयद छेदा शाह का। संवत 1937 से संवत 1974 तक का छेदा शाह का माना गया है। 'शांति सरोवर', 'राष्ट्रीय स्वराज–गीत' के अतिरिक्त छेदा रचित ग्रंथ हैं :– 'ज्ञानोपदेश शतक', 'पुरुषार्थ प्रकाश', 'काव्य–शिक्षा', 'भक्ति पंचासिका', 'श्री कृष्ण पंचासिका', 'आनंद प्रकाश', 'टीका भगवद्गीता' इत्यादि। छेदा शाह रचित एक पद उदाहरणार्थ प्रस्तुत है :–

'एरे ऋतुराज धन्य रावरो समाज। / साज सुख मा अनंत दिग अंत लो बिहारी है।। /

कुसुमित पल्लवित मंजुल प्रसून पुंज / कुंज बन रम्यता पै शाह बलिहारी है।।'

विजातीय संस्कारों में लालित–पालित होने के बावजूद इन मुस्लिम साहित्यकारों ने हिंदी–साहित्य की जो साधना की, वह सचमुच स्पृहणीय है। भक्ति काल की प्रेमाश्रयी शाखा के इन मुसलमान साहित्यकारों का योगदान हिंदी साहित्य को प्रारंभ से नहीं मिला होता तो हिंदी साहित्य का भंडार आज इतना समृद्ध नहीं मिलता।

इनकी इन्हीं विशेषताओं पर मुग्ध होकर भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने आभार स्वरूप लिखा :–

'इन मुसलमान कवि जनन पै कोटिन हिन्दू वारिये।'[12]

संदर्भ :–

1. हिन्दी साहित्य : परंपरा और परख : वीरेन्द्र नाथ श्रीवास्तव।
2. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : डा. रामकुमार वर्मा।
3. आदिकाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास : डा. नगेन्द्र, मयूर बुक्स, पृष्ठ–73
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आ. रामचन्द्र शुक्ल, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, पृष्ठ–90
5. हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास : आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, प्र. वर्ष–2022, पृष्ठ–76
6. पूर्व मध्यकाल : भक्तिकाल : प्रकरण–3, निर्गुण धारा : प्रेममार्गी (सूफी) शाखा : हिन्दी साहित्य का इतिहास : आ. शुक्ल, पृष्ठ –109
7. वही
8. ताज बेगम : मुगलकाल की कवयित्री और कृष्णभक्त जिन्हें भुला दिया गया : विभा ठाकुर poemhindi. feminisminindia.com पद
9. hindwi.org https/ www/: hindwi.Org dohe a
10. आलम http://kabirakhadabazarmein.blogpost.com
11. http ://kavitakosh.org रोटियाँ, नजीर ग्रंथावली।
12. उत्तरार्ध भक्तमालरू भारतेंदु हरिश्चन्द्र, स्वर्ण काव्य मंजूषा, पृष्ठ––376

pratibha.rajhans40@gmail.com

मो. 9939721764

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 17-20

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

राजनीतिक चिंतन के इतिहास का मूल्यांकन

म्होर सिंह मीणा

सहायक आचार्य इतिहास, राजकीय कमला मोदी महिला महाविद्यालय, नीमकाथाना।

पूरण मल मीणा

सह आचार्य इतिहास, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर।

शोध सारांश :-

व्यक्ति और समाज से चिंतन की शुरूआत हुई है। साधारणतः यूनानियों को धर्म निरपेक्ष राजनीतिक चिंतन का जन्मदाता माना जाता है। राजनीतिक चिंतन के जन्मदाता के लोगों की धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ने और इस जगत को आध्यात्मिक प्रकाश से केन्द्रित करने का प्रयास किया। राजनीतिक चिंतन को नैतिकता से अलग नहीं किया गया। 'पौर्वात्य आर्यों' ने अपनी राजनीति को धर्म शास्त्रीय एवं आध्यात्मिक पर्यावरण से कभी मुक्त नहीं किया। उन्होंने कभी ऐसा अनुगामी और निश्चयात्मक कदम नहीं उठाया, जिससे कि नैतिक और राजनीतिक चिंतन में भेद किया जा सके। प्रस्तुत शोध आलेख से विश्व और भारत के राजनीतिक चिंतन के विकास को समझा जा सकेगा। इस शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य आज विकसित राजनीतिक चिंतन धारा पर पड़ने वाले सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक वातावरण के प्रभावों का मूल्यांकन करना है।

संकेताक्षर :- चिंतन, पौर्वात्य आर्यों, परमार्थ, प्राकृतिक विज्ञान, तत्व चिंतक, आत्मगत, बौद्धिक, मार्गदर्शक, आध्यात्मिक प्रयोजन।

प्रस्तावना :-

पश्चिम में यूनानी ही केवल ऐसे लोग थें, जिनके साथ राजनीतिक चिंतन करने का विशेषण जोड़ा जा सकता है। प्राचीन भारत में चिंतन का विषय किसी अन्य विज्ञान अथवा कला के साथ जुड़ा हुआ न होकर सदा ही अपने आप में एक प्रमुख और स्वतंत्र स्थान रखता था, किन्तु पश्चिमी देशों में विकास के पूर्व यौवनकाल में राजनीति अथवा नीतिशास्त्र जैसे किसी अन्य विषय का सहारा लेना पड़ा। मध्यकाल में इसे परमार्थ विद्या के नाम से जाना जाता था।[1] बेकन और न्यूटन के लिए यह प्राकृतिक विज्ञान था और उन्नीसवीं शताब्दी के विचारकों के लिए इसका गठबंधन इतिहास, राजनीति और समाजशास्त्र के साथ रहा।[2] लम्बे समय तक यह माना जाता रहा था कि पूर्वी देशों में प्राचीन काल में शासन तथा राजनीति के सम्बंध में उनके द्वारा महत्वपूर्ण राजनीतिक अवधारणाओं का प्रतिपादन नहीं हुआ, लेकिन निर्विवाद रूप से यह कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत, चीन, मिस्र ईरान आदि देशों में राजनीतिक समस्याओं पर न केवल गहन चिंतन किया वरन् राजनीतिक संस्थाओं की संरचना भी की गई, जिन्हें बाद में पश्चिमी जगत में विकसित किया गया। विचार और व्यवहार दोनों ही बातों

में उन्होंने यूरोपीय विचारों की पूर्व घोषणा की, उनके समकक्ष विचारों की सृष्टि की और एक सीमा तक ऐसे विचारों का शिलान्यास भी किया जो आगे चलकर यूरोपीय राजनीतिक चिंतन में घुल मिल गए।

भारतीय चिंतन मूलतः आध्यात्मिक रहा है भारत की प्रगाढ़ आध्यात्मिकता ने ही इसे काल के विध्वंसकारी प्रभावों और इतिहास की दुर्घटनाओं को सहन कर सकने की सामर्थ्य प्रदान की।[3] भारत के इतिहास में कई बार बाह्य आक्रमणों और आन्तरिक फूट ने इसकी सभ्यता और संस्कृति को नष्ट प्रायः करने का प्रयास किया, 'यूनानियों और सीथियनों ने फारसवासियों और मुगलों ने फ्रांसीसियों और अंग्रेजों ने क्रमशः इस सभ्यता को दबाने का प्रयत्न किया और फिर भी इसने अपना मस्तक ऊँचा रखा है। प्राचीन भारतीय चिंतन में चिंतन का उद्देश्य सत्य की खोज और असत्य का प्रतिकार रहा है। भारतीय विचारधारा के इतिहास में मस्तिष्क की अन्तहीन गवेषणा के दृष्टान्त मिलेंगे जो पुराने होने पर भी सदा नए प्रतीत होते हैं। भारतीय चिंतन ही महान रचनाओं का वह आधिकारिक या प्रामाणिक स्वरूप नहीं है, जो बाद के चिंतन समीक्षाओं और टीकाओं की प्रमुख विशेषता रही है। गीता और उपनिषद जनसाधारण के धार्मिक विश्वास की पहुंच के बाहर नहीं है। ये ग्रंथ इस देश के महान साहित्य के अंग हैं और साथ ही बड़ी–बड़ी दार्शनिक विचारधाराओं के माध्यम भी हैं। पुराणों में कथाओं और कल्पनाओं के रूप में भारतीय चिंतन की जड़े है, जिसने समाज के बड़े वर्ग को प्रभावित किया।

भारतीय तत्व चिंतकों के कुछ विचार प्राचीन यूनान में प्रतिपादित कुछ सिद्धांतों से इतने मिलते हैं कि यह बताना कठिन प्रतीत होता है कि कौन किसका ऋणी हैं, लेकिन प्राचीन साम्राज्य–मिस्र, बेबीलोनिया, असीरिया, ईरान अपनी सामान्य परिस्थितियों तथा सामाजिक वातावरण के कारण व्यवस्थित राजनीतिक चिंतन का निर्माण नहीं कर पाए। उनकी अर्थव्यवस्था सरल तथा कृषि प्रधान थी, उनके धार्मिक विचार जटिल तथा अंधविश्वासपूर्ण थे, समाज वर्गों में विभक्त था, जो जातियों के रूप में स्थिर हो चुके थे और व्यक्ति के दैनिक जीवन पर कठोर तथा व्यापक नियंत्रण था। इन सब तत्वों ने स्थापित संस्थाओं को गतिहीन बना दिया और उन्हें धार्मिक पवित्रता प्रदान की। इसका परिणाम यह हुआ कि लोगों को अपनी संस्थाओं की उत्पत्ति, स्वभाव या सुधार के सम्बन्ध में चिंतन करने का साहस न हो सका।"

मानव ने सदा से ही अपने चारों ओर के वातावरण को समझने, उसकी व्यवस्था करने और उसको नियंत्रित करने तथा अपनी आवश्यकता के अनुसार उसे परिवर्तित करने का प्रयास किया है। उसने जहां एक ओर प्राकृतिक उपादानों और प्रकृति के रहस्यों को समझने का प्रयास किया वहीं सामाजिक प्राणी होने के कारण सामाजिक संगठन, संस्थाओं ओर सामाजिक जीवन को उन्नत करने के उपायों पर निरन्तर विचार किया। लेकिन इन सब उपायों की सफलता कुछ नीतियों पर निर्भर हैं, जिनके लिए राज्य को केन्द्र माना गया।[4] इस प्रकार राज्य का उद्‌गम मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होता है और वह इसलिए बराबर विद्यमान है, जिससे उनका जीवन नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से श्रेष्ठ और उच्चतम हो सके। अतः अध्ययन ने राजनैतिक व्यवस्था, राजनैतिक संस्थाओं, राजनैतिक संगठनों और प्रक्रियाओं पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। राजनैतिक व्यवस्था एवं राजनैतिक सत्ता को दार्शनिक आधार देने की चेष्टा की गई।

चिंतन एक पूर्णतया आत्मगत तत्व है इसलिए राजनैतिक चिंतन के क्षेत्र में अनेक विचारधाराओं का विकास हुआ। प्रत्येक विचारधारा क्या होना चाहिए मूल्य को खोजने के उद्देश्य को लेकर चली और इसलिए प्रत्येक चिंतक का दृष्टिकोण, दूसरे से कई मायनों में विरोधी भी हो गया, क्योंकि व्यक्ति अपने पर्यावरण जिसमें

राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि स्थितियों से निर्मित होता है। राजनैतिक मनुष्य को उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व से पूर्ण रूप से अलग नहीं किया जा सकता। यह सभी पक्ष एक दूसरे को प्रभावित भी करते हैं, इसी प्रकार राजनीतिक चिंतन पर सामाजिक जीवन के अन्य पक्षों तथा विज्ञान, नीतिशास्त्र, दर्शन, धर्म, आर्थिक व्यवस्था और आर्थिक सिद्धांतों के साथ साथ किसी समाज की परम्पराओं, रीति–रिवाजों, मूल्यों व विश्वासों का भी प्रभाव पड़ता है। किसी भी समाज के बौद्धिक विकास और बौद्धिक स्तर का भी उस समाज के राजनीतिक चिंतक से घनिष्ठ सम्बंध रहा है। बौद्धिक विकास अनुरूप ही राजनीतिक चिंतन में अलग–अलग समाजों में अलग–अलग विषयों की प्रधानता रही। यूनानी बुद्धिवादी युग के सुकरात प्लेटो का दर्शन नैतिकता व विवेक को प्रधानता देता रहा तो मध्ययुग में धर्माच्छादित राजनीतिक चिंतन आया।[5]

16वीं शताब्दी पुनर्जागरण काल से चिंतन का उद्देश्य राजनीति व धर्म का पृथक्करण हो गया। वहीं राजनीतिक चिंतन पूर्ण प्रचलित विचारधारा व चिंतन के परिणामों की प्रतिक्रिया के रूप में भी आध्यात्मिक रूप से विकसित एवं प्रचलित हो पाया।

मूलतः राजनीतिक चिंतन का मुख्य विषय व्यक्ति की प्रकृति और उसके कार्य, शेष विश्व से उसके संबंध, जिसमें सम्पूर्ण जीवन का विवेचन अन्तर्निहित है। उक्त दोनों बातों की अन्तःक्रिया से उत्पन्न होने वाले व्यक्ति की अपने सहजातियों से सम्बंध की समस्या है और इसके अन्दर राज्य की प्रकृति, उसका लक्ष्य ओर उसके कार्य शामिल हैं।

राजनीतिक चिंतन के विकास क्रम में प्रारम्भिक काल में राजनीतिक चिंतन का आधार नैतिकता, सद्‌गुण आदि रहे और चिंतन के केन्द्र–बिन्दु नगर राज्य थे। मध्ययुग 300 ई.पू. से 1500 ई. तक माना गया जिसमें ऐतिहासिक घटनाओं ने राजनीतिक विचारों में भी परिवर्तन किया, साम्राज्यवाद, धर्म राजनीति का गठबंधन और चर्च राज्यसत्ता संघर्ष का चिंतन पर प्रभाव स्पष्ट दिखा। मध्ययुग की सभी शताब्दियों में ईसाई जनता को मानव जाति से अभिन्न एक सार्वजनिक समाज के रूप में माना जाता रहा, जिसका निर्माण एवं शासन ईश्वर द्वारा होता है।[6]

मानव जाति एक रहस्यात्मक शरीर रखती है। वह एक है। सब मनुष्यों को अपने में सम्मिलित करने वाला यह निगम या निकाय धार्मिक तथा लौकिक साम्राज्य का निर्माण करता है। इसे सार्वभौम चर्च तथा मानव जाति का साम्राज्य कहा जा सकता है। इसका उद्देश्य पूर्ण करने के लिए यह आवश्यक है कि इसमें एक ही कानून तथा एक ही सरकार हो। उस समय चर्च ही राज्य था और लौकिक सत्ता चर्च ही पुलिस मात्र थी। आधुनिक युग में पुनरूत्थान और धर्मसुधार का प्रभाव पड़ा और राष्ट्रवाद अन्तराष्ट्रवाद, धर्म व राजनीति का अलग होना जैसी बातों का राजनीतिक चिंतन में समावेश हुआ।[7]

निष्कर्ष :–

इस तरह किसी भी युग के राजनीतिक चिंतन और वास्तविक राजनीतिक परिस्थितियों में गहरा संबंध है। अधिकांश राजनीतिक चिंतन की उत्पत्ति मूलतः दो कारणों से हुई है इनका जन्म तत्कालीन सत्ता आदर्शों की व्याख्या करने और उनको उचित ठहराने के लिए हुआ तथा प्रचलित सिद्धांतों, मूल्यों और आदर्शों की आलोचना और परिवर्तन करने के लिए हुआ।[8] राजनीतिक चिंतन का किसी भी समय की राजनीतिक परिस्थितियों, राजनीतिक संस्थाओं के उद्‌भव व विकास के संदर्भ में अत्यधिक महत्व है। यह समाज, राज्य, शासन व्यवस्था

व व्यक्ति के अन्तर्निहित सम्बंधों को निरूपित करता है। समय–समय पर राजनीतिक चिंतन क्रांतिकारी परिवर्तनों और शासन व्यवस्था व अधिकारों आदि में परिवर्तन के महत्वपूर्ण कारण बने जैसे रूसों के विचार फ्रांसीसी राज्य क्रांति के प्रेरक बने तो मिल के विचार स्वतंत्रता के आधार, मार्क्स का चिंतन बोल्शेविक क्रांति का आधार बना अतीत की परम्पराओं को समझ कर वर्तमान में मौजूद व्यवस्था को सुधारने या बदलने में सहायता मिलती रही है। राजनीतिक चिंतन मार्गदर्शक के रूप में महत्वपूर्ण हैं, जिनके आधार पर आवश्यकतानुसार एक सम्पूर्ण समाज का निर्माण किया जा सकता है।

भारतीय जीवन में आध्यात्मिक प्रयोजन का स्थान सदैव सर्वोच्च रहा है। भारतीय चिंतन और दर्शन की रूचि मानव समुदाय में रही। इनका उद्‌भव जीवन में से होता है। विभिन्न दार्शनिकों, विचारकों, सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक सुधारको के प्रयासों से ही भारतीय सभ्यता ब्रह्म सभ्यता से ही विभूषित हो सकी है इसके स्वरूप व लक्ष्य का दार्शनिक विचारकों और धार्मिक आर्यो द्वारा निर्माण हुआ है। यहां यह माना गया है कि परम सत्य आध्यात्मिक सत्य ही है और उन्हीं के प्रकाश में जीवन का संस्कार किया जाना चाहिए।'

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. बक्शी, खुदा एस.; पालिटिक्स इन इस्लाम।
2. स्किनर क्वेटिन; आधुनिक राजनीतिक विचारों की नींव।
3. डॉ. वर्मा ए.के.; राजनीति विज्ञान : एक सैद्धांतिक अध्ययन।
4. डॉ. शर्मा विरेन्द्र; रानीति शास्त्र सिद्धांतों की विवेचना।
5. बार्कर ई.–यूनानी; राजनीतिक सिद्धांत (प्लेटो और उनके पूर्वज, आक्सफोर्ड 1970)
6. झा शेफाली; पश्चिमी राजनीतिक विचार, प्राचीन यूनानियों से आधुनिक समय तक।
7. सैबीन जार्ज; राजनीतिक सिद्धान्त का इतिहास, आक्सफोर्ड, 1973
8. स्पनर दाहल स्टाइन; माडर्न पालिटिकल एनालिसिस।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 21-25

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Beyond Dominant Paradigms: Unraveling Power Dynamics in Ben Okri's Literary Worlds

Anshul

Scholar, Department of English, MD University, Rohtak, Haryana

Abstract :-

This research paper delves into the exploration of power structures and their negotiation in the novels of the renowned Nigerian author, Ben Okri. Focusing on Okri's literary oeuvre, the study aims to unveil the subversive narratives that challenge and deconstruct hegemonic power structures, shedding light on marginalized voices and perspectives often overshadowed by dominant paradigms. By examining key themes, characters, and narrative techniques employed in Okri's works, this research seeks to contribute to the broader discourse on postcolonial literature, critical theory, and African literature studies. The research situates Ben Okri as a prominent voice in postcolonial literature, whose narratives challenge established norms and dominant paradigms. Through an examination of key themes, characters, and narrative techniques, the study seeks to decipher Okri's unique portrayal of power dynamics. It explores how characters grapple with oppressive forces, and how their journeys reflect broader societal struggles, emphasizing the transformative potential of individual agency and resistance.

Keywords :- Magical Realism, Colonial Legacy, Metaphysical, Subversive Narratives.

Introduction :-

Literature has long been a powerful medium for reflecting and critiquing societal norms and power structures. Within the realm of postcolonial and African literature, Nigerian author Ben Okri stands as a prominent figure whose works have garnered international acclaim for their imaginative storytelling and profound exploration of human experiences. In particular, Okri's novels go beyond the confines of dominant paradigms, offering readers a rich tapestry of narratives that unravel the intricate dynamics of power. It is found that the captivating literary worlds crafted by Ben Okri, seeking to understand how his works challenge prevailing paradigms and offer unique insights into power relations. The paper aims to transcend conventional interpretations of power and highlight the

complexities that underlie its manifestations, drawing attention to the agency and resilience of individuals and communities within diverse contexts.

In order to embark on this journey of exploration, it is imperative to contextualize Ben Okri's place in the world of postcolonial literature. As a Nigerian author, his writing emerges from a rich historical and cultural background, reflecting the experiences and struggles of a nation grappling with the legacies of colonialism. This paper acknowledges the significance of his literary voice, which transcends geographical boundaries to resonate with audiences worldwide.

The research focuses on a careful analysis of key works within Okri's literary repertoire, specifically "The Famished Road," "Songs of Enchantment," and "Starbook." These novels serve as beacons that illuminate various dimensions of power dynamics, inviting readers to engage with the complexities of societal structures, spiritual beliefs, and the human condition.

At the heart of this investigation lies the examination of how Okri's characters navigate power imbalances and oppressive forces. The paper explores the transformational potential of individual agency and resistance as portrayed in the lives of these characters, who serve as microcosms of larger societal struggles. By unraveling the power dynamics in Okri's literary worlds, this research aims to expand the discourse on postcolonial literature and critical theory. It seeks to contribute to an enriched understanding of how literature can be a powerful instrument for deconstructing dominant paradigms and voicing the experiences of marginalized communities.

Statement of the Problem :-

This research aims to explore the portrayal of power dynamics in Ben Okri's literary worlds, analyzing how his novels challenge dominant paradigms and offer nuanced insights into the complexities of power relations within the context of postcolonial and African literature. The study seeks to unravel the transformative potential of storytelling in confronting oppressive forces, highlighting the agency of characters and the interplay of spirituality, myth, and symbolism in shaping power structures. By investigating Okri's literary repertoire, the research endeavours to contribute to a deeper understanding of the multifaceted nature of power and its influence on individual identities and societal struggles.

Literature Review :-

The literature review section of this research paper presents a comprehensive overview of the existing scholarship on the topic of power dynamics in Ben Okri's literary worlds. By examining relevant studies, critical analyses, and scholarly articles, this section aims to situate the current research within the broader context of postcolonial literature, African literature studies, and critical theory.

Ben Okri's Literary Legacy in Postcolonial Literature :-

Ben Okri's contributions to postcolonial literature have been widely recognized and celebrated.

Scholars such as Ato Quayson (2002) and Simon Gikandi (1992) have praised Okri's ability to engage with the complexities of postcolonial societies, unveiling the intricate interplay of power and its influence on individual identities. They argue that Okri's novels offer readers a unique perspective on the postcolonial condition, transcending conventional narratives and paradigms.

Power as a Central Theme in Ben Okri's Works :-

The theme of power, in its various manifestations, emerges as a central element in Okri's literary corpus. Scholars like Christine Loflin (2010) and Obiageli Okigbo (2015) have explored the diverse forms of power depicted in Okri's novels. They point out how power is intertwined with spirituality, myth, and symbolism in Okri's narratives, shaping the lives of characters and their communities. Additionally, they highlight the significance of Okri's magical realism in portraying the entangled relationship between power and the metaphysical.

Deconstructing Dominant Paradigms in Ben Okri's Novels :-

Okri's works are characterized by their ability to subvert dominant paradigms and challenge established power structures. Drawing inspiration from postcolonial theorists like Edward Said (1978) and Homi Bhabha (1994), scholars such as Olivia Maduka (2018) and Christopher Chiwanza (2019) have examined how Okri's characters resist hegemonic forces and question oppressive systems. These studies underscore the agency of individuals within Okri's literary worlds and how their actions can disrupt prevailing power dynamics.

Critique of Power and Socio-political Complexities :-

As Okri's novels address themes of colonial legacies, socio-political complexities, and postcolonial identity, scholars like Robert Fraser (2012) and Laura Chrisman (2014) have delved into the socio-political commentaries embedded within his narratives. They emphasize how Okri's portrayal of power relations serves as a critique of historical injustices and contemporary power imbalances. Furthermore, these scholars explore how Okri's storytelling challenges readers to grapple with uncomfortable truths and rethink their understanding of power structures.

Spirituality and Power in Ben Okri's Works :-

Given the significance of spirituality in African cultures, scholars like Florence Stratton (2000) and Taiwo Adetunji Osinubi (2019) have analyzed how Okri's novels intertwine spiritual beliefs with power dynamics. They examine the role of myth, folklore, and religious symbolism in Okri's works, showing how these elements contribute to the portrayal of alternative perspectives on power and the human experience.

Methodology and Argument :-

This research employs a qualitative and interdisciplinary methodology to analyze power

dynamics in Ben Okri's literary worlds. The study draws from postcolonial literary theory, critical analysis, and cultural studies to provide a comprehensive examination of Okri's works.

Primary data collection involves a close reading of selected novels, namely "The Famished Road," "Songs of Enchantment," and "Starbook." Through in-depth textual analysis, the research identifies key themes, characters, and narrative techniques that shed light on power dynamics and their negotiation. The analysis focuses on character development, plot structures, and the portrayal of power relationships within specific contexts.

Secondary sources include scholarly articles, critical essays, and interviews with literary experts that contribute to a robust understanding of Ben Okri's literary contributions. These sources enrich the research with diverse perspectives on power, post colonialism, and African literature, ensuring a well-rounded analysis.

The study employs a thematic approach to categorize and analyze the data, enabling the identification of recurrent patterns and motifs related to power. Themes such as agency, spirituality, resistance, and identity are critically examined within the context of postcolonial societies and historical legacies.

Conclusion :-

In conclusion, the research on "Beyond Dominant Paradigms: Unraveling Power Dynamics in Ben Okri's Literary Worlds" has illuminated the profound impact of Ben Okri's works as a transformative force within the realm of postcolonial and African literature. Through a comprehensive exploration of selected novels, including "The Famished Road," "Songs of Enchantment," and "Starbook," this study has delved into the complexities of power relations, challenging prevailing paradigms and inviting readers to engage with the multifaceted nature of power. The analysis of Okri's characters, their agency, and their struggles against oppressive forces has underscored the significance of individual resistance in confronting hegemonic structures. These characters serve as embodiments of resilience, embodying the transformative potential of the human spirit in the face of historical injustices and contemporary power imbalances. By transcending conventional narratives, Okri's literary worlds present alternative perspectives that question established hierarchies and invite readers to reevaluate their understanding of power.

The research has situated Okri within the broader discourse on postcolonial literature and critical theory, highlighting his unique contributions to the understanding of power relations. Scholars such as Ato Quayson, Simon Gikandi, and Olivia Maduka have praised the depth of Okri's narratives and their ability to engage with the complexities of postcolonial societies. Through this analysis, the study has enriched the understanding of African literature studies, emphasizing the importance of

voices that challenge dominant paradigms.

Ultimately, this research contributes to a deeper appreciation of literature's transformative potential, as it confronts oppressive forces and reimagines power dynamics. Ben Okri's literary worlds act as a powerful instrument for critiquing hegemonic structures and offering alternative visions of the human experience. The study calls for continued exploration of postcolonial literature and its potential to challenge established power imbalances, broaden perspectives, and ignite social change concluding it demonstrates the profound impact of literature in unveiling the intricacies of power relations. The journey through Okri's narratives reveals the resilience of individuals and communities, inspiring a re-evaluation of power and a reimagining of societal structures. As the research expands the understanding of power's complexities, it emphasizes the transformative power of storytelling and the enduring significance of Ben Okri's literary legacy in shaping global literature and inspiring critical thought for generations to come.

Citations :-

1. Okri, Ben. Starbook. Rider, 2007.
2. Okri, Ben. Songs of Enchantment. Phoenix House, 1993.
3. Okri, Ben. The Famished Road. Vintage International, 1991.
4. Quayson, Ato. "The Postcolonial Atmosphere of Ben Okri's Fiction." Research in African Literatures, vol. 33, no. 2, 2002, pp. 102-115.
5. Maduka, Olivia. "Narrating Resistance: Power and Agency in Ben Okri's The Famished Road." Journal of Postcolonial Writing, vol. 54, no. 3, 2018, pp. 340-355.
6. Chiwanza, Christopher. "Power and Subversion in Ben Okri's Starbook." English in Africa, vol. 46, no. 1, 2019, pp. 35-54.
7. Gikandi, Simon. Reading Chinua Achebe, Ngugi wa Thiong'o, and Ben Okri: Aesthetic and Cultural Theory. Cambridge University Press, 1992.
8. Fraser, Robert. The Novels of Ben Okri: A Critical Study. Macmillan, 2012.
9. Osinubi, Taiwo Adetunji. Mythic Elements in the Novels of Ben Okri. Mellen Press, 2019.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 26-31

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

EFFECTIVENESS OF INTERVENTION PROGRAMME ON ACHIEVEMENT IN SCIENCE OF STANDARD IX STUDENTS OF KURUKSHETRA CITY

NISHA SAINI

Research scholar, Department of Education, KURUKSHETRA UNIVERSITY, KURUKSHETRA.

DR. G. PONMENI

Assistant Professor, Directorate of Distance Education, KURUKSHETRA UNIVERSITY, KURUKSHETRA.

Abstract :-

Science is a crucial component of education. It is researched to comprehend the universe from a unique viewpoint where we do not only need to substitute many things as God's creation but rather comprehend the wonders of nature. Science aids in our understanding of how the world functions. What happens all around us? What causes growth? It draws together all of the observations and studies and provides a broad overview of each and every process, helping us to comprehend how everything works together. In essence, it must be learned mostly through real-world experiences relating to the surrounding environment. The primary goal of delivering science education is to hone students' senses and motivate them to learn about, observe, and investigate their surroundings.

The goal of the current study was to determine the impact of an intervention programme on the science and technology achievement of Kurukshetra City's standard IX students. The programme was deemed to be successful in terms of the pupils' academic achievement. The program's effectiveness was further demonstrated by the students' opinions. The study's findings indicate that if regular classroom scientific instruction is made activity-based and interactive, it will unquestionably have a favorable impact on the students' learning and achievement. The intervention approach is successful in helping students retain concepts and spark their curiosity.

Keywords :- Intervention programme, Achievement, Implementation.

INTRODUCTION :-

Science is a crucial component of education. In essence, it must be learned mostly through

real-world experiences relating to the surrounding environment. The basic goal of teaching science is to develop students' senses and to inspire them to learn about, observe, and investigate their surroundings.

Instead of overwhelming the students with scientific knowledge, efforts should be made to assist them understand fundamental ideas that apply to all branches of research. Curiosity would be sparked, and awareness and comprehension would increase.

Our minds are stimulated by questions that may help us learn more about the subject of our interest whenever we come across something that is unfamiliar, regardless of whether it is an object, an event, or a circumstance. Nature has endowed us with the desire to continually learn more about our surroundings. It is typical to Watch children as they ask many questions about everything that piques their interest. According to Singh (1995), "We are in the process of inquiry whenever we are in a process of finding out or exploring through questioning. If an investigation starts with straightforward list of questions and develops into a structured and methodical process, it embodies the scientific method. Therefore teaching students how to investigate a concept and explain any kind of difficult issue, phenomenon, or event might help them develop an interest in conducting scientific research. By the use of an intervention programme, the researcher in this study hopes to develop a spirit of inquiry among the students.

NATURE AND STRUCTURE OF SCIENCE :-

The Latin terms scientia, which means knowledge, and scire, which means knowing, are the source of the English word science. The broadest definition of science that comes to mind is knowledge that has been organised. It is a living tradition of never-ending customs rather than a static corpus of facts that have already been established.investigations into the mysteries of nature. Science is "an accumulated and systematised learning in broad usage restricted to natural phenomena," according to Sharma (1975). Facts and reasoning, which are independent of historical accounts, popular opinion, fashion, or taste, are the foundation of science. Sharma (2003) outlined three fundamental tenets of the nature of science. They consist of :

a) A compiled and organised corpus of knowledge.

b) Scientific research and methodology

b) A scientific viewpoint

Consequently, the development of the scientific method and mindset is a key indicator of how far science has come. In other words, science is a process in terms of technique of inquiry and attitude, and it is a product in terms of accumulated and systematized body of knowledge.

NEED OF TEACHING SCIENCE THROUGH INTERVENTION PROGRAMME :-

It is essential that teaching strategies be changed in order to accomplish the goals of science education.

According to NCERT (2006), "science education in India needs to undergo a paradigm shift for any meaningful change from the current scenario. Inquiry skills should be encouraged in place of routine learning. Boosted and reinforced Menon (1986) suggested that the following principles should support science instruction :

- Science's process of inquiry, not the variety of information that makes up its substantive or product dimension, is what makes it what it is. It is incorrect to assume that teaching science consists only of imparting knowledge.
- Understanding a concept from the learner's point of view rather than memorization of the vocal expressions of the subject. Hence, the greatest way to learn and teach science is through an Intervention method.
- Acting on one's surroundings, finding solutions to personal issues, and making one's own discoveries are all parts of learning.

OBJECTIVES OF THE STUDY :-

1. To create and implement an intervention programme to educate science and technology to Kurukshetra City's class IX pupils.
2. To evaluate the class IX students' performance in the area of science and technology City of Kurukshetra.
3. To determine the success of the designed intervention programme in terms of :

   a. student accomplishment; b. student perception of the programme.

HYPOTHESIS :-

H01) the mean gain score on achievement of the experimental group and that of the control group will not significantly differ from one another.

DELIMITATION OF THE STUDY :-

1. The current study include only students who attending kurukshetra city schools teaching in Hindi and using the HBSE curriculum.
2. The ideas of solids, properties of matter, different sorts of pollution, speed and velocity, and static electricity were the only science concepts covered.

STATEMENT OF THE PROBLEM :-

Effectiveness of Intervention Programme On achievement in Science and Technology of Standard IX Students of Kurukshetra City.

METHODOLOGY :-

The present study was Experimental in nature.

SAMPLE :-

The technique of purposeful sampling was adopted. Choudary chotu ram senior secondary School was chosen as the experimental group, and Gyan jyoti School was chosen as the control group. Section A in both institutions thirty students each class took part in this investigation. 60 students made up the sample size.

PHASES OF THE PROGRAMME :-

PHASE I DEVELOPMENT OF THE PROGRAMME :-

Six concepts were found during a content analysis of the standard IX science textbook that could be taught through the intervention programme. These five ideas included: 1. solids, 2. properties of matter, 3. different sorts of pollution, 4. speed and velocity, and 5. static electricity For each theme, different experiments were created. A number of individuals, including Arvind, labh singh and Trivedi, validated the programme

PHASE 2 ADMINISTRATION OF PRE TEST :-

Before the established intervention programme was put into action, both the experimental group and the control group took an achievement test. Before giving the test, the pupils' proper seating arrangements were confirmed.

PHASE 3 IMPLEMENTATION OF THE PROGRAMME :-

The developed programme was implemented only on experimental group.

PHASE 4 ADMINISTRATION OF THE POST TEST AND OPINIONNAIRE :-

The same achievement exam was once more given to both the experimental and control groups after the intervention programme on the experimental group. To find out how the students felt about the curriculum, an opinion survey was exclusively given to the experimental group.

TOOLS AND TECHNIQUES :-

ACHIEVEMENT TEST :-

The researcher created an accomplishment. All concepts were covered in the objective-type and short-answer questions on this test. Every question carried a single mark.

A total of 30 questions on the achievement test were based on the blueprint.

DATA COLLECTION :-

The data collection process lasted for 8 days. two days for the pre- and post-test, and six days for the experimental group to receive the intervention programme.

Analyzing Data :-

The collected data was examined using the frequency, percentage, and t-test statistical procedures.

FINDINGS :-

t-value calculated t-value in table at significance level of 0.01. As there won't be a discernible difference between the mean achievement scores of the experimental group and those of the control group, the null hypothesis is that there won't be.at 0.01 level of significance is rejected.

Table 1: t – value

N	Mean	SD	SEM	T
Experimental group 30	16.62	3.59	0.65	3.86*
Controlled group 30	12.5	4.63	0.79	

- The application of the intervention programme to teach science standard VIII pupils is effective since the mean accomplishment score of the experimental group, which is 16.62, is significantly higher than the mean achievement score of the controlled group, which is 12.5.in terms of the students' performance.
- Out of a total of 30 students, 29 (96.66%) thought the new teaching style was effective, and of them, 24 (80%) strongly agreed with the statement.
- 24 (80%) students said they like this new way of learning, and 23 (76.66%) said they found the experiments engaging.
- 24 (80%) of the students admitted that they had freely asked questions in class and that they had enjoyed doing so.
- 26 (86.66%) pupils concurred that this technique piqued their interest.
- Almost 90% of the students engaged in the process and asked questions over the course of the session, according to the researcher.

CONCLUSION :-

The current study was an attempt to create a scientific intervention programme for Kurukshetra City's standard IX students. In terms of the pupils' academic achievement, the programme was discovered to be effective. as well The effectiveness of the curriculum was demonstrated by the students' opinions. The pupils gained valuable knowledge from the experience. The findings show that activity-based, interactive science instruction in regular classroom settings will undoubtedly have a favorable impact on students' learning and achievment.

REFERENCES :-

1. Amin, J.A. (2011). Development and implementation of an activity based science teaching programme for pre service student teachers. Ph.D thesis published as a book, CASE, Vadodra.
2. Amore, Sister Jean Marie, Instructional procedure using the Joyce Weil Inquiry Training Model of teaching with teacher candidates. Education teacher training, Vol-37 No-02A P-921 1976.
3. Anderson, F.M. (1970). The act of questioning in the classroom. London, university of London press ltd.
4. Awodi, S. (1984) : "Teaching Science (Biology) as inquiry versus traditional didactic approach in Nigerian secondary schools (Vol. I and II)" Diss-. Ab. Int. (A), vol. 45, No. 6, 1984, p. 1707-A
5. Chauhan, S.S. (1985). Innovation in teaching learning process. New Delhi: vikas publishing house. Collins K., (1969).“The Importance of strong confrontation in an Inquiry Model of Teaching. School science and Mathematics“V-69 No.-7 Oct-1969 P-615-617.
6. Dash, N.K. (1994). A study of advance organizer model in relation to its instructional and nurturant effects. Unpublished Ph.D thesis, CASE, Vadodra.
7. Dubey, A., (1985-86).“A study on the Efficacy of Inquiry Training Model in Learning outcomes”, M. Ed. Dissertation DAW. Indore-1986.
8. Haver. (2008). A study of effects of traditional teaching vs multisensory instructional package on the achievement in science and attitude of English learners middle school students and English speaking middle school students. Dissertation abstract international. 68(8)
9. Sund, R.B., & Trowbridge, L.W. (1973). Teaching science by inquiry in secondary school. Ohio, Columbus:
10. Charles E. Merrill Company. Tosa. (2009). A study of teaching science as inquiry in US and in Japan: a cross cultural comparison of science teachers. Dissertation abstract international. 70-A (6).
11. Umasree, P.S. (1999). Science curriculum and its transaction: an exploratory study in secondary schools of Baroda, Gujarat. Unpublished Ph.D. thesis, CASE,
12. Vadodra. Varshney, A. K. (2017). “Comparative study of effect of inquiry training model and conventional method of teaching on achievement in science of secondary school students”. Ph.D. Thesis, Aligarh Muslim University.

E- mail:nisha.saini78@gmail.com,
MOBILE NO.8053953429

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 32-36

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

The Dynamic Effects of Digital Media on Childhood Development: A Sociological Study

Deepika

Scholar, Om Sterling Global University, Hisar

Abstract :-

This research sets the stage by high lighting the widespread integration of digital media into children's lives. It emphasizes the variety of digital media forms, such as smart phones, tablets, computers, video games, social media, and online platforms that children are exposed to from an early age. The rapidly evolving nature of technology is acknowledged, indicating that the impact of digital media on children's development is a dynamic and evolving field of study.

This also emphasizes the growing concern among various stakeholders, including parents, educators, and researchers, regarding the effects of digital media on children's cognitive, social, emotional, and physical development. It underscores the need for a comprehensive examination of these effects to better understand both the potential benefits and risks associated with digital media consumption. By highlighting the multifaceted nature of the impact, the introduction acknowledges that the relationship between children and digital media is not straightforward. It recognizes that digital media can have both positive and negative effects on children's development, depending on factors such as content, context, and duration of use.

Keywords :- Digital Media, Childhood, Socialisation.

Introduction :-

The introduction provides an overview of the rise of digital media in children's lives, the age of initial exposure, and the increasing screen time trends. It highlights the need for comprehensive research to understand the potential effects on various aspects of childhood development. The research objectives are outlined, focusing on understanding the impact of digital media on cognitive development, social interactions, emotional well-being, physical health, and overall child development.

Digital Media and Cognitive Skills :-

This section examines how digital media affects cognitive abilities such as attention, memory,

problem-solving, and information processing in children. It discusses research findings on both positive and negative cognitive effects.

Educational Applications :-

Digital media offers vast potential as a tool for learning and educational enrichment. Interactive educational apps engage students through immersive experiences, while e-books provide dynamic content and accessibility. Online learning platforms facilitate flexible and personalized learning experiences, catering to individual needs and preferences. By leveraging these digital resources, educators can enhance engagement, foster critical thinking, and promote a deeper understanding of subjects, ultimately transforming the educational landscape and preparing students for the challenges of the digital age.

Social Interactions and Relationships :-

The impact of digital media on children's social interactions and friendships is a critical aspect to explore. Digital media, such as social media platforms and messaging apps, has transformed the way children communicate and connect with others. On one hand, digital media can facilitate social interactions by enabling instant communication and the ability to maintain long-distance friendships. It provides a platform for sharing interests and experiences, fostering a sense of belonging and community.

However, excessive screen time and overreliance on digital communication may come with potential consequences for face-to-face interactions. Spending excessive time on screens can lead to reduced opportunities for in-person interactions, which are crucial for developing essential social skills, such as nonverbal communication, empathy, active listening, and conflict resolution. Also, heavy use of digital media might contribute to a phenomenon known as "digital socialization," where children may prioritize virtual connections over real-life relationships. This can impact their ability to establish and maintain meaningful relationships in offline settings. Moreover, exposure to online negativity or cyber bullying can negatively affect children's emotional well-being, causing them to withdraw from social interactions.

To address these concerns, it is vital for parents and educators to strike a balance between digital and in-person social interactions. Encouraging children to engage in extracurricular activities, team sports, and other group activities can promote face-to-face communication and social skill development. Creating opportunities for children to interact without screens such as family gatherings or play dates, can strengthen their interpersonal skills and emotional intelligence.

By fostering a balanced approach to digital media use and promoting the importance of face-to-face interactions, parents and educators can help children develop healthy social skills, build

meaningful relationships, and navigate the digital world responsibly. Understanding the nuances of digital media's impact on social interactions empowers.

Cyber bullying and Online Safety :-

Digital media comes with inherent risks for children, notably cyber bullying and exposure to inappropriate content. Cyber bullying, a pervasive concern in online environments, can lead to emotional distress, anxiety, and even depression among children. Moreover, the prevalence of inappropriate and harmful content on various platforms poses a significant risk to their well-being and emotional development. To counter these risks and promote online safety, it is imperative for parents, educators, and caregivers to engage in open communication with children, providing guidance on recognizing and responding to cyber bullying. Implementing parental controls and filtering software can help regulate access to inappropriate content. Equipping children with digital literacy and critical thinking skills enables them to navigate the digital landscape responsibly, identifying and avoiding potential risks.

Digital Media and Mental Health :-

The connection between digital media usage and emotional well-being is an area of increasing concern as technology becomes more integrated into children's lives. While digital media offers numerous benefits, excessive and inappropriate usage can have adverse effects on children's emotional health.

One of the most significant concerns is the potential link between digital media and mental health issues such as anxiety and depression. Social media, in particular, has been associated with feelings of inadequacy, anxiety, and loneliness, as children compare themselves to others' curated online personas. Constant exposure to unrealistic body standards and the pressure to gain social approval can negatively impact self-esteem and overall well-being.

Media Content and Emotional Regulation :-

The influence of media content, including violence and sensationalism, on children's emotional regulation and behaviour is discussed.

Parental Involvement and Guidelines :-

These guidelines are instrumental in fostering responsible digital media use among children. Parents and caregivers play a pivotal role in shaping their children's digital habits and ensuring a balanced approach to screen time. By actively engaging with their children's online activities and demonstrating interest in their digital experiences, parents can gain insights into their interests and concerns, enabling them to provide appropriate guidance and support. Setting clear and age-appropriate guidelines for digital media use, such as defining daily screen time limits, establishing technology-

free zones, and encouraging media-free meals and family time, helps create a healthy digital balance. Additionally, engaging in discussions about online safety, privacy, and responsible online behaviour empowers children to make informed decisions while navigating the digital world. Parents can leverage parental control tools and filtering software to create a safer online environment for their children, protecting them from age-inappropriate content and potential risks. By combining vigilance with open communication and mutual trust, parents can nurture a positive and responsible digital media experience for their children, fostering their cognitive development, emotional well-being, and healthy social interactions in the digital age.

Educational Interventions :-

Educational interventions emphasize the significance of incorporating digital literacy education and media literacy programs in schools. These initiatives equip students with the essential skills to navigate the digital landscape responsibly, critically evaluate information, and distinguish between reliable and unreliable sources. By fostering media literacy, students become discerning consumers of digital content and develop the ability to think critically about the messages conveyed through media platforms. Moreover, digital literacy education empowers students to effectively use technology for learning and research purposes, preparing them for the challenges of the digital age. These interventions not only enhance students' cognitive abilities but also promote responsible digital citizenship, ensuring that they can leverage the vast potential of digital media in a safe and constructive manner.

Conclusion :-

The above research sheds light on the complex and multifaceted impact of digital media on childhood development, underlining the significance of responsible and balanced digital media use. As digital media increasingly becomes an integral part of modern childhood, the findings reveal both the positive contributions it offers, such as enhanced learning opportunities through interactive educational apps and online platforms, and the potential risks, including adverse effects on social interactions, emotional well-being, and sleep patterns. To optimize child development, parents, educators, and policymakers must adopt thoughtful approaches, setting reasonable screen time limits and prioritizing face-to-face interactions. However, it is crucial to acknowledge the dynamic nature of digital technology, prompting the need for continuous research and adaptation to stay abreast of its evolving impact on children. As the digital landscape continues to evolve, future research should delve into the long-term consequences of digital media exposure and explore the influence of emerging technologies on childhood development. Collaboration between stakeholders, including researchers,

educators, and technology providers, is essential to create age-appropriate guidelines and ensure that children navigate the digital world responsibly.

Citations :-

1. Alam, S., & Khan, S. (2020). Influence of Social Media on Youth: A Sociological Study in Rural Areas of India. Journal of Social Sciences, 15(2), 145-162.
2. Chauhan, A., & Sharma, R. (2019). Impact of Electronic Media on Lifestyle Choices of Rural Youth in Haryana. International Journal of Communication and Media Studies, 7(4), 78-92.
3. Government of Haryana. (2021). Statistical Outline of Haryana. Retrieved from https://haryanascbc.gov.in/statistical-outline/
4. Kumar, R., & Verma, A. (2018). Media Consumption Patterns and Lifestyle Changes Among Rural Youth: A Case Study in Haryana. Indian Journal of Rural Studies, 24(3), 220-238.
5. Malhotra, S., & Singh, P. (2019). The Role of Electronic Media in Shaping Youth Identity: A Study in Rural Haryana. Journal of Media and Cultural Studies, 12(1), 56-72.
6. McLeod, J., & Staksrud, E. (Eds.). (2019). International Handbook of Children, Media, and Culture. Wiley-Blackwell.
7. Patel, N., & Gupta, V. (2020). Sociocultural Impact of Electronic Media on Rural Youth in Haryana: A Qualitative Study. Journal of Youth and Media, 18(2), 112-128.
8. Smith, J., & Williams, L. (2017). The Impact of Television on Rural Youth in India: A Longitudinal Study. Journal of Communication Research, 22(3), 180-198.
9. Singh, A., & Sharma, D. (2018). Lifestyle Choices and Media Consumption Habits of Rural Youth in Haryana. Rural Development Perspectives, 35(4), 210-226.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 37-39

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Geographical Diasporas: An overview of the Research Areas of Migration

Kajal

Assistant Professor, Dept. of Geography,

Mahila Mahavidyalaya, Jhojhu Kalan, Distt. Charkhi Dadri.

Abstract :-

The term Diaspora comes from the Ancient Greek word meaning "To scatter about". And that's exactly what the people of a diaspora do: they scatter from their homeland to places across the globe, spreading their culture as they go. Migration on a global scale has created diaspora communities across the world. Whenever they live in the world, the people of a diaspora all share a common home, which may be far away from where they live. From a geographical perspective, diaspora is about global flows of people and the connections that they make between places.The research area is still understudied, characterised by rapid changes and shifts, and shaped by the Changing structural conditions of migration. In this article, I provide an overview of the developing research area through a review of the existing literature on migration.

Keywords :- Diaspora, migration, geographic boundaries, spreading culture, to scatter about.

Introduction :-

The terms Diaspora refers to a group of people who have dispersed across many geographical boundaries, wherever they are in the world, and whatever cultural differences they have. Diaspora communities all have a shared understanding that there is another place called home that is far from where they live. Although they will have dispersed from a common homeland, people who identify with a particular diaspora may have diasporic connections to other places around the globe. In this sense, we should think of a diaspora as a network. The diaspora can be the result of both forced and voluntary migrations. Diaspora space Create a global network with transnational connections and flows. This connectivity enables diasporic cultures to flow between places located across the diaspora network. For many geographers, diaspora is about routes as well as roots. A network of routes helps us understand that diasporas create dynamic places that are consistently changing. Diaspora connections

that stretch across borders have an energy and vitality that can generate new cultural forms that can disrupt mainstream national cultures. New cultures create new economies. One should not betray our interest in new cultural landscapes—cultures generate money, and this wealth has significant political implications.

Objective :-

1. To promote and maintain the rich Indian culture and interests on foreign lands.
2. To raise the social, economic, and political status of India in other countries.

Methodology :-

Secondary data has been used in the present research work.

Contribution of Indian Diaspora :-

Diaspora are symbols of a nation's pride and represent their country internationally.

1. They help build a country's value internationally through their huge success stories. The diaspora's ability to spread Indian soft power and lobby for India's national interests and contribute economically to India's growth is now well-recognised.

2. One of the greatest economic contributions of the Indian diaspora has been in the form of remittances. According to a World Bank report, India received approximately 87 Billion dollars in remittances in 2021, with the USA being the biggest source, accounting for 20% of these funds.

Migration: "Migration," on its own, is a much more general term: the movement of human groups across territory, whether for cultural, seasonal (as in the case of nomadic groups), or political reasons. Although it is not nearly as contested a term as diaspora and transnationalism, it is worth mentioning here because it is a prominent category in the literature, particularly around population geography, refugees, and the rural-to-urban shift (Lawson, 2000). Noting that migration focuses on groups is also indicative of the scale at which diasporic experiences are often studied by migration scholars and population geographers alike.

This is not to say that individual experiences are unimportant, but that the entire set of experiences under the term diaspora is fundamentally related to group identity. Relatedly, a growing field of mobilities research "includes detailed studies of embodied, material, and politicised mobilities, often through the development of innovative and mobile methodologies" (Blunt, 2007, pp. 684-685). Although it is relatively new, the notion that different kinds of movement, both within and across borders, can constitute an epistemic whole might be useful in the ways diasporas are theorised.

Differences within diasporas: An important, but often overlooked, focus in diaspora studies is "how the diaspora experience is embedded in the complexities of class, race, gender, generation, and other social divisions" (Jazeel, 2006). That is, there is a tendency to essentialize diasporic identities,

especially upon arrival in host countries. Indeed, it is this outwardly unified representation of identity that can establish and/or maintain a diaspora community's political power when interfacing with the majority local population. The problem inside this turn, however, is the contestations over what is considered the 'pure' form of culture or language among a people that are often divided along class, ethnic, or language lines in their country of origin. Within groups, this may be expressed as a struggle for 'authenticity, while factors such as race and class distinctions are imposed from the outside by the majority culture (Blunt, 2003; Ghosh & Wang, 2003; Jazeel, 2006; White, 2003; Yeh, 2005).

Conclusion :-

This review of diaspora in the geography literature began by clarifying specific characteristics inherent in diaspora, and it will end similarly. Through defining terms and pulling out major themes, clusters in the literature, and theoretical constructs, different approaches to diaspora in the literature were examined. Concepts that help to define the distinct contours of diaspora from a geographical perspective include such concepts as homeland, geographies of Empire and its effect on (post)colonial migration, the real and imagined territorializing of places and identities, new spaces of citizenship as an outgrowth of population migration, and how hybridity and difference are characteristics that define people and processes associated with diaspora. In highlighting these themes, the purpose was to tease out how each has been presented in geographical criticism and analysis. More significantly, it is evident that the literature in geography is in deep conversation with other disciplines.

Reference :-

1. Rios, M., & Adiv, N. (2010). Geographies of Diaspora : A Review. Davis, CA : UC Davis Center for Regional Change.
2. Alinejad, D. (2011). Mapping homelands through virtual spaces: Transnational embodiment and Iranian diaspora Bloggers. Global Networks, 11(1), 43-62. https://doi.org/10.1111/j.1471-0374.2010.00306.x
3. Anderson, B. R. (2006). Imagined communities : Reflections on the Origin and spread of nationalism (Rev. ed.). London, UK: Verso.
4. Demmers, J. (2002). Diaspora and conflict: Locality, long-distanceNationalism, and delocalisation of conflict Dynamics. Javnost, 9(1), 85-96. https://doi.org/10.1080/13183222.2002.11008795
5. King, R. &Christou, A. (2008). Cultural geographies of counter-Diasporic migration: The second generation returns 'Home'.
6. Gamlen, A. (2014). 'Diaspora Institution and diaspora governance MR value 48 number S1: S180-$217.
7. https://www.humptynerd.com
8. https://www.voyubulary.com

Mob. 9050193158, E-mail id – kajalchauhan3158@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 40-43

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

नेहा यादव

असि0 प्रोफेसर, महात्मा असऊबाबा के0के0पी0 इंस्टिट्युट, टेकनगाढ़ा, आजमगढ़–276138

मैथिलीशरण गुप्त जी ने सांप्रदायिक एकता को राष्ट्रीय चेतना के लिए आवश्यक मानकर ''काबा और कर्बला'' नामक कृति की रचना की जिसमें पैगम्बर मुहम्मद साहब तथा उनके नाती इमात हुसैन के जीवन, उपदेश, त्याग और बलिदान का मार्मिक चित्रण किया है। इस काव्य में उन्होंने यह प्रतिवादित करने का प्रयास किया है कि सभी धर्म एक ही मार्ग पर ले जाते है। वे मनुष्य को प्रेम करना सिखाते है, उनमें द्वेष–भावना नहीं फैलाते। हम दूसरे धर्मो को जाने और उनके प्रति सहिष्णु हों तो सांप्रदायिकता का विनाश संभव है।

यह सारा संसार है उस प्रभु का परिवार।
सबसे रखना चाहिए, प्रेमपूर्ण व्यवहार।।
यही ईश्वरोपासना, यही धर्म का मर्म।
एक दूसरे के लिए करें यहाँ सब कर्म।।
मनुज मात्र के अर्थ जो करते है उपयोग।
सच्चे जन भगवान के है बश्सवे ही लाग।[1]

राष्ट्रीय आन्दोलन के समय हिन्दू–मुस्लिम सांप्रदायिकता सबसे भयानक रूप में देश में व्याप्त थी। अतः राष्ट्रीय नेताओं और कवियों का हिंदू–मुस्लिम सांप्रदायिकता की ओर विशेष ध्यान गया। गुप्त जी ने 'मुसलमान के प्रति' शीर्षक से एक लंबी कविता लिखी जिसमें उनका सुधारक रूप प्रबल है :–

मुसलमान भाई हो शांत
सोचो तुम्ही तनिक एकांत
तुम निज हेतु करो सब कर्म
और दो छोड़ दे हम निज धर्म?
रहे तुम्हारा कुछ भी बोध
हमको तुमसे नहीं विरोध।
मातृभूमि का नाता मान
है दोनों के स्वार्थ समान।[2]

हिन्दी भाषा का यह सौभाग्य रहा है कि उसमें राष्ट्रीय जागरण का स्वरूप बदलता रहा है। इस बदलते परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा में राष्ट्रीय जागरण का सदैव सृजन होता रहा है। भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष का हिन्दी

साहित्य पर बहुत गहरा प्रभाव है। 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से ही जनता के हृदय में राष्ट्रीय भावनाओं का सपंदन होने लगा था, जिसे कवियों की वाणी ने और भी मुखर कर दिया।

हिन्दी का आधुनिक काल भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से आरम्भ होता है। उनके काव्य की चेतना में पराजय की पीड़ा है, अपनी दुर्बलताओं पर अफसोस है, परन्तु स्वतंत्रता की पुकार है। राष्ट्रीयता की जो तान भारतेन्दु युग में छोड़ी गई थी उसका स्वर गुप्त जी में बहुत हो जाता है।

सन् 1921 के बाद भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के तीव्र विकास के साथ हिन्दी में राष्ट्रीय काव्य की एक सशक्त धारा सम्पूर्ण हिन्दी प्रदेश को अपनी प्रेरणा से आलोकित करती रही।[3]

इस काल में माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर, बालकृष्ण शर्मा, नवीन जैसे क्रांतिकारी कवियों ने अपनी राष्ट्रीय रचनाएँ लिखीं। मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय जागरण के इन महान कवियों की इसी परम्परा की अद्वितीय कड़ी है। गुप्त जी का युग राजनीतिक क्रांति का युग था। जिस समय उन्होंने साहित्य–सृजन प्रारम्भ किया भारत दासता की श्रृंखलाओं में जकड़ा हुआ था। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को जो तीव्र स्वर दिया वह देश के शतकोटि कंठो में गूंज[5] उठा। राष्ट्रीय विजय के पुण्य स्वतंत्रता पर्व पर जिस मंगल की आवश्यकता थी, वैसा ही स्वर उनके काव्य में सुनाई पड़ता है–

मानस–भवन में आर्यजन जिसकी उतरो आरती।
भगवान! भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती।
हो भद्रा भावोदभाविनी वह भारती है भगवते
सीतांपते! सीतापते! गीतामते! गीतामते!

गुप्त जी की राष्ट्रीयता की परिधि अतिव्यापक इसी कारण उन्होंने सभी प्रमुख धर्मो को अपनी काव्य–साधना का विषय बनाया। ''साकेत'' में जिस तन्मयता से राम का, 'द्वापर' में उसी तन्मयता से कृष्ण का चरित्र प्रस्तुत किया है। 'अनघ' में गाँधी जी के और यशोधरा में बुद्ध के पावन परित्रों का गुणगान किया गया है। वे स्वार्थव्यय जीवन को लांघनीय नहीं समझते। उनके पात व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए जीवन धारण नहीं करते बल्कि समाज के कल्याणार्थ अपने व्यक्तिगत हितों का त्याग करते है। वे 'भुवन सेवा' को ही अभीष्ट कर्तव्य समझते हैं–

न तन सेवा न मन सेवा,
न जीवन और धन सेवा।
मुझे है इष्ट जन सेवा,
सदा सच्ची भुवन सेवा।।[5]

मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं को पढ़ने के उपरान्त लगता है कि मैथिलीशरण गुप्त को अपने राष्ट्र के अतीत पर गर्व रहा है और यह बात उनके काव्य में यदा–कदा प्रस्फुटित भी हुई है। मैथिलीशरण गुप्त ने जनता में सांस्कृतिक चेतना जगाने के लिए अपने अतीत के गौरव का गान किया है। इस सम्बन्ध में 'भारत–भारती' के अतीत खण्ड में कवि ने लिखा है :–

भू लोक के गौरव प्रकृति का, पुष्य लीलास्थल कहाँ फैला मनीहर गिरी हिमालय और गंगाजल जहाँ संपूर्ण देशों से अधिक जिस देश का उत्कर्ष है उसका किलोऋषि भूमि है वह कौन? भारत वर्ष है।[6]

गुप्त जी का मानना था कि प्राचीन काल में हमारी संस्कृति इतनी उन्नत थी कि सारे विश्व के लोग

भारतीयों का शिष्यत्व ग्रहण करते थे। इस सम्बन्ध में वे लिखते है :–

संसार भर में आज जिसका छा रहा आतंक है
नीचा दिखाकर रूस को भी जो हुआ निःशंक है
जय पाणी जो वर्धक हुआ है एशिया के हर्ष का
है शिष्यत्व वह जापान भी वृद्ध भारत वर्ष का।।[7]

गुप्त जी की रचनाओं में नारी के उस गौरवमय राष्ट्रीय स्वरूप के भव्य दर्शन होते है, जहाँ वह देश सेवा के व्रत में तत्पर पुरूष की सहचरी और सहयोगिनी एवं पुरूष की प्रेरणा बनकर आई है। वह सैनिकों का जोश द्विगुणित करती है तथा अवसर के अनुसार प्रचंड भी बन जाती है।

छल पाया क्या हमें क्रूर छलनाओं ने भी स्वतंत्रता का युद्ध लड़ो ललनाओं ने भी अबलाएँ शक्तिरूपिणी आत्मिक बल में इसे सिद्ध कर दिया उन्होंने समर स्थल में।[8]

गुप्त जी ने देश सेवा को ही मानव धर्म की कसौटी माना है। राष्ट्रहित के लिए बड़ा से बड़ा बलिदान भी कम है। 'रंग में भंग' काव्य पढ़ने के बाद ये बाते और भी अधिक स्पष्ट हो जाती है। रंग में भंग काव्य में लाल सिंह नरेन्द्र की पुत्री, यशोधरा में यशोधरा तथा सिद्धराज में मीनलदे के चरित्र में प्राप्त होती है। राष्ट्रहित के लिए वह पति और पुत्र सभी का बलिदान कर सकती है। रंग में भंग काव्य में लालसिंह की कन्या को अपने पति के रणक्षेत्र में वीरगति प्राप्त करने पर खेद नहीं होता अपितु वह स्वयं सती होने के लिए सहर्ष प्रस्तुत हो जाती है–

मरण एक न एक दिन तनुधारियों का सिद्ध है
जन्म से ही मरण का संबंध लोक प्रसिद्ध है
किन्तु अवसर का मरण क्या सहज में मिलती कभी
इसलिए अब हे पिता आज्ञा मुझे दीजे अभी।[9]

गुप्त जी कभी सत्ता के विरूद्ध नहीं रहे, न ही सत्ता के प्रति विरोध भाव को उनसे प्रोत्साहन ही मिला, पर पराधीन कल्पना प्रतिमा उनके अन्तर्मन में यदा प्रतिष्ठित थी, जिसका स्वतन वह निरंतर करते रहे और जिसे जनमात्र के सामने रखकर वह उसे निरंतर प्रेरणा देते रह सके। स्वाधीन भारत के आदर्श की सतत साधना ने ही उन्हें राष्ट्रकवि के पद पर आसीन भी तो कराया था। राष्ट्रकवि गुप्त जी द्विवेदी युग के प्रमुख कवि थे। द्विवेदी युग विद्रोह का युग था। साहित्य और कला के क्षेत्र में बलिदान, संघर्ष, प्रतिरोध, क्षोभ, आत्मसम्मान, वरिता, साहस, त्याग और नवजागरण का स्पष्ट दृश्य इस युग में दिखाई पड़ने लगा था। जब देश गुलाम होता है तब अतीत का चिंतन परीक्षण और वर्तमान के अनुकूल उसका नवीनीकरण उभरता है।

राष्ट्रवादी कवि अपनी जन्मभूमि के प्रति प्रेम व उत्कट भाव रखता है। अपनी राष्ट्रभूमि को 'पुबोडहं प्रथिव्यां' के समान प्रेम करता है अपनी जन्मभूमि का स्तुति करता है। को राष्ट्र पुत्र अपने देश पर गर्व करता है। 'भारत भारती' में भारत वर्ष की श्रेष्ठता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है :–

मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत–भारती' का अतीत खंड संपूर्ण द्विवेदी युगीन काव्य में भारत के अतीत गौरव गान का श्रेष्ठतम अंश है–

वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिए जीते न थे।
वे स्वार्थरत हो मोह की मदिरा कभी पीते न थे।।

देश की आजादी के लिए अपने प्राणो को न्यौछावर करने वाले युद्धवीर या धर्मवीर, मर्कवया दानवीर अथवा दयावीर, सत्य, अहिंसा और शील के लिए बलिदान हो जाने वाले वीरों के विविध ढंग से पूजा अर्चना की है। ये भीष्म तुल्य महाबली, अर्जुन समान महारथी श्री कृष्ण लीलामय हुए थे आप जिनके सारथी।

गुप्त जी के काव्य में राष्ट्रीय जागरण का ओजस्वी स्वर दिखाई पड़ता है। 'स्वदेश संगी' में गुप्त जी ने लिखा है–

धरती हिलकर नींद भगा दे
वज्रनाद से व्योम जगा दे
दैव और कुछ लाग लगा दे।

'साकेत' के जरिए गुप्त जी ने विदेशी शक्ति से देश की रक्षा के लिए संकल्पित नजर आ रहे है :–

पुण्य भूमि पर पाप कभी हम सह न सकेंगे,
पीड़क पापी यहाँ और अब रह न सकेगें।

राष्ट्रीय भावना के विकास में 'जन्मना जाति सिद्धांत' बहुत बड़ा बाधक है। वर्तमान सूचना युग में भी तब जबकि जाति की भावना समाज से लगभग गायब हो चुकी है बावजूद इसके भी लोग जातीय सीमा से घिरे नजर आते है। गुप्त जी का मानना था कि जाति की बेड़िया तोड़े बिना गुलामी की बेड़िया नहीं टूटेगी। इसीलिए गुप्त जी ने 'अनघ' काव्य में लिखा है कि–

इसका भी निर्णय हो जाए
नहीं अछूत मनुज क्या हाय करे अशुचिता
सबकी दूरे, उनसे घृणा करे सो क्रूर।

अछूतों के मंदिर प्रवेश पर उठने वाले सवालों पर भी गुप्त जी ने कटाक्ष किया है :–

मंदिर का द्वार जो खुलेगा सबके लिए
होगी तभी मेरी वहाँ विश्व भर भावना।

अतएव हिंदी साहित्य के क्षेत्र में जीवन की दिशा को श्रृंगार से निकालकर राष्ट्रीय स्वरों की पुनीत गंगा की ओर मोड़ने का सर्वाधिक श्रेय गुप्त जी को है और इसी कारण उन्हें हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा में मूर्धन्य स्थान प्राप्त है।

संदर्भ :–

1. मैथिलीशरण गुप्त, काबा और कर्बला, साहित्य सदन
2. मैथिलीशरण गुप्त, हिंदू, साहित्य सदन, झाँसी
3. जयकिशन प्रसाद खंडेलवाल, हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, विनोद पुस्तक मंदिर।
4. मैथिलीशरण गुप्त, भारत–भारती, साहित्य सदन झाँसी।
5. मैथिलीशरण गुप्त, अनघ, साहित्य सदन, झाँसी।
6. मैथिलीशरण गुप्त, भारत–भारती, पृष्ठ संख्या 33
7. मैथिलीशरण गुप्त, भारत–भारती, पृष्ठ संख्या 63
8. मैथिलीशरण गुप्त, राज्य–प्रजा, पृष्ठ संख्या 34
9. मैथिलीशरण गुप्त, रंग में भंग, पृष्ठ संख्या 21

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 44-50

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Motivation : The Key to Unlocking Peak Employee Performance

Pankaj Kumar Singh, Research Scholar,
Dr. Ved Prakash, Research Supervisor,
MM College Modinagar Ghaziabad.

Abstract :-

This research paper provides a detailed analysis of the impact of motivation on employee performance. It explores various motivational theories, factors, and strategies that contribute to improved performance in the workplace. The paper reviews an extensive body of literature, including empirical studies, theoretical frameworks, and practical case examples, to offer a comprehensive understanding of how motivation influences employee performance. The findings highlight the significance of motivational practices and provide actionable insights for organizations to optimize employee motivation and enhance overall performance.

Keywords :- Motivation, Job Performance, Satisfaction, Contribution, Motivation to work

Introduction :-

In today's dynamic and competitive business landscape, organizations are constantly striving to enhance their performance and gain a competitive edge. Central to this pursuit is the invaluable role that employee performance plays in achieving organizational success. As businesses evolve, so too does the need to understand the multifaceted factors that influence and drive optimal employee performance. At the heart of this endeavor lies the concept of motivation-a powerful force that has been widely acknowledged as the key to unlocking the full potential of employees. This research paper delves into the intricate relationship between motivation and peak employee performance, unraveling the mechanisms through which motivation operates to catalyze individual and collective accomplishments within the workplace. By exploring the various theories, strategies, and empirical evidence surrounding motivation, this study aims to provide a comprehensive understanding of how organizations can harness motivation to foster an environment where employees consistently operate at their highest level, ultimately contributing to organizational excellence.

So we can say it is more important than ever to have motivated employees who are engaged in their work and who are willing to go the extra mile. When employees are motivated, they are more productive, more creative, and more likely to stay with your company.

Literature Review :-

There is a significant body of literature on motivation in the workplace. Some of the most well-known theories of motivation include :

Maslow's hierarchy of needs :-

Maslow's theory proposes that humans have a hierarchy of needs, from the most basic (physiological needs) to the most complex (self-actualization needs). Employees are motivated to satisfy their needs, and the higher the need, the stronger the motivation.

Herzberg's two-factor theory :-

Herzberg's theory divides motivators into two categories : hygiene factors and motivators. Hygiene factors are those that prevent dissatisfaction, such as pay and working conditions. Motivators are those that lead to satisfaction, such as achievement and recognition.

These are just a few of the many theories of motivation that have been proposed. The most effective way to motivate employees will vary depending on the individual and the situation. However, by understanding the different factors that can motivate employees, managers can create a work environment that is conducive to peak performance.

Methodology :-

A systematic literature review was conducted using reputable academic databases, scholarly journals, and books focused on motivation and employee performance. The search keywords employed included "motivation," "employee performance," "motivational theories," "motivational factors," and "motivational strategies." The review primarily considered studies and sources published within the past years. A large number of relevant sources were critically reviewed and analyzed to extract key findings and provide a comprehensive overview.

Job Performance :-

Job performance is important for a number of reasons. First, it can affect an employee's salary and promotion opportunities. Second, it can affect the company's bottom line. Third, it can affect customer satisfaction. Fourth, it can affect the morale of other employees.

Job performance is a measure of how well an employee is doing their job. It can be assessed in a number of ways, including the following :

- **Quantity of work :** The amount of work that an employee produces.
- **Quality of work :** The level of accuracy and thoroughness of an employee's work.

- **Timeliness :** How well an employee meets deadlines?
- **Collaboration :** An employee's ability to work effectively with others.
- **Problem-solving :** An employee's ability to identify and solve problems.
- **Initiative :** An employee's willingness to take on new challenges and go the extra mile.

Job performance can be influenced by a number of factors, including the employee's skills and abilities, motivation, support from managers and colleagues, and the work environment.

Managers can improve employee job performance by setting clear expectations, providing regular feedback, offering opportunities for growth and development, and creating a positive work environment.

Good job performance can have a number of benefits for both the employee and the company. For the employee, good job performance can lead to higher pay, more opportunities for advancement, and a more satisfying career. For the company, good job performance can lead to increased productivity, improved customer satisfaction, and a stronger bottom line.

Motivation :-

Motivation serves as the impetus that propels individuals into action. It is what makes us want to achieve our goals and meet our needs. Motivation can be influenced by a number of factors, including our personal goals, our beliefs about us, and our environment.

Motivation remains a powerful force that can shape the success of an organization. By recognizing the multifaceted nature of motivation and its impact on employee performance, organizations can design comprehensive strategies that inspire, engage, and sustain their workforce. Through effective leadership, tailored motivation approaches, and a commitment to employee well-being, organizations can unlock the full potential of their employees, leading to peak performance and mutual growth. In a dynamic and competitive business landscape, organizations that prioritize motivation will continue to reap the rewards of a motivated and high-performing workforce.

In the workplace, motivation is essential for job performance. Employees who are motivated are more likely to perform well at their jobs, to be engaged in their work, and to go the extra mile. There are a number of things that managers can do to motivate employees, such as setting clear goals and expectations, providing regular feedback, offering opportunities for growth and development, and creating a positive work environment.

Motivation is a key driver of human behavior. It is what propels us towards our goals, helps us overcome challenges, and achieve success. Motivation is important in many different areas of life, including personal development, education, and work.

Numerous diverse theories exist concerning the factors that drive individual motivation. Some

theories focus on intrinsic motivation, which is the desire to do something for its own sake. Other theories focus on extrinsic motivation, which is the desire to do something for a reward or to avoid punishment.

Both intrinsic and extrinsic motivation can be important for achieving goals. However, intrinsic motivation is often seen as more sustainable and long-lasting.

Motivational Theories :- Prominent motivational theories, such as Maslow's Hierarchy of Needs, Herzberg's Two-Factor Theory, and Self-Determination Theory, offer frameworks for understanding the psychological factors that drive motivation and influence employee performance. These theories highlight the importance of intrinsic and extrinsic motivators, as well as the need for autonomy, competence, and relatedness.

Intrinsic Motivation :- Intrinsic motivation, stemming from internal rewards such as personal satisfaction, growth, and a sense of purpose, has a profound impact on employee performance. Factors such as challenging work, opportunities for skill development, and meaningful tasks significantly enhance intrinsic motivation and, subsequently, performance.

Extrinsic Motivation :- Extrinsic motivators, including rewards, recognition, and incentives, play a crucial role in influencing employee performance. The effective utilization of extrinsic rewards should consider factors such as fairness, transparency, and individual preferences to optimize their impact on motivation and performance.

Goal Setting and Feedback :- Clear and challenging goals, coupled with regular feedback, positively impact employee motivation and performance. Well-defined goals provide direction, focus, and a sense of achievement, while feedback offers guidance and helps employees track their progress, fostering continuous improvement and enhanced performance.

Organizational Culture and Leadership :- A positive organizational culture and effective leadership practices are vital for fostering motivation and driving employee performance. Cultivating a supportive and inclusive work environment, promoting open communication, and providing inspirational leadership are key factors in motivating employees and enhancing their performance.

Employee Engagement :- Motivation and employee engagement are closely intertwined. Engaged employees, who feel connected to their work and the organization, exhibit higher levels of motivation, leading to improved performance. Organizations can foster engagement through employee involvement, recognition, and opportunities for growth and development.

Employee Well-being :- Addressing employee well-being is essential for sustaining motivation and optimizing performance. Factors such as work-life balance, job security, and a supportive work environment positively influence employee motivation, job satisfaction, and overall

performance.

Motivation and Its Impact on Job Performance :-

In today's competitive business environment, it is more important than ever for organizations to have motivated employees. Motivated employees are more productive, more engaged, and more likely to stay with their organization. They are also more likely to be innovative and creative, who can lead to new products, services, and processes that, can give the organization a competitive advantage. Motivation is what gets us going. It is the force that propels us towards our goals and helps us overcome challenges. In the workplace, motivation is essential for job performance.

When employees experience heightened motivation, they tend to exhibit increased levels of productivity, engagement, and creativity. Furthermore, this enhanced motivation contributes to prolonged periods of tenure within the organization. Job performance is the quality of work that an employee produces. It can be measured in terms of quantity, quality, timeliness, and accuracy.

There is a strong relationship between motivation and job performance. Employees who are motivated are more likely to perform well at their jobs. This is because they are more likely to be engaged in their work, to take initiative, and to go the extra mile.

Numerous factors contribute to motivating employees, with some of the most pivotal elements encompassing :

Clearly Defined and Ambitious Goals :- Employees thrive when they possess a comprehensive understanding of their objectives and the significance of their tasks. Striking a balance between challenge and manageability is essential for sustained motivation.

Consistent Provision of Feedback :- Employees benefit from regular and constructive feedback, aiding them in gauging their performance and identifying avenues for improvement. Timely, specific, and constructive feedback is crucial for fostering motivation.

Acknowledgment of Achievements :- Employee motivation is buoyed by the recognition of their dedicated efforts. This recognition can manifest in various forms, such as verbal commendation, awards, or tangible rewards, reinforcing their commitment.

Cultivation of Purpose :- Employees are galvanized by a sense of purpose, where their contributions contribute to a larger cause. The belief that their work holds significance beyond individual effort bolsters intrinsic motivation.

Here are some specific strategies that organizations can use to motivate employees :

Set clear and challenging goals- Objectives ought to possess the qualities of being specific, measurable, attainable, relevant, and constrained by a defined timeframe. They should also be challenging, but not impossible to achieve. When employees have clear and challenging goals, they

are more likely to be motivated to achieve them.

Provide regular feedback - Feedback should be specific, timely, and constructive. It should focus on the employee's performance, not their personality. Feedback should also be balanced, with both positive and negative feedback being given. When employees receive regular feedback, they are more likely to know how they are doing and what they can do to improve.

Recognize accomplishments - Recognition can be in the form of verbal praise, awards, or other tangible rewards. It is important to recognize employees for their accomplishments, both big and small. When employees are recognized for their accomplishments, they are more likely to be motivated to continue performing at a high level.

Create a positive work environment- It is a place where employees feel like they are part of a team and that their contributions are important. When employees feel like they are part of a positive work environment, they are more likely to be motivated to perform at their best.

Motivating employees is not always easy, but it is essential for organizational success. By following the strategies outlined above, organizations can create a motivated workforce that is more productive, engaged, and innovative.

In addition to the strategies mentioned above, there are a number of other things that organizations can do to motivate employees. These include :

Investing in employee development - Employees who are given the opportunity to learn and grow are more likely to be motivated and engaged in their work.

Creating a flexible work environment - Employees who have some flexibility in their work arrangements are more likely to be satisfied with their jobs and to be more productive.

Providing opportunities for advancement - Employees who see opportunities for advancement in their organization are more likely to be motivated to stay with the organization and to perform at a high level.

By taking these steps, organizations can create a motivated workforce that is more productive, engaged, and innovative. This can lead to a number of benefits for the organization, including increased profits, improved customer service, and a better reputation.

Conclusion :-

In conclusion, motivation is the key to unlocking peak employee performance. A motivated workforce is more engaged, committed, and productive, contributing significantly to an organization's success. By understanding the factors that influence motivation and implementing effective strategies to foster it, organizations can create an environment where employees are driven to excel, leading to mutual growth and achievement.

This comprehensive research paper establishes the critical role of motivation in enhancing employee performance. The findings emphasize the importance of intrinsic and extrinsic motivators, goal setting, feedback, organizational culture, leadership, employee engagement, and well-being in driving motivation and performance. By leveraging these insights, organizations can design motivational strategies tailored to their specific contexts, fostering a motivated workforce and ultimately improving overall performance. Recognizing the multifaceted nature of motivation, future research should continue to explore emerging theories and innovative practices to further enhance employee motivation and performance in the ever-evolving workplace.

References :-

- John.B.Miner.,March 2015,DOI:10.4324/9781315702018,ISBN: 9781315702018,Organizational Behavior 1: Essential Theories of Motivation and Leadership
- Huselid, M. A. (1995). The impact of human resource management practices on turnover,productivity, and corporate financial performance. Academy of Management.
- Christopher, M. (2005). Meaningful motivation for work motivation theory. Journal ofManagement Review.
- Coster, E. A. (1992). The perceived quality of working life and job facet satisfaction. Journal of Industrial Psychology.
- Ewen, R. B., Smith, P. C., & Hulin, C. L. (1966). An empirical test of the Herzberg two-factortheory. Journal of Applied Psychology.
- Graen, G. B. (1966). Motivator and hygiene dimensions for research and development engineers,Journal of Applied Psychology.
- Heider, F. (1958). The psychology of interpersonal relations. New York: John Wiley
- Hersey, P., & Blanchard, K. H. (1988). Management of organization behavior: utilizing human resource. Atlanta: Prentice Hall.
- Herzberg, F. (1966). Work and the nature of man. Cleveland: World Publishing Company.House, R. J., & Wigdor, L. A. (1967). Herzberg's dual factor theory of job satisfaction andmotivation: A review of the evidence and a criticism. Journal of Personnel Psychology.

Pankaj Kumar Singh (Research Scholar)
Address-Nai Sadak, Shastri Nagar Meerut-250004
Mob. 9045678887
E-mail- pnkjmba@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 51-59

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

संत कवि लिखमीदासजी महाराज की भक्ति भावना

दिनेश गहलोत

शोधार्थी, इतिहास विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर।

राजस्थान की पवित्र धरा अपने स्मरणीय कार्यकलापों के लिए संसार में प्रसिद्ध है। राजस्थान की भूमि को वीर प्रसूता कहा जाता है। परंतु इसके इतिहास पर दृष्टि डालें तो यह भूमि दानवीरों, शूरवीरों, संतो, देशभक्तों व साहित्यकारों की भूमि भी रही है। भारतीय वाड्मय में संत समुदाय का साहित्यिक योगदान अप्रतिम है। संत जीव को दिशा देने तथा मानव जीवन को सार्थक बनाने हेतु निरंतर प्रेरणा देते रहे हैं। इसीलिए सामाजिक उपादेयता की दृष्टि से वे समाज की अमूल्य धरोहर और विभूति है। संत चाहे किसी भी जाति में पैदा हुए हों वे समाज के सर्वप्रिय रहे हैं। ऐसे ही संत शिरोमणि श्री लिखमीदास जी महाराज थे जो माली समाज में पैदा होकर भी संपूर्ण मानव समुदाय में लोकप्रिय हुए हैं। उनकी भजन वाणी तथा तत्कालीन जागरण (सत्संग) इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। संत संप्रदाय के अंतर्गत आदि काल में अद्यावधि जैन, सिद्ध, नाथ, शाक्त, सगुण, निर्गुण शाखा के अनेक संत हुए हैं। इसी श्रृंखला में आधुनिक काल में लिखमीदास जी महाराज एक ऐसे गृहस्थ संत हुए हैं जो अपनी कर्त्तव्य परायणता, सादगी और वचनबद्धता के लिए विख्यात हैं। लोक देवता रामदेवजी उनके इष्ट देव रहें फिर भी वे सगुण तथा निुर्गण उपासना पद्धति से ईश्वरोन्मुख होने की प्रेरणा अपने भजनों से देते रहे हैं।

भक्ति से ओत–प्रोत ईश्वर के प्रति सच्ची निष्ठा रखने वाले संत श्री लिखमीदास जी का जन्म नागौर (अहिछत्रगढ) शहर के बड़की बस्ती, चैनार गांव में वि.सं. 1807 आषाढ़ सुदी पूर्णिमा, रविवार (19 जुलाई, 1750 ई. रविवार) को श्री रामूदासजी सोलंकी के घर श्रीमती नाथीदेवी की कोख से हुआ।[1] आपके पिता इसी ग्राम में कृषि कार्य करते थे। आपका परिवार धर्मपरायण परिवार था। आपके माता–पिता धार्मिक रूचि के होने के कारण उनका प्रभाव व संस्कार भी आपके हृदय को विचलित करते थे। आप हमेशा एक ही धुन ईश्वर के प्रति निष्ठा में लगे रहते थे। बचपन से आप गांव में होने वाले धर्म–कर्म और भक्ति के स्वाभाविक गुण समाविष्ट होने से आपकी वाणी, भक्ति, प्रेम व सरल स्वभाव के कारण हमेशा आप पूजनीय रहे।

कृषि कार्य करते हुए भी आप ईश्वर भक्ति में तल्लीन रहते थे। गुरू परम्परा के अनुसार नागौर जिले के ग्राम गौआ के निवासी संत श्री खींयाराम जी जो जाति से राजपूत थे को आपने अपना गुरू बनाया और उनकी छत्रछाया में ही आपके हृदय में ज्ञान–भक्ति की अलख जगाई। युवावस्था में आपका विवाह श्री परसाजी टाक की पुत्री चैनी देवी के संग हुआ। आपके दो पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्रों का नाम जगाराम और गेनदास तथा पुत्री का नाम गंगा था। आपके विवाह के बाद पिताजी रामुदास जी का साया उठ गया, परंतु आपकी माताजी पिताजी की तरह भक्ति में बराबर आपका मार्गदर्शन करती रही। आपकी 25 वर्ष की अवस्था में आपको मातृ सुख

भी नहीं रहा आपकी माताजी परम दिव्य ज्योति में विलीन हो गई।[2]

फिर भी आपकी ईश्वर भक्ति में कोई कमी नहीं आई गृहस्थ जीवन व ईश्वर भक्ति के तालमेल को बखूबी निभाते हुए आपने बहुत सीधा–सादा जीवन यापन किया। सौभाग्य से आपको समस्त भारत के संतों का सांनिध्य प्राप्त हुआ। चैत्र वदी 8 वि.सं. 1859, शीतला अष्टमी (27 मार्च 1802, शनिवार) को जोधपुर महाराजा भीमसिंह जी के समय प्रथम बार बाबा रामदेवजी महाराज के मेले का आयोजन भड़का कुआ वर्तमान बड़की बस्ती चेनार नागौर में किया गया, उसमें आपने बड़ी आत्मीयता से ईश्वरीय तत्व का भजनों द्वारा रस–पान किया। संत श्री को मारवाड़ के महाराजा श्री मानसिंह जी ने 'भक्त शिरोमणि' की उपाधि से विभूषित किया।[3]

प्रभु की रूचि भक्त की रूचि बन जाती है। तब व्यक्तिगत इच्छाओं का परित्याग होने लगता है। स्वामी की सेवा का सातत्स स्वामी और सेवक के बीच की दूरी को दूर करने लगता है और उसके परिवार का अंग बन जाता है। प्रभु मेरे पिता है, मैं उनका पुत्र हूँ, यह भावना दास्य भावना से अधिक आकर्षककारी तथा प्रभु के निकट लाने वाली होती है। जब साधना करता हुआ भक्ति के द्वारा पार करके सखाभाव को प्राप्त कर लेता है। इस भाव में दास का दूरत्व है, न पुत्र का संकोच भगवान में हेतुरहित, निष्काम एवं निष्ठायुक्त, अनवरत प्रेम का नाम ही भक्ति है ऐसी ईश्वर के प्रति सच्ची निष्ठा हो तो ईश्वर स्वयं भक्तों की सेवा में उपस्थित होते है। ऐसे ही परमश्रद्धेय संत श्री लिखमीदास के जीवन में भी चरितार्थ हुआ।

संत लिखमीदास जी ने भक्ति के माध्यम से प्रभु के नाम स्मरण पर बल देते हुए कहा कि केवल नाम जपने मात्र से ही मोक्ष मिल जाता है।

राम नाम निज धार के, मान राखे विश्वास।
भव सागर से जे तिरे, कहत माली दास।

संत लिखमीदासजी की भक्ति का माध्यम भजन एवं सत्संग का आयोजन यह सत्संग के माध्यम से अंतर्मन की शुद्धता का संदेश दिया –

लिखमा सतसंग करो नेम सूं, कटे करोड़ अपराध।
संगत करणा साध की, जो होय पुरा साध।।
सतसंग करा हेतु सूं, प्रेम सूं प्रसाद मंगाऊ।
गुरूजी वचन धर हृदय में, घणे हरख सूं गाऊं।।

समेकित रूप से ईश्वर भक्ति उनकी वाणी का प्रमुख विषय रहा। उन्होंने भक्त और उसकी भक्ति की तन्मयता, अटूटता के साथ–साथ साधना और उपास्य देव की प्राप्ति के सच्चे आयामों को उल्लेखित किया, जिन्हें निम्न शीर्षकों से विवेचित कर सकते हैं।

1. गुरू महिमा :–

लिखमीदास जी संत सान्निध्य से भाव विभोर हो उठते। स्वरूपराम जी, संत हरिरामजी से उन्हें आत्मप्रकाश मिला तथा गुरू रविदास, गोवर्धन जी से भक्ति की आस्था जगी। गुरु खींवजी के प्रति समर्पित होकर उन्होंने भजन वाणी की सर्जना की। आपने मानव जीवन में सदगुरु की कृपा होना मुख्य माना क्योंकि सच्चा गुरु ही साधक को मोह माया के बंधनों से छुटकारा दिला कर अज्ञान के अंधकार से मुक्त कर सकता है। गुरु कृपा से ही उन्हें आत्म साक्षात्कार हुआ।

दया करी गुरु दुवध्या मेटी,
मिट गया भर्म कर्म किया काने
सत् शब्दां में लागे विचार।।

इनका मानना था कि गुरू की कृपा से ही जीवात्मा में ईश्वर प्रेम रस आप्लावित होता है।[4]

सतगुरू हम पर रीजिया, किया एक प्रसंग।
उलटया बदल प्रेम का, भीज रहया सब अंग।।

उन्होंने बताया कि सांसारिक भ्रम से छुटकारा केवल गुरु का विश्वास ही दिला सकता है।

राम नाम ले ता रहो, गुरु दिया विश्वास,
भवसागर को भय मिटै, यूं कहें लिखमीदास।।

2. आराध्यदेव :-

लोक देवता रामदेवजी उनके आराध्य रहे जिनको अवतारी पुरुष स्वीकार करते हुए उन्हें अलख, अविनाशी तथा घटघट वासी परमात्मा माना। लिखमीदास जी की सहज, सरल भक्ति से अभिभूत होकर कृपालु रामदेवजी ने कई बार अलोकिक करिश्मों से उन्हें चमत्कृत किया। रामदेवजी के चमत्कारी व्यक्तित्व की विशद् चर्चा उनकी वाणी में हुई है।[5] आपने पौराणिक संदर्भ देखकर रामदेवजी के प्रति अनन्य और एकनिष्ठ भक्ति की।

पर दुख कारण पर उपकारी, सिम्राय बाता सारी।
पीर पदवी पर्चा सूं पाई, कर ही कृष्ण मुरारी।।

जनश्रुति है कि भक्तवत्सल रामदेवजी ने भदाणा में लिखमीदास जी का रूप धारण कर जागरण किया। यहां तक कि अमरपुरा में खेती में पाणत भी। यह सब रामदेवजी ने भक्त का विश्वास कायम रखने हेतु किया।

3. तत्व चिंतन :-

सगुण भक्ति की आराधना करते हुए आपने परमात्मा को निर्गुण, निराकार माना जो साधना और रहस्यवाद से प्रभावित है। आपने दार्शनिक चिंतन में विधि ..निषेध, कर्तव्य...अकर्तव्य पर जोर दिया। साथ ही साधक के शुद्ध आचरण पर बल देकर गुरु कृपा से प्राप्त ज्ञान से जीवन को सार्थक बनाने की प्रेरणा भी दी है।

घर घर सुर्ता फिरे भटकती,
पराई वस्तु मत हेरो रे वीरा।
गुरु खींवजी लिखमो बोले,
सीधे अमरापुर जावे रे वीरा।।[6]

(क) इन्द्रिय निग्रह पर जोर :- आप का मानना है कि साधक बनकर विषयों को नियंत्रित करने पर ही परमात्मा मिल सकते हैं वाणी में कहा है –

भूला मनवा फिरै भटकता,
पर त्रिया सूं राखे हेत।
चंचल चोर बसे काया में,
किण विद प्रसन्न देऊ।

वह कहते थे कि सांसारिकता से मुक्त होने के लिए सचेत होना जरूरी है –

हंसला चेल चलो मेरा भाई।
चेत चलोला तो पार लगोला,
भवसागर रे मांही।
हंसला चेत चलो मेरा भाई।।[7]

व्यक्ति के हृदय में धैर्य तभी समा सकता है जब भौतिक शरीर को तपस्या से तपाया जाए और मोह ममता को मार दिया जाए –

जरणा ने जारो, ममता ने मारो,
मांहिल में राखो धीरज धजा।।

(ख) ब्रह्म :– ईश्वर निर्गुण एवं परब्रह्म है ;

ब्रह्म अवगति अलख अतला, एक अनूप।
अजर अमर सो अचल, निज चिदानंद सुह रूप।।

ईश्वर जड़ चेतन में ही नहीं अपितु मानव शरीर में भी विद्यमान है। वे अपनी भजन वाणी में कहते हैं –

बाहर भीतर जड़ चेतन बिच, रूप रेख नहीं न्यारा।
शक्तिस्वरूप अरूप अलख है, काया बिच करतारा।[8]

(ग) जीव :– जीवात्मा परमात्मा से विलग होकर भटक रही है। कई नारकीय अनुभवों से गुजरते हुए परमात्मा को पाने की कोशिश करती है –

नो महीनो ने भुगति नारगी, नित उठ सिवरिया साई।
बाहर आय भूल गयो भगवत, चूक चाकरी मांही।।

जीव चेतना के माध्यम से प्रेमानुभूति से परमात्मा को पाने का उपक्रम करना चाहिए। संत कहते है –

प्रेम पाण सू पाय ले, पांच पुरुष मिलाय,
तुर्गुण तुर्पण चाढ़ ले, क्षमा खूंटे बांध।
सूरत निरत दोय दोरड़ी, चेतन चकरी चाढ़।।

(घ) संसार :– संसार नाशवान है जल, वायु, मिट्टी, अग्नि, आकाश से बना यह पंचतत्व का शरीर क्षणभंगुर है। जिसमें सत रज तम गुणों का समावेश है जिसके प्रति मोह और आसक्ति उचित नहीं है। संत ने कहा –

मोह जाल काचा सब कूड़ा, दे दिल भीतर फेरा।
कुटुंब सब स्वारथ का सीरी, कर रहया हेत घणेरा।।
आखर अंत अकेला जावे, कहो कौन संगी तेरा।।

इसीलिए संत ने संसार को हाट का मेला बताया है –

ओ संसार हाट को मेला,
झिमिल घाट मचाना।।[9]

यह संसार स्वार्थ से बंधा है –

काका बाबा थारे भाई भतीजा, सब स्वारथ रा होई।

अतः पांच तत्वों से बना मानव का त्रिगुणधारी शरीर नाशवान है। भजन में वह कहते हैं –

एक बूंद सूं तीनऊ पाया, हाड़ मांस अरू लोई।
पांच तत्व गुण तीन भेला, डोरे पवन रे पोई।
माता–पिता कामण सुत सागे, मोह माया लिपटाई।
मकड़ी जाल मांड मुंडी उलज्यो, फिरै आपदा माही।।[10]

अतः इंसान माया के मकड़ी जाल में नहीं उलझे क्योंकि माया इंसान को गाफिल या पागल कर देती है।

रे गाफल क्या जाग्या क्या सोया।
रैन सोय सपना में भख्या,
दिन दोजख में खोया।।

संत ने माना है कि जो ज्ञानी है वो परमेश्वर का स्मरण करते हैं तथा अज्ञानी सांसारिकता में लिप्त है–

चतुर पुरुष सायब सिंवरै, और पुरुष चिड़िया।।

यहां सायब ईश्वर का तथा चिड़िया सांसारिकता के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

(च) अद्वैत, द्वैत विचार :– ईश्वर अविकारी, अविनाशी है उक्ति के आधार पर आपने शरीर माता–पिता को एक ईश्वर का अंश माना है तभी वह प्रश्न करते है –

संतां बीज कहां ते आयो

इतना ही नहीं वह अद्वैत में द्वैत की स्थिति का अनुभव भी करवाते हैं –

हरि एक एक कर जाणे, दीसे दुविधा न्यारी।
माया को विस्तार ब्रह्म बिच, रचना कुदरत थारी।।

व्यापक ब्रह्म भ्रम सूं भला, सो कर्म अधिकारी आपकी धारणा है –

ईश्वर व्यापक सर्वत्र समाना।

(छ) आत्मज्ञान :– संत की धारणा है कि चित में सत्वोद्रेक होने पर ही परम तत्व की भक्ति हो पाती है। साधक अंतःकरण में अनुभूति करके परमेश्वर से आत्म साक्षात्कार कर लेता है। शरीर के भीतर परम तत्व अवस्थित है। एक बुढ़िया को इसकी अनुभूति करवाते हुए लिखमीदास जी महाराज कहते है –

अरूप ओलखो निजसार, संता घट उघर्या नैण विचार।
एडी जठै ओंकार बीराजै, गोमद गिरिया माही
जांघ जठै जगदीश बिराजै, स्वर समद कड़िया माही।
नाली जठै नारायण बिराजै गोरख गोंडा माही।।
कंठ कमल जीवात्मा बासा, गुरूदेव भ्रकुटी माही।[11]

उनका अभिप्राय है कि शरीर के अंग प्रत्यंग में ईश्वर विद्यमान है।

(ज) साधनात्मक रहस्यवाद :– आपने जीवात्मा और परमात्मा के मिलन को साधनात्मक रहस्यवाद में प्रस्तुत किया है जो योग साधना का ही रूप है। साधक की इडा पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियां सहस्त्रार में जाकर एकाकार हो जाती है वही त्रिवेणी संगम है –

त्रिवेणी के रंगमहल में, सतगुरू अमी बताया।

काया बाड़ी सींचे माली, बंब नाल रस लाया।
अजब फूल बढ़िया बाड़ी में, फल संचीया ने पाया।।

यहां प्रतीकों के माध्यम से साधना स्थिति दर्शाई गई है। संत कहते है कि कुंडली जागृत होने पर ही ज्ञान दैदीप्यमान होता है –

निवण निवण चांद सूरज ने, सकल उजाला करिया।
अमृत बूंदा बरसण लागी, मानसरोवर भरिया।।
साधु भाई बिना निवण कुण तीरया।।

जीव जन्म कुंडली जमा कर स्वाधिष्ठान चक्र तथा शून्यचक्र में समाधिस्थ होता है तब आत्मा की प्यास अमृत स्त्रावित होने से बुझती है। वह कहते हैं –

उलटी गंगा बंक ब्रह्मांड में, सूरत सुंदरी जागी।
इडा पिंगला सुखमणा सज, सुख सेज धुन लागी।
दाता तणा दिवाला देख्या, रविचंद्र भैया चिरागी।
सायर नीर अथंग किण थाग्या, पी पक्षी तिस भागी।[12]

अर्थात् साधक की कुंडली षट् चक्रों में भेदकर ब्रह्मरंध्र में पहुंचती है। तब अलख ज्योत के दर्शन होते हैं।

यह साधनात्मक रहस्यवाद का सूचक है।

4. भक्ति भावना :-

आपकी अवतारवाद की धारण सगुण भक्ति की पुष्टि करती है। रामदेवजी इनके आराध्य है :–

हो, अजमल सुत सांचौ धणी
श्री द्वारको रो नाथ, सदा सोरा राखसी।।

लिखमीदास जी सात्विक भक्ति में निष्णात थे। झुंझाले जाते समय गाड़ी की धुरी टूट जाने पर आपने गुंसाई जी का आह्वान किया पौराणिक कथाओं के आधार पर अवतारवाद की पुष्टि की –

बावन होए बल छलबा आयो, भौम मांगवा तांई।।

आप वीतरागी संत थे तथा सहज भक्ति से ईश्वर की उपासना करते। जनश्रुति है कि आप जैसलमेर पहुंचे तो सूखे बाग में जल छिड़कने पर फुलवारी लहराने लगी तब वहां के राजा उन्हें उपहार देने लगे तो संत बोले –नहीं चाहिए ओ राजा, आयो प्रेम कारणे।

रामदेवजी पर उनकी अटूट आस्था थी वह कहते हैं –

म्हारी सरम राज रे सरण, कलम राखजो जन्म सुधार।।

(क) भक्ति में नाम स्मरण का महत्व –

प्रभु नाम की महिमा अपरंपार है जिसने प्रभु का नाम स्मरण किया प्रभु ने उसे सद्गति दी। प्रहलाद के नाम स्मरण पर प्रभु ने भक्तों की रक्षा की –

पार ब्रह्म गुरु प्रकट हुआ, खडग खंभ के माही।
जीण सिवरिया सत अनंत, उघारिया सो बोले घट माही।

इसमें ओंकार की सर्वव्याप्ति है भक्ति में ओम शब्द नाद है जो नाम स्मरण का आदि अक्षर है। ईश्वर भौतिक संसाधन में नहीं अपितु हृदय नाद में है –

संता भाई नहीं मस्जिद नहीं मंदिर में।
हद बेहद दोनों तें दरसे, ओलखो अक्षर में।।[13]

यहां हद प्रत्यक्ष तथा बेहद अप्रत्यक्ष के सूचक हैं अर्थात् ईश्वर न साकार है न निराकर अपितु शब्द नाद में समाया है। अतः नाम उच्चारण अक्षय भंडार है जिसका जाप निरंतर करने की संत प्रेरणा देते है –

अमल एक राम नाम का कीजै, जिसको लेवत मगन रहीजै।
डोढा दूणा करो चौगणा, लिया है तो फैर लीजै।।

संत की भक्ति का एक स्वरूप प्रेमाभक्ति भी है जिसमें प्रियतम ईश्वर को रिझाने की भरपूर चेष्टा जीवात्मा करती है –

कुंकु केसर रा थाल मंगाऊं, घर आंगण निपजाऊं।
प्रेम प्रीत रा थाल मंगाऊं, भाव भोजन बणाऊं।
हिंगलु पागा कर ढ़ोल्या ढलाऊं, सीरख पथरना बिछाऊं।।

इन पंक्तियों में जीवात्मा रूपी दुल्हन परमात्मा रूपी प्रियतम से सुखद मिलन हेतु आतुर होने का भाव बोध है।

सदाचार लोकाचार की प्रस्तुति :-

लिखमीदासजी ने अपनी भजन वाणी में विभिन्न प्रसंगों को लेकर लोकमंगल भाव व्यक्त किया है –

है विश्वास साध की सेवा, जब देवा दरसंदा,
भीड़ पड़या भगता रे भेलो, संकट मेटा सांई।

ईश्वर लोकमंगल हेतु दयालु है।
सादगीपूर्ण जीवन शुद्धाचरण से शरीर नीरोग रहता है।
सूक्ष्म भोजन खावजो, पीजो निर्मल नीर।
जप करो हरी नाम का, साजो राख शरीर।।

लोकाचार की शिक्षा देते हुए संत कहते हैं –

कूड़ कुबध काया सूं टालो, भजन करो मारा भाई।
निरखो ब्रह्म निवालों निर्भय, इण विध होय भलाई।
क्षमता रो खड़क ले भवगढ़ भेलो, डेठ किम हारो मेरा भाई।।[14]

संत का विश्वास है कि सदाचार को जीवन में धारण कर मानव जीवन को सफल बना सकता है –

अंग शील संतोष ज्ञान गरीबी, गहरा रहे संमद माही।
समदृष्टि सकल विध जाणे, इष्ट अनेक एक सांई।।

5. धार्मिक समन्वय :-

आपने विभिन्न धर्मों के प्रति समादार भाव रखते हुए परमेश्वर को भी विभिन्न रूपों में देखा है।

दरगाह में पीर मक्का में अल्ला, जुंजाले में गोसाई।

पेलो पांव दिया परमेश्वर, संत झूंझाले मांही।।

इनकी वाणी में धार्मिक समन्वय समाया हुआ है ——

रामदेव तू रहमान पार बिरम

थारा करूं बखाण।।

आपने सगुण और निर्गुण के साथ धार्मिक समन्वय का भाव भी रखा।

6. आडम्बर पर तीखा व्यंग्य :-

संत ने कथनी और करनी में अंतर रखने वालों को धूर्त माना है। भक्ति का आडम्बर दिखाने वाले लोग समाज में निंदनीय है। वह कहते है :—

भगवान पहरे राख रमावै, माथै तिलक सिंदूरा।

माया मोह लिया संग डोले, काम क्रोध में पूरा।।

पढ़िया वेद पुराणा बांचे, एलम में भरपूरा।।

ऐसे ढोंगियों का जीवन बेकार माना है। ठीक इसी प्रकार मुस्लिम वर्ग को भी आडम्बर से दूर रहने की चेतावनी इन शब्दो में दी है —

अब तुम सिंवरो नबी रसूला,

रोजा राखे निवज गुजारे।

मीटीया न मन का मेला।।

उनका मानना है कि अज्ञान के कारण आडम्बर प्रदर्शन होता है अतः सच्ची निष्ठा और भक्ति से जीवन संवारना चाहिए।[15]

लिखमीदास जी कवि होने के साथ संत, महात्मा व महान समाज सुधारक थे। उनकी काव्य—कृतियां हमारे लिये प्रेरणादायी व लाभकारी है। उनके गृहस्थी में रहकर भी समाज में सुधार के कार्य प्रशंसनीय है। वास्तव में लिखमीदास जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी व महान शिक्षाविद् थे। भले ही वे पढ़े लिखे ना हो धर्म व समाज को अपना पूरा जीवन देने वाले संत शिरोमणि लिखमीदास का व्यक्तित्व व कृतित्व प्रेरणादायी होने के साथ—साथ समाज के लिए गहन अध्ययन व शोध का विषय है।

संदर्भ :-

1. बिश्नोई, सोनाराम; — बाबा रामदेव इतिहास एवं साहित्य—2016, पृ. 126
2. सोलंकी, मदनसिंह; — प्रगतिशील सैनिक क्षत्रिय—1997, पृ. 09
3. परिहार, आनन्दसिंह; — राजस्थान के संत शिरोमणि—2021, पृ. 36
4. वही, पृ. 56
5. बिश्नोई, सोनाराम; — बाबा रामदेव इतिहास एवं साहित्य—2016, पृ. 126
6. साक्षात्कार श्री केवलदास वैष्णव (प्रसिद्ध मारवाड़ी भजन गायक) से प्राप्त जानकारी के अनुसार।
7. साक्षात्कार श्री केवलदास वैष्णव (प्रसिद्ध मारवाड़ी भजन गायक) से प्राप्त जानकारी के अनुसार।
8. परिहार, आनन्दसिंह; — राजस्थान के संत शिरोमणि—2021, पृ. 58

9. वहीं, पृ. 58
10. सिंहानिया, रघुनाथ प्रसाद; – मारवाड़ी भजन सागर, 1990, पृ. 90
11. वहीं, पृ. 92
12. वहीं, पृ. 93
13. परिहार, आनन्दसिंह; – राजस्थान के संत शिरोमणि–2021, पृ. 61
14. परिहार, आनन्दसिंह; – राजस्थान के संत शिरोमणि–2021, पृ. 62
15. बिश्नोई, सोनाराम; – बाबा रामदेव इतिहास एवं साहित्य–2016, पृ. 127

दिनेश गहलोत
व्याख्याता (इतिहास) रा.उ.मा.वि. बासनी तम्बोलिया, जोधपुर।
Mobile - 9783437797
Email- dineshgehlot1414@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 60-72

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के व्यक्तियों की जीविकोपार्जन में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की भूमिका : उज्जैन जिले के विशेष सन्दर्भ में

नेहा राठौर, शोधार्थी
डॉ. जी.एल. खांगोड़े, निर्देशक, सहायक प्राध्यापक
(वाणिज्य), शासकीय माधव कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश

मुख्य शब्द :-

निर्धन, सार्वजनिक, जीवनोपयोगी, अत्यावश्यक, जीविकोपार्जन, पुनर्निर्मित, आपूर्ति, सुव्यवस्थित, निगरानी, हाउस होल्ड,, रणनीति, व्यावसायिक, असक्षम, प्रणाली, विशिष्ट, समावेशी, मानदंड, प्राथमिकता आदि।

सारांश :-

उज्जैन मध्य प्रदेश राज्य का धार्मिक, पर्यटन एवं व्यावसायिक दृष्टि से एक अति महत्वपूर्ण जिला है, जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली केंद्र एवं राज्य सरकार के सम्मिलित प्रयासों से सुव्यवस्थित संचालित हो रही है, जिसका लाभ जिले के लाखों पात्र परिवारों को प्राप्त हो रहा है, सार्वजनिक वितरण प्रणाली को ही पुनर्निर्मित सार्वजनिक वितरण प्रणाली तथा इसे ही लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली कहा जाता है।

इस प्रणाली द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों को जीवनोपयोगी खाद्यान्न का वितरण जिले में स्थापित 792 उचित मूल्य की दुकानों के माध्यम से किया जा रहा है, इसका प्रबंधन एवं निगरानी का कार्य जिले के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग, निगरानी समिति एवं अन्य सहयोगी विभागों के निर्देशन सुनियोजित ढंग से किया जा रहा है।

प्रस्तुत अध्ययन में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत चयनित पात्रता की श्रेणी अंत्योदय अन्न योजना (AAY) एवं प्रायोरिटी हाउस होल्ड (PHH) के अंतर्गत कुल 275474 राशन कार्ड जारी है जिसमें 1186170 सदस्य इस योजना का लाभ ले रहे है इस प्रकार इस अध्ययन में आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के व्यक्तियों की जीविकोपार्जन में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की भूमिका का उज्जैन जिले के विशेष सन्दर्भ में विस्तृत अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना :-

प्रत्येक मनुष्य को जीवनयापन करने के लिए अत्यावश्यक वस्तुओं के अंतर्गत भोजन, वस्त्र एवं आवास तीन सबसे महत्वपूर्ण चीजों की आवश्यकता होती है और इन तीनों में से भी मनुष्य को जीवित रहने के लिए

सबसे अधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता भोजन अर्थात खाद्य पदार्थों की होती है किन्तु बढ़ती महंगाई के दौर में आर्थिक रूप से कमजोर एवं निर्धन वर्ग के व्यक्तियों द्वारा अपने जीविकोपार्जन के लिए खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति करना कठिन कार्य हो गया है, ऐसे में कोई भी व्यक्ति भोजन की कमी के कारण भूखा न रहे इसलिए सरकार द्वारा राज्य के सभी वर्गों के आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिए भोजन की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उचित मूल्य पर जीवनोपयोगी सामग्रियों के समान वितरण के लिए देशभर में सार्वजनिक वितरण प्रणाली को लागू किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्य प्रदेश के उज्जैन जिले के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के व्यक्तियों की जीविकोपार्जन में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की भूमिका का अध्ययन किया गया है।

शोध विषय का चयन :-

बढ़ती महंगाई के दौर में उज्जैन जिले के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के व्यक्तियों के प्रति शोधार्थी के मन में चिंतन भाव एवं सार्वजनिक वितरण प्रणाली का उज्जैन जिले में क्रियान्वयन का विश्लेषण तथा उज्जैन जिले के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के व्यक्तियों की जीविकोपार्जन में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की भूमिका अध्ययन करने के उद्देश्य से शोधार्थी द्वारा शोध विषय का चयन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

1. उज्जैन जिले के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के व्यक्तियों की जीविकोपार्जन में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की भूमिका का अध्ययन करना।
2. उज्जैन जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के क्रियान्वयन एवं संचालन का अध्ययन करना।
3. जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत कार्यरत उचित मूल्य दुकानों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

शोध प्रविधि, समंको का संकलन तथा शोध क्षेत्र :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन को पूर्ण करने के लिए विश्लेषणात्मक शोध अध्ययन विधि के साथ यथा स्थान आवश्यकतानुसार औसत, सांख्यिकी तथा प्रतिशत विधि का प्रयोग कर शोध विषय से संबंधित विभिन्न वेबसाइटों, प्रकाशित शोध पत्र, अप्रकाशित शोधकार्य, सर्वेक्षण रिपोर्ट, समाचार पत्र, पत्रिकाएं, शासकीय एवं अशासकीय प्रकाशन आदि का अध्ययन एवं विश्लेषण कर प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको का संकलन किया गया है तथा शोध क्षेत्र के रूप में उज्जैन जिला चिह्नित किया गया है।

समस्या :-

किसी भी शोध कार्य को करते समय शोधार्थी के सम्मुख अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होती है जिसमें प्रमुख रूप से क्षेत्र का चयन करना, समंकों का संकलन, शोध विषय तथा शोध प्रविधि का चयन, आदि प्रमुख होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा शोध विषय के रूप में उज्जैन जिला तथा शोध विधि विश्लेषणात्मक विधि तथा प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको के संकलन के लिए विभिन्न वेबसाइटों, प्रकाशित शोध पत्र, अप्रकाशित शोधकार्य, सर्वेक्षण रिपोर्ट, समाचार पत्र, पत्रिकाएं आदि का प्रयोग कर समस्या का समाधान किया गया है।

शोध परिकल्पना :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं निम्नानुसार है :–

1. उज्जैन जिले के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के व्यक्तियों की जीविकोपार्जन में सार्वजनिक वितरण प्रणाली अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है।
2. सार्वजनिक वितरण प्रणाली के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु पर्याप्त संख्या में उचित मूल्य की दुकानें विद्यमान है।
3. उज्जैन जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली का प्रभावी क्रियान्वयन हो रहा है।

शोध क्षेत्र का सामान्य परिचय :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा शोध क्षेत्र के रूप में उज्जैन जिले का चयन किया गया है जो कि मध्य प्रदेश राज्य का एक विशालतम जिला है। कला संस्कृति एवं धार्मिक आस्था के केंद्र के रूप में उज्जैन जिले की पहचान पूरे विश्व भर में है। उज्जैन स्थित महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग धार्मिक आस्था के साथ साथ पर्यटन के दृष्टिकोण से भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल है जिसके कारण उज्जैन जिले का व्यावसायिक विकास एवं विस्तार निरंतर होता जा रहा है। जिले का मुख्य व्यवसाय कृषि है जिसमें मुख्य रूप से गेहूँ, चना एवं सोयाबीन की खेती शामिल है। जिले र्वतमान में 6091 वर्ग किलोमीटर है। वर्तमान जनसंख्या 1986864 है जिसमें पुरुष 1016289 तथा महिलाओं की संख्या 970575 है तथा यहाँ की प्रमुख बोले जाने वाली भाषा हिंदी है, उज्जैन जिला 11 तहसील 6 विकास खंड तथा 609 ग्राम पंचायतों में विभाजित है।

शोध विषय का परिचय :–

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा शोध विषय के रूप में आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के व्यक्तियों की जीविकोपार्जन में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की भूमिका–उज्जैन जिले के विशेष सन्दर्भ में किया गया है जिसका क्रमशः विश्लेषण निम्नानुसार है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :–

1. सार्वजनिक वितरण प्रणाली को पहली बार द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान एक राशन वितरण रणनीति के रूप में अपनाया गया था।
2. सन 1960 के दशक से पहले सार्वजनिक वितरण प्रणालीके माध्यम से वितरण के लिए आमतौर पर खाद्यान्न का आयात आवश्यक था।
3. भारत सरकार ने घरेलू आय और खाद्यान्न के भण्डारण को बढ़ावा देने के लिए FCI और कृषि मूल्य आयोग का गठन किया था यह 1960 के दशक की खाद्य कमी को पूरा करने के लिए किया गया था।
4. यह मूल रूप से उपभोक्ताओं के लिए किसी निर्धारित लक्ष्य के बिना एक सामान्य पात्रता कार्यक्रम था, लेकिन 1970 के दशक तक, यह सब्सिडी वाले खाद्य वितरण के लिए एक सार्वभौमिक योजना के रूप में विकसित हुआ।
5. पहले से मौजूद PDS को मजबूत और सुव्यवस्थित करने के लिए संशोधित PDS या RPDS को जून 1992 में पेश किया गया इसका उद्देश्य पहले से मौजूद PDS को मजबूत और सुव्यवस्थित करना था तथा दूरस्थ, पहाड़ी और दुर्गम क्षेत्रों में इसकी पहुंच को बढ़ाना था।

6. जून 1997 में भारत सरकार ने वंचितों वर्गों की मदद के लिए एक लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली की शुरुआत की।

7. TPDS के लाभार्थियों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया, पहली श्रेणी में गरीबी के स्तर (BPL) से नीचे रहने वाले लोग शामिल हैं और दूसरी श्रेणी में गरीबी रेखा (APL) के ऊपर जीवित रहने वाले लोग शामिल थे।

8. लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत दिसंबर 2000 में अंत्योदय अन्न योजना (AAY) की शुरुआत की गई जिसने गरीबी के स्तर (BPL) से नीचे रहने वाले लोगों की आबादी के बीच भूख को समाप्त करने पर ध्यान केंद्रित करने का सबसे महत्वपूर्ण कार्य किया है।

9. भारत सरकार ने वर्ष 2013 में वंचितों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम को लागु किया गया इसके अंतर्गत कम आय वाले परिवारों को अनिवार्य पात्रता के रूप में खाद्यान्न प्रदान करने के लिए ज्व्ै का अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जो आज तक अनवरत जारी है।

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग से आशय :-

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग से आशय ऐसे परिवारों से है जो अपने दैनिक जीवन की सामान्य आवश्यकता की पूर्ति करने में असक्षम होते हैं तथा दिहाड़ी मजदूरी कर जैसे–तैसे अपना जीवनयापन करते हैं अर्थात सामान्य शब्दों में कह सकते हैं कि ऐसे वर्ग के लोग जो अपनी सामान्य जीवन उपयोगी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असक्षम होते हैं, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग कहलाते है।

प्रदेश में गरीबी रेखा या निर्धनता रेखा (poverty line) आय के उस स्तर को कहते हैं जिससे कम आमदनी होने पर व्यक्ति अपनी आर्थिक ज़रूरतों को पूरा करने में असमर्थ होता है।

देश में साल 2014 से ग्रामीण इलाकों में 32 रुपए प्रतिदिन और शहरों में 47 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से गरीबी रेखा तय की गई थी।

वही सरकारी भाषा में ऐसे परिवार जिनकी सकल वार्षिक आय 8 लाख रुपये से कम है, उन्हें आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के रूप में माना गया है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली से आशय :-

निर्धन एवं गरीब परिवारों को सस्ती कीमतों पर खाद्यान्न उपलब्ध कराने के उद्देश्य से भारत में सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) की शुरुआत की गई अर्थात यह केंद्र सरकार की एक योजना है जिसके द्वारा रियायती दरों पर आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों को खाद्यान्न का वितरण एवं प्रबंधन किया जाता है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली केन्द्र और राज्य सरकारों की संयुक्त जिम्मेदारी के अधीन चलाई जाती है जो कि पिछले कुछ वर्षों में देश में खाद्य अर्थव्यवस्था के प्रबंधन के लिए सरकार की नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है।

यह योजना पहली बार 14 जनवरी 1945 को द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान शुरू की गई थी, और जून 1947 में वर्तमान स्वरूप में शुरू की गई थी।

अर्थात सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) एक भारतीय खाद्य सुरक्षा प्रणाली है। भारत में उपभोक्ता मामले सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के अधीन तथा भारत द्वारा स्थापित और राज्य संकायों के साथ संयुक्त रूप

से भारत के गरीबों को सब्सिडी वाली खाद्य वस्तुओं का वितरण किया जाता है।

अर्थात सार्वजनिक वितरण प्रणाली केन्द्र और राज्य सरकारों की संयुक्त जिम्मेदारी के अधीन चलाई जाती है। केन्द्र सरकार ने भारतीय खाद्य निगम के माध्यम से खाद्यान्नों की खरीद भंडारण ढुलाई और अत्यधिक मात्रा जिम्मेदारी ली है। राज्य के अंदर आवंटन लक्षित परिवारों की प्रचलनात्मक जिम्मेदारियां राज्य सरकार की होती है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली के मुख्य अंग :-

केंद्र सरकार, राज्य सरकार, भारतीय खाद्य निगम, अधिकारी–कर्मचारी, लाभार्थी, उचित मूल्य की दुकान, सहकारी उपभोक्ता भण्डार, आदि।

लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (टीपीडीएस) :-

वर्ष 1992 में PDS (सार्वजनिक वितरण प्रणाली) विशेष रूप से दूर–दराज, पहाड़ी, दूरदराज और दुर्गम क्षेत्रों में ध्यान केंद्रित करते हुए RPDS आरपीडीएस (पुनर्निर्मित सार्वजनिक वितरण प्रणाली) बन गया तथा वर्ष 1997 में RPDS, TPDS (लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली) बन गया जिसके अंतर्गत रियायती दरों पर खाद्यान्न के वितरण के लिए उचित मूल्य की दुकानों की स्थापना की।

इस प्रकार भारत सरकार ने देश के गरीबों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए जून, 1997 में लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली शुरू की, लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत राज्य सरकार गरीबों की पहचान करउचित मूल्य दुकानों पर खाद्यान्नों का आवंटन कर पारदर्शी और जवाबदेह तरीके से वितरण कर इस योजना का प्रभावी क्रियान्वयन करती है, सार्वजनिक वितरण प्रणाली के विकास क्रम को निम्न चार्ट द्वारा समझा जा सकता है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली	**पुनर्निर्मित सार्वजनिक वितरण प्रणाली**	**लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली**
PDS	RPDS	TPDS

सार्वजनिक वितरण प्रणाली के उद्देश्य :-

1. आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के उपभोक्ताओं को रियायती कीमतों पर आवश्यक उपभोग की सेतुएँ प्रदान करना ताकि मूल्य वृद्धि के प्रभावों से उन्हें बचाया जा सके तथा नागरिकों में न्यूनतम पोषण की स्थिति को भी बनाए रखा जा सके।
2. उचित मूल्य पर खाद्यान्न के वितरण के माध्यम से खाद्यान्न की कमी का प्रबंधन करना।
3. आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों को पारदर्शिता पूर्वक समान रूप से जीवनोपयोगी खाद्यान्न का वितरण करना।
4. खाद्यान्न सुरक्षा को सुनिश्चित करना।
5. आवश्यक वस्तुओं के वितरण में समाजीकरण लागू करना।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली का महत्व :-

सार्वजनिक वितरण प्रणाली न केवल खुले बाजार में आवश्यक वस्तुओं की कीमतों को नियंत्रण में रखती है बल्कि उनके सामाजिक वितरण को भी सुनिश्चित करने में मदद करती है तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत खाद्यान्न एवं अन्य जरूरी वस्तुओं को उपलब्ध कराया जाता है, इसलिए इसके द्वारा कुपोषण की समस्या से भी निपटा जा रहा है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली प्रदेश में खाद्य अर्थव्यवस्था के प्रबंधन के लिए सरकार की

नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है तथा समान रूप से पारदर्शिता पूर्वक खाद्यान्न का वितरण करने में सहायक एवं मूल्य वृद्धि के प्रभावों से आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों को बचाने में कारगर साबित होती है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली क्रियान्वयन :–

सार्वजनिक वितरण प्रणाली का क्रियान्वयन संपूर्ण भारत में केंद्र तथा राज्य सरकार मिलकर करती है केंद्र सरकार द्वारा राज्यों को खाद्यान्न एवं अन्य वस्तुओं का आवंटन किया जाता है एवं इन वस्तुओं का मूल्य भी तय किया जाता है। राज्यों को केंद्र द्वारा निर्धारित मूल्य में परिवहन व्यय सम्मिलित करने का अधिकार है। इस योजना के अंर्तगत वितरित की जाने वाली वस्तुओं का परिवहन, भण्डारण, वितरण, और निरीक्षण राज्य सरकार का होता है राज्य सरकार चाहें तो इसमें कुछ और वस्तुओं को जोड़ सकती है तथा इन वस्तुओं को उचित मूल्य की दुकानों के माध्यम से पात्र लोगों को वितरित किया जाता है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत 28 श्रेणियों के लाभार्थियों को पात्रता पर्ची एवं कार्ड के माध्यम से खाद्यान्न का वितरण किया जाता है।

खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 :–

भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013 सितम्बर 10,2013 को अधिसूचित किया है, जिसका उद्देश्य एक गरिमापूर्ण जीवन जीने के लिए लोगों को रियायती कीमत पर अच्छी गुणवत्ता के खाद्यान्न की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध कराते हुए उन्हें मानव जीवन–चक्र दृष्टिकोण में खाद्य और पौषाणिक सुरक्षा प्रदान करना है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम–2013 के अंतर्गत पात्रता की श्रेणियां का वर्णन सारणी क्र.– 1.1 में किया गया है।

सारणी क्र.– 1.1

सार्वजनिक वितरण प्रणाली में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम–2013 के अंतर्गत पात्रता की श्रेणियां

क्र.	पात्रता की श्रेणी	क्र.	पात्रता की श्रेणी
1	अंत्योदय अन्न योजना कार्ड धारक	15	साइकिल रिक्शा एवं हाथ ठेला चालक कार्ड
2	प्राथमिकता घरेलू योजना PHH/बीपीएल आदि	16	शहरी घरेलू कामकाज़ी महिला कार्ड धारक
3	अनुसूचित जाति वर्ग	17	सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के पेंशनर
4	अनुसूचित जाति के स्थायी सदस्य	18	हम्माल एवं तुलावटी योजना कार्ड धारक
5	केश शिल्पी कार्ड धारक	19	हाकर (फेरीवाला) कार्ड धारक
6	पजीकृत चालक परिचालक	20	बी.पी.एल कार्ड धारक
7	प्रतिरक्षा समझौता वर्ग	21	रेलवे में पंजीकृत कुली
8	बंद पड़ी मिलों में पूर्व नियोजित श्रमिक	22	मंदबुद्धि/बहुविकलांग के व्यक्ति
9	बुनकर एवं शिल्पी	23	मछुआरा कार्ड धारक,
10	बीड़ी श्रमिक	24	मजदूर सुरक्षा कार्ड धारक
11	भूमिहीनकोटवार	25	अन्य वंचित वर्ग
12	भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार मण्डल कार्ड धारक	26	कुष्ट रोग पीड़ित व्यक्ति
13	वृद्धाश्रम के निवासी	27	उभयलिंग व्यक्ति/ट्रांस जेंडर
14	वनधिकार प्राप्त पट्टाधारी	28	कोविड –19 बाल कल्याण योजना हितग्राही

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा अंत्योदय अन्न योजन एवं प्राथमिक घरेलु (प्रायोरिटी हाउस होल्ड) योजना के लाभार्थियों का अध्ययन एवं विश्लेषण निम्नानुसार सारणी क्र.– 2.1 एवं आरेख क्र.– 2.1 में किया गया है।

सारणी क्रमांक –2.1

उज्जैन जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत लाभार्थियों के राशन कार्ड का विश्लेषण

Sr.	LocalBodyName	AAY RC	AAY Member	PHH RC	PHH Member	Total RC	Total Member
1	Janpad Panchayat, BARNAGAR	3347	12477	29978	129254	33325	141731
2	Janpad Panchayat, GHATTIA	2150	8411	18116	81365	20266	89776
3	Janpad Panchayat, KHACHROD	1885	6969	35403	152030	37288	158999
4	Janpad Panchayat, MAHIDPUR	2669	10673	31694	140443	34363	151116
5	Janpad Panchayat, TARANA	3781	12604	35334	144935	39115	157539
6	Janpad Panchayat, UJJAIN RURAL	2723	10885	19801	92727	22524	103612
7	Nagar Nigam, UJJAIN	3923	15514	54772	236655	58695	252169
8	Nagar Palika, BARNAGAR	419	1740	2412	10863	2831	12603
9	Nagar Palika, KHACHROD	344	1338	3912	17638	4256	18976
10	Nagar Palika, MAHIDPUR	341	1335	3715	17141	4056	18476
11	Nagar Palika, NAGDA	673	2577	12341	52258	13014	54835
12	Nagar Praishad, TARANA	295	974	3501	15812	3796	16786
13	Nagar Praishad, UNHEL	199	957	1746	8595	1945	9552
	Total	**22749**	**86454**	**252725**	**1099716**	**275474**	**1186170**

स्त्रोत :– मध्य प्रदेश राज्य खाद्य सुरक्षा पोर्टल के अनुसार।

आरेख क्रमांक–2.1

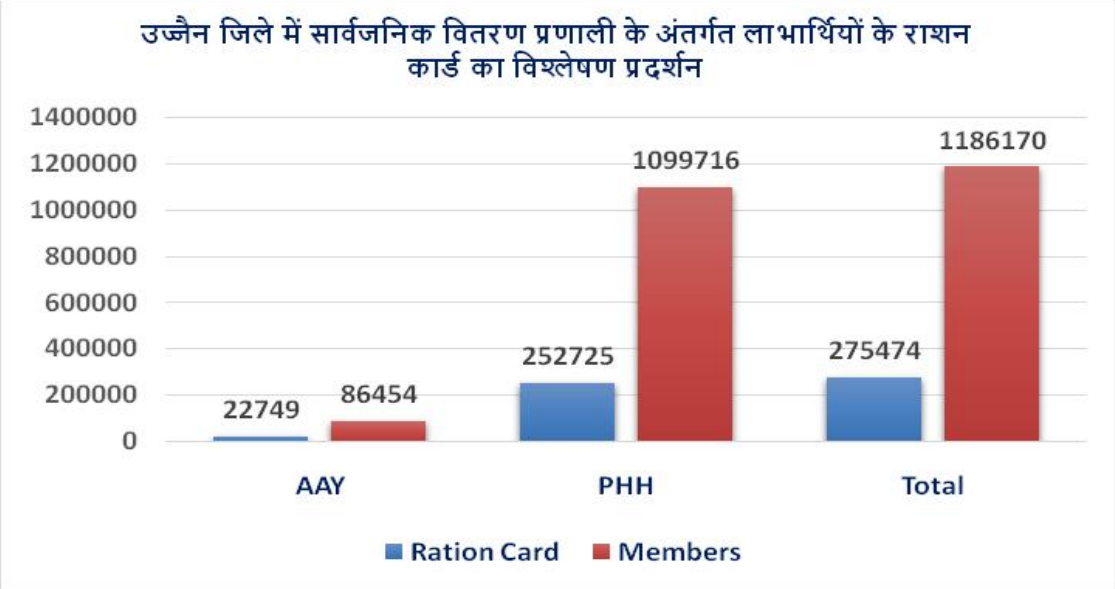

विश्लेषण :–

उपरोक्त सारणी 2.1 एवं आरेख क्र.–2.1 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उज्जैन में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत अंत्योदय अन्न योजना (AAY) के कुल 22749 राशन कार्ड जारी है जिसके अंतर्गत 86454

सदस्य सार्वजनिक वितरण प्रणाली का लाभ ले रहे है वही प्राथमिकता घरेलू (PHH) Yojna योजना अंतर्गत 252725 राशन कार्ड जारी है जिसमें 1099716 सदस्य उक्त योजना का लाभ ले रहे है। इस प्रकार उज्जैन जिले में कुल 275474 राशन कार्ड के अंतर्गत 1186170 सदस्य सार्वजनिक वितरण प्रणाली का लाभ ले है। इससे यह सिद्ध होता है की सार्वजनिक वितरण प्रणाली का उज्जैन जिले में प्रभावी ढंग क्रियान्वित हो रहे है और लोगों को इसका भरपूर लाभ मिल रहा है।

उज्जैन जिले में शासकीय उचित मूल्य दुकान का विश्लेषण :-

उज्जैन जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत पात्र हितग्राहियों को उचित मूल्य दुकान के माध्यम जीवनोपयोगी सामग्रियों का वितरण POS डीवाइस से बायोमैट्रिक वेरीफिकेशन के बाद ही खाद्यान्न प्रदान किया जाता है। इसलिए प्रस्तुत शोध कार्य में जिले की शासकीय उचित मूल्य दुकानों एवं POS डीवाइस मेपिंग का अध्ययन एवं विश्लेषण करना अति आवश्यक है।

अतः निम्नानुसार सारणी क्रमांक– 3.1 एवं आरेख क्रमांक– 3.1 में प्रदेश की शासकीय उचित मूल्य दुकानों का विश्लेषण किया गया है।

क्रमांक - 3.1

उज्जैन जिले की उचित मूल्य दुकानों का विश्लेषण

AFSO	Total FPS	Device		Dealer UID		Nominee 1 UID		Nominee 2 UID	
		Mapped	Not Mapped	Mapped	Not Mapped	Mapped	Not Mapped	Mapped	Not Mapped
Janpad Panchayat, BARNAGAR	111	111	0	109	2	106	5	16	95
Janpad Panchayat, GHATTIA	70	70	0	63	7	43	27	15	55
Janpad Panchayat, KHACHROD	125	125	0	124	1	120	5	68	57
Janpad Panchayat, MAHIDPUR	120	120	0	106	14	112	8	58	62
Janpad Panchayat, TARANA	111	111	0	110	1	109	2	42	69
Janpad Panchayat, UJJAIN RURAL	78	78	0	71	7	73	5	28	50
Nagar Nigam, UJJAIN	73	73	0	71	2	67	6	8	65

Nagar Nigam, UJJAIN 01	22	22	0	21	1	22	0	2	20
Nagar Nigam, UJJAIN 02	28	28	0	27	1	27	1	4	24
Nagar Palika, BARNAGAR	9	9	0	9	0	9	0	0	9
Nagar Palika, KHACHROD	6	6	0	6	0	5	1	2	4
Nagar Palika, MAHIDPUR	5	5	0	5	0	5	0	3	2
Nagar Palika, NAGDA	26	26	0	25	1	26	0	6	20
Nagar Praishad, TARANA	5	5	0	5	0	5	0	0	5

स्त्रोत – खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले विभाग मध्य प्रदेश, शासन के अनुसार।

आरेख क्रमांक – 3.1
उज्जैन जिले की उचित मूल्य दुकानों का विश्लेषण प्रदर्शन
POS डीवाइस मेपिंग स्टेटस की जानकारी सहित

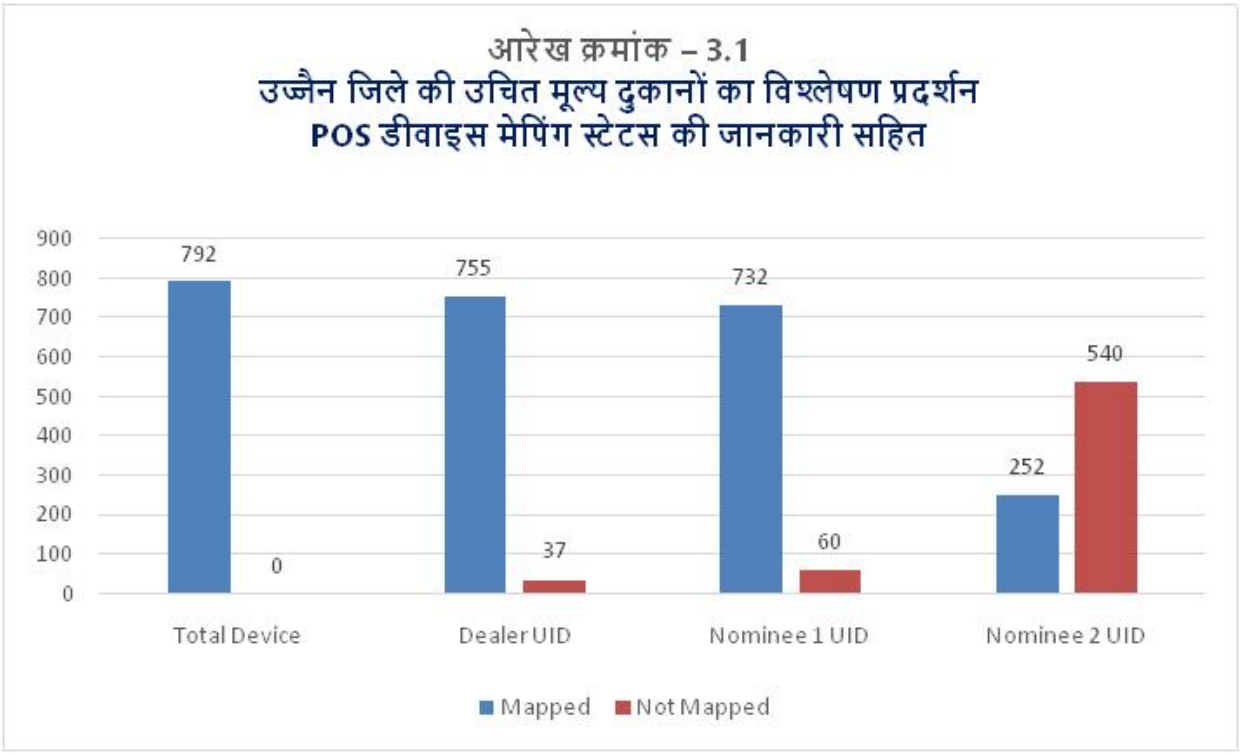

विश्लेषण :-

उपरोक्त सारणी 3.1 एवं आरेख क्र. – 3.1 के अध्ययन से ज्ञात हो रहा है कि उज्जैन जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के सुगम संचालन हेतु कुल 792 उचित मूल्य की दुकान संचालित है। जिसमें प्रत्येक दुकान पर एक POS डीवाइस आवंटित है जिसमें सभी मैप्ड (Mapped) भी हो चुकी है। जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली

के संचालन हेतु हर क्षेत्र में उचित मूल्य की दुकान पर्याप्त मात्रा में स्थापित है।

राशन कार्ड विस्तार :–

जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत राशन कार्ड संख्या अनुसार उचित मूल्य दुकानों की स्थिति का विश्लेषण निम्नानुसार सारणी क्रमांक– 4.1 में किया गया है।

सारणी क्र. –4.1

राशन कार्ड विस्तार विवरण

क्र.	सम्बन्ध राशन कार्ड संख्या–विस्तार	उ.मू.दु.संख्या
1	1– 100 राशन कार्ड	22
2	101– 200 राशन कार्ड	104
3	201– 300 राशन कार्ड	187
4	301– 400 राशन कार्ड	117
5	400– से अधिक	362
	कुल	792

स्त्रोत –राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा पोर्टल के अनुसार।

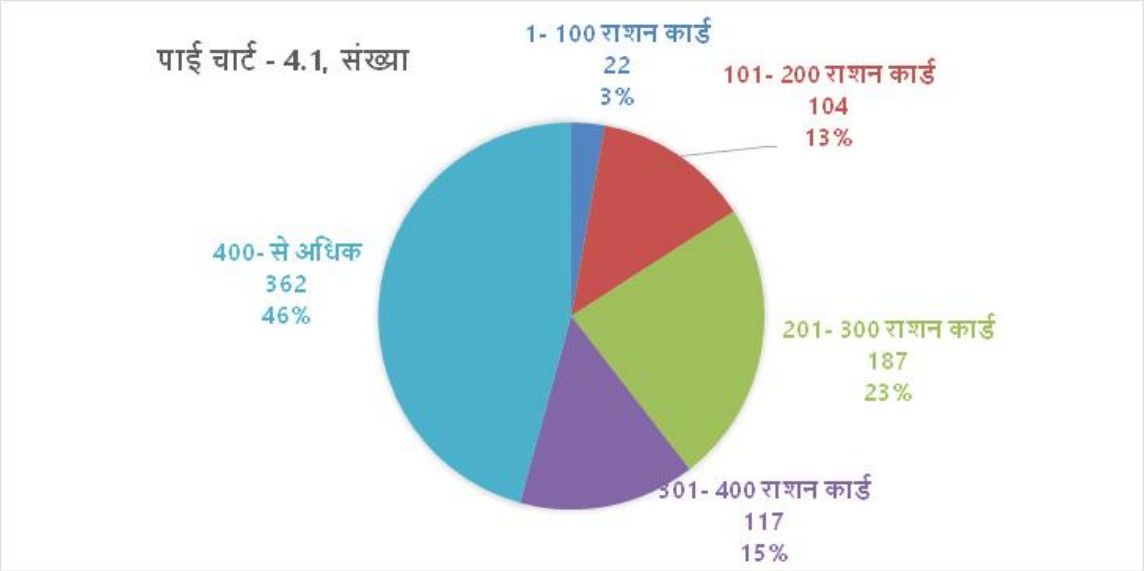

विश्लेषण – उक्त सारणी एवं पाई चार्ट 4.1 के अनुसार जिले में सर्वाधिक 400 से अधिक राशन कार्ड वाली 362 उचित मूल्य की दुकाने है जबकि सबसे कम 1–100 राशन कार्ड वाली 22 दुकानें है।

अंत्योदय अन्न योजना (एएवाई) :–

लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत अंत्योदय अन्न योजना को लागू करना गरीबी रेखा से नीचे की आबादी के निर्धनतम वर्ग के बीच भूखमरी को कम करने की दिशा में उठाया गया एक कदम है। एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण के अनुसार हमारे देश में कुल आबादी के लगभग 5% लोग दिन में दो वक्त के भोजन के बिना जीवन यापन करते है। इस वर्ग को 'भूखमरी' वाला वर्ग कहा जा सकता है, लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली को आबादी के इस वर्ग के प्रति और अधिक केंद्रित करते हुए निर्धनतम परिवारों के लिए, वर्ष 2000 के दिसम्बर माह

से 'अंत्योदय अन्न योजना' शुरू की गयी है। उज्जैन जिले में इस योजना अंतर्गत कुल 22749 राशन कार्ड जारी है जिसमें 86454 सदस्य पंजीकृत है।

अत्योदय अन्न योजना अंतर्गत प्रति परिवार प्रति माह 20 किलो गेहूं और 15 किलो चावल इस प्रकार कुल 35 कि.ग्रा. अनाज 2 रुपये प्रति किलोग्राम गेहूं और 3 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से चावल प्रदाय किया जाता है।

प्राथमिकता घरेलू (प्रायोरिटी हाउस होल्ड, PHH) योजना :-

प्राथमिकता घरेलू PHH योजना अंतर्गत राशन कार्ड जारी किया जाता है यह उन परिवारों को जारी होता है जो अंत्योदय अन्न योजना के दायरे में नहीं आते हैं। लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत राज्य सरकार अपने विशिष्ट और समावेशी मानदंडों के आधार पर प्राथमिकता वाले घरेलू परिवारों का चयन करती हैं और उन्हें यह कार्ड प्रदान करती है। उज्जैन जिले में इस योजना अंतर्गत कुल 252725 राशन कार्ड जारी है जिसमें 1099716 सदस्य पंजीकृत है।

प्राथमिकता घरेलू PHH कार्ड धारकों को प्रति व्यक्ति, प्रति माह 5 कि.ग्रा. खाद्यान्न प्राप्त होता है इसमें चावल के लिए 3 रुपये प्रति किलो, गेहूं के लिए 2 रुपये प्रति किलो और मोटे अनाज के लिए 1 रुपये प्रति किलो की रियायती दर निर्धारित है।

पात्रता पर्ची सिस्टम :-

सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत विभिन्न योजनाओं में पात्र परिवारों को खाद्यान्न प्राप्त करने की पात्रता पर्ची मध्य प्रदेश खाद्य सुरक्षा विभाग की और से पात्रता पर्ची जारी की जाती है। जिसकी पात्रता के अनुसार धारक को शासकीय उचित मूल्य दुकान के माध्यम से खाद्यान्न का वितरण किया जाता है अर्थात पात्रता पर्ची एक ऐसी सूची है। जिसके माध्यम से मध्यप्रदेश के सभी राशन कार्ड धारक अपने कार्ड पर मिलने वाले सभी खाद्य पदार्थों की सूची को मध्य प्रदेश राशन कार्ड पात्रता पर्ची में देख सकते हैं।

परिकल्पनाओं का सत्यापन :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाओं का सत्यापन निम्नानुसार किया गया है :-

परिकल्पना क्रमांक – H1 उज्जैन जिले के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के व्यक्तियों की जीविकोपार्जन में सार्वजनिक वितरण प्रणाली अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है।

सत्यापन :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन की सारणी क्र.– 2.1 के अध्ययन से यह ज्ञात हो रहा है कि उज्जैन जिले के कुल 275474 राशन कार्ड के द्वारा 1186170 सदस्य सार्वजनिक वितरण प्रणाली द्वारा प्रदत्त रियायती दर के राशन (खाद्यान्न) का लाभ प्राप्त कर रहे है जिससे ये लोग सुगमता से अपना जीविकोपार्जन कर पा रहे है

अतः उज्जैन जिले के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के व्यक्तियों की जीविकोपार्जन में सार्वजनिक वितरण प्रणाली अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है जिससे शोधार्थी की यह परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई है।

परिकल्पना क्रमांक – H2 सार्वजनिक वितरण प्रणाली के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु पर्याप्त संख्या में उचित मूल्य की दुकानें विद्यमान है।

सत्यापन :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन की सारणी क्र.– 3.1 के अध्ययन से यह ज्ञात हो रहा है कि उज्जैन जिले में कुल 05 जनपद पंचायतों, 04 नगर पालिका, 1 नगर निगम तथा 2 नगर परिषदों में कुल मिलाकर 792 उचित मूल्य की दुकानें क्रियान्वित है जो कि उज्जैन जिले के पात्र परिवारों की संख्या के अनुपात में पर्याप्त है, अतः यह परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई है।

परिकल्पना क्रमांक – H3 उज्जैन जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली का प्रभावी क्रियान्वयन हो रहा है।

सत्यापन :-

प्रस्तुत शोध के गहन अध्ययन एवं विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ है कि सार्वजनिक वितरण प्रणाली का क्रियान्वयन पूरे देश में केंद्र एवं राज्य सरकार मिलकर समन्वय के साथ करती है और इसी प्रकार उज्जैन जिले में भी प्रभावी क्रियान्वयन दोनों सरकारों के साझा प्रयासों से हो रहा है, उज्जैन जिले में अंत्योदय अन्न योजना के अंतर्गत 86454 सदस्य, प्रायोरिटी हाउस होल्ड योजनांतर्गत 1099716 सदस्य, इस प्रकार केवल इन दो योजनाओं में ही कुल प्रकार 1186170 सदस्यों द्वारा जिले की 792 उचित मूल्य की दुकानों के माध्यम से सार्वजनिक वितरण प्रणाली का लाभ प्राप्त किया जा रहा है जिससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि उज्जैन जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली का प्रभावी क्रियान्वयन हो रहा है। अतः यह परिकल्पना भी सत्य सिद्ध हुई है।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत विषय का गहराई से अध्ययन एवं विश्लेषण करने पर निम्नानुसार निष्कर्ष निकलकर सामने आएं है :–

1. जिले के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों की खाद्यान्न सुरक्षा सुनिश्चित हो रही है जिससे आवश्यक वस्तुओं के वितरण में समाजीकरण लागू हो रहा है।
2. उज्जैन जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के द्वारा उचित मूल्य दुकानों के माध्यम से पात्र व्यक्तियों को खाद्यान्न प्राप्त हो रहा है।
3. जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली का कुशलतम संचालन राज्य एवं केंद्र सरकार के साझा प्रयासों से हो रहा है।
4. बढ़ती महंगाई के दौर में उज्जैन जिले के निर्धन वर्ग के पात्र लोग इस योजना से सस्ती दरों पर अपनी खाद्यान्न आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहें है।
5. उज्जैन जिले में उचित मूल्य दुकानों पर खाद्यान्न के वितरण के माध्यम से खाद्यान्न की कमी का प्रबंधन करना हो रहा है।

उपसंहार :-

प्रस्तुत विषय के गहन अध्ययन के अनुसार केंद्र एवं राज्य सरकार के निर्देशन में उज्जैन जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर पात्र परिवारों को उचित मूल्य पर खाद्यान्न उपलब्ध कराकर उनके जीवन स्तर में सुधार करने के साथ–साथ उचित मूल्य दुकानों के माध्यम से खाद्यान्न के वितरण का प्रबंधन भी किया जा रहा है।

सुझाव :-

प्रस्तुत अध्ययन से निम्नानुसार सुझाव निकलकर सामने आये है :–

1. जिले की उचित मूल्य दुकानों पर POS डिवाइस से बायोमैट्रिक वेरीफिकेशन के बाद ही खाद्यान्न प्रदान किया जाता है किन्तु स्थाई इंटरनेट कनेक्शन दुकानों पर नहीं है, जिसके कारण अनेकों बार सर्वर एवं इंटरनेट नेटवर्क की प्राब्लम के कारण लाभार्थियों को घंटों इन्तजार करना पड़ता है अतः शासन को सभी दुकानों पर स्थाई इन्टरनेट कनेक्शन लगवाना चाहिए।
2. जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली योजना के प्रति जन जागरूकता हेतु जिला प्रशासन को सार्वजनिक स्थल जैसे –बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, साप्ताहिक बाजार, एवं प्रमुख चौराहों पर पोस्टर बैनर के माध्यम से प्रसार प्रचार करना चाहिए।
3. जिले के पात्र परिवारों को स्वयं आगे आकर सार्वजनिक वितरण प्रणाली लाभ लेना चाहिए।
4. सार्वजनिक वितरण प्रणाली के लाभ से वंचित लोगों को विशेष कार्यक्रम चलाकर इस योजन में शामिल किया जाना चाहिए।
5. सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत लाभार्थियों को प्रदान की जाने वाली वस्तुओं में अन्य घरेलू जीवन उपयोगी सामग्रियों को भी इस योजना में शामिल करना चाहिये।
6. योजन को भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ने से बचाने के लिए निगरानी समिति का कड़ाई से पालन करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि :-

1. भारत सरकार, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग, जुलाई 25, 2023, उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय – "अंत्योदय अन्न योजना (एएवाई)"
2. मध्य प्रदेश राज्य खाद्य सुरक्षा पोर्टल, मध्य प्रदेश, जुलाई 25, 2023
3. राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा पोर्टल, भारत सरकार, जनवरी 19, 2023
4. खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले विभाग मध्य प्रदेश, शासन जुलाई 25, 2023
5. हिंदी ज्ञान कोश, वेबपोर्टल, जुलाई 26, 2023, शीर्षक – "सार्वजनिक वितरण प्रणाली"।
6. मुक्त ज्ञान कोष, विकिपीडिया, जुलाई 23, 2023, शीर्षक – "सार्वजनिक वितरण प्रणाली"।
7. सरकारी योजना पोर्टल, जुलाई 26, 2023, सरकारी योजना सूची 2023, अन्योजनिदय अन्नल योजना 2023
8. जिला प्रशासन उज्जैन, अधिकारिक वेबसाइट– www.ujjain.nic.in
9. दैनिक भास्कर समाचार–पत्र, जुलाई 28, 2023,"वन नेशन वन राशन कार्ड"।

संपर्क सूत्र – 7974989823,

E-Mail : nehapkanthed@gmail.com

Address :- 29, Ved Vyas Colony, Opposite Kanchan Vihar Ratlam (M.P.)

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 73-76

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारत में कोयला : प्रकार व क्षेत्र

कैलाश प्रजापत

अतिथि शिक्षक, भूगोल, राजकीय महाविद्यालय कुचेरा नागौर, राजस्थान।

उद्देश्य :–

इस शोध का मुख्य उद्देश्य भारत में कोयला वितरण है उसके प्रकारों को समझाना है।

परिचय :–

भारत में कोयला भण्डार (Coal reserves in India Important Notes in Hindi for UPSC & PCS) :– भारत में कोयले का वर्तमान भण्डार 285 अरब टन का है।

कोयला उत्पादन में भारत का विश्व में तीसरा स्थान है अन्य अग्रणी देश क्रमशः निम्नवत है –

1. चीन 2. यू0एस0ए0 3. भारत

भारत में कोयले का निष्कर्षण Coal India Ltd. द्वारा किया जाता है। इसकी स्थापना वर्ष 1975 में की गयी थी। आधुनिक तरीके से कोयला निकालने का प्रथम प्रयोग रानीगंज (पश्चिम बंगाल) में किया गया था। भारत में सर्वाधिक कोयला खाने झारखण्ड राज्य में है।

भारत के शीर्ष तीन कोयला भण्डार वाले राज्य है :–

1. झारखण्ड 2. ओड़िशा 3. छत्तीसगढ़

भारत में कोयले के संचित भण्डार एवं उत्पादन :–

भारतीय भू–वैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) के अनुसार देश में 0.5 मी. से अधिक मोटाई 1200 मीटर की गहराई तक वाले संस्तरों में सभी प्रकार के कोयले का कुल संचित भण्डार 319.20 बिलियन टन है। ये कोयला भण्डार मुख्य रूप से झारखण्ड (20.06 प्रतिशत), ओडिशा (24.86 प्रतिशत), छत्तीसगढ, पं. बंगाल, मध्य प्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र में हैं कोयले के भण्डार की दृष्टि से भारत का विश्व में पांचवां स्थान है। भारतीय भू–गर्भ सर्वेक्षण ने अनुमान लगाया है कि देश में लिग्नाइट कोयले के भण्डार 45.66 बिलियन टन हैं। इसका प्रमुख भण्डार क्षेत्र तमिलानाडु (36.13 प्रतिशत) में है। इसके बाद राजस्थान (6.35 प्रतिशत) गुजरात (2.72 प्रतिशत) केरल, पं. बंगाल तथा केन्द्र शामिल प्रदेश जम्मू कश्मीर तथा पुदुचेरी में हैं। वर्ष 2018 में 3474 मिलियन टन कोयला उत्पादन के साथ चीन का विश्व में पहला स्थान है जबकि 725 मिलियन टन कोयल उत्पादन के साथ भारत विश्व में दूसरे स्थान पर है। 684 मिलियन टन कोयला उत्पादन के साथ स.रा. अमेरिका का विश्व में तीसरा स्थान है।

कोयले के शीर्ष उत्पादन राज्य

क्र.सं.	राज्य	स्थान
1	छतीसगढ़	प्रथम स्थान
2	ओडिशा	द्वितीय स्थान
3	झारखण्ड	तृतीय स्थान
4	मध्य प्रदेश	चतुर्थ स्थान
5	तेलंगाना	पंचम स्थान

वही कोयल इंडिया (CIL) तथा उसकी सहायक कम्पनियों ने वर्ष 2016–17 में 554.14 मिलियन टन की तुलना में वर्ष 2017–18 के दौरान 2.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाते हुए 567.36 मिलियन टन उत्पादन किया है। मार्च–अप्रैल 2019 के दौरान कोल इंडिया लि0 द्वारा कोयले का उत्पादन 7.0 प्रतिशत की सकारात्मक वृद्धि के साथ 606.89 मिलियन टन था।

वर्षवार कोयले का उत्पादन : क्षेत्रवार

वर्षवार	कुकिंग	अकुकिंग	कुल	सार्वजनिक	प्राइवेट	कुल
2010-11	49.55	483.15	532.69	485.06	47.63	532.69
2011-12	51.66	488.29	539.95	503.84	33.11	539.95
2012-13	51.58	504.82	556.40	521.68	34.73	556.40
2013-14	56.82	508.95	565.77	528.08	37.69	365.77
2014-15	57.45	551.73	609.18	567.03	42.15	609.18
2015-16	60.89	578.34	639.23	606.68	32.55	639.23
2016-17	61.66	596.21	657.87	625.20	32.67	657.87
2017-18	40.15	635.25	675.40	641.77	33.63	675.40
2018-19	41.13	687.59	728.72	694.98	33.74	728.72
2019-20 (p)	52.94	677.94	730.87	694.56	35.31	730.87
Growth Rate of 2001-20 over 2018-19 (%)	28.71	-1.40	0.30	0.08	4.67	0.30
CAGR 2010-11 2019-20(%)	0.74		3.58	4.09	-3.27	3.58

(P)= Provisional

स्रोत : Office of Coal Controller of INDIA.

भारत का विश्व में कोयला उत्पादन में दूसरा स्थान है। देश में कोयले के समस्त उत्पादन का 79.4 प्रतिशत बिजली उत्पादन में खपत हुआ था। तत्पश्चात् कोयले का उपयोग स्टील उद्योग (2.0 प्रतिशत) स्पंज आयरन में (1.2 प्रतिशत) तथा सीमेण्ट उद्योग में 1.4 प्रतिशत खपत हुआ था।

कोयले के प्रकार

कार्बन की मात्रा के आधार पर कोयला 4 प्रकार का होता हैं :–

1. **एन्थ्रेसाइट :**
   - एन्थ्रेसाइट कोयले में कार्बन की मात्रा 85% से अधिक होती है।
   - भारत में केवल कारगिल क्षेत्र की टर्शियरी चट्टानों में एन्थ्रेसाइट कोयला पाया जाता है।
2. **बिटुमिनस :**
   - बिटुमिनस कोयले में कार्बन की मात्रा 55% से 65% के मध्य होती है।
   - बिटुमिनस कोयला गोंडवाना युगीन कोयला है तथा भारत का 90% से अधिक कोयला यहीं है।
   - मुख्यतः पूर्वी भारत के 4 राज्यों झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, ओड़िशा एवं छत्तीसगढ़ में बिटुमिनस कोयला पाया जाता है।
3. **लिग्नाइट** :
   - लिग्नाइट कोयले में कार्बन की मात्रा 45% से 55% के मध्य होती है।
   - लिग्नाइट कोयले को भूरा कोयला भी कहा जाता है।
   - लिग्नाइट कोयला भारत में सर्वाधिक मात्रा में तमिलनाडु के नेवेली क्षेत्र में पाया जाता है। इसके अलावा असम के माकूम एवं राजस्थान के पलना में भी कुछ मात्रा में पाया जाता है।
4. **पीट** :
   - पीट कोयले में कार्बन की मात्रा 45% से कम होती है।
   - पीट कोयले को एक निम्न श्रेणी का कोयला है।
   - पीट कोयला दलदली क्षेत्रों में पाया जाता है।

भारत में पाया जाने वाला अधिकांश कोयला गैर– कोकिंग श्रेणी का है :–

- कोकिंग श्रेणी का कोयले में कार्बन की मात्रा अधिक तथा नमी कम होती है।
- लोह–इस्पात उद्योग में कोकिंग कोयले का ही प्रयोग किया जाता है।
- भारत कोकिंग कोयले को चीन एंव ऑस्ट्रेलिया से आयात करता है।

भारत में कोयला कितने प्रकार की चट्टानों में पाया जाता है :–

भारत में कोयला 2 प्रकार की चट्टानों में पाया जाता है :–

1. **गोड़वाना चट्टानों में :–**
   - भारत का कुल कोयले का 98% भाग इन्ही चट्टानों में पाया जाता है।
   - इसमें पाया जाने वाला अधिकांश कोयला बिटुमिनस श्रेणी का है।
   - प्रमुखतः छोटा नागपुर पठार वाले क्षेत्र में 4 राज्यों झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा एवं छत्तीसगढ़ में पाया जाता है।
2. **टर्शियरी चट्टानों में :–**
   - भारत का कुल कोयले का केवल 2ः भाग ही इन चट्टानों में पाया जाता है।
   - इसमें पया जाने वाला अधिकांश कोयला एन्थ्रेसाइट श्रेणी का है।

– प्रमुख रूप से कारगिल की टर्शियरी चट्टानों में एन्थ्रेसाइट कोयला पाया जाता है।

भारत में स्थित नदी घाटी कोयला क्षेत्र :–

भारत में कोयला प्रमुखत : दक्षिण भारत की नदी घाटियों में पाया जाता है :–

1. **दामोदर नदी घाटी कोयला क्षेत्र :–**
   – झारखण्ड तथा पश्चिम बंगाल में फैला है।
   – रानीगंज कोयला क्षेत्र पश्चिम बंगाल में है। देश का 35% कोयला उत्पादन यहीं से होता है।
   – झारखण्ड में झरिया कोयला क्षेत्र धनबाद जिले में, बोकारो कोयला क्षेत्र हजारीबाग जिले में तथा गिरिडीह कोयला क्षेत्र स्थित है।
2. **सोन नदी घाटी कोयला क्षेत्र :–**
   – मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ में फैला है।
   – सिंगरौली कोयला क्षेत्र तथा सोहागपुर कोयला क्षेत्र मध्य प्रदेश में स्थित है।
   – तातापानी कोयला क्षेत्र एवं रामकोला कोयला क्षेत्र छत्तीसगढ़ में स्थित है।
3. **महानदी घाटी कोयला क्षेत्र :–**
   – छत्तीसगढ़ तथा ओड़िशा में फैला है।
   – कोरबा कोयला क्षेत्र छत्तीसगढ़ में स्थित है।
4. **ब्राह्माणी नदी घाटी कोयला क्षेत्र :–**
   – ओड़िशा में तालचेर कोयला क्षेत्र इसी के अंतर्गत आता है।
5. **गोदावरी नदी घाटी कोयला क्षेत्र :–**
   – आंध्र प्रदेश में सिंगरैनी कोयला क्षेत्र इसी के अंतर्गत आता है।

सन्दर्भ :–

1. महेश कुमार वर्णवाल, भारत का भूगोल, पृष्ठ सं. 205, 206
2. दृष्टि, पृष्ठ संख्या –115, 116
3. माजिद हुसैन, भारत का भूगोल, 9वां संस्करण पृष्ठ 7.5
4. आर.एन. मिश्रा, भारत व विश्व का भूगोल, पृष्ठ सं. 6.5.11

कैलाश प्रजापत S/o प्रताप राम प्रजापत

पता मु पोस्ट–– कोलिया

जिला – डीडवाना कुचामन

पिन कोड–– 341305

मो– 9649953161

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 77-86

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ਵੇਦਾਂ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦਾ ਸਰੂਪ : ਇੱਕ ਅਧਿਐਨ

ਸਿੰਪਲ ਰਾਣੀ ਮਿੱਤਲ

ਲੇਖਕ , ਰਿਸਰਚ ਸਕਾਲਰ (ਧਰਮ ਅਧਿਐਨ ਵਿਭਾਗ) , ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ

ਲੱਖਾਂ ਵਰੇ ਪੁਰਾਣੀ ਮਨੁੱਖੀ ਸਭਿਅਤਾ ਦੇ ਵਿਕਾਸਕ੍ਰਮ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਅਹਿਮ ਭੂਮਿਕਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਭਾਰਤ ਦੇ ਮੁੱਢਲੇ ਆਦਿਵਾਸੀ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਪ੍ਰਕਿਰਤੀ ਦਾ ਰੂਪ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਮਨੁੱਖ ਛੋਟੇ-ਛੋਟੇ ਸਮੂਹਾਂ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ। ਸਮਾਜਿਕ ਅਤੇ ਧਾਰਮਿਕ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਨਰ ਅਤੇ ਨਾਰੀ ਮਿਲ ਕੇ ਜਿੰਮੇਵਾਰੀਆਂ ਪੂਰੀਆਂ ਕਰਦੇ ਸਨ। "ਸ਼ਿਕਾਰ ਕਰਨਾ, ਭਾਰੇ ਕੰਮ (ਜੰਗਲੀ ਲਕੜੀ ਕੱਟਣਾ, ਸੁਰੰਗ ਦੀ ਪਟਾਈ), ਮੱਛੀ ਫੜਣਾ, ਇੰਜੜ ਚਾਰਨਾ ਆਦਿ ਕੰਮ ਮਰਦ ਦੇ ਹਿੱਸੇ ਸਨ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਇਸਤਰੀਆਂ ਖਾਣਾ ਬਣਾਉਣਾ, ਜੰਗਲੀ ਬਨਸਪਤੀ ਉਪਜ ਇਕੱਠੀ ਕਰਨੀ, ਪਾਣੀ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਰਨਾ, ਸਰੀਰ ਨੂੰ ਢੱਕਣ ਵਾਸਤੇ ਵਸਤਰ ਬਣਾਉਣੇ ਆਦਿ ਕੰਮਾਂ ਨੂੰ ਕਰਨ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਸ਼ਿਕਾਰ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਵੀ ਸਹਾਇਤਾ ਕਰਦੀਆਂ ਸਨ।"[1] ਕਬਾਇਲੀ ਸਮਾਜ ਦਾ ਮਨੁੱਖੀ ਹੌਲੀ ਹੌਲੀ ਸਭਿਅਕ ਸਮਾਜ ਵੱਲ ਵਧਿਆ, ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਉਸਨੇ ਖਾਨਾਬਦੋਸ਼ ਜੀਵਨ ਦਾ ਤਿਆਗ ਕਰਕੇ ਪੱਕੇ ਟਿਕਾਣੇ ਤੇ ਰਹਿਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਇਹ ਮਨੁੱਖੀ ਸਭਿਅਤਾ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਪੜਾਅ ਸੀ। ਜਿਸਨੂੰ ਸਿੰਧੂ ਘਾਟੀ ਦੀ ਸਭਿਅਤਾ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਸਭਿਅਕ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਨਰ ਦੇ ਸਮਾਨ ਅਧਿਕਾਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਸਨ। ਉਸਦੇ ਖਾਣ-ਪੀਣ ਰਹਿਣ-ਸਹਿਣ ਉੱਪਰ ਕੋਈ ਰੁਕਾਵਟ ਨਹੀਂ ਸੀ। "ਇਸ ਸਮੇਂ ਦੀਆਂ ਇਸਤਰੀਆਂ ਲੰਮਾ ਘੱਗਰਾ, ਅਗੂੰਠੀਆਂ, ਕੰਗਨ, ਹਾਰ, ਨੱਥ ਅਤੇ ਵਾਲਾਂ ਵਿੱਚ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਗਹਿਣੇ ਪਹਿਨਦੀਆਂ ਸਨ। ਇਹ ਗਹਿਣੇ ਸੋਨੇ ਅਤੇ ਮਹਿੰਗੀ ਕਿਸਮ ਦੇ ਮੋਤੀਆਂ ਤੋਂ ਬਣੇ ਹੁੰਦੇ ਸਨ।"[2] ਸਮਾਜਿਕ ਅਤੇ ਪਰਿਵਾਰਕ ਮਸਲਿਆਂ ਵਿੱਚ ਇਸਤਰੀਆਂ ਵੀ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੁੰਦੀਆਂ ਸਨ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਦੇ ਲੋਕ ਪਸ਼ੂਪਤੀ ਦੇਵ ਦੇ ਨਾਲ ਮਾਤ ਦੇਵੀ ਦੀ ਪੂਜਾ ਵੀ ਕਰਦੇ ਸਨ।

ਸਿੰਧੂ ਘਾਟੀ ਦੀ ਸਭਿਅਤਾ ਦੇ ਉਪਰੰਤ ਇੱਕ ਪਰਵਾਸੀ ਸਮੂਹ ਭਾਰਤ ਆਇਆ। ਇਹਨਾਂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਆਰੀਆ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਆਰੀਆ ਨੇ ਸਿੰਧੂ ਘਾਟੀ ਦੀ ਸਭਿਅਤਾ ਦੇ ਕੇਂਦਰਾਂ ਨੂੰ ਉਜਾੜ ਕੇ ਆਪਣੀ ਵੱਖਰੀ ਸਭਿਅਤਾ ਦਾ ਨਿਰਮਾਣ ਕੀਤਾ ਜਿਸਨੂੰ ਆਰੀਅਨ ਜਾਂ ਵੈਦਿਕ ਸਭਿਅਤਾ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਆਰੀਆ ਲੋਕ ਹਿੰਦੂ ਧਰਮ ਦੇ ਪੁਰਵਜ ਮੰਨੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। "ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਸਿੰਧੂ ਘਾਟੀ ਦੀ ਸਭਿਅਤਾ ਦੇ ਕੇਂਦਰਾਂ ਨੂੰ ਆਰੀਅਨ ਹਮਲਾਵਰਾਂ ਨੇ ਤਬਾਹ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਸੀ ਇਹ ਉੱਤਰ ਪੱਛਮ ਤੋਂ ਭਾਰਤ ਆਏ ਸਨ ਪ੍ਰੰਤੂ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਸਭਿਅਤਾ ਦੇ ਚਿੰਨ ਕਾਇਮ ਰਹੇ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਤੋਂ ਬਾਦ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਆਰੀਅਨ ਇਸ ਸਭਿਆਚਾਰ ਤੋਂ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੋਏ। ਆਧੁਨਿਕ ਖੋਜਾਂ ਨੇ ਸਥਾਪਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ ਕਿ 3000-1500 ਈ. ਪੂ. ਇਹ ਸਭਿਅਤਾ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਵਿਸ਼ਾਲ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਫੈਲ ਗਈ ਸੀ।"[3] ਆਰੀਆ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਸਭਿਅਤਾ ਦਾ ਪੂਰਨ ਵੇਰਵਾ ਵੇਦਾਂ ਵਿਚੋਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਵੇਦ ਹਿੰਦੂ ਧਰਮ ਦੇ ਪਵਿੱਤਰ ਧਰਮ ਗ੍ਰੰਥ ਹਨ।

ਵੇਦ ਸ਼ਬਦ 'ਵਿਦ' ਧਾਤੂ ਤੋਂ ਬਣਿਆ ਹੈ। ਇਸਦਾ ਅਰਥ ਜਾਨਣਾ ਜਾਂ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨਾ ਹੈ। ਵੇਦ ਗਿਣਤੀ ਵਿੱਚ ਚਾਰ ਹਨ - ਰਿਗਵੇਦ, ਯਜੁਰਵੇਦ, ਸਾਮਵੇਦ, ਅਥਰਵਵੇਦ। ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਸੰਹਿਤਾ (ਭਜਨਾਂ ਦਾ ਇੱਕਠ)

1 ਐਚ.ਹਾਰਲੋਮਬਸ, ਸੋਸ਼ੋਲਜੀ ਥੀਮਜ਼ ਐਂਡ ਪਰਸਪੈਕਟਿਵਜ਼, ਆਕਸਫੋਰਡ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਪ੍ਰੈਸ, ਦਿੱਲੀ, 1980, ਪੰਨਾ 371.

2 ਗੈਰਟਰੂਡ ਐਮਰਸਨ ਸੈਨ, ਦ ਸਟੋਰੀ ਆਫ਼ ਅਰਲੀ ਇੰਡੀਅਨ ਸਿਵਿਲਾਈਜ਼ੇਸ਼ਨ, ਓਰੀਐਂਟ ਲੋਂਗਮਾਨਸ, ਦਿੱਲੀ, 1964, ਪੰਨਾ 13.

3 ਹਰਬੰਸ ਸਿੰਘ, ਐਲ.ਐਮ.ਜੋਸ਼ੀ, ਐਨ ਇਨਟਰੋਡਕਸ਼ਨ ਟੂ ਇੰਡੀਅਨ ਰਿਲੀਜ਼ਨਸ, ਪਬਲੀਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ, 1996, ਪੰਨਾ 5.

ਵੀ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। "ਹਿੰਦੂ ਆਪਣੇ ਧਾਰਮਿਕ ਸਾਹਿਤ ਨੂੰ ਦੋ ਭਾਗਾਂ ਵਿੱਚ ਵੰਡਦੇ ਹਨ (i) ਸ਼ਰੁਤੀ "ਉਹ ਗਿਆਨ ਜੋ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਸੁਣਿਆ ਹੈ ਜਾਂ ਇਲਹਾਮ ਅਤੇ (ii) ਸਮ੍ਰਿਤੀ "ਜੋ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਪਰੰਪਰਾ ਅਤੇ ਪੂਰਵਜਾਂ ਤੋਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਵੇਦ ਸ਼ਰੁਤੀ ਸਾਹਿਤ ਅਧੀਨ ਆਉਂਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਸਾਰੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਜੋ ਵੇਦਾਂ ਉੱਪਰ ਅਧਾਰਿਤ ਹਨ ਸਮ੍ਰਿਤੀ ਸਾਹਿਤ ਅਧੀਨ ਆਉਂਦੀਆਂ ਹਨ।"[4] ਵੇਦ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਕਿਸਮ ਦੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿੱਚ ਲਿਖੇ ਗਏ ਹਨ। ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਰਚਨਾਕਾਲ ਬਾਰੇ ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਦੇ ਵਿਚਾਰ ਇੱਕ ਮੱਤ ਨਹੀਂ ਹਨ। "ਸਧਾਰਨ ਤੌਰ ਤੇ ਮਿਲਦੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਅਨੁਸਾਰ ਇਹ 1500 ਤੋਂ 1000 ਈ. ਪੂ. ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਲਿਖੇ ਗਏ, ਪਰ ਇਹਨਾਂ ਬਾਰੇ ਸਾਨੂੰ ਕੋਈ ਸਿੱਧਾ ਪ੍ਰਮਾਣ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦਾ ਅਤੇ ਇਸ ਸੰਬੰਧੀ ਮਿਲਦੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਕਾਫ਼ੀ ਭਿੰਨਤਾ ਹੈ।"[5] ਭਾਰਤੀ ਪਰੰਪਰਾ ਵਿੱਚ ਵੇਦਾਂ ਨੂੰ 'ਅਪੌਰਸ਼ਯ' ਮੰਨਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਜਿਸਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਮਨੁੱਖੀ ਰਚਨਾ ਨਹੀਂ ਹਨ। ਰਿਸ਼ੀਆਂ ਨੇ ਵੇਦਾਂ ਦਾ ਸੰਕਲਨ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੁਆਰਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਗਿਆਨ ਨੂੰ ਵੇਦਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਲਿਪੀਬੱਧ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਐਨਸਾਈਲੋਪੀਡੀਆ ਆਫ਼ ਹਿੰਦੂਇਜ਼ਮ ਅਨੁਸਾਰ, "ਰਿਗਵੇਦ ਚਾਰ ਵੇਦਾਂ ਵਿੱਚ ਸਭ ਤੋਂ ਪੁਰਾਤਨ ਹੈ। ਪਰੰਪਰਾ ਅਨੁਸਾਰ ਇਸਦਾ ਸੰਕਲਨ ਵਿਆਸ ਨੇ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਇਸਦਾ ਰਚਨਾਕਾਲ 1500 ਤੋਂ 1000 ਈ. ਪੂ. ਮੰਨਿਆ ਗਿਆ ਹੈ।"[6] ਯਜੁਰਵੇਦ ਅਤੇ ਸਾਮਵੇਦ ਰਿਗਵੇਦ ਉੱਪਰ ਅਧਾਰਿਤ ਹਨ। ਯਜੁਰਵੇਦ ਵਿੱਚ ਯੱਗ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਕਰਮ ਕਾਂਡ ਅਤੇ ਵਿਧੀਆ ਦਾ ਵਰਨਣ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਸਾਮਵੇਦ ਵਿੱਚ ਰਿਗਵੇਦ ਦੇ ਉਹਨਾਂ ਮੰਤਰਾਂ ਦਾ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ, ਜਿਨਾਂ ਨੂੰ ਯੱਗ ਕਰਨ ਸਮੇਂ ਗਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਸਾਮਵੇਦ ਵਿੱਚ 75 ਮੰਤਰਾਂ ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਬਾਕੀ ਸਾਰੇ ਮੰਤਰ ਰਿਗਵੇਦ ਵਿਚੋਂ ਲਏ ਗਏ ਹਨ। "ਅਥਰਵਵੇਦ ਨਾਂ ਦੀ ਚੌਥੀ ਸੰਹਿਤਾ ਰਿਗਵੇਦ ਤੋਂ ਪੂਰਨ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਭਿੰਨ ਹੈ। ਰਿਗਵੇਦ ਇੱਕ ਸਭਿਆ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਪ੍ਰਗਟਾਉਂਦਾ ਹੈ ਪਰੰਤੂ ਅਥਰਵਵੇਦ ਵਿੱਚ ਜਨਸਧਾਰਨ ਦੇ ਨਿਮਨਵਰਗ ਉੱਪਰ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਾਉਣ ਵਾਲੇ ਮਾਇਆ, ਜਾਦੂ-ਟੂਣੇ ਅਤੇ ਅਸੁਰਾਂ ਦੀ ਉਸਤਤ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਮੰਤਰ ਦਰਜ਼ ਹਨ। ਵਿਸ਼ਾ-ਵਸਤੂ ਦੇ ਪੱਖ ਤੋਂ ਇਹ ਇੱਕ ਦੂਜੇ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਗ੍ਰੰਥ ਹਨ।"[7]

ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦਾ ਸਥਾਨ ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਵੇਦਾਂ ਨੇ ਪ੍ਰਤੱਖ ਅਤੇ ਅਪ੍ਰਤੱਖ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਅਹਿਮ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਈ ਹੈ। ਵੇਦਾਂ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦੇ ਸਰੂਪ ਦਾ ਅਧਿਐਨ ਭਿੰਨ-ਭਿੰਨ ਸਥਿਤੀਆਂ ਵਿੱਚ ਵੰਡ ਕੇ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ :

1. ਰਿਗਵੇਦ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦਾ ਸਰੂਪ

1.1 ਸਮਾਜਿਕ ਸਥਿਤੀ

ਰਿਗਵੇਦ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਸਮਾਜ ਦਾ ਅਭਿੰਨ ਅੰਗ ਮੰਨਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਪਰਿਵਾਰ ਸਮਾਜ ਦੀ ਮੂਲ

---

4 ਮੋਰਿਸ ਫਿਲੀਪਸ, ਔਰੀਜਨ ਐਂਡ ਡਿਵਲਪਮੈਂਟ ਆਫ਼ ਵੇਦਸ, ਪਰੀਜ਼ਮ ਬੁੱਕਸ, ਜੈਪੁਰ, 2011, ਪੰਨਾ 1.

5 ਜੌਨ ਡੌਸਨ, ਹਿੰਦੂ ਮਿਥਿਹਾਸ ਕੋਸ਼, ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ, ਪਟਿਆਲਾ, ਪੰਨਾ 548.

6 ਏ. ਜੋਨਸ, ਜੇਮਜ਼ ਡੀ. ਰਿਆਨ, ਐਨਸਾਈਲੋਪੀਡੀਆ ਆਫ਼ ਹਿੰਦੂਇਜ਼ਮ, ਫੈਕਟਸ ਔਨ ਫ਼ਾਇਲ, ਨਿਊ ਯਾਰਕ, 1961, ਪੰਨਾ 79.

7 ਐਸ. ਐਨ ਦਾਸਗੁਪਤ, ਭਾਰਤੀਯ ਦਰਸ਼ਨ ਕਾ ਇਤਿਹਾਸ, ਭਾਗ (ਪਹਿਲਾ), ਰਾਜਸਥਾਨ ਹਿੰਦੀ ਗ੍ਰੰਥ ਅਕਾਦਮੀ, ਜੈਪੁਰ, 1978, ਪੰਨਾ 79.

ਇਕਾਈ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਪਰਿਵਾਰ ਵਿੱਚ ਲੜਕੀ ਦਾ ਜਨਮ ਸ਼ੁੱਭ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਬੇਸ਼ੱਕ ਰਿਗਵੇਦ ਵਿੱਚ ਲੜਕੇ ਦੇ ਜਨਮ ਸੰਬੰਧੀ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾਵਾਂ ਮਿਲਦੀਆਂ ਹਨ ਪਰ ਇਸਦਾ ਅਰਥ ਇਹ ਨਹੀਂ ਸੀ ਕਿ ਲੜਕੀ ਦੇ ਜਨਮ ਤੇ ਸ਼ੋਕ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਉਸਨੂੰ ਲੜਕੇ ਦੇ ਸਮਾਨ ਹੀ ਪਿਆਰ ਅਤੇ ਸਤਿਕਾਰ ਨਾਲ ਪਾਲਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਉਸ ਦੇ ਵਿਦੂਸ਼ੀ (ਗਿਆਨਵਾਨ) ਬਨਣ ਦੀ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ। ਇਸ ਉਦੇਸ਼ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਲਈ ਉਸਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਤੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਧਿਆਨ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਵੈਦਿਕ ਸਿੱਖਿਆ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਉਪਨਯਨ ਸੰਸਕਾਰ[8] ਨਾਲ ਸ਼ੁਰੂ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਲੜਕੇ ਅਤੇ ਲੜਕੀ ਦੋਨਾਂ ਵਿੱਚ ਸੰਪੂਰਨ ਸਿੱਖਿਆ ਦਾ ਪ੍ਰਸਾਰ ਕਰਨ ਲਈ ਲੜਕੇ ਲਈ ਅਧਿਆਪਕ ਅਤੇ ਲੜਕੀ ਲਈ ਅਧਿਆਪਿਕਾ ਨੂੰ ਨਿਰੰਤਰ ਨਿਯੁਕਤ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ।[9] ਅਜਿਹੇ ਅਨੇਕਾਂ ਮੰਤਰ ਰਿਗਵੇਦ ਵਿੱਚ ਦਰਜ ਹਨ, ਜਿਨਾਂ ਵਿੱਚ ਲੜਕੀ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ, ਅਵਿਵਾਹਿਤ ਰਹਿ ਕੇ ਸਿੱਖਿਆ ਦਾ ਪ੍ਰਸਾਰ ਕਰਨ, ਮੰਤਰ ਰਚਨਾ ਕਰਨ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਣ ਆਦਿ ਦਾ ਵਰਨਣ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। "ਰਿਗਵੇਦ ਦੇ ਰਚਨਾਕਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਰੋਮਾਸਾ, ਲੋਪਾਮੁਦਰਾ, ਅਪਾਲਾ, ਕਾਦਰੁ, ਵਿਸ਼ਵਵਾਰਾਂ, ਘੋਸ਼ਾ, ਜੂਹੁ, ਵਾਗਮਬਰੀਨੀ, ਪਉਲੋਮੀ, ਜਰਿਤਾ, ਸਰੱਧਾ-ਕਾਮਯਾਨੀ, ਊਰਵਸੀ, ਸ਼ਰਨਗਾ, ਯਾਮੀ, ਇੰਦਰਾਣੀ, ਸਵਿਤਰੀ, ਦੇਵਯਾਨੀ ਆਦਿ ਇਸਤਰੀਆਂ ਵੀ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹਨ।"[10] ਇਸ ਸਮੇਂ ਬਾਲ ਵਿਆਹ ਦਾ ਪ੍ਰਚਲਨ ਨਹੀਂ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਲੜਕੀ ਨੂੰ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿੱਚ ਸੰਪੰਨ ਕਰਕੇ ਸਵੰਬਰ ਵਿਧੀ ਅਨੁਸਾਰ ਉਸਦਾ ਵਿਆਹ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਉਸਨੂੰ ਆਪਣੇ ਸਮਾਨ ਗੁਣਾ ਵਾਲੇ ਵਰ ਨੂੰ ਚੁਨਣ ਦਾ ਪੂਰਨ ਅਧਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਵਿਦਵਾਨ ਇਸਤਰੀ ਦਾ ਵਿਆਹ ਵਿਦਵਾਨ ਪੁਰਸ਼ ਨਾਲ ਹੀ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ।[11] ਚੰਗੇ ਗੁਣਾਂ ਵਾਲੀ, ਸੁੱਖ ਦੇਣ ਵਾਲੀ, ਵਿਦੂਸ਼ੀ, ਅਕਲਮੰਦ, ਕੁਲ ਦੇ ਮਾਨ ਸਨਮਾਨ ਦੀ ਰੱਖਿਆ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਇਸਤਰੀ ਦੀ ਪ੍ਰਸੰਸਾ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਵਿਆਹ ਨੂੰ ਇੱਕ ਪਵਿੱਤਰ ਸੰਸਕਾਰ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ , ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਪਤੀ ਪਤਨੀ ਇੱਕ ਦੂਸਰੇ ਪ੍ਰਤੀ ਵਫ਼ਾਦਾਰ ਰਹਿੰਦੇ ਸਨ। ਪਤੀ ਦਾ ਪਰ ਨਾਰੀ ਨਾਲ ਅਤੇ ਪਤਨੀ ਦਾ ਪਰ ਪੁਰਸ਼ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ ਰੱਖਣਾ ਵਰਜਿਤ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਪ੍ਰਚਲਨ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਵਿਧਵਾ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਪੁਨਰ ਵਿਆਹ ਕਰਨ ਦੀ ਪ੍ਰਵਾਨਗੀ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਰਿਗਵੈਦਿਕ ਮੰਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਪਤਨੀ ਨੂੰ ਪਤੀ ਦੀ ਚਿਤਾ ਕੋਲ ਬੈਠ ਕੇ ਜੀਵਨ ਵਿਅਰਥ

---

8 ਉਪਨਯਨ ਸੰਸਕਾਰ ਹਿੰਦੂ ਧਰਮ ਦੇ 16 ਸੰਸਕਾਰਾਂ ਵਿਚੋਂ ਦਸਵਾਂ ਸੰਸਕਾਰ ਹੈ। ਇਸ ਸੰਸਕਾਰ ਵਿੱਚ ਜਾਤਕ ਨੂੰ ਗੁਰਕੁਲ ਵਿੱਚ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ ਭੇਜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਜਿਸਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਅਚਾਰਿਆ ਦੁਆਰਾ ਜਾਤਕ ਨੂੰ ਜਨੇਊ ਧਾਰਨ ਕਰਵਾ ਕੇ ਗਾਇਤਰੀ ਮੰਤਰ ਦਾ ਉਚਾਰਨ ਕਰਨ ਨਾਲ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਵਿਭਿੰਨ ਵਰਣਾਂ ਲਈ ਇਸ ਸੰਸਕਾਰ ਦੀ ਭਿੰਨ-ਭਿੰਨ ਉਮਰ ਨਿਸ਼ਚਿਤ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੁੰਦੀ ਸੀ।
ਪਦਮਿਨੀਸੇਨ ਗੁਪਤਾ, ਦ ਸਟੱਡੀ ਆਫ਼ ਵੂਮੈਨ ਇਨ ਇੰਡੀਆ, ਇੰਡੀਅਨ ਬੁੱਕ ਕੰਪਨੀ, ਨਵੀਂ ਦਿੱਲੀ, 1974, ਪੰਨਾ 45.

9 ਪ੍ਰੇਤਾ ਯੱਗਸਯ ਸੰਭੁਵਾ ਯੁਵਾਮਿਦਾ ਵ੍ਰਵੀਮਹੇ।
ਅਗਨੀ ਚ ਹਵਯਵਾਹਨਮ॥
ਰਿਗਵੇਦ, 2.41.11.

10 ਤਾਰਾ ਅਲੀ ਬੇਗ, ਵੂਮੈਨ ਆਫ਼ ਇੰਡੀਆ, ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਆਫ਼ ਇੰਡੀਆ, ਦਿੱਲੀ, 1958, ਪੰਨਾ 2.

11 ਉਪ ਕਸ਼ਰੰਤਿ ਸਿੰਧਵੋ ਸਯੋਕ੍ਸ਼ਵ ਈਜਾਨ ਚ ਯਕਸ਼ਮਾਣ ਚ ਧੇਨਵ:।
ਪ੍ਰਣਤ ਚ ਪਪੁਰਿ ਚ ਸ਼੍ਵਸਯਵੋ ਘ੍ਰਤਸਯ ਧਾਰਾ ਉਪ ਯੰਤਿ ਵਿਸ਼ਵਤ॥॥
ਉਹੀ, 1.125.4.

ਨਾ ਕਰਨ ਅਤੇ ਜੀਵਨ ਪ੍ਰਤੀ ਮੁੜ ਜਾਗ੍ਰਿਤ ਹੋ ਕੇ ਸੰਤਾਨ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਲਈ ਆਪਣੇ ਦਿਉਰ ਨਾਲ ਗ੍ਰਹਿਸਥ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਵੇਸ਼ ਕਰਨ ਦੇ ਉਪਦੇਸ਼ ਦਾ ਵਰਨਣ ਮਿਲਦਾ ਹੈ।[12] ਪਰਿਵਾਰ ਵਿੱਚ ਮਾਤਾ ਨੂੰ ਸਭ ਤੋਂ ਉੱਤਮ ਸਥਾਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਪਿਤਰੀ ਸੱਤਾਤਮਕ ਹੁੰਦੇ ਸਨ ਪਰੰਤੂ ਇਸਦਾ ਅਰਥ ਇਹ ਨਹੀਂ ਸੀ ਕਿ ਮਾਤਾ ਦੀ ਸੱਤਾ ਪਿਤਾ ਨਾਲੋਂ ਘੱਟ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਮਾਤਾ ਨੂੰ ਪਰਿਵਾਰ ਅਤੇ ਸੰਤਾਨ ਦੀ ਸੂਤਰਧਾਰ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਮਾਤਾ ਤੋਂ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਕੇ ਹੀ ਸੰਤਾਨ ਉੱਤਮ ਗੁਣਾਂ ਨੂੰ ਧਾਰਨ ਕਰ ਸਕਦੀ ਸੀ।[13] ਮਾਤਾ ਅਤੇ ਉਪਦੇਸ਼ ਦੇਣ ਵਾਲੀ ਇਸਤਰੀ ਦਾ ਬਹੁਤ ਸਤਿਕਾਰ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ।

1.2 ਧਾਰਮਿਕ ਸਥਿਤੀ

ਧਾਰਮਿਕ ਕਾਰਜਾਂ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਭੂਮਿਕਾ ਅਹਿਮ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਕੋਈ ਵੀ ਧਾਰਮਿਕ ਕਾਰਜ ਉਸ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਸੰਪੂਰਨ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਕੁਝ ਯੱਗ ਤਾਂ ਉਸ ਦੁਆਰਾ ਭਾਗ ਲਏ ਬਿਨਾਂ ਪੂਰਨ ਹੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੇ ਸਨ। ਪਤੀ ਦੀ ਗੈਰ ਮੌਜੂਦਗੀ ਵਿੱਚ ਇੱਕਲੀ ਪਤਨੀ ਨੂੰ ਯੱਗ ਕਰਨ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਵਿਸ਼ਵਵਾਰਾ ਨਾਂ ਦੀ ਇਸਤਰੀ ਦੁਆਰਾ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਸਵੇਰੇ ਖੁਦ ਯੱਗ ਕਰਨ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਮਿਲਦੀ ਹੈ।[14] ਇਸ ਸਮੇਂ ਨਾ ਸਿਰਫ਼ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਧਾਰਮਿਕ ਕਾਰਜਾਂ ਵਿੱਚ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੋਣ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਸੀ ਬਲਕਿ ਉਸਨੂੰ ਦੇਵੀ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪੂਜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਦਿਤੀ, ਅਦਿਤੀ, ਉਸ਼ਾ, ਇੰਦਰਾਣੀ, ਸਰਸਵਤੀ, ਸਵਿਤਾ, ਪ੍ਰਿਥਵੀ ਆਦਿ ਇਸ ਸਮੇਂ ਦੀ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਦੇਵੀਆਂ ਸਨ। ਇਹਨਾਂ ਦੀ ਉਸਤਤ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਅਨੇਕਾਂ ਮੰਤਰ ਰਿਗਵੇਦ ਵਿੱਚ ਮਿਲਦੇ ਹਨ। ਦੇਵਤਿਆਂ ਦੀ ਭਗਤੀ ਕਰਨ ਵਾਲੀਆਂ ਇਸਤਰੀਆਂ ਦਾ ਉਚਿਤ ਰੀਤ ਨਾਲ ਸਤਿਕਾਰ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ।[15]

1.3 ਆਰਥਿਕ ਸਥਿਤੀ

ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਸੰਪਤੀ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਪਿਤਾ ਦੀ ਜਾਇਦਾਦ ਉੱਪਰ ਪੁੱਤਰੀ ਦਾ ਬਰਾਬਰ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਲੜਕੀ ਦਾ ਪਹਿਰਾਵਾ ਤੇ ਉਸਦਾ ਰਹਿਣ-ਸਹਿਣ ਪਿਤਾ ਦੀ ਪ੍ਰਤੀਸ਼ਠਾ ਅਤੇ ਮਾਨ-ਸਨਮਾਨ ਦਾ ਸੂਚਕ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਇਸਲਈ ਉਹ ਆਪਣੀ ਮਰਜ਼ੀ ਅਨੁਸਾਰ ਧਨ ਖ਼ਰਚ ਕਰਕੇ ਜੀਵਨ ਬਤੀਤ ਕਰਦੀ

---

12 ਅਸਮੈ ਤਿਸਤ੍ਰੋ ਅਵਯਯਾਅ ਨਾਰੀਦੇਵਾਯ ਦੇਵੀ ਦਿਧਿਛਨਤਯਤ੍ਸ।
ਕ੍ਰਤਾਵੋਪ ਹਿ ਪ੍ਰਸਸਤ੍ਰੇ ਅਪਸੁ ਸ ਪੀਯੂਸ਼ ਪੂਰਵਸਨਾਮ॥
ਰਿਗਵੇਦ, 2. 25.22.

13 ਸ਼ ਨੇ ਰਾਯਾ ਬ੍ਰਹਤਾ ਵਿਸ਼ਵਪੇਸ਼ਸਾ ਮਿਮਿਕਸ਼ਵਾ ਸਮਿਲਾਤਿਰਾ।
ਸ. ਧੁਪਨੇਨ ਵਿਸਤੁ ਰੇਮੋ ਮਹਿਸਂ ਵਾਜੇ ਵਾਜਿਵਤਿ॥
ਉਹੀ, 1.48.16.

14 ਸਮਿਧੋ ਅਗਨੀਦਿਵਿ ਸ਼ੋਚਿਰ ਸ਼੍ਰੇਪ੍ਤਯਡਸਮੁਦ੍ਵਿਆ ਰਿਵ ਭਾਂਤਿ।
ਇਤਿ ਪ੍ਰਾਚੀ ਵਿਸ਼ਵਵਾਰਾ ਨਮੋਭਿਦੇਵਾ ਈਲਾਨਾ ਹਵਿਸ਼ਾ ਘ੍ਰਤਾਚੀ॥
ਉਹੀ, 5.28.1.

15 ਉਤ ਦਵਾਰ ਉਸ਼ਤੀਰਟੀ ਸ਼ਰਯਨਤਾਸੁਤ ਦੇਵਾਂ ਉਸ਼ਤ ਆ ਵਹੇਹੁ॥
ਉਹੀ, 7.17.2.

ਸੀ। ਪੁੱਤਰ ਨਾ ਹੋਣ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿੱਚ ਪਿਤਾ ਦੀ ਜਾਇਦਾਦ ਉੱਪਰ ਸਿੱਧਾ ਅਧਿਕਾਰ ਪੁੱਤਰੀ ਦਾ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਮਗਰੋਂ ਉਸ ਦਾ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਦੀ ਕਮਾਈ ਅਤੇ ਸੰਪਤੀ ਉੱਪਰ ਵੀ ਪੂਰਨ ਅਧਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਗ੍ਰਹਿਸਥ ਪਤੀ ਪਤਨੀ ਲਈ ਸਮੂਹਿਕ ਸ਼ਬਦ ਦੰਪਤੀ ਵਰਤਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ।[16] ਜਿਸਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਕਿ ਪਤੀ ਅਤੇ ਪਤਨੀ ਦੋਵੇਂ ਹੀ ਘਰ ਦੇ ਮਾਲਕ ਹਨ। ਪਤਨੀ ਦਾ ਪਤੀ ਦੀ ਜਾਇਦਾਦ ਉੱਪਰ ਪੂਰਨ ਅਧਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਸੀ।

1.4 ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਸਥਿਤੀ

ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਵੀ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਅਹਿਮ ਸਥਾਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਉਸਨੂੰ ਸ਼ਾਸਤਰ ਵਿਦਿਆ ਵਿੱਚ ਨਿਪੁੰਨ ਕਰਨ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਸ਼ਸਤਰ ਵਿਦਿਆ ਵੀ ਸਿਖਾਈ ਜਾਂਦੀ ਸੀ। ਰਿਗਵੇਦ ਵਿੱਚ ਇਸਤਰੀਆਂ ਦੇ ਤੀਰ-ਕਮਾਨ ਬਾਰੇ ਜਾਣੂ ਹੋਣ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਮਿਲਦੀ ਹੈ। ਵਿਸ਼ਪਲਾ ਅਤੇ ਮੁਦਗਾਲਿਨੀ ਨਾਂ ਦੀਆਂ ਇਸਤਰੀਆਂ ਦੁਆਰਾ ਜੰਗ ਦੇ ਮੈਦਾਨ ਵਿੱਚ ਜਾ ਕੇ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਦੀ ਸਹਾਇਤਾ ਕਰਨ ਦਾ ਵਰਨਣ ਮਿਲਦਾ ਹੈ।[17] ਰਾਜਾ ਦੀ ਗੈਰਹਾਜ਼ਰੀ ਵਿੱਚ ਰਾਣੀ ਸੈਨਾਪਤੀ ਬਣ ਕੇ ਸੇਨਾ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਕਰ ਸਕਦੀ ਸੀ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਰਾਣੀ ਨੂੰ ਨਿਆਂ ਕਰਨ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਰਾਜ ਵਿੱਚ ਇਸਤਰੀਆਂ ਦਾ ਨਿਆਂ ਰਾਣੀ ਹੀ ਕਰਦੀ ਸੀ। ਇਸਤਰੀ ਸੰਬੰਧੀ ਦੋਸ਼ਾਂ ਨੂੰ ਗੁਪਤ ਰੱਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ ਜਿਸਦਾ ਨਿਰਣਾ ਰਾਣੀ ਹੀ ਕਰਦੀ ਸੀ।[18]

2. ਯਜੁਰਵੇਦ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦਾ ਸਰੂਪ

2.1 ਸਮਾਜਿਕ ਸਥਿਤੀ

ਇਸ ਸਮੇਂ ਪਰਿਵਾਰ ਸਮਾਜ ਦੀ ਮੂਲ ਇਕਾਈ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਪਰਿਵਾਰ ਵਿੱਚ ਪੁੱਤਰ ਦਾ ਜਨਮ ਪੁੱਤਰੀ ਦੇ ਜਨਮ ਦੇ ਸਥਾਨ ਤੇ ਸ਼ੁੱਭ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਪੁੱਤਰ ਨੂੰ ਸੰਤਾਨ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾਵਾਂ ਕੀਤੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਸਨ। ਪਰੰਤੂ ਇਸ ਸਮੇਂ ਕੰਨਿਆ ਨੂੰ ਕੁੱਖ ਵਿੱਚ ਮਾਰਨ ਦਾ ਰਿਵਾਜ਼ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਪੁੱਤਰੀ ਦਾ ਜਨਮ ਹੋਣ ਤੇ ਉਸਦਾ ਪਾਲਣ-ਪੋਸ਼ਣ ਵਧੀਆ ਢੰਗ ਨਾਲ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਧਰਤੀ ਅਤੇ ਅਕਾਸ਼ ਦੇ ਸਮਾਨ ਨਿਰਮਲ ਕੰਨਿਆ ਨੂੰ ਕੁਲ ਦਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ।[19] ਉਸਨੂੰ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਦਾ

---

16 ਯਾ ਦੰਪਤੀ ਸਮਨਯਾ ਸੁਨੁਤ ਆਚੁ ਧਾਵਤ ਦੇਵਾਸੋ ਨਿਤਯਾਰਿਸ਼ਰਾ॥
ਰਿਗਵੇਦ, 8.31.5.

17 ਉਤਸਮ ਵਾਤੋਂ ਵਹਤਿ ਵਾਸੋ ਅਸਚਧਾ ਅਧਿਰਥ ਯਦਜਯਤਸਹਸਤ੍ਰਮ।
ਰਖੀਰਭੁ ਮੁਦਗਾਲਿਨੀ ਰਾਵਿਸ਼ੋਦ ਭਰੇ ਕ੍ਰਤ ਵਯਚੇਦਿਨਦ੍ਰ ਸੇਨਾ॥
ਉਹੀ, 10.102.2-3

18 ਦੇਵਾਸਾਂ ਪਤਨੀ ਰੁਸਤੀਰਵੰਤੁ ਨ: ਪ੍ਰਾਵੰਤੁ ਨਸਤੁਜਾਯੇ ਵਾਜਸਾਤਯੇ।
ਯਾ : ਪ੍ਰਾਥਿਵਾਸੋ ਜਾ ਅਪਾਮਪਿ ਵ੍ਰਤੇ ਭਾ ਨੋ ਦੇਵੀ : ਸੁਹੁਣਾ ਸ਼ਰਮ ਯਚਛਤ॥
ਉਹੀ, 5.46.7.

19 ਨਿ ਹੋਤਾ ਹੋਤ੍ਰਛਦਨੇ ਵਿਦਾਨਸਤਵੇਸ਼ੋ ਦੀਦਿਵਾਂ ਅਸਦਤ ਸੁਦ ਕਸ: ।
ਅਦਵਧਵ੍ਰਤ ਪ੍ਰਮਤਿਵ੍ਰਸਿਸ਼ਠ: ਧਰਮਸਤਰਭਰ : ਸੁਚਿ ਜਿਣ ਹੋ ਅਗਨੀ॥
ਯਜੁਰਵੇਦ, 11.36.

ਅਧਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਲੜਕੀਆਂ ਨੂੰ ਔਸ਼ਧੀ ਗਿਆਨ, ਵਿਆਕਰਣ ਅਤੇ ਵੈਦਿਕ ਸ਼ਾਸਤਰ ਗਿਆਨ ਵਿੱਚ ਨਿਪੁੰਨ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ।[20] ਪੁੱਤਰੀ ਨੂੰ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿੱਚ ਨਿਪੁੰਨ ਕਰਨਾ ਮਾਤਾ, ਪਿਤਾ, ਗੁਰੂਜਨਾਂ ਦਾ ਫਰਜ਼ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਵਿਦਵਾਨ ਇਸਤਰੀਆਂ ਸਿੱਖਿਆ ਦਾ ਪ੍ਰਸਾਰ ਕਰਦੀਆਂ ਸਨ। ਔਸ਼ਧੀ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਕੇ ਇਸਤਰੀ ਰੋਗਾਂ ਦਾ ਇਲਾਜ ਕਰ ਸਕਦੀ ਸੀ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਲੜਕੀ ਨੂੰ ਸਵੰਬਰ ਵਿਆਹ ਕਰਵਾਉਣ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਸੀ। ਅਜਿਹੇ ਅਨੇਕ ਮੰਤਰ ਹਨ, ਜਿਨਾਂ ਤੋਂ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਲੜਕੀ ਦਾ ਵਿਆਹ ਉਸਦੇ ਸਮਾਨ ਗੁਣ, ਧਰਮ, ਕਰਮ, ਪੁਰਸ਼ਾਰਥ ਵਾਲੇ ਪੁਰਸ਼ ਨਾਲ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਉਹ ਆਪਣੇ ਤੋਂ ਕਿਸੇ ਪੱਖ ਤੋਂ ਵੀ ਨੀਵੇਂ ਪੁਰਸ਼ ਨੂੰ ਪਤੀ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਸਵੀਕਾਰ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ ਸੀ।[21] ਵਿਆਹ ਉਪਰੰਤ ਉਸਦੀ ਸਥਿਤੀ ਬਿਹਤਰ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਵਿਆਹ ਪਿੱਛੋਂ ਪਤੀ ਪਤਨੀ ਦੇ ਸੁਖੀ ਰਹਿਣ ਦੀ ਇੱਛਾ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ। ਪਤੀ ਪਤਨੀ ਆਪਸ ਵਿੱਚ ਇਕ ਦੂਜੇ ਦਾ ਸਤਿਕਾਰ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਪਤਨੀ ਦੀ ਰੱਖਿਆ ਕਰਨਾ, ਖੁਸ਼ ਰੱਖਣਾ ਅਤੇ ਵਿਆਹ ਸੰਬੰਧ ਵਿੱਚ ਉਸ ਪ੍ਰਤੀ ਵਫ਼ਾਦਾਰ ਰਹਿਣਾ ਪਤੀ ਦਾ ਫ਼ਰਜ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਸੰਤਾਨ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਹਿੱਤ ਵਿਧਵਾ ਇਸਤਰੀ ਆਪਣੇ ਦਿਉਰ ਜਾਂ ਕਿਸੇ ਨਿਕਟਵਰਤੀ ਸੰਬੰਧੀ ਨਾਲ ਪੁਨਰ ਵਿਆਹ ਕਰ ਸਕਦੀ ਸੀ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਪਰਿਵਾਰ ਪਿੱਤਰੀ ਸੱਤਾਮਕ ਹੁੰਦੇ ਸਨ ਪਰੰਤੂ ਮਾਤਾ ਨੂੰ ਵੀ ਸਨਮਾਨ ਯੋਗ ਸਥਾਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਮਾਤਾ ਦੀ ਆਗਿਆ ਦਾ ਪਾਲਣ ਕਰਨਾ ਸੰਤਾਨ ਦਾ ਫਰਜ਼ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਮਾਤਾ ਦੀ ਆਗਿਆ ਦੇ ਵਿਰੁੱਧ ਆਚਰਨ ਕਰਨਾ ਪਾਪ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ।

2.2 ਧਾਰਮਿਕ ਸਥਿਤੀ

ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਯੱਗ ਕਰਨ ਅਤੇ ਵੈਦਿਕ ਮੰਤਰਾਂ ਨੂੰ ਪੜਨ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਧਾਰਮਿਕ ਕਾਰਜਾਂ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਪੁਰਸ਼ ਦਾ ਸਹਿਯੋਗ ਦਿੰਦੀ ਸੀ। ਦੋਵੇਂ ਆਪਸ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰੇਮ ਨਾਲ ਬਹਿ ਕੇ ਯੱਗ ਕਰਦੇ ਸਨ ਅਤੇ ਵੈਦਿਕ ਮੰਤਰਾਂ ਦਾ ਪਾਠ ਕਰਦੇ ਸਨ।[22]

2.3 ਆਰਥਿਕ ਸਥਿਤੀ

ਇਸ ਸਮੇਂ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਸੰਪਤੀ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਉਸਦਾ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਦੀ ਕਮਾਈ ਅਤੇ ਉਸ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਹਰ ਵਸਤੂ ਉੱਪਰ ਪੂਰਨ ਅਧਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਸੀ।[23] ਪਰ ਇਸ ਸਮੇਂ ਨਾਰੀ ਦਾ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਦੀ ਸੰਪਤੀ

---

20 ਯਾ ਔਸ਼ਧੀ : ਸੋਮਾਰਾਗੀਵ੍ਰਹੀ : ਸਤਵਿਚਕਸ਼ਵਾ। ਤਾਸਾਮਨਿ ਤਵਸੁਤਮਾਰ ਕਾਸਾਯ ਸ਼ਹਰਦੇ।
ਉਹੀ, 12.12.

21 ਪਰ ਸਾਯਾਅਧਿ ਸਵਤੋ ਵਰਾ ਅਭਆਤਾਰ।
ਧਤਰਾਹ ਮਸਿਮ ਤਾਂ ਅਵ॥
ਉਹੀ, 11.71.

22 ਪ੍ਰਾਣਸਮੇ ਪਾਹਾਪਾਨਮੇ ਪਾਰਿ ਵਪਾਨਮੇ ਪਾਹਿ ਚਕਸ਼ੁਉਰਵਾ ਸ੍ਰੋਤਸੇ ਸਲੋਕਾਯ।
ਅਪ: ਪਿਨਵੋਛਧੀ ਜਿਂਣ ਦ੍ਰਿਪਾਦਵ ਚਤੁਛਪਾਤਧਾਰਿ ਦਿਵੋ ਵ੍ਰਸ਼ਟੀਮੇਰਯ॥
ਉਹੀ, 14.7.

23 ਧਦਤੁਯੁਪਜਿਹਿਕਾ ਯਦ ਵਮਰੋਅਤਿਸਪ੍ਰਤਿ। ਸਰਵ ਤਦਸਤੁ ਤੇ ਘ੍ਰਤ ਤਜੁਸ਼ਸਵ ਯਵਿਸਯ॥
ਯਜੁਰਵੇਦ, 11.74.

ਉੱਪਰ ਅਧਿਕਾਰ ਨਹੀਂ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਵਿਆਹ ਸਮੇਂ ਕੰਨਿਆਦਾਨ ਕਰਕੇ ਪਿਤਾ ਪੁੱਤਰੀ ਪ੍ਰਤੀ ਸਾਰੇ ਫ਼ਰਜ਼ਾਂ ਤੋਂ ਮੁਕਤ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਇਸ ਪਿਛੋਂ ਪਿਤਾ ਦੀ ਧਨ ਸੰਪਤੀ ਉਪਰ ਉਸਦਾ ਕੋਈ ਅਧਿਕਾਰ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ।ਜੇਕਰ ਕੰਨਿਆ ਦਾ ਕੋਈ ਭਰਾ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਸੀ ਤਾਂ ਉਸਦੇ ਪਿਤਾ ਦੀ ਜਾਇਦਾਦ ਉੱਪਰ ਉਸਦੀ ਹੋਣ ਵਾਲੀ ਸੰਤਾਨ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਸੀ।

2.4 ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਸਥਿਤੀ

ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਅਹਿਮ ਭੂਮਿਕਾ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਉਸਨੂੰ ਯੁੱਧ ਵਿੱਚ ਜਾਣ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਉਹ ਯੁੱਧ ਵਿੱਚ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੋ ਕੇ ਦੁਸ਼ਮਣਾਂ ਨੂੰ ਹਰਾ ਸਕਦੀ ਸੀ।[24] ਰਾਜ ਦੀ ਨਿਆਂ ਵਿਵਸਥਾ ਵਿੱਚ ਉਸਦੀ ਅਹਿਮ ਭੂਮਿਕਾ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਰਾਣੀ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਵੱਖਰੀ ਅਦਾਲਤ ਲਗਾਉਣ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਸੀ, ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਉਹ ਰਾਜ ਦੀਆਂ ਇਸਤਰੀਆਂ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਮਸਲਿਆਂ ਨੂੰ ਹੱਲ ਕਰ ਸਕਦੀ ਸੀ। ਇਸ ਲਈ ਉਸਨੂੰ ਰਾਜਨੀਤੀ ਸੰਬੰਧੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸਿੱਖਿਆ ਵੀ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ।[25]

3. ਸਾਮਵੇਦ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦਾ ਸਰੂਪ

3.1 ਸਮਾਜਿਕ ਸਥਿਤੀ

ਸਾਮਵੇਦ ਮੁੱਖ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਯੱਗ ਵਿਚ ਗਾਏ ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਮੰਤਰਾਂ ਦਾ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਜਿਸ ਵਿਚੋਂ ਬਹੁਤੇ ਮੰਤਰ ਰਿਗਵੇਦ ਵਿਚੋਂ ਲਏ ਗਏ ਹਨ। 75 ਮੰਤਰਾਂ ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਬਾਕੀ ਸਾਰੇ ਮੰਤਰ ਰਿਗਵੇਦ ਵਿੱਚ ਦਰਜ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ ਇਸ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਸੰਬੰਧੀ ਬਹੁਤ ਹੀ ਘੱਟ ਵਰਨਣ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਸਾਮਵੇਦ ਵਿੱਚ ਦਰਜ਼ ਮੰਤਰਾਂ ਦੇ ਅਧਿਐਨ ਤੋਂ ਪਤਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਉਸ ਸਮੇਂ ਦੀ ਨਾਰੀ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਚ ਸੰਪੰਨ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਗ੍ਰਹਿਸਥ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਪਤੀ-ਪਤਨੀ ਆਪਸ ਵਿੱਚ ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਅਤੇ ਇਕ ਦੂਜੇ ਪ੍ਰਤੀ ਵਫ਼ਾਦਾਰ ਰਹਿੰਦੇ ਸਨ।[26] ਗ੍ਰਹਿਸਥ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਮਾਨਤਾ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਸਾਮਵੇਦ ਵਿੱਚ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਆਤਮਾ ਦੇ ਅੰਦਰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਯੋਗ ਅਭਿਆਸ ਰਾਹੀਂ ਹੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਠੀਕ ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਨੁੱਖ ਦਾ ਗ੍ਰਹਿਸਥ ਜੀਵਨ ਪਤਨੀ, ਭੈਣ, ਪੁੱਤਰੀ ਦੇ ਸਾਥ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਸਫ਼ਲ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ।[27] ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਮਾਤਾ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਸਨਮਾਨ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ

---

24 ਅਪ ਸ਼ਤਰੁਵਿਧਅਤਾ ਸੰਵਿਦਾਨੇ ਆਤ੍ਮੀਈਮੇ ਇਸ਼ਫੁਰੰਤੀਅਮਿ ਤ੍ਰਾਸ॥
ਉਹੀ, 31.41.

25 ਨਿਸ਼ਸਾਦ ਧ੍ਰਤਵਤੇ ਵਰੁਣ : ਧਸਤਯਾਸਣਾ। ਸਾਮਾਰਜਯ ਸੁਕ੍ਰਤ॥
ਉਹੀ, 10.27.

26 ਤਦੋ ਗਾਇ ਸੁਤੇ ਸਚਾ ਪੁਰੂਹੁਤਾਯ ਸਤਵਨੇ। ਸ਼ ਯਕ੍ਵੇ ਨਸ਼ਾਕਿਨੇ॥
ਸਾਮਵੇਦ 2.1.

27 ਪ੍ਰੋ ਆਯਾਸੀ ਦਿੰਦੁਰਿਨ੍ਦਸਯ ਨਿਸ਼ਕ੍ਰੰਤ ਸਖਾ ਸਧਯੁਨ ਪ੍ਰ ਮਿਨਾਤੀ ਸਾਤਿਰਮ।
ਮਈਏਵ ਯੁਵਤਿਭਿ : ਸਮਛਰਤਿ ਸੋਮ : ਕਲਸ਼ੇ ਸਤ ਯਾਸਨਾ ਧਥਾ॥
ਸਾਮਵੇਦ, 9.4.

ਸੀ। ਸਾਮਵੇਦ ਵਿੱਚ ਮਾਤਾ ਨੂੰ ਸੰਤਾਨ ਦੀ ਰੱਖਿਆ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਹੈ।[28]

3.2 ਧਾਰਮਿਕ ਸਥਿਤੀ

ਧਾਰਮਿਕ ਜੀਵਨ ਨਾਰੀ ਨਾਲ ਪੱਖਪਾਤ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਮਨੁੱਖ ਦਾ ਮੁੱਖ ਉਦੇਸ਼ ਦੇਵਤਿਆਂ ਨੂੰ ਯੱਗ ਦੁਆਰਾ ਖੁਸ਼ ਕਰਨਾ ਅਤੇ ਇਸ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਖੁਸ਼ ਰਹਿਣਾ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਇਸ ਲਈ ਨਰ ਅਤੇ ਨਾਰੀ ਦੋਵੇਂ ਮਿਲ ਕੇ ਧਾਰਮਿਕ ਕਾਰਜਾਂ ਨੂੰ ਪੂਰਨ ਕਰਦੇ ਸਨ।

3.3 ਆਰਥਿਕ ਸਥਿਤੀ

ਸਾਮਵੇਦ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਆਰਥਿਕ ਸਥਿਤੀ ਸੰਬੰਧੀ ਵਧੇਰੇ ਵਰਨਣ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦਾ। ਮੰਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਉਪਲੱਬਧ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਪਤਾ ਚਲਦਾ ਹੈ ਕਿ ਪਤਨੀ ਦਾ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਹਰ ਵਸਤੂ ਉੱਪਰ ਪੂਰਨ ਅਧਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਸੀ।

3.4 ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਸਥਿਤੀ

ਸਾਮਵੇਦ ਮੁੱਖ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਆਰੀਆ ਦੇ ਯੱਗ ਸਮੇਂ ਗਾਏ ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਮੰਤਰਾਂ ਦਾ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਹੈ। ਇਸ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਸਥਿਤੀ ਸੰਬੰਧੀ ਕੋਈ ਵੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ।

4. ਅਥਰਵਵੇਦ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦਾ ਸਰੂਪ

4.1 ਸਮਾਜਿਕ ਸਥਿਤੀ

ਸਮੇਂ ਦੇ ਬਦਲਾਅ ਨਾਲ ਮਨੁੱਖ ਕਰਮ ਕਾਂਡਾ ਅਤੇ ਰਹੁ-ਰੀਤਾਂ ਵਿੱਚ ਜਕੜਿਆ ਗਿਆ ਸੀ। ਜਿਸ ਨਾਲ ਉਸਦੀ ਸੋਚ, ਸੁਭਾਅ, ਜੀਵਨ ਢੰਗ ਵਿੱਚ ਕਾਫ਼ੀ ਤਬਦੀਲੀ ਆ ਗਈ ਸੀ । ਇਸ ਤੋਂ ਨਾਰੀ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਵੀ ਵਾਂਝੀ ਨਾ ਰਹਿ ਸਕੀ। ਸਮਾਜਿਕ ਪੱਖ ਤੋਂ ਉਸਦੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿੱਚ ਕਾਫ਼ੀ ਪਰੀਵਰਤਨ ਆ ਗਿਆ ਸੀ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਪੁੱਤਰ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਦੀ ਇੱਛਾ ਪ੍ਰਬਲ ਰੂਪ ਧਾਰਨ ਕਰ ਗਈ ਸੀ। ਪੁੱਤਰ ਨੂੰ ਸਵਰਗ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਦਾ ਰਾਹ ਮੰਨਿਆ ਜਾਣ ਲੱਗ ਪਿਆ ਸੀ। ਰਿਗਵੇਦ ਵਿੱਚ ਦੇਵਤੇ ਉਸਤਤ ਦੇ ਪਾਤਰ ਹੁੰਦੇ ਸਨ ਪਰੰਤੂ ਇਸ ਸਮੇਂ ਪਿੱਤਰ ਪੂਜਾ ਆਰੰਭ ਹੋ ਗਈ ਸੀ। ਪੁੱਤਰ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਰਾਹੀਂ ਹੀ ਪਿੱਤਰੀ ਰਿਣ ਤੋਂ ਮੁਕਤੀ ਮਿਲ ਸਕਦੀ ਸੀ। "ਪੁੱਤਰ ਹੀ ਮਾਤਾ ਪਿਤਾ ਦੇ ਮਰਨ ਸੰਸਕਾਰ ਨੂੰ ਪੂਰਨ ਕਰਕੇ ਨਰਕ ਤੋਂ ਬਚਾ ਸਕਦਾ ਸੀ। ਪੁੱਤਰੀ ਅਜਿਹਾ ਕਰਨ ਦੇ ਸਮਰੱਥ ਨਹੀਂ ਸੀ।"[29] ਇਸ ਲਈ ਲੜਕੀ ਦੇ ਜਨਮ ਦੀ ਥਾਂ 'ਤੇ ਲੜਕੇ ਦੇ ਜਨਮ ਲਈ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ। ਉਸਦੇ ਜਨਮ ਨੂੰ ਨਿਸ਼ਚਿਤ ਕਰਨ ਲਈ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਕਿਸਮ ਦੇ ਸੰਸਕਾਰ ਵੀ ਕੀਤੇ ਜਾਂਦੇ ਸਨ। ਜੇਕਰ ਲੜਕੀ ਪੈਦਾ ਹੁੰਦੀ ਸੀ ਤਾਂ ਇਸਦਾ ਕਾਰਨ ਬੁਰੀਆਂ ਆਤਮਾਵਾਂ ਨੂੰ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਲੜਕੀ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਤੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਧਿਆਨ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਉਸਨੂੰ

---

28 ਭਵਾ ਰਿਹੰਤਿ ਧੀਤਯੋ ਹਰਿ ਪਵਿਤਰੇਅਦਰਹੁ
ਵਤਸ ਜਾਤ ਨ ਮਾਤਰ : ਪਵਮਾਨ ਵਿਪਸਰਵੀ॥
ਉਹੀ, 6.2.

29 ਪੀ.ਥੋਮਸ, ਇੰਡੀਅਨ ਵੂਮੇਨ ਥਰੂ ਦ ਏਜਸ, ਏਸ਼ੀਆ ਪਬਲੀਸ਼ਿੰਗ ਹਾਊਸ, ਮੁੰਬਈ, 1964, ਪੰਨਾ 54.

ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ ਕਿਸੇ ਅਧਿਆਪਕ ਜਾਂ ਵਿਦਿਆਲੇ ਵਿੱਚ ਨਹੀਂ ਭੇਜਿਆ ਜਾਦਾ ਸੀ। ਉਹ ਘਰ ਵਿੱਚ ਹੀ ਆਪਣੇ ਮਾਤਾ, ਪਿਤਾ, ਭਰਾ ਤੋਂ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਸਕਦੀ ਸੀ।

ਇਸ ਸਮੇਂ ਬਾਲ ਵਿਆਹ ਦਾ ਪ੍ਰਚਲਨ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਜਦੋਂ ਕੰਨਿਆ ਦੇ ਮਨ ਵਿੱਚ ਵਿਆਹ ਦਾ ਵਿਚਾਰ ਉਤਪੰਨ ਹੁੰਦਾ ਸੀ, ਉਦੋਂ ਉਸਦਾ ਵਿਆਹ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਉਸਨੂੰ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ, ਭਰਾ, ਸਕੇ-ਸੰਬੰਧੀਆਂ ਦੇ ਅਧੀਨ ਰਹਿਣਾ ਪੈਂਦਾ ਸੀ ਅਤੇ ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਬਾਦ ਉਹ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਦੇ ਅਧੀਨ ਰਹਿੰਦੀ ਸੀ। ਲੜਕੀ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਵਰ ਚੁਨਣ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਨਹੀਂ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਸਵੰਬਰ ਵਿਆਹ ਦਾ ਵਰਨਣ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦਾ। ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਸੁਤੰਤਰ ਰਹਿਣ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਵਿਆਹ ਸਮੇਂ ਕੰਨਿਆ ਦਾ ਪਿਤਾ ਉਸਦੇ ਪਤੀ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕਰਦਾ ਸੀ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਉਹ ਆਪਣੀ ਕੰਨਿਆ ਨੂੰ ਉਸਦੀ ਸੇਵਾ ਲਈ ਸਮਰਪਿਤ ਕਰਦਾ ਸੀ।[30] ਪਤੀ ਦੁਆਰਾ ਵੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਦੇਵਤਿਆਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ, ਜਿਸ ਦਾ ਉਦੇਸ਼ ਆਪਣੀ ਪਤਨੀ ਨੂੰ ਵਸ ਵਿੱਚ ਰੱਖਣਾ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਦਹੇਜ਼ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਪ੍ਰਚਲਨ ਹੋ ਗਿਆ ਸੀ। ਲੜਕੀ ਨੂੰ ਵਿਦਾ ਕਰਦੇ ਸਮੇਂ ਦਹੇਜ ਦਾ ਰੱਥ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ।[31] ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਪ੍ਰਚਲਨ ਨਹੀਂ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਪਤੀ ਦੀ ਮੌਤ ਪਿਛੋਂ ਪਤਨੀ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਦਿਉਰ ਜਾਂ ਨਿਕਟਵਰਤੀ ਸੰਬੰਧੀ ਨਾਲ ਪੂਨਰ ਵਿਆਹ ਕਰਾਉਣ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਸੀ।

ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਮਾਤਾ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਸਨਮਾਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਅਥਰਵਵੇਦ ਵਿੱਚ ਮਾਤਾ ਦੀ ਤੁਲਨਾ ਧਰਤੀ ਨਾਲ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ।[32] ਮਾਤਾ ਬਣਨ ਤੇ ਹੀ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਪੂਰਨ ਸਮਝਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ ਅਤੇ ਬਾਂਝ ਇਸਤਰੀ ਨੂੰ ਘ੍ਰਿਣਾ ਦੀ ਨਜ਼ਰ ਨਾਲ ਵੇਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਪਰਿਵਾਰ ਵਿੱਚ ਉਸਦਾ ਸਥਾਨ ਪੁੱਤਰ ਨੂੰ ਜਨਮ ਦੇਣ ਨਾਲ ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਜਿਹੜੀ ਇਸਤਰੀ ਪੁੱਤਰ ਨੂੰ ਜਨਮ ਦਿੰਦੀ ਸੀ ਉਸਨੂੰ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸਨਮਾਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦਾ ਸੀ।

4.2 ਧਾਰਮਿਕ ਸਥਿਤੀ

ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਯੱਗ ਕਰਨ ਅਤੇ ਵੇਦਾਂ ਦਾ ਪਾਠ ਕਰਨ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਅੰਸ਼ਿਕ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਾਪਤ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਇਸ ਸਮੇਂ ਨਾਰੀ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਤੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਧਿਆਨ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ, ਇਸ ਲਈ ਉਹ ਵੇਦ ਮੰਤਰਾਂ ਦਾ ਉਚਾਰਨ ਠੀਕ ਢੰਗ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੀ ਸੀ। ਇਸ ਲਈ ਉਸਨੂੰ ਕੁਝ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਪ੍ਰਸਥਿਤੀਆਂ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਵੈਦਿਕ ਮੰਤਰਾਂ ਦਾ ਪਾਠ ਕਰਨ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਧਾਰਮਿਕ ਕਾਰਜਾਂ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਵਧੇਰੇ ਅਧਿਕਾਰ

---

30 ਏਸਾ ਤੇ ਭਲਪਾ ਰਾਜਨਤਾਸੁ ਤੇ ਪਰਿ ਦਾਸਿ। ਜਯੋਕਿ ਪਤ੍ਸਵਾਸਾਤਾ ਆ ਸ਼ੀਰਨ ਸਮੋਪਿਆਹ॥
ਅਥਰਵਵੇਦ, 1.14.2.

31 ਸਂ ਕਾਸ਼ਯਾਮਿ ਵਹ੍ਤਂ ਬ੍ਰਹਮਾਵਾ ਗ੍ਰਹੇਕ ਘੋਰੇਣ ਚਕਸਾ ਮਿਤ੍ਰਿਯੇਣ।
ਪਯ੍ਨਾਦ ਵਿਸ਼ਵਰੂਪ ਯਦਸਿਤ ਸੋਯਂਨ ਪਤਿਭਯ : ਸਵਿਤਾ ਤਤਕ੍ਸ਼ਣ॥
ਉਹੀ, 14.2.12.

32 ਤਾਸੁ ਨੋ ਧੇਹਾਭਿ ਨ: ਪਵਸਵ ਮਾਤਾ ਭੂਮਿ : ਪੁਤਰੋ ਅਹਂ ਪ੍ਰਥਵੀਯਾ।
ਪ੍ਰਜਨਯ : ਪਿਤਾ ਸ ਉਨ : ਪਿਪਤ੍ਰੋ॥
ਉਹੀ, 12.1.12 .

ਰੋਹਿਤਾਂ ਦੇ ਹੱਥ ਵਿੱਚ ਆ ਗਏ ਸਨ। ਪੁੱਤਰ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਲਈ ਕੀਤੇ ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਯੱਗਾਂ ਵਿੱਚ ਉਸਦੀ ਅਹਿਮ ਭੂਮਿਕਾ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਉਤਮ ਸੰਤਾਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ ਇਸਤਰੀ ਅਗਨੀ ਦੇਵਤੇ ਦੀ ਉਪਾਸਨਾ ਕਰ ਸਕਦੀ ਸੀ।[33]

4.3 ਆਰਥਿਕ ਸਥਿਤੀ

ਇਸ ਸਮੇਂ ਕੰਨਿਆ ਦਾ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਦੀ ਸੰਪਤੀ ਉੱਪਰ ਕੋਈ ਅਧਿਕਾਰ ਨਹੀਂ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਵਿਆਹ ਹੋਣ ਸਮੇਂ ਪਿਤਾ ਉਸਨੂੰ ਦਹੇਜ ਦਾ ਰੱਥ ਦੇ ਕੇ ਉਸਦਾ ਕੰਨਿਆਦਾਨ ਕਰ ਦਿੰਦਾ ਸੀ। ਇਸ ਪਿੱਛੋਂ ਉਸਦਾ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਦੀ ਸੰਪਤੀ ਉੱਪਰ ਕੋਈ ਅਧਿਕਾਰ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ। ਉਸਨੂੰ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਦੀ ਸੰਪਤੀ ਉੱਪਰ ਪੂਰਨ ਰੂਪ ਅਧਿਕਾਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਪਤੀ ਅਤੇ ਪਤਨੀ ਦਾ ਆਪਸ ਵਿੱਚ ਇਕ ਦੂਸਰੇ ਦੇ ਪਦਾਰਥਾਂ ਉੱਪਰ ਪੂਰਨ ਅਧਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਸੀ।

4.4 ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਸਥਿਤੀ

ਅਥਰਵਵੇਦ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਸਥਿਤੀ ਸੰਬੰਧੀ ਵਧੇਰੇ ਵਰਨਣ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦਾ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਨਾਰੀ ਘਰ ਦੀ ਚਾਰ ਦੀਵਾਰੀ ਦੇ ਅੰਦਰ ਤੱਕ ਹੀ ਸੀਮਿਤ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਇਸ ਸੀਮਾ ਦੇ ਅੰਦਰ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਸਾਰੇ ਕਾਰਜ ਉਸਦੇ ਅਧੀਨ ਹੁੰਦੇ ਸਨ। ਇਹਨਾਂ ਕਾਰਜਾਂ ਨੂੰ ਪਤੀ ਦੀ ਸਰਪ੍ਰਸਤੀ ਵਿੱਚ ਪੂਰਨ ਕਰਨਾ ਉਸਦਾ ਫਰਜ਼ ਹੁੰਦਾ ਸੀ।

ਉਪਰੋਕਤ ਅਧਿਐਨ ਤੋਂ ਸਮੁੱਚੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਇਹ ਕਿਹਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਮਨੁੱਖੀ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦਾ ਸਥਾਨ ਹਮੇਸ਼ਾ ਸਥਿਰ ਨਹੀਂ ਰਿਹਾ। ਸਮੇਂ ਅਤੇ ਹਾਲਾਤਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਧੀਨ ਇਹ ਬਦਲਦਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਮਨੁੱਖੀ ਸੱਭਿਅਤਾ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਦੇ ਆਰੰਭਿਕ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਨਰ ਅਤੇ ਨਾਰੀ ਵਿੱਚ ਲਿੰਗ ਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਕੋਈ ਪੱਖਪਾਤ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ ਪਰੰਤੂ ਜਿਵੇਂ-ਜਿਵੇਂ ਮਨੁੱਖ ਸੱਭਿਅਕ ਸਮਾਜ ਵੱਲ ਵਿਕਸਿਤ ਹੁੰਦਾ ਗਿਆ ਤਿਵੇਂ-ਤਿਵੇਂ ਨਰ ਅਤੇ ਨਾਰੀ ਦਾ ਆਪਸੀ ਸਬੰਧ ਜਟਿਲ ਹੁੰਦਾ ਗਿਆ ਜਿਸ ਦੇ ਸਿੱਟੇ ਵਜੋਂ ਨਾਰੀ ਹੀਣ ਭਾਵਨਾ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਕੁਪ੍ਰਥਾਵਾਂ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਹੁੰਦੀ ਰਹੀ । ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦਾ ਸਥਾਨ ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਧਰਮ ਨੇ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਈ। ਵੇਦਾਂ ਵਿੱਚ ਸਥਾਪਿਤ ਮਾਨਤਾਵਾਂ ਨਾਰੀ ਜੀਵਨ ਦਾ ਆਧਾਰ ਰਹੀਆਂ ਹਨ ਇਸਲਈ ਮਨੁੱਖੀ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਦਾ ਸਥਾਨ ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਵੇਦਾਂ ਨੇ ਅਹਿਮ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਈ ਹੈ।

ਮੋ: 84372-02186

---

[33] ਉਪ ਸਤ੍ਰਵੀਹਿ ਵਲਵ ਜਸਧਿ ਚਰਮਧਿ ਚਰਸਵੀ ਰੋਹਿਤੇ।
ਤਤ੍ਰੋ ਪਵਿਸ਼ਯ ਸੁਪ੍ਰਜਾ ਇਪਮਰਾਨੀ ਸਧਯ੍ਰਤ॥
ਅਥਰਵਵੇਦ,14.2.25 .

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 87-93

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

'झूठा–सच', और 'तमस' उपन्यास में भारत–विभाजन की त्रासदी और स्त्री संघर्ष

सुमन वर्मा

शोधार्थी, हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।

समाज में स्त्रियां हमेशा वंचित समुदाय से रही हैं। प्राचीन काल से अब तक उनका संघर्ष लगातार जारी रहा है। पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में स्त्रियां हमेशा उपेक्षित रही हैं।यह उपेक्षा विभाजन के समय में भी दिखाई देता है। विभाजन के समय सबसे ज्यादा त्रासदी स्त्रियों को झेलनी पड़ी।भारत विभाजन की सबसे बड़ी त्रासदी विस्थापन के रूप में भारतीय जनमानस के समक्ष प्रकट हुई। इस दौरान सबसे अधिक दुर्दशा स्त्रियों की हुई। भारत विभाजन के कारण जो त्रासदी उत्पन्न हुई, वह भारतीय साहित्यकारों के हृदय के अंदर तक झकझोर गई, जिसके फलस्वरूप साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से इन त्रासद पूर्ण स्थितियों का वर्णन बहुत ही मार्मिक ढंग से किया है। उपन्यासों में महिलाओं की दयनीय स्थिति, उनकी दुर्दशा के जीवंत मार्मिक और हृदय विदारक चित्र देखने को मिलते हैं। इसके साथ ही साथ स्त्रियों के जीवन की त्रासदी, संघर्ष और मानवीय पक्ष का वर्णन भी मिलता है। दरअसल पारंपरिक समाज में वर्तमान समय में भी स्त्रियों की स्थिति भोग–विलास के रूप में ही पाई जाती है। स्त्री निरंतर अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए संघर्ष कर रही है। पारंपरिक समाज ने स्त्री को भोग–विलास की वस्तु से अधिक कोई महत्त्व नहीं दिया है। उनके लिए स्त्री का मतलब भोग–विलास की वस्तु से ज्यादा कुछ नहीं है। यही कारण है कि भारत विभाजन के दौरान सबसे अधिक प्रताड़ना स्त्रियों को ही झेलना पड़ा। सबसे अधिक आमानवीय व्यवहार स्त्रियों के साथ ही हुआ। सांप्रदायिक दंगों के समय भारत विभाजन के दौरान मां, बहन, पुत्री, पत्नी, प्रेमिका आदि रिश्ते जैसे समाप्त ही हो गए थे। भारत विभाजन के दौरान ऐसा लगता था कि जैसे स्त्री मात्र भोग की वस्तु है। उस समय स्त्रियों के साथ सामूहिक बलात्कार किया जाता था। कोई भी पुरुष धर्म और अधर्म के बारे में नहीं सोचता था, जिसका मन होता था वही अपने से दुसरे धर्म वाली स्त्री के साथ बलात्कार करता था। अन्य धर्मों को मानने वाले जबरदस्ती स्त्रियों को अपने घरों में रखते थे और धर्म बदलने के लिए उन पर दबाव डालते थे। स्त्रियों को जबरन वेश्यावृत्ति के व्यवसाय में डाल दिया जाता था। स्त्रियों की नीलामी भी की जाती थी। यहां तक कि स्त्रियों के अंगों को भी काटने से पीछे नहीं हटते थे। उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में स्त्री जीवन के इसी त्रासदी और हृदय विदारक मार्मिक चित्र को चित्रित किया है।

भारत–विभाजन की त्रासदी सबसे अधिक स्त्रियों को ही झेलनी पड़ी थी। भारत–विभाजन के दौरान

मानसिक और शारीरिक दोनों स्तरों पर यह त्रासदी झेलनी पड़ी। स्त्रियों की यह त्रासदपूर्ण मनःस्थिति को उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में वर्णित किया है। 'झूठा–सच' उपन्यास में यशपाल ने स्त्रियों के जीवन की त्रासदी को बहुत मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। स्त्रियों की त्रासदी से परिपूर्ण मनःस्थिति को जितनी सघनता से यशपाल ने अपने उपन्यास में वर्णित किया है। वैसा वर्णन कम ही उपन्यासों में देखने को मिलता है। सीलों, तारा, उर्मिला, बंतो, कनक ये सभी स्त्री पात्र भारत–विभाजन के दौरान हुए त्रासदी को अलग–अलग ढंग से प्रस्तुत करते हैं। भारत के विभाजन की त्रासदी के दौरान अनगिनत स्त्रियां दोनों ही धर्मों में क्रोध का शिकार हुई। सांप्रदायिक दंगे बहुत ही विकराल रूप धारण कर चुके थे। दोनों ही संप्रदाय के लोग हिंदू और मुसलमान पशु बन चुके थे और वह सभी अपने से विपरीत धर्म की स्त्रियों के साथ बदसलूकी कर रहे थे। हिंदू और मुसलमान दोनों संप्रदायों में जैसे प्रतियोगिता छिड़ गई थी कि दोनों में से कौन अधिक विपरीत धर्म वाली स्त्रियों के साथ अत्याचार कर सकता है? यह सब मार्मिक दृश्य यशपाल के उपन्यास 'झूठा–सच' में देखने को मिलता है।

यशपाल के उपन्यास 'झूठा–सच' में शरणार्थी कैंप में स्त्रियां परस्पर बात करती हुई कहती हैं कि– "हिंदू हो चाहे मुसलमानी, जो अपनी इज्जत लिए मर गई वही सबसे अच्छी रही, बहनों औरत के शरीर की तो बर्बादी ही है। औरत तो भेड़–बकरी है, जो चाहे छीन ले जाए, दुश्मन की चीज समझकर काट डाले। जाने किन कर्मों के फल से औरत का तन पाया है।" उस समय जो स्वयं को बहुत ही धार्मिक बताते थे और धर्म के नाम पर बहुत सारी बातें किया करते थे, वह सब भी महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करने से बाज नहीं आ रहे थे, वह भी स्त्रियों के साथ अधार्मिक हो गए थे, उन्हें भी धर्म के नाम पर कोई भय नहीं लग रहा था। आगे मेहर के कहने का तात्पर्य है कि– "मर्द आपस में लड़ते हैं, मिट्टी औरतों की खराब करते हैं।" लाजो का कथन है कि– "खुदा बंद ने तो मर्द का फर्ज आयद किया है कि औरत पर रहम करें, और उसकी हिफाजत करें, क्योंकि औरत मर्द को जिस्म से पैदा करती है, और पालती है।"

नब्बू जब तारा को कंजरो के हाथ बेचना चाहता है इस भय से ताजो ताई का मोहल्ले के धर्म भीरु लोगों को डांट लगाते हुए यह कहना कि– "रमजान का मुंतबारिक महीना है, मुहल्ले में यह गुनाह हो रहे हैं।" इस पर नब्बू अपनी दलील देते हुए कहता है कि– "तुम लोगों को क्या मतलब! किसी मुसलमान औरत की तरफ तो आंख नहीं उठाई मैंने, हिंदू औरत है। वे लोग नहीं हमारी औरतों को खराब कर रहे हैं। उन लोगों ने कितनी जगह आग लगाई है, रोज बम चलाते हैं। मौलवियों ने जिहाद का फतवा दिया है। "नब्बू मन ही मन में यह सोच रखा था कि– "मैं इसे खराब करके खलीफा के यहां पच्चीस रुपए में दे आऊंगा।"

उधर मुसलमान हाफिज तारा को अपना धर्म परिवर्तन करने के लिए दबाव बना रहा था। दोनों बातें इस्लाम धर्म को केंद्र में रखकर हो रही थी। तारा के द्वारा इस्लाम धर्म नहीं स्वीकार करने पर हाफिज जो कि एक मुसलमान था वह तारा को लड़कियों को खरीदने वाले को दे देता है। भारत–विभाजन के दौरान तारा जैसी हजारों लड़कियां ऐसी त्रासदी का शिकार हुई। यशपाल ने अपने उपन्यास 'झूठा–सच' में हिंदू स्त्रियों की मुसलमानों द्वारा और मुसलमान स्त्रियों का हिंदुओं द्वारा किए गए दुर्व्यवहार का चित्रण किया है। उपन्यास की पात्र बंती कहती है कि– "वो इनकी मां–बेटियों को बेइज्जत करें, या उनकी मां–बेटियों की इज्जत करें। मां–बेटियां बर्बाद होने के लिए ही हैं।" भारत–विभाजन के दौरान यशपाल द्वारा लिखित उपन्यास 'झूठा–सच' का एक पात्र जयदेव पूरी के सामने एक मन को झकझोर देने वाला दृश्य उपस्थित होता है, जिसका चित्रण

यशपाल जी ने इस प्रकार से किया है– "पैंतीस, पैंतीस रुपए। कोई और बोलो पैंतीस रुपए में रह जाती है। पैंतीस रुपए एक, पैंतीस रुपए दो, और कोई बोलता है, तो बोलो! नहीं तो जाती है, अच्छी तरह देख लो। बोलो!. ....पैंतीस रुपए तीन।"

जयदेव पूरी को यह लगा कि पुराने कपड़े बेचे जा रहे हैं, परंतु तभी उसके कान में यह शब्द सुनाई पड़े। कोई कह रहा था– "अच्छा बादशाहों, अब इसके लिए बोलो! नया कोरा बिना बरता माल। शक हो तो अपने हाथ से टटोलकर देख लो।"

जयदेव पूरी ने भीड़ के अंदर घुस कर देखा तो उसके समक्ष हृदय को विदीर्ण कर देने वाला दृश्य था। भीड़ के बीचों–बीच नीलाम करने वाला एक जवान लड़की को चुटिया से खींच कर खड़ा किए था। लड़की के शरीर पर कोई कपड़ा ना था। माल ग्राहकों को अच्छी तरह दिखा देने के लिए उसने लड़की की कमर के पीछे घुटने को ठेस देकर, उसके सब अंगो को उभार दिया था। लड़की के आंसुओं से भीगे, पलकें मूंदे, चेहरे पर से उसके हाथ को भी खींच कर हटा दिया। लड़की के सूर्य की किरणों से अछूते शरीर के भाग छिले हुए संतरे की तरह, चेहरे की अपेक्षा बहुत गोरे और कोमल थे। भीड़ के बीच धरती पर कुछ और भी लड़कियां चेहरे बाहों में छिपाए घुटनों पर सिर दबाए बैठी थी। उनके कपड़े धरती पर पड़े थे।

भारत के विभाजन के दौरान स्त्रियों के साथ जानवरों एवं भेड़–बकरियों जैसा सुलूक किया गया। चाहे वह हिंदू धर्म की स्त्री हो, चाहे वह मुस्लिम धर्म की हो। इससे किसी को कोई मतलब नहीं था। स्त्रियों के घरों के अंदर से जबरन निकालकर उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता था और उनकी नीलामी की जाती थी। स्त्रियों की नीलामी होने की बात लेखक की मात्र कल्पना नहीं बल्कि यथार्थ है। यह ऐतिहासिक सत्य पर आधारित घटना है। स्त्रियों के नीलामी की जो घटना यशपाल अपने उपन्यास 'झूठा–सच' में लिखते हैं, ठीक वैसे ही घटना बलवंत सिंह का उपन्यास 'कालेकोष' में भी देखने और सुनने को मिलती है। बलवंत सिंह अपने उपन्यास 'कालेकोष' में लिखते हैं कि मुसलमान हिंदू और सिख की लड़कियों को पाकिस्तान से बाहर नहीं जाने देते हैं और वहीं पर आठ आने प्रति स्त्री के हिसाब से बेच देते हैं। 'कालेकोस' उपन्यास की स्त्री पात्र गोविंदी अपने भाई सूरत से भयभीत होकर कहती है कि– "लोग बात करते हैं ना कि लड़कियां नीलाम की जाती है।"तब उसका भाई सूरत गोविंदी को ढांढस बताते हुए कहता है कि– "मेरे जिंदा रहते किसी की मजाल है जो तुम्हें छू सके।" परंतु इसके बाद भी लाहौर से पहले ही स्टेशन पर जब गाड़ी रूकती है तो बलवाईयों के साथ करीमू बिरसा सिंह को खोजते हुए आता है। इस जानकारी के बाद करीमू पेशौरा सिंह से कहता है कि– "मैं तुझे कुछ नहीं करूंगा।" इससे पेशौरा सिंह को यह लगा कि करीमू में अभी गांव–देश का लिहाज बचा हुआ है, परंतु थोड़ी ही देर बाद करीमू ने तेवर दिखाते हुए कहा कि– "तेरी लौंडिया पटाखा है, और मुझे पसंद है।" यह कह कर करीमू ने झपट कर गोविंदी का बाजू थाम लिया और खींचा। गोविंदी एक तिनके की भांति खींचती चली गई। उसकी हृदय विदारक चीत्कारे उस सोर पर छा गई। उसके आंसू सूख गए। वह हाथ फैलाकर चिल्लाई– "मेरे पिताजी! मेरे वीर जी! मुझे बचा लो..... मुझे बचा लो।"

गोविंदी की दर्दनाक पुकार सुनकर जब पेशौरा सिंह उसे बचाने के लिए तैयार होता है तो उसकी भुजाएं काट दी जाती है, और वह बरछों–छूरों के वार से घायल होकर गिर पड़ता है। गोविंदी के साथ हुआ अत्याचार तो मात्र एक घटना है, ऐसी ही हजारों–लाखों घटनाएं भारत–विभाजन की त्रासदी के दौरान हुई। स्त्रियों को घरों

से, ट्रेनों से और शरणार्थी कैंपों से जबरन खींच कर उनके साथ सामूहिक बलात्कार किया जाता था। स्त्रियों का अंग भंग कर दिया जाता था और उन को जान से मार दिया जाता था। उनके घर परिवार के लोग यह दर्दनाक मंजर अपने मजबूर आंखों से देखते रहते थे, और बेबस और लाचार की अवस्था में कुछ नहीं कर सकते थे।

भारत–विभाजन की त्रासदी का प्रभाव पुरुषों और स्त्रियों को अलग–अलग प्रकार से प्रभावित किया है। इस संदर्भ में वीरेंद्र यादव का कथन है कि– "पुरुषों के लिए जहां देश विभाजन अपने वतन ईट गारे की रिहाइश के दरबदर होना था, वहीं स्त्रियों के लिए दोहरी यातना थी। वे वतन और अपने शहर से दरबदर हुई ही, उससे उनके अपने घर–परिवार ने भी बहिष्कृत सरीखा सुलूक किया। विभाजन की महात्रासदी के दौरान बिछड़े मर्दों की परिवार में वापसी पर जश्न हुआ और खुशियां मनाई गई, लेकिन स्त्री की वापसी पर मातम ही नहीं बल्कि उसे घर की दहलीज से उल्टे पांव तिरस्कृत कर वापस कर दिया गया। विडंबना यह है कि पुरुष सत्ता के इस खेल में स्वयं स्त्रियां भी शामिल थी। कभी सास, तो कभी मां व बहन होने के बावजूद भी।"

उपन्यासकार यशपाल ने अपने उपन्यास 'झूठा–सच' में दिखाया है कि लाहौर के दंगों में बिछड़ने के बाद जब बंती किसी तरह अपने परिवार वालों को खोजती हुई दिल्ली पहुंचती है तो सब दुखी हो जाते हैं और उसकी सास उसको डांटते हुए कहती हैं– "हट जा, दूर रह। बाहर निकल।" क्यों मेरा घर है, मैं कहां जाऊं? बंती ने गिड़गिड़ा कर सास के पांव पर सिर रख देने के लिए झुकी।

बंती की सास डांटते हुए कहती है– "दूर रह, तुझे कह दिया। तू अब हम लोगों के किस काम की।" सास ने बंती का सिर पांव से परे ढकेल दिया। सबसे बड़ा सवाल था कि–"कैसे रख लेगी। मुसलमानों ने इसे छोड़ा होगा? उन्होंने घरों के दरवाजे तोड़कर औरतों को खराब किया, इन्हें छोड़ दिया होगा?..... सौ सौ मुसलमान. .....। धर्म क्या रह गया।" पहले सास ने घर से निकाला फिर पति ने कह दिया– "दो महिने मुसलमानों के घर रह आई है, हम कैसे रख ले।" सास और पति से अपमानित निष्कासित बंती ने कहा– "मैं यहां मर जाऊंगी। बंती दहलीज पर फट–फट माथा पटकती और चिल्लाती, मैं यहां ही मरूंगी।" तारा और गली के लोगों के लिए यह स्तब्धकारी घटना थी। चेहरा खून से लथपथ मक्खियां बैठ रही थीं। समीप कोरा लाल कपड़ा गली के फर्श पर पड़ा था। देखे तो बेशर्मों को! लाल कफन दे रहे हैं। अब वह सुहागिन बन गई। एक स्त्री क्रोध और घृणा से कह रही थी।

नारी की पवित्रता का इस प्रकार मूल्यांकन करने वालों के विरोध में दुःखी और क्रोधित होकर स्त्रियां कहती है – "असंख्य नारियों ने पुरुषों की पश्विकता को सहा है। पुरुष को मनुष्य बना सकने के लिए स्त्री को कितना सहना पड़ेगा।" इन शब्दों में स्त्रियों का पुरुषों के प्रति घृणा, रोष, दुःख, पीड़ा और त्रास व्यक्त हुआ है। उनका कहना है कि– "सब जुल्म के लिए स्त्रियां ही रह गई है। मर्द मर्दों को काटकर टुकड़े भले ही कर दे, उनकी बेज्जती तो नहीं करते।"

भारत विभाजन के दौरान अपनी मान मर्यादा को बचाने के लिए बहुत सी महिलाओं ने आत्महत्या कर लिया था। भीष्म साहनी जी अपने उपन्यास तमस में लिखते हैं कि सांप्रदायिक दंगों के कारण चारों तरफ हत्या, लूट–पाट और बलात्कार होने लगता है। इस भयावह स्थिति से बचने के लिए महिलाओं का एक समूह उस पक्के कुएं की ओर बढ़ता जा रहा था और जहां मुहल्ले की महिलाएं नहाने, कपड़े धोने और आपस में बात–चीत करने के लिए इकठ्ठा होती थीं, मंत्र मुग्ध सी सभी उसी ओर बढ़ती चली जा रही थीं। किसी को उस

समय ध्यान नहीं आया कि वे कहां जा रही हैं। छिटकी चांदनी में जैसे कुएं पर अप्सराएं उतरती चली आ रही हों। इस सन्दर्भ में भीष्म साहनी जी अपने उपन्यास तमस में लिखते हैं कि– "सबसे पहले जसबीर सिंह कुएं में कूद गई। उसने कोई नारा नहीं लगाया, किसी को पुकारा नहीं, केवल वाहे गुरु कहा और कूद गई। देवसिंह की घरवाली अपने छोटे बच्चे को छाती से लगाकर ही कूद गई। स्त्रियों और बच्चों की चींखे कुएं में से बाहर आई और बाहर की 'अल्लाह हो अकबर' और 'सत सिरी अकाल 'के नारो में मिल गई थीं।"

कमलेश्वर द्वारा लिखित उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' ऐसी ही एक दर्दनाक कहानी दिखने को मिलती हैं। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में १६–१७ साल की लड़की जेनिब अपने गांव ढाणी से मुसलमानी कारवां के साथ लकीर के उस पार जाने के लिए निकली थी, परन्तु अंजाने ही वह एक हिन्दू युवक के साथ लग जाती है। जबरन उठाकर लाई गई लड़कियों को चोरी की गई वस्तु के समान समझा जाता है, और वैसा ही सुलूक किया जाता था। जेनिब के साथ भी वही व्यवहार हुआ– "तीसरी ढाणी के उस पार..... पाकिस्तान बनने की लकीर खींची जा चुकी है। उसी लकीर के बाद यह मुसलमानी लड़की मेरे हिस्से आई है.....मैं इसे काफिले वाले से छीनकर लाया हूं..... इसे मेरे हवाले कर दो"

बूटा सिंह और जेनिब विवाह कर लेते हैं। लेकिन जेनिब को जबरन प्रशासन के माध्यम से पाकिस्तान पहुंचा दिया जाता है। जिस से दुःखी होकर बूटा सिंह जेनिब को प्राप्त करने के लिए इस्लाम धर्म को अपना लेता है। परंतु फिर भी वह जेनिब से नहीं मिल पाता है। कमलेश्वर द्वारा लिखित कृति 'लौटे हुए मुसाफिर' में नसीबन नामक स्त्री पात्र है। जिसमें लेखक ने नसीबन में मानवीय संवेदना का पुट खींचा है। नसीबन मुहल्ले के प्रत्येक व्यक्ति का दुःख दूर करने का प्रयास करती रहती है। इस दौरान नसीबन और बच्चन को लेकर बस्ती में अफवाहें फैला दी जाती है। और यह अफवाहें फैलाने वाले साई, मकसूद और यासीन होते है। बच्चन दो बच्चों का पिता है, जिसकी पत्नी अब इस दुनिया में नही है। नसीबन उसके दोनो बच्चों की देख–भाल करने लगती है। इस बात को मुहल्ले के लोग सांप्रदायिकता से जोड़ते हैं। मुहल्ले की भयानक परिस्थितियों को देखते हुऐ और पाकिस्तान बनने की बात सुनकर बच्चन अपने बच्चों को अपने पास बुला लेता है। बच्चों को भेजने के बाद जिस मनःस्थिति से नसीबन गुजरती है। उसका चित्रण कमलेश्वर ने इस प्रकार किया है– "दिन भर नसीबन बहुत उदास रही। रात को जब सत्तार दोनों बच्चों को लेकर चलने लगता है, तब नसीबन ने एक पोटली उसके हाथ में थमाई थी।"

नसीबन कहती है कि यह बच्चन को दे देना। केवल जेवर ही नसीबन ने नहीं दिए है। जेवरों के साथ–साथ कुछ चांदी के रुपए भी देती है। ये रुपए नसीबन के है। नसीबन सत्तार से कहती है कि– "क्योंकि हैं तो अपने। विपदा में घिरा है विचारा। इधर चोरी छिपे रहते हुए काम–धाम भी नहीं कर पाया होगा, ऊपर से बच्चे जो रहे हैं, कुछ जरूरत भी तो पड़ती होगी उसे..... कह देना अपने ही समझकर खर्च कर ले। कोई बात मन में न लाए।" नसीबन ने बच्चन के बच्चों की देखभाल जाति और धर्म से ऊपर उठ कर किया था, वह चाहती तो खुद मुसलमान होते हुऐ हिन्दू के बच्चों का ध्यान न रखती, परन्तु उसने जाति धर्म से ऊपर वात्सल्य धर्म को माना। नसीबन साहसी महिला थी। उसके साहस का पता तब चलता है जब संघियों को यह जानकारी मिलती है कि नसीबन के घर में हिन्दू के बच्चे हैं, तब वह उन्हें अनाथालय में भेजने के लिए नसीबन से कहते हैं। तब नसीबन साहसपूर्वक कहती है– "हमें पता चला है कि आप दो हिन्दू बच्चों का धर्म परिवर्तन करने वाली हैं....

.. ये नही हो सकता। क्या धरम..... बच्चे किसी अनाथालय में नहीं जायेंगे। हम यह झंझट नहीं जानते.....रही उनके मुसलमान होने की बात सोलह आने गलत है, और ये बच्चे हैं कोई काठ–कीवाड़ तो नही पड़े रहेंगे वहां। खूब आए आप लोग बच्चे हवाले कर दो। वाह भाई वाह! जो करना है करो जाकर..... पुलिस नहीं लाप्टेन को बुला लाओ। अरे! हम काहे को बनाएंगे किसी को मुसलमान..... हमारे क्या बाल–बच्चे नहीं हैं.....।"

अतः हम यह कह सकते हैं कि नसीबन वात्सल्य से परिपूर्ण एक सच्चे ह्रदय वाली स्त्री है। अपमान और ईर्ष्या, द्वेष की भावना से वह रहित है। धर्म और सम्प्रदाय को पीछे छोड़कर नसीबन सिर्फ़ मानव का धर्म और इंसानियत का धर्म निभाती है। नसीबन अपने इन्हीं मानवीय और श्रेष्ठ गुणों के कारण लाखों पढ़े–लिखे और उच्च पद को प्राप्त लोगों को प्रभावित कर देती है। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने स्त्री जीवन के संघर्षों को समझने के लिए एक स्त्री पात्र के माध्यम से कहलाते हैं कि – "औरत की आबरू ही संस्कृति के मायनों को तय करती है, जो तहजीब अपनी औरत की आबरू को इज्ज़त नहीं दे सकती, वह रोम, यूनान और मिस्र की तरह मिट गई.....नृशंस ही लगे, पर हिन्दुस्तान में जब तहज़ीब उसकी आबरू की रक्षा नहीं कर सकती, तो खुद औरत ने अपनी सभ्यता की रक्षा की खातिर अपना बलिदान देकर इस संस्कृति का मुंह उजला किया है. ... और दराशिकोह की बीवी नादिरा बानू और बकिया ओहदेदारों की औरतें उसी व्यक्तिगत वजूद और हिंदुस्तानी तहज़ीब और परम्परा के तहत मौत को गले लगाने के लिए तैयार हैं..... इस ज़ालिम दौर में अगर औरत अपनी आबरू की हिफाजत के लिए विद्रोह करती है तो वह हिन्दुस्तान औरत का फैसला है, और उसे इसका हक है। जौहर की वरायत परम्परा बर्बर है, लेकिन औरत का अस्तम की बेकद्री और उसका उल्लंघन करना तो और भी बड़ी बर्बरता है।"

भारत–विभाजन की त्रासदी के दौरान मानसिक और शारीरिक यंत्रणा को झेलते हुए झूठा–सच उपन्यास की स्त्री पात्र बंती अपनी मान–मर्यादा को बचाने के लिए अपने ही सुसराल में पति और सास के सामने चौखट पर सिर पटक–पटक कर जान दे देती है। बंती को अपनी मान–मर्यादा उसकी जान से ज्यादा प्यारी लगी, इसलिए उसने मृत्यु को अपनाना उचित समझा। झूठा–सच उपन्यास की ही स्त्री पात्र तारा और कनक ने अपने मान–सम्मान की रक्षा के लिए विद्रोह का रास्ता अपनाया। पवित्रा ने आजीवन संघर्ष किया। राजो ने मानव धर्म को सर्वश्रेष्ठ धर्म माना और उसी रास्ते पर चली। नसीबन ने स्त्री जाति का सर्वश्रेष्ठ गुण वात्सल्य और मातृत्व को अपनाया। 'तमस' उपन्यास की स्त्री पात्र लीजा ने दूसरों के दुःख दूर करने को ही अपना धर्म माना। एडमिना ने भी पर दुख कातरता को ही अपनाया। यह सभी स्त्रियां अलग–अलग गुणों को अपनाती हैं और ये ऐसे मानव जीवन के सर्वश्रेष्ठ गुण हैं जो इन्हें सबसे ऊंचे पायदान पर लाकर खड़ा कर देते हैं। इन सभी स्त्रियों ने अपनी स्वतंत्र इच्छा शक्ति के आधार पर मानव जीवन के सर्वश्रेष्ठ गुणों को अपनाया और उसी मार्ग पर अग्रसर हुईं। इन्होंने मुस्लिम धर्म और हिन्दू धर्म से ऊपर उठकर मानव धर्म को चुना, और इसी धर्म पर अपने आत्मीय जनों के विरोध में भी जाकर अडिग रहीं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :-

1. यशपाल, झूठा–सच, दूसरा खंड (देश का भविष्य) पृष्ठ 99
2. यशपाल, झूठा–सच, प्रथम खंड (वतन और देश) पृष्ठ 316

3. बलवंत सिंह, काले कोस, पृष्ठ 303
4. वीरेंद्र यादव, उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, पृष्ठ 63
5. यशपाल, झूठा–सच, दूसरा खंड, देश का भविष्य, पृष्ठ 101
6. भीष्म साहनी, तमस, पृष्ठ 218–219
7. राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकुर, भीष्म साहनी, व्यक्ति और रचना, पृष्ठ 136
8. यशपाल, झूठा–सच, खंड–1 (वतन और देश), पृष्ठ 110
9. यशपाल, झूठा–सच, खंड–2 (देश का भविष्य), पृष्ठ 212
10. कमलेश्वर, कितने पकिस्तान, पृष्ठ 106
11. कमलेश्वर, लौटे हुए मुसाफिर, पृष्ठ 76
12. भीष्म साहनी, तमस, पृष्ठ 47
13. कमलेश्वर, कितने पकिस्तान, पृष्ठ 52

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 94-103

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ਪੁਨਰ ਜਾਗ੍ਰਿਤੀ ਲਹਿਰਾਂ ਅਤੇ ਨਾਰੀ ਸੁਧਾਰ : ਬ੍ਰਹਮੋ ਸਮਾਜ ਅਤੇ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਦੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸੰਦਰਭ ਵਿਚ

ਸਿੰਪਲ ਰਾਣੀ ਮਿੱਤਲ
ਲੇਖਕ, ਰਿਸਰਚ ਸਕਾਲਰ (ਧਰਮ ਅਧਿਐਨ ਵਿਭਾਗ), ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ

ਅਠਾਰਵੀਂ-ਉਨ੍ਹੀਵੀਂ ਸਦੀ ਦਾ ਸਮਾਂ ਭਾਰਤੀ ਇਤਿਹਾਸ ਦਾ ਯੁੱਗ ਪਲਟਾਉ ਕਾਲ ਹੈ। "ਅਠਾਰਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਮੱਧ ਵਿਚ ਬੰਗਾਲ ਵਿਚ ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਰਾਜ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਹੋਈ। ਉਸ ਉਪਰੰਤ ਹੋਲੀ-ਹੋਲੀ ਸਾਰਾ ਦੇਸ਼ ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਅਧੀਨ ਹੋ ਗਿਆ। ਭਾਵੇਂ 1947 ਤੱਕ ਭਾਰਤ ਪਰਤੰਤਰ ਰਿਹਾ ਪਰੰਤੂ ਸਮਾਜਿਕ, ਰਾਜਨੀਤਿਕ, ਆਰਥਿਕ ਅਤੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਤੋਂ ਇਹ ਕਾਲ ਬਹੁਤ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਸ਼ਾਸਨ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਭਾਰਤੀਆਂ ਨੇ ਨਵੀਨ ਪਰਿਸਥਿਤੀਆਂ ਦੇ ਕਾਰਣ ਕਈ ਸਦੀਆਂ ਦੀ ਕੁੰਭਕਰਨੀ ਨੀਂਦ ਦਾ ਤਿਆਗ ਕੀਤਾ।"[1] ਮਹਾਰਾਜਾ ਰਣਜੀਤ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੇ ਅਕਾਲ ਚਲਾਣੇ ਤੋਂ ਦਸ ਸਾਲ ਬਾਦ 1849 ਈ. ਵਿਚ ਭਾਰਤ ਉੱਪਰ 'ਬਸਤੀਵਾਦੀ'[2] ਰੂਪ ਵਿਚ ਬਰਤਾਨਵੀ ਰਾਜ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਹੋਈ। ਈਸਟ ਇੰਡੀਆ ਕੰਪਨੀ ਰਾਹੀਂ ਬਰਤਾਨਵੀ ਵਪਾਰੀਆਂ ਨੇ ਸਿਰਫ਼ ਵਪਾਰ ਦੇ ਨਜ਼ਰੀਏ ਤੋਂ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਕਦਮ ਰੱਖੇ, ਪਰ ਬਦਲਦੀਆਂ ਰਾਜਸੀ ਅਤੇ ਆਰਥਿਕ ਪ੍ਰਸਥਿਤੀਆਂ ਕਾਰਨ ਉਹ ਭਾਰਤ ਦੀ ਰਾਜਸੀ ਸੱਤਾ ਦੇ ਹਾਕਮ ਬਣ ਬੈਠੇ। ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਰਾਜ ਦੀ ਇਸ ਧੱਕੇਸ਼ਾਹੀ ਤੋਂ ਪ੍ਰੇਸ਼ਾਨ ਭਾਰਤੀ ਲੋਕਾਂ ਵਿਚ ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਤੋਂ ਆਪਣਾ ਖ਼ੁਸਿਆ ਰਾਜ ਵਾਪਿਸ ਲੈਣ ਦੀ ਸੋਚ ਜਾਗ੍ਰਿਤ ਹੋਈ। ਸਿੱਟੇ ਵਜੋਂ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਲਹਿਰਾਂ ਦਾ ਜਨਮ ਹੋਇਆ। ਲਹਿਰ ਤੋਂ ਭਾਵ ਕਿਸੇ ਉਦੇਸ਼ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਲਈ ਸੰਗਠਿਤ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕੀਤੇ ਕਾਰਜਾਂ ਦਾ ਸਿਲਸਿਲਾ ਹੈ। ਸਮਾਂ ਲਹਿਰਾਂ ਨੂੰ ਜਨਮ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਲਹਿਰਾਂ ਇਨਕਲਾਬ ਨੂੰ ਜਨਮ ਦਿੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਡਾ. ਕੇ. ਡਬਲਯੂ ਅਨੁਸਾਰ, "ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਦੇ ਸ਼ਾਸਨ ਅਧੀਨ ਭਾਰਤ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬ ਵਿਚ ਦੋ ਕਿਸਮਾਂ ਦੇ ਸਮਾਜਿਕ ਅਤੇ ਧਾਰਮਿਕ ਅੰਦੋਲਨਾਂ ਦਾ ਉਭਾਰ ਹੋਇਆ ਪਰਿਵਰਤਨਸ਼ੀਲ ਸੁਧਾਰਕ ਅਤੇ ਉਪਚਾਰਕ।"[3] ਇਕ ਉਹ ਲਹਿਰਾਂ ਜੋ ਬਰਤਾਨਵੀ ਰਾਜ ਨੂੰ ਖ਼ਤਮ ਕਰਨ ਲਈ ਜੁਝਾਰੂ ਸੋਚ ਰੱਖਦੀਆਂ ਸਨ, ਇਕ ਉਹ ਜੋ ਪੱਛਮੀ ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਈਸਾਈ ਮਿਸ਼ਨਰੀਆਂ ਦੁਆਰਾ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਨਵੀਨ ਸੋਚ ਰਾਹੀਂ ਧਾਰਮਿਕ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਸੁਧਾਰਾਂ ਲਈ ਉਤਸੁਕ ਸਨ।

ਮਨਮੋਹਨ ਸਿੰਘ ਅਨੁਸਾਰ, "ਇਹਨਾਂ ਅੰਦੋਲਨਾਂ ਨੂੰ ਅਸੀਂ ਤਿੰਨ ਭਾਗਾਂ ਵਿਚ ਵੰਡ ਸਕਦੇ ਹਾਂ। ਪਹਿਲੇ ਕਾਲ ਨੂੰ ਇਹਨਾਂ ਅੰਦੋਲਨਾਂ ਦੇ ਬੀਜਾਰੋਪਣ ਅਥਵਾ ਤਿਆਰੀ ਦਾ ਕਾਲ ਕਹਾਂਗੇ। ਦੂਜੇ ਨੂੰ ਉਗਰ ਸੁਧਾਰ ਅੰਦੋਲਨਾਂ ਦਾ ਕਾਲ। ਪਹਿਲਾ ਕਾਲ (1800-1828) ਸੁਧਾਰ ਅੰਦੋਲਨਾਂ ਦੇ ਕਾਰਣਾਂ ਨੂੰ ਪੈਦਾ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਸੀ। ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਈਸਾਈ ਮਿਸ਼ਨਰੀਆਂ ਦੇ ਪ੍ਰਚਾਰ ਨਾਲ ਭਾਰਤੀ ਧਰਮਾਂ ਲਈ ਇਕ ਖ਼ਤਰਾ ਪੈਦਾ ਹੋ ਗਿਆ ਸੀ। ਵਧੇਰੇ

---

1 ਮਨਮੋਹਨ ਸਿੰਘ, *ਸੁਧੀਮਤ ਅਤੇ ਧਾਰਮਿਕ ਲਹਿਰਾਂ*, ਪਬਲੀਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ, 1993, ਪੰ. 72.

2 ਬਸਤੀਵਾਦ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਸ਼ਬਦ Clonialism ਦਾ ਪੰਜਾਬੀ ਰੂਪ ਹੈ। ਇਹ ਲੈਟਿਨ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਸ਼ਬਦ Colonia ਤੋਂ ਲਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਜਿਸਦਾ ਅਰਥ ਘਰ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਦੂਰ ਸਥਾਪਨ ਕਰਨਾ ਹਨ। ਬੁਨਿਆਦੀ ਤੌਰ ਤੇ ਬਸਤੀਵਾਦ ਦਾ ਅਰਥ ਕਿਸੇ ਜ਼ਮੀਨ ਦੇ ਟੁਕੜੇ ਬਾਰੇ ਸੋਚਣਾ, ਕਾਬੂ ਕਰਨਾ ਅਤੇ ਆਬਾਦ ਕਰਨਾ ਹੈ, ਜਿਹੜਾ ਉਸਦੀ ਮਲਕੀਅਤ ਨਹੀਂ ਹੈ।
Edward W. Said, *Culture and Imperialism*, Vintage Books London, 1994, p. 5.

3 K.W. Jones, *Socio-Religious Reform movements in British India, The New Cambridge History of India*, Cambridge University Press, England, 1990, p.3.

ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਪੜੇ-ਲਿਖੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਮਾਨਸਿਕਤਾ, ਸੰਦੇਹਵਾਦ, ਆਚਾਰਹੀਣਤਾ ਸਮਝਦਾਰ ਭਾਰਤੀਆਂ ਦੇ ਮਨਾਂ ਨੂੰ ਦੁਖਿਤ ਕਰ ਰਹੀ ਸੀ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ 19ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਪਹਿਲੇ 28 ਸਾਲ ਇਹਨਾਂ ਧਾਰਮਿਕ ਅੰਦੋਲਨਾਂ ਦੀ ਤਿਆਰੀ ਦਾ ਸਮਾਂ ਸੀ। 1828 ਤੋਂ 1875 ਤੱਕ ਉਗਰ ਸੁਧਾਰ ਅੰਦੋਲਨਾਂ ਦਾ ਕਾਲ ਸੀ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਸੁਧਾਰਕ ਹਿੰਦੂ ਧਰਮ ਵਿਚ ਕੁਝ ਮੂਲਕ ਪਰਿਵਰਤਨ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਸਨ। ਇਹਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਬ੍ਰਹਮੋ ਸਮਾਜ ਅਤੇ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਸਮਾਜ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਸਨ।"[4]

18ਵੀਂ ਸਦੀ ਵਿਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਸੁਧਾਰ ਕਾਰਜਾਂ ਦਾ ਆਰੰਭ ਬਰਤਾਨਵੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਕੀਤਾ। ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਪੱਛਮੀ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਾਉਣ ਦੀ ਇੱਛਾ ਕਾਰਨ ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਸਥਾਨਕ ਸਮਾਜਿਕ ਧਾਰਮਿਕ ਸੁਧਾਰਾਂ ਕੀਤੇ ਜਿਸ ਵਿਚ ਲਿੰਗਕ ਪੱਖਪਾਤ ਅਤੇ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਦਮਨਕਾਰੀ ਸਥਿਤੀ ਵੱਲ ਵੀ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਧਿਆਨ ਦਿੱਤਾ। "ਆਪਣੇ ਬਸਤੀਵਾਦੀ ਵਿਸ਼ਿਆਂ ਨੂੰ ਭਾਰਤ ਉੱਪਰ ਵਧੀਆ ਢੰਗ ਨਾਲ ਲਾਗੂ ਕਰਨ ਦੀਆਂ ਦਲੀਲਾਂ ਵਿਚ ਉਹ ਪੁਰਸ਼ਾਂ ਅਤੇ ਔਰਤਾਂ ਵਿਚਕਾਰ ਆਦਰਸ਼ ਸੰਬੰਧਾਂ ਬਾਰੇ ਚਰਚਾ ਕਰਦੇ ਸਨ।"[5] ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਭਾਰਤੀ ਮਨਾਂ ਵਿਚ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰਤੀ ਰੋਸ ਨੂੰ ਖ਼ਤਮ ਕਰਨ ਲਈ ਸਮਾਜਿਕ ਸੁਧਾਰ ਕੀਤੇ, ਜਿਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਇਕ ਨਾਰੀ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਸੁਧਾਰ ਕਰਨਾ ਸੀ। "ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਸ਼ਾਸਨ ਕਾਲ ਵਿਚ ਜਿੱਥੇ ਇਕ ਪਾਸੇ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਸੁਤੰਤਰਤਾ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਲਈ ਅੰਦੋਲਨ ਚੱਲਿਆ, ਉੱਥੇ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਇਸਤਰੀ ਸੁਤੰਤਰਤਾ ਦੀ ਲੜਾਈ ਲਈ ਪਹਿਲ ਕਦਮੀ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਬ੍ਰਹਮੋ ਸਮਾਜ, ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ, ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਆਗੂਆਂ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਮੋਹਨ ਰਾਏ, ਮਹਾਂਦੇਵ ਗੋਵਿੰਦ ਰਾਨਾਡੇ, ਮਹਾਰਿਸ਼ੀ ਕਾਰਵੇ, ਸਵਾਮੀ ਦਇਆਨੰਦ ਸਰਸਵਤੀ, ਈਸ਼ਵਰ ਚੰਦਰ ਵਿਦਿਆਸਾਗਰ, ਸਵਾਮੀ ਵਿਵੇਕਾਨੰਦ, ਮਹਾਤਮਾ ਗਾਂਧੀ, ਜਵਾਹਰ ਲਾਲ ਨਹਿਰੂ ਜਿਹੇ ਮਹਾਨ ਪੁਰਖਾਂ ਨੇ ਨਾਰੀ ਲਈ ਲੜਾਈ ਲੜੀ। ਇਸ ਕਾਲ ਵਿਚ ਇਸਤਰੀ ਸੁਧਾਰ ਲਈ ਕਾਫ਼ੀ ਯਤਨ ਕੀਤੇ ਗਏ।"[6] ਇਸ ਪਰਚੇ ਵਿਚ ਸਾਡਾ ਉਦੇਸ਼ ਬ੍ਰਹਮੋ ਅਤੇ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਦੁਆਰਾ ਨਾਰੀ ਜਾਤੀ ਲਈ ਕੀਤੇ ਗਏ ਸੁਧਾਰਾਂ ਦਾ ਅਧਿਐਨ ਕਰਨਾ ਹੈ। ਇਹ ਅਧਿਐਨ ਨਿਮਨਲਿਖਿਤ ਅਨੁਸਾਰ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ :

ਬ੍ਰਹਮੋ ਸਮਾਜ

ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਸ਼ਾਸਨ ਦੀ ਨੀਂਹ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਬੰਗਾਲ ਵਿਚ ਰੱਖੀ ਗਈ। ਇਸ ਲਈ ਉਸਦੀ ਪ੍ਰਤੀਕਿਰਿਆ ਤੋਂ ਉਤਪੰਨ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਧਾਰਮਿਕ ਸੁਧਾਰ ਅੰਦੋਲਨਾਂ ਦਾ ਆਰੰਭ ਵੀ ਬੰਗਾਲ ਤੋਂ ਹੀ ਹੋਇਆ। ਬੰਗਾਲ ਵਿਚ ਜਨਮੇ ਅੰਦੋਲਨ ਦੇ ਜਨਮਦਾਤਾ ਰਾਜਾ ਮੋਹਨ ਰਾਇ ਸਨ। "ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਮੋਹਨ ਰਾਏ ਨੂੰ 19ਵੀਂ ਸਦੀ ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਸੁਧਾਰਕ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਜਿਹੜਾ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਦਸ਼ਾ ਬਾਰੇ ਚਿੰਤਤ ਸੀ। ਇਤਿਹਾਸਕ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਆਧੁਨਿਕ ਭਾਰਤ ਦਾ ਪਿਤਾਮਾ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ।"[7] ਇਸ ਅੰਦੋਲਨ ਨੂੰ ਆਧੁਨਿਕ ਭਾਰਤ ਨੂੰ ਇਕ ਬੋਧਿਕ ਨਸਲਵਾਦ (ਤਰਕਵਾਦ) ਅਤੇ

---

4 ਮਨਮੋਹਨ ਸਿੰਘ, *ਸੁਫ਼ੀਮਤ ਅਤੇ ਧਾਰਮਿਕ ਲਹਿਰਾਂ*, ਪਬਲੀਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ, 1993, ਪੰਨੇ. 73-74.

5 Mrinalini Sinha, "*Manliners" : A victory ideal and colonial policy in late 19th century Bengal Menchester*, Menchester Uni Press- 1995, p. 49.

6 नीलमणी शर्मा, *आधे भारत का इतिहास*, संजीव प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृ. 9.

7 Geraldine Forbes, *Women in Modern India*, Cambridge University Press, London, 1996, p. 10.

ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਿਹਾ ਗਿਆ। ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਮੋਹਨ ਰਾਏ ਦਾ ਜਨਮ 27 ਮਈ 1772 ਈ. ਵਿੱਚ ਹੁਗਲੀ ਜਿਲੇ ਵਿਚ ਸਥਿਤ ਰਾਧਾਨਗਰ ਨਾਮੀ ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਪਿਤਾ ਦਾ ਨਾਮ ਰਮਾ ਕਾਂਤ ਅਤੇ ਮਾਤਾ ਦਾ ਨਾਮ ਤਰਨੀ ਦੇਵੀ ਸੀ। ਛੋਟੀ ਉਮਰ ਵਿਚ ਹੀ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਨਾਲ ਪੁਰਾਤਨ ਰੀਤੀ ਰਿਵਾਜਾਂ ਅਤੇ ਪ੍ਰਥਾਵਾਂ ਸੰਬੰਧੀ ਮਤਭੇਦ ਹੋਣ ਲੱਗ ਪਏ। ਸਿੱਟੇ ਵਜੋਂ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਰੰਗਪੁਰ ਵਿਚ ਅੰਗਰੇਜ਼ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਅਧੀਨ ਕਲਰਕ ਦੀ ਨੌਕਰੀ ਸਵੀਕਾਰ ਕਰ ਲਈ।

ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਜੀਵਨ ਵਿਚ ਇਸ ਮਗਰੋਂ ਇਕ ਨਵਾਂ ਮੋੜ ਆਇਆ ਜਿਥੋਂ ਭਾਰਤੀ ਨਾਰੀ ਦੀ ਦਸ਼ਾ ਵਿਚ ਸੁਧਾਰ ਕਰਨ ਦਾ ਖਿਆਲ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਮਨ ਵਿਚ ਆਇਆ। "1811 ਈ. ਵਿਚ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਇਕ ਅਜੀਬ ਦ੍ਰਿਸ਼ ਦੇਖਿਆ ਜਿਸਨੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਜੀਵਨ ਉੱਪਰ ਗਹਿਰਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਾਇਆ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਵੱਡੇ ਭਰਾ ਜਗਤ ਮੋਹਨ ਦੀ ਮੌਤ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਪਤਨੀ ਨੂੰ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਪ੍ਰਥਾ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਸਤੀ ਹੋਣ ਲਈ ਮਜ਼ਬੂਰ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਉਹ ਚਿਤਾ ਉੱਪਰ ਬੈਠ ਗਈ ਪਰ ਜਦੋਂ ਚਿਤਾ ਦੀ ਅਗਨੀ ਉਸ ਤੋਂ ਨਾ ਸਹਾਰੀ ਗਈ ਤਾਂ ਉਹ ਵਿਚੋਂ ਉੱਠ ਕੇ ਦੋੜ ਗਈ ਪਰੰਤੂ ਸਾਕ ਸੰਬੰਧੀ ਧਰਮ ਦੀ ਉਲੰਘਣਾ ਕਿਥੇ ਬਰਦਾਸ਼ਤ ਕਰ ਸਕਦੇ ਸਨ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਉਸਨੂੰ ਜ਼ਬਰਦਸਤੀ ਚਿਤਾ ਉੱਪਰ ਰੱਸੀਆਂ ਨਾਲ ਬੰਨ ਕੇ ਬਿਠਾ ਦਿੱਤਾ ਤਾਂ ਜੋ ਉਹ ਦੋੜ ਨਾ ਸਕੇ ਪਰੰਤੂ ਉਸਦੀ ਕਰੁਣ ਹਾਹਾਕਾਰ ਹਲੇ ਵੀ ਹਿਰਦਿਆਂ ਨੂੰ ਚੀਰ ਰਹੀ ਸੀ। ਉਸਦੀ ਹਾਹਾਕਾਰ ਤੋਂ ਬਚਣ ਲਈ ਸੰਬੰਧੀਆਂ ਨੇ ਸੰਖ ਅਤੇ ਹੋਰ ਸਾਜ਼ ਵਜਾਣੇ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤੇ ਤਾਂ ਕਿ ਉਸ ਅਬਲਾ ਦੀ ਚੀਖ ਪੁਕਾਰ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਕੰਨਾ ਤੀਕ ਨਾ ਪਹੁੰਚ ਸਕੇ। ਰਾਏ ਨੇ ਆਪਣੀ ਭਰਜਾਈ ਨੂੰ ਬਚਾਉਣ ਦੇ ਬਹੁਤ ਯਤਨ ਕੀਤੇ ਪਰ ਉਸਦੀ ਕੋਈ ਪੇਸ਼ ਨਾ ਚਲੀ। ਇਸ ਹਿਰਦੇਵੇਧਕ ਘਟਨਾ ਦਾ ਰਾਮ ਮੋਹਨ ਰਾਇ ਦੇ ਮਨ ਉੱਪਰ ਬੜਾ ਗਹਿਰਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਿਆ। ਇਸ ਘਟਨਾ ਨੇ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਇਸ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਘੋਰ ਵਿਰੋਧੀ ਬਣਾ ਦਿੱਤਾ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਇਸ ਨਿਰਦਈ ਪ੍ਰਥਾ ਨੂੰ ਸਮਾਪਤ ਕਰਨ ਦਾ ਦ੍ਰਿੜ ਨਿਸ਼ਚਾ ਕੀਤਾ।"[8]

ਸਮਾਜ ਪ੍ਰਤੀ ਆਪਣੇ ਉਦਾਰਵਾਦੀ ਵਿਚਾਰਾਂ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਕੁਰੀਤੀਆਂ ਦੇ ਵਿਰੋਧ ਵਜੋਂ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਬ੍ਰਹਮ ਸਮਾਜ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਕੀਤੀ। 20 ਅਗਸਤ 1828 ਈ. ਨੂੰ ਕਲਕੱਤੇ ਦੇ ਚਿਤਪੁਰ ਰੋਡ ਤੇ ਬ੍ਰਹਮੋ ਸਮਾਜ ਦੀ ਪਹਿਲੀ ਬੈਠਕ ਕੀਤੀ ਗਈ। ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਦੇ ਜਿਉਂਦੇ ਜੀਅ ਬ੍ਰਹਮ ਸਮਾਜ ਇੰਨੀ ਹਰਮਨ ਪਿਆਰੀ ਸੰਸਥਾ ਨਾ ਬਣ ਸਕਿਆ। 1833 ਈ. ਵਿਚ ਬ੍ਰਿਸਟਲ ਵਿਖੇ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਦਿਹਾਂਤ ਹੋ ਗਿਆ। ਉਹਨਾਂ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਬ੍ਰਹਮੋ ਸਮਾਜ ਦੀ ਵਾਂਗਡੋਰ ਦੇਵੇਂਦਰ ਨਾਥ ਟੈਗੋਰ ਨੇ ਸੰਭਾਲੀ। ਉਹ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਮੌਤ ਤੋਂ ਮਗਰੋਂ ਦਸ ਵਰ੍ਹੇ ਬਾਦ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੋਏ। ਉਹਨਾਂ ਮਗਰੋਂ ਬ੍ਰਹਮੋ ਸਮਾਜ ਦੀ ਵਾਂਗਡੋਰ ਕੇਸ਼ਵ ਚੰਦਰ ਸੇਨ ਨੇ ਸੰਭਾਲੀ। ਉਹ ਪੜ੍ਹੇ-ਲਿਖੇ ਵਿਦਵਾਨ ਅਤੇ ਅਤਿ ਭਾਵੁਕ ਵਕਤਾ ਸਨ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਬ੍ਰਹਮ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਇਕ ਨਵੀਂ ਜਾਨ ਭਰ ਦਿੱਤੀ।

ਨਾਰੀ ਸੁਧਾਰ

ਬ੍ਰਹਮੋ ਸਮਾਜ ਦੇ ਸੰਸਥਾਪਕ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਮੋਹਨ ਰਾਏ ਪਹਿਲੇ ਭਾਰਤੀ ਸਨ ਜਿਨਾਂ ਨੇ ਧਾਰਮਿਕ ਸਮਾਜਕ ਸੁਧਾਰਕ ਲਹਿਰਾਂ ਦਾ ਮੁੱਢ ਬੰਨਿਆ। "ਰਾਏ ਨੇ ਸਮਾਜ ਦੀ ਨਿਘਾਰ ਵਾਲੀ ਸਥਿਤੀ ਦਾ ਸਪਸ਼ਟ ਵਰਨਣ ਕੀਤਾ ਅਤੇ

---

[8] ਮਨਮੋਹਨ ਸਿੰਘ, *ਸੁਧੀਮਤ ਅਤੇ ਧਾਰਮਿਕ ਲਹਿਰਾਂ*, ਪਬਲੀਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਪਟਿਆਲਾ, 1993, ਪੰ. 75.

ਪੱਛਮੀ ਸਿੱਖਿਆ, ਕਾਨੂੰਨਾਂ, ਸਮਾਜਿਕ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਦੇ ਨੈਤਿਕਤਾ ਦੇ ਗੁਣਾਂ ਨੂੰ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਸ਼ਰਮ ਤੋਂ ਸਵੀਕਾਰ ਕੀਤਾ। ਭਾਰਤੀਆਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਧਰਮ ਵਿਚ ਆਈਆਂ ਕੁਰੀਤੀਆਂ ਨੂੰ ਖ਼ਤਮ ਕਰਕੇ ਉਸਨੂੰ ਸ਼ੁੱਧ ਕਰਨ ਦੀ ਜ਼ੋਰਦਾਰ ਅਪੀਲ ਕੀਤੀ।"[9] ਸਮਾਜ ਦਾ ਸ਼ਾਇਦ ਹੀ ਕੋਈ ਅਜਿਹਾ ਸੁਧਾਰਕ ਖੇਤਰ ਰਹਿ ਗਿਆ ਹੋਵੇ ਜਿਸ ਵਿਚ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਮੋਹਨ ਰਾਇ ਨੇ ਸੁਧਾਰ ਕਰਨ ਦਾ ਯਤਨ ਨਾ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਭਾਰਤ ਦੇ ਪੁਨਰ ਉਥਾਨ ਵਿਚ ਸ਼ਾਇਦ ਹੀ ਕੋਈ ਅਜਿਹਾ ਯਤਨ ਹੋਵੇ ਜਿਸ ਵਿਚ ਉਹ ਮੋਹਰੀ ਨਾ ਹੋਵੇ।

ਸਮਾਜਕ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਕੰਮ ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਦੇ ਵਿਰੁੱਧ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕਰਨਾ ਸੀ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਰਾਜਸਥਾਨ ਅਤੇ ਬੰਗਾਲ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਸੀ। 19ਵੀਂ ਸਦੀ ਵਿਚ "ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਮੋਹਨ ਰਾਏ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਪੈਰੋਕਾਰਾਂ ਨੇ ਸਿਰਫ਼ ਇਸ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਖੰਡਨ ਹੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਬਲਕਿ ਇਸ ਨੂੰ ਇਕ ਸਮਝਣਯੋਗ ਅਪਰਾਧ ਵੀ ਮੰਨਿਆ। 1829 ਈ. ਵਿਚ ਲਾਰਡ ਵਿਲੀਅਮ ਬੈਂਟਿਕ ਤੋਂ ਕਾਨੂੰਨ ਵੀ ਪਾਸ ਕਰਵਾਇਆ।"[10] ਇਹਨਾਂ ਨੇ ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਵਿਰੋਧ ਕੀਤਾ। (1829 ਈ.) ਅਤੇ ਬਾਲ ਵਿਆਹ ਨੂੰ ਰੋਕਣ ਲਈ ਬ੍ਰਹਮੋ ਮੈਰਿਜ ਐਕਟ ਬਣਾਇਆ।"[11] ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਲਾਰਡ ਵਿਲੀਅਮ ਬੈਂਟਿਕ ਨੂੰ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਦਿਵਾਇਆ ਕਿ ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਹਿੰਦੂ ਸ਼ਾਸਤਰਾਂ ਵਿਚ ਕੋਈ ਸਥਾਨ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਯਤਨਾਂ ਸਦਕਾ ਹੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ 1829 ਈ. ਵਿਚ ਇਸ ਕੁਪ੍ਰਥਾ ਨੂੰ ਗ਼ੈਰ-ਕਾਨੂੰਨੀ ਘੋਸ਼ਿਤ ਕੀਤਾ।

ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਨਾਰੀ ਸਿੱਖਿਆ ਲਈ ਵੀ ਕੰਮ ਕੀਤਾ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਬੰਗਾਲੀ ਅਤੇ ਫ਼ਾਰਸੀ ਵਿਚ ਦੋ ਸਮਾਚਾਰ ਪੱਤਰ ਕੱਢੇ ਅਤੇ ਬੰਗਾਲੀ ਵਿਚ ਪੁਸਤਕਾਂ ਲਿਖੀਆਂ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਇਸਤਰੀ ਸਿੱਖਿਆ ਲਈ ਸਕੂਲ ਖੋਲੇ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਮੁਕਤੀ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਕਿਤਾਬਾਂ ਅਤੇ ਜਰਨਲ ਛਾਪੇ ਗਏ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਇਸਤਰੀਆਂ ਦੀ ਭਲਾਈ ਲਈ ਲੇਖ ਲਿਖੇ। ਬ੍ਰਾਮਬੋਧਿਨੀ ਪ੍ਰਤਿਕਾ ਵੀ ਚਲਾਈ ਗਈ। ਕੇਸ਼ਵ ਚੰਦਰ ਸੇਨ ਦੀਆਂ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ਾਂ ਸਦਕਾ ਅੰਗਰੇਜ਼ ਸਰਕਾਰ ਨੇ 1842 ਈ. ਬਾਲ ਵਿਆਹ ਰੋਕਣ ਲਈ ਕਾਨੂੰਨ ਬਣਾਇਆ। "ਬ੍ਰਹਮੋ ਸਮਾਜ ਪਹਿਲੀ ਐਸੀ ਸੰਸਥਾ ਸੀ, ਜਿਸਨੇ ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਥਮ ਹੋਂਦ ਨੂੰ ਮਾਨਤਾ ਦਿੱਤੀ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਘਰਾਂ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਕਾਰਜ ਕਰਨ ਲਈ ਅਵਸਰ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀਤੇ।"[12] ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਮੁੱਖ ਤੌਰ ਤੇ ਚਾਰ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਮੁੱਦੇ ਸਨ। "ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਨੂੰ ਖ਼ਤਮ ਕਰਨਾ, ਇਸਤਰੀ ਜਾਇਦਾਦ ਦੇ ਹੱਕ ਦੀ ਗੱਲ, ਬਹੁ-ਵਿਆਹ ਨੂੰ ਰੋਕਣਾ, ਅਸਿੱਧੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਇਸਤਰੀ ਵਿਦਿਆ ਦੀ ਗੱਲ ਕੀਤੀ।"[13] ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਲਿਖਤ *'Brief remarks regarding Modern Enchroachments on the Ancient Right of Females*" ਵਿਚ ਇਸਤਰੀ ਦੇ ਹੱਕਾਂ ਬਾਰੇ ਲਿਖਿਆ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਇਸਤਰੀ ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਨੂੰ ਖ਼ਤਮ ਕਰਨ ਲਈ

---

9 Charles H. Heimsath, *Indian Nationalism and Hindu Social Reform*, Princton New Jersey, 1964, p. 10.

10 Lakshmi Mishra, *Women's Issues : Indian Perspective*, Northern Book Centre, New Delhi, 1992, p.4.

11 Manmohan Kaur, *Role of Woman in freedom the movement 1857-1947*, Sterling Publishers, Delhi, 1968, p. 76.

12 D. Gabrial, *Women's Movement in India Conceptual and Religious Reflections,* Breakthrough, Banglore, 1988, p. 123.

13 S.N. Mukharjee, *Raja Ram Mohan Roy and the status of women in Bengal in the 19th century women in India and Nepal, Michael Allen & S.N. Mukharjee (eds.),* Australian National University, Canberra, 1982, p. 107.

ਪੁਰਜ਼ੋਰ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ।

ਕੇਸ਼ਵ ਚੰਦਰ ਸੇਨ ਨੇ 1863 ਈ. ਵਿਚ ਇਸਤਰੀਆਂ ਦੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਬਾਰੇ ਵਿਚਾਰ ਵਟਾਂਦਰਾ ਕਰਨ ਲਈ ਬਾਮ-ਬੋਧਿਨੀ ਪ੍ਰਤਿਕਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੀ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਸਮਾਜ ਦੀ ਵੀ ਸਥਾਪਨਾ ਕੀਤੀ। "1863 ਈ. ਵਿਚ ਕੇਸ਼ਵ ਚੰਦਰ ਸੇਨ ਨੇ ਘਰ ਵਿਚ ਹੀ ਔਰਤਾਂ ਨੂੰ ਪੜਾਉਣ ਲਈ ਇਕ ਸੰਸਥਾ ਬਣਾਈ।"[14] ਜਿਸਦਾ ਮੁੱਖ ਉਦੇਸ਼ ਇਸਤਰੀ ਸਿੱਖਿਆ ਸੀ। ਇਸ ਸੰਸਥਾ ਨੇ ਨਾਰਮਲ ਸਕੂਲ ਫ਼ਾਰ ਗਰਲਜ਼ ਅਤੇ ਵਿਕਟੋਰੀਆ ਇੰਸਟੀਚਿਊਟ ਫ਼ਾਰ ਵੂਮੈਨ ਖੋਲੇ। ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਰਾਹ ਖੋਲਣ ਦੇ ਨਾਲ ਬਾਲ ਵਿਆਹ, ਬਹੁ-ਵਿਆਹ ਦਾ ਡਟ ਕੇ ਵਿਰੋਧ ਕੀਤਾ। ਵਿਧਵਾ ਵਿਆਹ ਦੀ ਪ੍ਰਵਾਨਗੀ ਲਈ ਵੀ ਕਦਮ ਚੁੱਕੇ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਬਹੁ ਪਤਨੀ ਪ੍ਰਥਾ ਤੇ ਵੀ ਰੋਕ ਲਗਾਉਣ ਦੇ ਯਤਨ ਕੀਤੇ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਪੁਰਸ਼ਾਂ ਲਈ ਇਕ ਤੋਂ ਵੱਧ ਵਿਆਹ ਕਰਨ ਦੀ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਵੀ ਖੰਡਨ ਕੀਤਾ । ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਅਨਮੇਲ ਵਿਆਹ ਦਾ ਵੀ ਖੰਡਨ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਵਿਆਹ ਲਈ ਲੜਕੇ ਦੀ ਉਮਰ 18 ਸਾਲ ਅਤੇ ਲੜਕੀ ਦੀ ਉਮਰ 14 ਸਾਲ ਤੈਅ ਕੀਤੀ । ਇਹਨਾਂ ਸਾਰੇ ਯਤਨਾਂ ਦੇ ਫਲਸਰੂਪ ਹੀ 1872 ਈ. ਵਿਚ ਵਿਆਹ ਦੀ ਉਮਰ ਸੰਬੰਧੀ ਕਾਨੂੰਨ ਨੂੰ ਪਾਸ ਕਰਵਾ ਕੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਵੱਡਾ ਬਦਲਾਅ ਲਿਆਂਦਾ ਗਿਆ।"[15] ਇਸ ਸਮਾਜ ਦੁਆਰਾ ਅੰਤਰ ਜਾਤੀ ਵਿਆਹ ਦਾ ਵੀ ਸਮਰਥਣ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। "ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਵਿਧਵਾ ਪੁਨਰ-ਵਿਆਹ ਉੱਪਰ ਵੀ ਬਲ ਦਿੱਤਾ ਅਤੇ ਅੰਤਰ ਜਾਤੀ ਵਿਆਹਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਪ੍ਰੋਤਸਾਹਿਤ ਕੀਤਾ।"[16] ਇਸਦੇ ਨਤੀਜੇ ਵਜੋਂ ਸਿਵਲ ਮੈਰਿਜ ਐਕਟ 1872 ਵਿਚ ਪਾਸ ਹੋਇਆ। ਇਹ ਐਕਟ ਅੰਤਰ ਜਾਤੀ ਵਿਆਹ ਅਤੇ ਤਲਾਕ ਦੀ ਇਜਾਜਤ ਦਿੰਦਾ ਸੀ। ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਮੋਹਨ ਰਾਇ ਨੇ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਵੀ ਸ਼ਲਾਘਾਯੋਗ ਸੁਧਾਰ ਕੀਤੇ।

ਇਸ ਸਮਾਜ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲੀ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਮਹਿਲਾ ਸੁਧਾਰਕ ਪੰਡਿਤਾ ਰਾਮਾ ਬਾਈ ਸਰਸਵਤੀ (23 ਅਪ੍ਰੈਲ 1858- 5 ਅਪ੍ਰੈਲ 1922) ਸਨ। ਉਹ ਪਹਿਲੀ ਇਸਤਰੀ ਸੀ ਜਿਨਾਂ ਨੂੰ 'ਪੰਡਿਤਾ' ਦਾ ਸਨਮਾਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਇਆ ਸੀ। 1889 ਈ. ਵਿਚ ਕਾਂਗਰਸ ਦੇ ਸੈਸ਼ਨ ਵਿਚ ਆਪ ਜੀ ਦਸ ਮੈਬਰਾਂ ਵਿਚੋਂ ਇਕ ਸਨ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਮਹਿਲਾ ਮੁਕਤੀ, ਯਤੀਮ ਲੜਕੀਆਂ, ਵਿਧਵਾਵਾਂ ਲਈ ਅਤੇ ਨਾਰੀ ਸਿੱਖਿਆ ਲਈ ਕੰਮ ਕੀਤਾ।

ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ

19ਵੀਂ ਸਦੀ ਵਿਚ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਜਿਹੜੇ ਵੀ ਸੁਧਾਰਵਾਦੀ ਅੰਦੋਲਨ ਚੱਲੇ ਉਹਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਪ੍ਰਬਲ, ਸ਼ਕਤੀਸ਼ਾਲੀ ਅਤੇ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਸੀ। ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਦੇ ਮੋਢੀ ਸੁਆਮੀ ਦਯਾਨੰਦ ਸਰਸਵਤੀ ਸਨ। ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਜਨਮ 1824 ਈ. ਵਿਚ ਗੁਜਰਾਤ, ਕਾਠੀਆਵਾੜ ਵਿਚ ਸਥਿਤ ਮੋਰਵੀ ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਹੋਇਆ। 1875 ਈ. ਵਿਚ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਬੰਬਈ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲੇ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਕੀਤੀ। ਫਿਰ ਦੋ ਸਾਲ ਬਾਦ ਸੰਨ 1877 .ਈ. ਵਿਚ ਲਾਹੌਰ ਵਿਚ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਕੀਤੀ। ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਮਿਸ਼ਨ ਨੂੰ ਸਭ ਤੋਂ

---

14 R.C. Majumdar, *The British Para mountry and Indian Renaissance History and Culture of Indian People part II,* Bhartiya VIdya Bhawan, Bombay, 1965, p.37.

15 H.C. Upadhyay, *Status of Women in India*, Vol.I, Anmol Publication, New Delhi, 1991, pp. 45-46.

16 Census Report, 1991, XIV, *Taglor R.G. Daily Times*, London, 1872, p. 138

ਵੱਧ ਸਫ਼ਲਤਾ ਪੰਜਾਬ ਉੱਤਰ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਰਾਜਸਥਾਨ ਅਤੇ ਗੁਜਰਾਤ ਵਿਚ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਈ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਅੰਤਿਮ ਵਰੇ 1877 ਤੋਂ 1883 ਤੱਕ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕਰਨ ਵਿਚ ਬਤੀਤ ਕੀਤੇ। 1883 ਈ. ਨੂੰ ਅਜਮੇਰ ਵਿਖੇ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਆਖ਼ਰੀ ਸਾਹ ਲਏ। "ਸੁਆਮੀ ਦਯਾ ਨੰਦ ਸਰਸਵਤੀ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਅਧਿਆਤਮਿਕ ਜਾਗ੍ਰਿਤੀ ਦੇ ਮਾਰਟਿਨ ਲੂਥਰ ਕਹੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।"[17] ਮਾਰਟਿਨ ਲੂਥਰ ਦਾ ਨਾਅਰਾ ਬਾਈਬਲ ਵੱਲ ਪਰਤੋਂ ਭਾਰਤੀ ਸੰਦਰਭ ਵਿਚ ਵੇਦਾਂ ਵੱਲ ਪਰਤੋਂ ਬਣ ਗਿਆ।

ਨਾਰੀ ਸੁਧਾਰ : ਸਵਾਮੀ ਦਯਾਨੰਦ ਸਰਸਵਤੀ ਨੇ ਨਾਰੀ ਸੁਧਾਰ ਲਈ ਬਹੁਤ ਯਤਨ ਕੀਤੇ। ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਸਮੇਂ ਬਾਲ ਵਿਆਹ ਬਹੁਤ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਸੀ। 1921 ਦੀ ਜਨਗਣਨਾ ਅਨੁਸਾਰ, ਇਕ ਸਾਲ ਤੋਂ ਘੱਟ 612 ਲੜਕੀਆਂ, 5 ਸਾਲ ਤੋਂ ਘੱਟ 2024 ਲੜਕੀਆਂ, ਦਸ ਸਾਲ ਦੀ ਉਮਰ ਤੋਂ ਘੱਟ 97857 ਲੜਕੀਆਂ ਅਤੇ 15 ਸਾਲ ਦੀ ਉਮਰ ਤੋਂ ਘੱਟ 3,32,024 ਲੜਕੀਆਂ ਨਵ ਵਿਆਹੁਤਾ ਸਨ।"[18] ਸੁਆਮੀ ਜੀ ਨੇ ਇਸ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਘੋਰ ਵਿਰੋਧ ਕੀਤਾ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਬਾਲ ਵਿਆਹ ਆਮ ਸੀ। "ਇਥੋਂ ਤੱਕ ਕਿ ਦਾਦਾ ਭਾਈ ਨਾਰੌਜੀ ਦਾ ਵਿਆਹ 11 ਸਾਲ ਦੀ ਉਮਰ ਵਿਚ 7 ਸਾਲ ਦੀ ਗੁਲਾਬੀ ਦੇਵੀ ਨਾਲ ਹੋਇਆ ਅਤੇ ਮਹਾਤਮਾ ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਦਾ ਵਿਆਹ 13 ਸਾਲ ਦੀ ਉਮਰ ਵਿਚ ਹੋਇਆ।"[19] "ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ 1898 ਈ. ਵਿਚ ਰਾਜਿੰਦਰ ਪ੍ਰਸਾਦ ਦਾ ਵੀ ਤੇਰਾਂ ਸਾਲ ਦੀ ਉਮਰ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਖ਼ਰਚਾ ਕਰਕੇ ਵਿਆਹ ਕੀਤਾ ਗਿਆ।"[20] ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਨੇ ਬਾਲ ਵਿਆਹ ਖਿਲਾਫ਼ ਅਵਾਜ਼ ਉਠਾਈ। ਇਸ ਲਈ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਆਮ ਜਨਤਾ ਦੀ ਰਾਇ ਵੀ ਲਈ। "ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਵਿਆਹ ਦੀ ਘੱਟ ਤੋਂ ਘੱਟ ਉਮਰ ਲੜਕੀਆਂ ਲਈ 16 ਅਤੇ ਲੜਕਿਆਂ ਲਈ 25 ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਕੀਤੀ।"[21] ਬਾਲ ਵਿਆਹ ਵਿਰੁੱਧ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕਰਨਾ ਇਸ ਲਹਿਰ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਬਣ ਗਿਆ ਸੀ। ਇਸ ਕੁਪ੍ਰਥਾ ਨੂੰ ਖ਼ਤਮ ਕਰਨ ਲਈ ਕਾਨਫਰੰਸ ਕੀਤੇ ਗਏ। ਹਰਬਿਲਾਸ ਸ਼ਾਰਦਾ ਇਕ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜੀ ਹੀ ਸਨ ਜਿਹਨਾਂ ਨੇ ਵਿਧਾਨਕ ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਦੁਆਰਾ ਘੱਟ ਤੋਂ ਘੱਟ ਆਗਿਆਯੋਗ (ਵਿਆਹ ਯੋਗ) ਉਮਰ 14 ਸਾਲ ਕਰਵਾਈ ਸੀ। ਇਸ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਇਸ ਕੁਪ੍ਰਥਾ ਪ੍ਰਤੀ ਰਵੱਈਆ ਅਸਪਸ਼ੱਟ ਅਤੇ ਨਿਰਪੱਖ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਸਮਾਜਿਕ ਤਾਣੇ ਬਾਣੇ ਨਾਲ ਛੇੜਛਾੜ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਸਨ। ਜਗਤ ਚੰਦ, ਨਾਨਕ ਚੰਦ, ਪੂਰਨ ਦੇਵੀ, ਸਰਲਾ ਦੇਵੀ ਆਦਿ ਨੇ ਬਾਲ ਵਿਆਹ ਖਿਲਾਫ਼ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕੀਤਾ। ਅੰਤ ਵਿਚ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਬਾਲ ਵਿਆਹ ਉੱਪਰ ਰੋਕ ਲਗਾਈ ਅਤੇ ਅੰਤਰ ਜਾਤੀ ਅਤੇ ਅੰਤਰ ਧਰਮ ਵਿਆਹ ਨੂੰ ਪ੍ਰੋਤਸਾਹਿਤ ਕੀਤਾ। ਇਹਨਾਂ ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ਾਰਦਾ ਐਕਟ ਦਾ ਨਾਂ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ। ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਾਉਣ ਵਿਚ ਸਫਲ ਰਿਹਾ ਸੀ ਕਿ ਬਾਲ ਵਿਆਹ ਇਕ ਬੁਰਾਈ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸਨੂੰ ਹਰ ਹਾਲ ਵਿਚ ਖ਼ਤਮ ਕੀਤਾ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

---

17 ਮਨਮੋਹਨ ਸਿੰਘ, *ਸੁਫ਼ੀਮਤ ਅਤੇ ਧਾਰਮਿਕ ਲਹਿਰਾਂ*, ਪਬਲੀਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਪਟਿਆਲਾ, 1993, ਪੰ. 93.

18 J.T. Marten, *Census of India 1921, Vol. I*, Superident Government Printing Calcutta, 1923, p.....

19 M.K. Gandhi, Mahadev Desai (Trans.), *The Story of My Experiments with Truth*, Yale University Press, London, 2018, p. 8

20 Dr. Rajendra Prasad, *Autobiography*, Penguine Books Pvt. Ltd., Delhi, 2010, p. 20.

21 Dhanpati Pandey, *The Arya Samaj and Indian Nationalism 1875-1920*, S. Chand & Co., New Delhi, 1972, p. 72.

ਸਵਾਮੀ ਦਯਾਨੰਦ ਸਰਸਵਤੀ ਅਨੁਸਾਰ ਜਿਸ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਵਿਦਿਆ ਵਿਹੀਨ, ਨਾਬਾਲਗ ਲੜਕੀਆਂ ਦਾ ਵਿਆਹ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਉਹ ਦੇਸ਼ ਕਦੇ ਵੀ ਕਾਮਯਾਬ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ। ਉਹਨਾਂ ਅਨੁਸਾਰ ਲੜਕੀ ਦਾ ਵਿਆਹ 16ਵੇਂ ਤੋਂ 24ਵੇਂ ਸਾਲ ਦੀ ਉਮਰ ਵਿਚ ਅਤੇ ਪੁਰਸ਼ ਦੇ ਵਿਆਹ ਦੀ ਉਮਰ 25 ਵੇਂ ਤੋਂ 48ਵੇਂ ਸਾਲ ਵਿੱਚ ਉਤਮ ਹੈ। ਉਹ ਬਾਲ ਵਿਆਹ ਦੇ ਘੋਰ ਵਿਰੋਧੀ ਸਨ ਅਤੇ ਇਹ ਉਮੀਦ ਕਰਦੇ ਸਨ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਵਿਵਸਥਾ ਨੂੰ ਇਸ ਪ੍ਰਥਾ ਵਿਰੁੱਧ ਕੁਝ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਬਾਲ ਵਿਆਹ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਸੁਆਮੀ ਦਯਾਨੰਦ ਜੀ ਨੇ ਅਨਮੇਲ ਵਿਆਹ ਦਾ ਵੀ ਪੁਰਜ਼ੋਰ ਵਿਰੋਧ ਕੀਤਾ। ਸਵਾਮੀ ਦਯਾਨੰਦ ਜੀ ਨੇ ਵਿਆਹਾਂ ਨੂੰ ਤਿੰਨ ਸ਼੍ਰੇਣੀਆਂ ਵਿੱਚ ਰੱਖਿਆ-ਉੱਤਮ, ਘਟੀਆ ਅਤੇ ਮੱਧਮ ਵਿਆਹ। ਘਟੀਆ ਵਿਆਹ ਉਹ ਹਨ ਜਿਹੜੇ ਸੋਲਾਂ ਸਾਲ ਦੀ ਲੜਕੀ ਅਤੇ ਪੱਚੀ ਸਾਲ ਦੇ ਲੜਕੇ ਦਾ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਮੱਧਮ ਵਿਆਹ 18 ਅਤੇ 20 ਸਾਲ ਦੀ ਕੁੜੀ ਅਤੇ 25 ਅਤੇ 40 ਸਾਲ ਦੇ ਲੜਕੇ ਦਾ ਅਤੇ ਉਤਮ ਵਿਆਹ 24 ਸਾਲ ਦੀ ਲੜਕੀ ਅਤੇ 48 ਸਾਲ ਦੇ ਲੜਕੇ ਦਾ ਵਿਆਹ ਸਨ। ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਧਾਰਣਾ ਸੀ ਕਿ ਵਿਆਹ ਯੋਗ ਇਸਤਰੀ ਪੁਰਸ਼ ਵਿਦਿਆ, ਕੁਲ, ਰੂਪ, ਸਰੀਰ, ਗੁਣ, ਧਰਮ, ਸੁਭਾਅ ਆਦਿ ਵਿਚ ਬਰਾਬਰ ਹੋਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ। ਵਿਆਹ ਸੰਬੰਧ ਦਾ ਨਿਰਧਾਰਣ ਮਾਤਾ-ਪਿਤਾ ਦੁਆਰਾ ਨਾ ਹੋ ਕੇ ਲੜਕੇ ਅਤੇ ਲੜਕੀ ਦੁਆਰਾ ਸਵੈ-ਇਛਾ ਨਾਲ ਕੀਤਾ ਜਾਣਾ ਚਾਹਿਦਾ ਹੈ। ਦਯਾਨੰਦ ਜੀ ਨੇ ਸਵੰਬਰ-ਵਿਹਾਰ ਦਾ ਸਮਰਥਨ ਕੀਤਾ। ਆਪਣੀ ਰਚਨਾ 'ਸਤਿਆਰਥ ਪ੍ਰਕਾਸ਼' ਵਿੱਚ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਸਪਸ਼ਟ ਕੀਤਾ ਕਿ ਲੜਕੇ-ਲੜਕੀ ਦੀ ਮਰਜ਼ੀ ਨਾਲ ਵਿਆਹ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਮਾਤਾ-ਪਿਤਾ ਨੂੰ ਲੜਕੇ-ਲੜਕੀ ਦੀ ਮਰਜ਼ੀ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਵਿਆਹ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ਚਾਹਿਦਾ।

ਸੁਆਮੀ ਦਯਾਨੰਦ ਸਰਸਵਤੀ ਨੇ ਬਾਲ ਵਿਆਹ ਦੇ ਫ਼ਲਸਰੂਪ ਹੋਈਆਂ ਬਾਲ-ਵਿਧਵਾਵਾਂ ਦੇ ਪੁਨਰ-ਵਿਆਹ ਨੂੰ ਉਚਿਤ ਠਹਿਰਾਇਆ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਸਮਰਥਨ ਕੀਤਾ। "ਉਨ੍ਹੀਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਮੱਧ ਵਿੱਚ ਜੋ ਲੱਖਾਂ ਵਿਧਵਾਵਾਂ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਅਤੇ ਪਤੀ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਵਲੋਂ ਦੁਰਕਾਰੀਆਂ ਜਾ ਕੇ ਦੇਵਾਲਿਆਂ, ਮੱਠਾਂ ਅਤੇ ਮੰਦਿਰਾਂ ਵਿਚ ਆਸਰਾ ਲੈਣ ਲਈ ਮਜ਼ਬੂਰ ਹੋ ਜਾਂਦੀਆਂ ਸਨ ਅਤੇ ਉੱਥੇ ਦੁਰਾਚਾਰੀਆਂ ਦੀ ਹਵਸ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਹੋ ਕੇ ਪਾਪ ਦਾ ਜੀਵਨ ਬਤੀਤ ਕਰਦੀਆਂ ਸਨ, ਉਹਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਬਹੁਤੀਆਂ ਬਾਲ-ਵਿਧਵਾਵਾਂ ਹੀ ਹੁੰਦੀਆਂ ਸਨ। ਦਯਾਨੰਦ ਜੀ ਦੇ ਮਤ ਵਿੱਚ ਅਜਿਹੀਆਂ ਬਾਲ-ਵਿਧਵਾਵਾਂ ਦਾ ਪੁਨਰ-ਵਿਆਹ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਯੋਗ, ਸ਼ਾਸਤ੍ਰ ਅਤੇ ਧਰਮ ਦੇ ਅਨੁਕੂਲ ਹੈ। ਅਜਿਹੀਆਂ ਵਿਧਵਾਵਾਂ ਕਿਸੇ ਵੀ ਵਰਣ ਦੀਆਂ ਹੋਣ, ਉੱਚੀ ਤੋਂ ਉੱਚੀ ਕੁਲ ਦੀਆਂ ਵੀ ਹੋਂਣ, ਤਾਂ ਵੀ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਪੁਨਰ-ਵਿਆਹ ਕਰਕੇ ਗ੍ਰਹਿਸਥ ਜੀਵਨ ਬਿਤਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਅਜਿਹੀਆਂ ਵਿਧਵਾਵਾਂ ਲਈ ਜੋ ਪਤੀ ਨਾਲ ਸੰਯੋਗ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਵਿਧਵਾਵਾਂ ਹੋਈਆਂ ਹੋਣ, ਸੁਆਮੀ ਜੀ ਨੇ ਪੁਨਰ-ਵਿਆਹ ਨੂੰ ਉਚਿਤ ਨਹੀਂ ਮੰਨਿਆ।"[22] "ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਧੀਨ ਆ ਕੇ ਬਿਜਨੇਰ ਦੀ ਕਸ਼ੱਤਰੀ ਸ਼ੰਕਰ ਦੱਤ ਤੇ ਆਪਣੀ ਪਤਨੀ ਦੀ ਮੌਤ ਹੋ ਜਾਣ ਬਾਦ ਇਕ ਵਿਧਵਾ ਨਾਲ ਵਿਆਹ ਕਰਵਾਇਆ।"[23] ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਹੋਰ ਵੀ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਵਿਆਹ ਕਰਵਾਏ ਗਏ ਅਤੇ ਕਈ ਸੰਸਥਾਵਾਂ

---

22 ਮਨਮੋਹਨ ਸਿੰਘ, *ਸੁਫ਼ੀਮਤ ਅਤੇ ਧਾਰਮਿਕ ਲਹਿਰਾਂ*, ਪਬਲੀਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਪਟਿਆਲਾ, 1993, ਪੰ. 98.

23 Shiv Kumar Gupta, *Arya Samaj and the Raj, (1875-1920),* South Asia Books, New Delhi, 1991, p. 48.

ਬਣਾਈਆਂ ਗਈਆਂ ਜੋ ਵਿਧਵਾ ਵਿਆਹ ਕਰਵਾਉਂਦੀਆਂ ਸਨ। ਇਹਨਾਂ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਦੇ ਜ਼ਿਆਦਾਤਰ ਮੈਂਬਰ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ, ਬ੍ਰਹਮੋ ਸਮਾਜ, ਸਿੰਘ ਸਭਾ ਲਹਿਰ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਸਨ। ਆਰੀਆ ਸਮਾਜੀ ਹਫ਼ਤਾਵਾਰ ਮੀਟਿੰਗਾਂ ਕਰਕੇ ਵਿਧਵਾ ਪੁਨਰ-ਵਿਆਹ ਲਈ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਬਣਾਉਂਦੇ ਸਨ। ਇਸ ਲਈ ਲਾਹੌਰ ਦੇ ਗੰਗਾ ਰਾਮ ਦੁਆਰਾ ਵਿਧਵਾ ਵਿਆਹ ਸਹਾਇਕ ਸਭਾ ਬਣਾਈ ਗਈ। ਪੂਰੇ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਇਸ ਦੀਆਂ ਕਈ ਸ਼ਾਖਾਵਾਂ ਸਨ। ਯੂਪੀ ਦੀ ਆਰੀਆ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧੀ ਸਭਾ ਨੇ ਵਿਧਵਾ ਆਸ਼ਰਮ ਬਣਾਏ ।

ਵਿਧਵਾਵਾਂ ਅਤੇ ਵਿਧੁਰਾਂ ਦੇ ਪੁਨਰ-ਵਿਆਹ ਦੇ ਵਿਕਲਪ ਵਜੋਂ ਸੁਆਮੀ ਦਯਾਨੰਦ ਜੀ ਨੇ 'ਨਿਯੋਗ' ਦੀ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਸਮਰਥਨ ਕੀਤਾ। ਨਿਯੋਗ ਤੋਂ ਭਾਵ ਹੈ ਸੰਤਾਨ ਉਤਪਤੀ ਲਈ ਵਿਧਵਾ ਨਾਰੀ ਦਾ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਦੇ ਕੁਲ ਦੇ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਪੁਰਸ਼ ਨਾਲ ਸਹਿਯੋਗ ਕਰਨਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। "ਸੁਆਮੀ ਦਯਾਨੰਦ ਨੇ ਆਪ ਇਸ ਦੇ ਉਦਾਹਰਣ ਦਿੱਤੇ ਹਨ 'ਮਹਾਂਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਵਿਆਸ ਜੀ ਨੇ ਵਿਚਿਤਰ ਵੀਰਯ ਦੀਆਂ ਦੋਵੇਂ ਵਿਧਵਾ ਇਸਤਰੀਆਂ ਨਾਲ ਨਿਯੋਗ ਕੀਤਾ ਸੀ।"[24] ਮਨੂੰ ਜੀ ਨੇ ਵੀ ਨਿਯੋਗ ਦੀ ਆਗਿਆ ਦਿੱਤੀ ਹੈ। ਸੁਆਮੀ ਜੀ ਬਹੁਪਤਨੀ ਵਿਆਹ ਦੇ ਵਿਰੋਧੀ ਸਨ। ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਮਤ ਸਪਸ਼ਟ ਸੀ ਕਿ ਇਸਤਰੀ ਅਤੇ ਪੁਰਸ਼ ਦਾ ਇਕ ਹੀ ਵਿਆਹ ਸ਼ਾਸਤਰ-ਅਨੁਕੂਲ ਹੈ। ਦੂਜੇ ਵਿਆਹ ਦੀ ਆਗਿਆ ਨਾ ਤਾਂ ਉਹ ਵਿਧਵਾ ਨੂੰ ਦਿੰਦੇ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਵਿਧੁਰ ਨੂੰ। ਇਸ ਸਮੇਂ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਪਰਦਾ ਪ੍ਰਥਾ ਬਹੁਤ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਸੀ। ਇਹ ਪ੍ਰਥਾ ਸਰੀਰਕ ਅਤੇ ਮਾਨਸਿਕ ਪ੍ਰਗਤੀ ਵਿਚ ਵੀ ਰੁਕਾਵਟ ਬਣੀ ਹੋਈ ਸੀ। ਮੁਗਲ ਸਮਰਾਜ ਰਾਹੀਂ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਆਈ ਪਰਦਾ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਵੀ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਨਿਖੇਧ ਕੀਤਾ। ਆਰੀਆ ਸਮਾਜੀਆਂ ਨੇ ਆਪਣੀਆਂ ਸਭਾਵਾਂ ਔਰਤਾਂ ਨੂੰ ਘੁੰਡ ਕੱਢ ਕੇ ਆਉਣ ਤੋਂ ਮਨਾ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਕੰਮ ਵਿਚ ਸਰਲਾ ਦੇਵੀ ਅਤੇ ਪੂਰਨੀ ਦੇਵੀ ਮੋਢੀ ਸਨ। ਇਹਨਾਂ ਔਰਤਾਂ ਨੇ ਇਕ ਵੱਖਰੀ ਸ਼ਾਖਾ ਬਣਾ ਕੇ ਔਰਤਾਂ ਨੂੰ ਜਾਗਰੂਕ ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ। "ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਔਰਤਾਂ ਨੂੰ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਵਿਹਲੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਸਿਲਾਈ, ਬੁਣਾਈ, ਕਢਾਈ ਸਿਖਾਉਣ ਲਈ ਯਤਨ ਕੀਤਾ।"[25] ਇਸ ਦੇ ਸਿੱਟੇ ਵਜੋਂ ਔਰਤਾਂ ਵਿਚ ਪਰਦਾ ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਪ੍ਰਚਲਨ ਘਟਿਆ ਅਤੇ ਉਹ ਸਮਾਜਿਕ ਕਾਰਜਾਂ ਵਿਚ ਭਾਗੀਦਾਰ ਬਨਣ ਲੱਗੀਆਂ। ਸਵਾਮੀ ਦਯਾਨੰਦ ਜੀ ਨੇ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਪਸਾਰ ਤੇ ਜ਼ੋਰ ਦਿੱਤਾ। ਆਪਣੀ ਰਚਨਾ 'ਸਤਯਾਰਥ ਪ੍ਰਕਾਸ਼' ਵਿਚ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਸਿੱਖਿਆ ਨੂੰ ਸਾਰਿਆਂ ਲਈ ਜ਼ਰੂਰੀ ਦੱਸਿਆ। "ਉਸ ਸਮੇਂ ਮਹਿਲਾ ਅਧਿਆਪਿਕਾ ਦੀ ਲੋੜ ਸਮੇਂ ਦੀ ਮੁੱਖ ਮੰਗ ਸੀ।"[26] ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਨੇ ਇਸ ਦਿਸ਼ਾ ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰਨ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਕੀਤੀ। ਆਰੀਆ ਸਮਾਜੀਆਂ ਨੇ ਦਾਜ ਪ੍ਰਥਾ ਵਿਰੁੱਧ ਵੀ ਆਵਾਜ਼ ਉਠਾਈ। ਕੁਮਾਓਂ ਨਾਮਕ ਜਾਤੀ ਦੀਆਂ ਲੜਕੀਆਂ ਦਾਜ ਉਤਪੀੜਨ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਬਣ ਰਹੀਆਂ ਸਨ। 1913 ਈ. ਵਿਚ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਤੋਂ ਇਸ ਪ੍ਰਥਾ ਨੂੰ ਖ਼ਤਮ ਕਰਨ ਲਈ ਸਹਿਯੋਗ ਦੀ ਮੰਗ ਕੀਤੀ। ਇਸ ਕੰਮ ਵਿਚ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਵੱਧ ਚੜ੍ਹ ਕੇ ਹਿੱਸਾ ਪਾਇਆ। "ਉਹਨਾਂ ਦੁਆਰਾ ਨਾਨਕ ਜਾਤੀ ਸੁਧਾਰ ਸਭਾ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਅਤੇ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ।"[27] ਦਹੇਜ ਪੀੜ੍ਹਤ ਲੜਕੀਆਂ ਨੂੰ ਆਸ਼ਰਮਾਂ ਵਿਚ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਜਿੱਥੇ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ

---

24 ਮਨਮੋਹਨ ਸਿੰਘ, *ਸੁਫ਼ੀਮਤ ਅਤੇ ਧਾਰਮਿਕ ਲਹਿਰਾਂ*, ਪਬਲੀਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਪਟਿਆਲਾ, 1993, ਪੰ. 98.

25 P. Seshdari, *The Spirit of Service*, Article in Dayanand Commemoration Volume, ed by 11.B. Sarda, p. 44.

26 Doris K. Jakobsh, *Relocation Gender in Sikh History Transformation Meaning and Identity*, London, n.d. p. 121.

27 Shiv Kumar Gupta, *Arya Samaj and the Raj, (1875-1920)*, South Asia Books, New Delhi, 1991, p. 50.

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਰਹਿਣ-ਸਹਿਣ ਦੀ ਸੁਵਿਧਾ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ। ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਦੁਆਰਾ ਕੀਤੇ ਗਏ ਸੁਧਾਰ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਹੁਣ ਤੱਕ ਜੀਵੰਤ ਹਨ ਅਤੇ ਸੰਵਿਧਾਨ ਦੇ ਅਨੁਛੇਦ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਹਨ। ਜਿਨਾਂ ਨੇ ਹਿੰਦੂ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਪਰਿਵਰਤਨ ਕੀਤਾ।

ਵਿਦਿਅਕ ਸੁਧਾਰ : ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਅਜਿਹੀ ਲਹਿਰ ਸੀ ਜਿਸ ਨੇ ਭਾਰਤੀ ਮਨਾਂ ਵਿਚ ਅਗਾਂਹਵਧੂ ਤਰੀਕਿਆਂ ਅਤੇ ਵਿਦਿਅਕ ਸੋਚ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਕੀਤਾ। "ਸਵਾਮੀ ਦਯਾਨੰਦ ਦਾ ਵਿਦਿਅਕ ਦਰਸ਼ਨ ਇਕ ਸਿਖਿਆਰਥੀ ਅਤੇ ਇਕ ਅਧਿਆਪਕ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਉਹਨਾਂ ਦੁਆਰਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੇ ਗਏ ਅਨੁਭਵ ਉੱਪਰ ਅਧਾਰਿਤ ਸੀ।"[28] ਸਿੱਖਿਆ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਉੱਪਰ ਚਾਨਣਾ ਪਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਸਤਯਾਰਥ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਿਚ ਆਪਣੇ ਵਿਦਿਅਕ ਦਰਸ਼ਨ ਨੂੰ ਬਿਆਨ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਇਸ ਸਮੇਂ ਅਜਿਹੀ ਸਿੱਖਿਆ ਦੀ ਲੋੜ ਸੀ ਜਿਹੜੀ ਪੱਛਮੀ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਧੀਨ ਆਪਣੇ ਧਰਮ ਪ੍ਰਤੀ ਨਾਸਤਿਕ ਹੋ ਰਹੇ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਧਰਮ ਵਿਚ ਪੱਕਾ ਕਰ ਸਕਦੀ ਸੀ ।

ਸਵਾਮੀ ਦਯਾਨੰਦ ਨੇ ਨਾਰੀ ਸਿੱਖਿਆ ਵੱਲ ਵੀ ਧਿਆਨ ਦਿੱਤਾ। ਮੀਰਤ ਵਿਖੇ ਗਰਲ ਕਾਲਜ ਬਣਾਏ ਗਏ। ਸਵਾਮੀ ਦਯਾਨੰਦ ਉਸ ਸਕੂਲ ਲਈ ਮਹਿਲਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਲੱਭ ਰਹੇ ਸਨ, ਜਿਸ ਦੀ ਭੂਮਿਕਾ ਪੰਡਿਤਾ ਰਾਮਾ ਬਾਈ ਨੇ ਨਿਭਾਈ। ਸਵਾਮੀ ਦਯਾਨੰਦ ਸਰਸਵਤੀ ਦੀ ਨਿਗਰਾਨੀ ਹੇਠ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਕੰਨਿਆ ਸਕੂਲ ਮੀਰਤ ਵਿਖੇ ਖੋਲਿਆ ਗਿਆ। ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਲੜਕੀਆਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਛੇ ਸੀ। ਆਰਥਿਕ ਸਾਧਨਾਂ ਦੀ ਕਮੀ ਹੋਣ ਕਾਰਨ ਵਧੀਆ ਅਧਿਆਪਕ ਨਿਯੁਕਤ ਨਾ ਕਰ ਸਕਣ ਸਦਕਾ ਇਹਨਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ 2 ਹੀ ਰਹਿ ਗਈ। 1888 ਈ. ਵਿਚ ਲਾਲਾ ਮੁਨਸ਼ੀ ਰਾਮ ਨੇ ਆਪਣੀ ਲੜਕੀ ਨੂੰ ਕ੍ਰਿਸਚਨਸ ਸਕੂਲ ਤੋਂ ਹਟਾ ਲਿਆ ਅਤੇ ਜਲੰਧਰ ਵਿਖੇ ਮਹਿਲਾ ਆਰਯਾ ਸਭਾ ਦੀ ਮੰਗ ਕੀਤੀ। ਇਸ ਸੰਬੰਧੀ ਉਹਨਾਂ ਨੇ 'ਅਧੁਰਾ ਇਨਸਾਫ਼' ਜਿਹੇ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਆਰਟੀਕਲ ਲਿਖੇ ਜਿਸ ਵਿਚ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਲੜਕੀਆਂ ਨੂੰ ਬਰਾਬਰ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇਣ ਲਈ ਮੰਗ ਕੀਤੀ। ਉਸਦੇ ਯਤਨਾਂ ਸਦਕਾ ਜੁਲਾਈ 1891 ਈ. ਵਿਚ ਜਲੰਧਰ ਵਿਖੇ ਕੰਨਿਆਂ ਮਹਾਂਵਿਦਿਆਲਾ ਖੋਲਿਆ ਗਿਆ।

ਇਸ ਮਹਾਂਵਿਦਿਆਲੇ ਵਿਚ ਸੰਗੀਤ, ਘਰੇਲੂ, ਅਰਥ-ਸ਼ਾਸਤਰ, ਸਿਲਾਈ-ਕਢਾਈ, ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ, ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ, ਹਿੰਦੀ, ਇਤਿਹਾਸ, ਭੂਗੋਲਿਕ ਸਿੱਖਿਆ, ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਸਿੱਖਿਆ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਿੱਖਿਆ ਨੂੰ ਫੈਲਾਊਣ ਲਈ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸੰਭਵ ਯਤਨ ਕੀਤੇ ਗਏ। ਆਗਰਾ, ਬਿਜਨੇਰ ਆਦਿ ਵਿਚ ਸਮੂਹਿਕ ਸੰਮੇਲਨ ਵੀ ਕੀਤੇ ਗਏ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ 1908 ਵਿਚ ਹੁਸ਼ਿਆਰਪੁਰ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਨੇ ਵੀ ਔਰਤਾਂ ਲਈ ਸਕੂਲ ਖੋਲਣ ਦਾ ਯਤਨ ਕੀਤਾ। ਡੀ.ਏ.ਵੀ. ਸੰਸਥਾਨਾਂ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਮਾਨਤਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਈ। "1925 ਈ. ਵਿਚ 502 ਸੰਸਥਾਨ ਸਨ ਜਿਨਾਂ ਵਿਚ 2570 ਅਧਿਆਪਕ ਪੜਾਉਂਦੇ ਸਨ ਅਤੇ 54,886 ਵਿਦਵਾਨ ਪੜਦੇ ਸਨ।"[29] ਇਹਨਾ ਵਿਚੋਂ ਕੁੜੀਆਂ ਲਈ 2 ਆਰਟਸ ਕਾਲਜ, 1 ਹਾਈ ਸਕੂਲ, 52 ਮਿਡਲ ਸਕੂਲ, 111 ਪ੍ਰਾਇਮਰੀ ਸਕੂਲ, 9 ਸਹਿ ਸਿੱਖਿਆ ਸਕੂਲ, 2 ਵਿਧਵਾ ਘਰ, ਬਣਾਏ ਗਏ ਸਨ। ਸਵਾਮੀ ਦਯਾਨੰਦ ਨੇ ਇਸਤਰੀ ਸਿੱਖਿਆ ਉੱਪਰ ਬਹੁਤ ਧਿਆਨ ਦਿੱਤਾ। ਉਹ ਕੁੜੀਆਂ ਅਤੇ

---

28 Dr. Shiv Kumar Gupta, *Dayanand Anglo Vadic College Movement (1886-1986),* The Punjab Past and Present, April 1986, Serial No. 39, Edited by Ganda Singh, p. 226.

29 Devi Chand, *Report of The educational work of the Arya Samaj in India*, George Press, Amritsar, 1925, p.1.

ਮੁੰਡਿਆਂ ਨੂੰ ਸਮਾਨ ਸਿੱਖਿਆ ਅਧਿਕਾਰ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਸਨ। "ਲੈਫਟੀਨੈਂਟ ਗਵਰਨਰ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਨੇ ਇਸ ਦਿਸ਼ਾ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਮਹਾਨ ਕੰਮ ਕੀਤਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਦੇ ਨਤੀਜੇ ਵਜੋਂ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਸਕੂਲ ਖੁੱਲੇ ਹਨ।"[30] "ਇਹ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜੀ ਲਹਿਰ ਦੇ ਅਣਥੱਕ ਯਤਨਾਂ ਦਾ ਨਤੀਜਾ ਸੀ ਕਿ 20ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਅੱਧ ਵਿਚ 101 ਸਕੂਲ ਲੜਕੀਆਂ ਲਈ ਖੋਲੇ ਗਏ। ਉਹਨਾਂ ਵਿਚ 121, 492 ਸਿੱਖਿਆਰਥੀ ਸਿੱਖਿਆ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰ ਰਹੇ ਸਨ।"[31] ਇਸ ਸੰਬੰਧੀ ਏਨੀ ਬੇਸੈਂਟ ਲਿਖਦੀ ਹੈ :

ਮੈਂ ਸਿਰਫ਼ ਅਜਿਹੀ ਇਕ ਸੰਸਥਾ ਨੂੰ ਜਾਣਦੀ ਹਾਂ ਜੋ ਇਸ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰਨ ਲਈ ਉਤਸ਼ਾਹਿਤ ਹੈ, ਉਹ ਹੈ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ, ਇਸ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਮੈਨੂੰ ਕੋਈ ਵੀ ਅਜਿਹਾ ਨਹੀਂ ਦਿਖ ਰਿਹਾ ਜੋ ਇੰਨੀ ਮਿਹਨਤ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੋਵੇ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਅਸੀਂ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਸਵਾਮੀ ਦਯਾਨੰਦ ਨਾ ਸਿਰਫ਼ ਅਧਿਆਤਮਕ ਅਤੇ ਵੈਦਿਕ ਸਿੱਖਿਆ ਬਲਕਿ ਇਸਤਰੀ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਤੀ ਵੀ ਜਾਗਰੂਕ ਸਨ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਸਵਾਮੀ ਦਯਾਨੰਦ ਨੂੰ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਵਿਸ਼ਵ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਮਹਾਨ ਸਿੱਖਿਆ ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। "ਇਹ ਸਪਸ਼ਟ ਹੈ ਕਿ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਆਪਣੀ ਨਿਰੰਤਰਤਾ ਅਤੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਦੇ ਲਿਹਾਜ ਨਾਲ 19ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਅਖੀਰ ਅਤੇ 20ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਵਿੱਚ ਧਾਰਮਿਕ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਸੁਧਾਰ ਲਈ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਲਹਿਰ ਸੀ।"[32]

ਉਪਰੋਕਤ ਅਧਿਐਨ ਤੋਂ ਸਪੱਸ਼ਟ ਹੈ ਕਿ ਬ੍ਰਹਮੋ ਸਮਾਜ ਅਤੇ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਨੇ ਨਾਰੀ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿੱਚ ਸੁਧਾਰ ਲਈ ਅਣਥੱਕ ਯਤਨ ਕੀਤੇ ਜਿਸ ਦੇ ਸਿੱਟੇ ਵਜੋਂ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਸਤੀ ਪ੍ਰਥਾ, ਬਾਲ-ਵਿਆਹ, ਬਹੁਪਤਨੀ ਪ੍ਰਥਾ ਤੋਂ ਮੁਕਤ ਕਰਨ ਲਈ ਕਾਨੂੰਨ ਬਣੇ ਅਤੇ ਨਾਰੀ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿੱਚ ਸੁਧਾਰ ਕਰਨ ਲਈ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਸਕੂਲਾਂ ਅਤੇ ਕਾਲਜਾਂ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਵੀ ਕੀਤੀ ਗਈ। ਬ੍ਰਹਮੋ ਸਮਾਜ ਅਤੇ ਆਰੀਆ ਸਮਾਜ ਨੇ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਦਮਨਕਾਰੀ ਸਥਿਤੀ ਤੋਂ ਛੁਟਕਾਰਾ ਦਿਵਾਉਣ ਵਿੱਚ ਮੀਲ ਪੱਥਰ ਸਥਾਪਿਤ ਕੀਤਾ।

ਮੋ: 84372-02186

30 The Tribune, 20 December, 1893

31 Devi Chand, *Report of The educational work of the Arya Samaj in India*, George Press, Amritsar, 1925, p. 4

32 Charles H. Heimsath, *Indian Nationalism and Hindu Social Reform,* Princton University Press, New Jersey, 1964. P. 114.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 104-106
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

राजस्थान : धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

जेठाराम
सहायक आचार्य इतिहास, राजकीय महिला महाविद्यालय, खिंवसर, जिला–नागौर।

संकेत :– संस्कृति का स्वरूप।

राजस्थानी कला मूलतः धर्म से ही उत्प्रेरित हुई है। इसीलिए यह शक्ति और भक्ति के समन्वय की भूमि कहलाती है। यहाँ के धार्मिक सांस्कृतिक स्थलों ने अनेक कलाकारों को आश्रय दिया जिन्होंने निरन्तर कलाकृतियों का सृजन किया। यहाँ हिन्दू एवं इस्लाम आदि सभी धर्मों का समन्वय हुआहै यहाँ की सांस्कृतिक परम्पराओं में हिन्दू तथा जैन धर्म अपने विधि विधानों के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में लोक जीवन की छटा बिखरते दिखाई देते हैं। यहाँ के चित्रकारों ने धार्मिक प्रेरणा के फलस्वरूप ही रणबांकुरे वीरों के अद्‌भुत शौर्य पराक्रम, उत्सवों, नारियों के आत्मोसर्ग, लोक नृत्य, लोक गीत, संगीत गाते हुए लोग आदि का आदर्श चित्रण किया है। राजस्थान की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में संघर्षशील जीवन के साथ ही कला और साहित्य का असंख्य भण्डार है। यहाँ विभिन्न देवी–देवताओं की उपासना के केन्द्र है। जैन धर्म का पुण्य तीर्थ स्थल है। विभिन्न, रीति–रिवाजों, त्योहारों विभिन्न उत्सवों, दीपावली, दशहरा, जन्मोत्सव, गणगौर आदि के चित्र बनाये गये हैं। साथ ही नगर के भवनों में अलंकृत अग्रभाग सुसज्जित हवेलियाँ, महलों, मन्दिरों में पाषण शिल्प, कलात्मकता के दर्शन होते हैं। भवनों में ज्यामितीय मोटिब्ज को इस प्रकार उत्कीर्ण किया है कि उसमें असंख्य डिजाइनें प्रतीत होती हैं।

भारतीय समाज के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सामाजिक रीति–रिवाज एवं पर्वो का महत्व सर्वोपरि रहा है। होली, दीपावली आदि तीज–त्योहारों को यहाँ बहुत उल्लासपूर्ण ढंग से मनाया जाता है एवं इन धार्मिक पर्वो, रीति–रिवाजों का बड़ा सुन्दर एवं मार्मिक चित्रण किया गया है। राजस्थान के संघर्षमय एवं शुष्क वातावरण में ये तीज–त्योहार यहाँ के जन–जीवन को उल्लासपूर्ण एवं रसमय कर देते हैं। राजस्थान के सामाजिक जीवन में इन तीज–त्यौहारों, रीति–रिवाजों, पर्वो का उतना ही महत्व है जितना कि यहाँ के रणक्षेत्र में शौर्य और बलिदार का। सामाजिक पर्वों में उत्सवों, बालक जन्म, युवावस्था, विवाह संस्कार, वृद्धा वस्था, श्मसान संस्कार, गृहस्थ जीवन, पैत्रिक क्रियायें आदि में इनका चित्रण यहाँ तत्कालीन भारतीय समाज की स्थिति को दर्शाते हैं। कला समाज का दर्पण होती है। इसीलिए राजस्थानी कला के चित्रों में सामान्य नागरिक का जन–जीवन, उसके रहन–सहन, दैनिक कार्यकलापों, सामरिक गतिविधियों, पर्वो इत्यादि का बड़ा ही सुन्दर, सजीव और स्वाभाविक चित्रण मिलता है। इन्हीं सामाजिक पर्वो पर आधारित बड़े आकार के चित्रों में ऐसे अनेक चित्र उदयपुर के महाराणा के निजी संग्रह में संग्रहित है। राजस्थान के विभिन्न पर्व जोकि वर्ष के हर महीने और ऋतुओं से जुड़े

हुए हैं, उन्हें विशेष धूमधाम से बनाया जाता है। बसन्त का उत्सव यहाँ विशेष धूमधाम से मनाया जाता है। बसन्त ऋतु का स्वागत करने के लिए बसन्त पंचमी के दिन बसन्ती परिधानों में सुसज्जित राजपूत लोक नृत्य, गीत, संगीत, प्रस्तुत करते हैं। इसी दिन होली के गीत भी शुरू होते हैं और प्रथम गुलाल उड़ाये जाने की रस्म होती है।

होली :-

जोधपुर के फागुन मास के चित्र में होली के ढेर की रचना स्पष्ट दिखाई देती है। गोबर से बने चाँद और सूरज एवं ढाल तलवार आदि की आकृति बड़ कूलों से बनी जयमाल घर के सभी सदस्यों द्वारा होली पर चढ़ाये जाने की परम्परा थी। किले के लक्ष्मीनाथ मन्दिर में ईष्ट देव को गुलाल एवं सुगन्ध चढ़ाकर प्रसाद बाँटा जाता है और होली में फाग गीत गाये जाते हैं। राजा स्वयं भी सवारी पर आरूढ़ होकर सजधज कर होली मनाने निकलते हैं। होली के ये रंग और गुलाल शासक और प्रजा में सामीप्य स्थापित कर देते हैं।

विजयदशमी :-

अश्विन मास की दशमी को विजयदशमी का त्योहार मनाया जाता है। यह क्षत्रियों का त्योहार है। इस दिन राम ने रावण का वध करके विजय प्राप्त की थी। देवी दुर्गा ने भी इसी दिन महिषासुर दैत्य का वध किया था। अतः विजय अभियान के लिए विजयदशमी का त्योहार मनाने की परम्परा थी। राजा का तिलक किया जाता था और भैसे की बलि दी जाती थी। मध्यम वर्ग के क्षत्रिय बकरे की बलि देते थे। विजयदशमी के मेले के दिन रावण–वध के नाटक प्रदर्शन की भी परम्परा थी। स्वयं राजा ही रावण का वध करना था। विजय दशमी के अवसर पर शक्ति पूजा होती थी और योद्धा नायक अश्व पूजा करते थे। अश्वों को स्नान कराकर सुसज्जित किया जाता था। राजा श्रेष्ठ घोड़ों तथा अश्वपालों को निरीक्षण के पश्चात पुरस्कृत करते थे। राजपूतों के जीवन में अश्व और हाथियों का पूजनीय स्थान था। कोटा में इस अवसर पर हाथियों का दंगल भी होता था।

दीपावली :-

यह उत्सव राजस्थान में बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। कार्तिक मास के बारहमासा के चित्र में दीपावली के विभन्न दृश्यों का चित्रण हुआ है। इस अवसर पर घरों की साज–सफाई करके उन्हें अलंकृत किया जाता है और देवी–देवताओं के शुभ प्रतीकों से चित्रित किया जाता है। मन्दिरों और भवनों के छज्जे, दीवारें, आले, मीनारे, मुण्डेरे आदि सभी स्थानों को दीपों से सजाया जाता है। मन्दिरों में वाद्य यन्त्रों की धुनों पर नृत्य, सरोवर पर महिलाओं का स्नान, प्रवचन, शिव पूजा एवं अट्टालिका में आभूषणों से सुसज्जित युगल द्वारा लक्ष्मी पूजन इत्यादि इस त्योहार की विभिन्न परम्पराओं हैं।

तीज :-

तीज का त्योहार यहाँ की नारियों में बहुत लोकप्रिय है। सावन के मेघों का आनन्द लेते हुए श्रावणी तीज का दिन युवक–युवतियों में रंग–बिरंगे वस्त्रों से सजे श्रृंगार से युक्त विशेष उमंग भर देता है। नारियाँ वृक्षों पर पड़े झूलों में पेंगे लेती हुई गाती झूमती हैं।

हरणी मन हरियालिया उरहालियो उमंग तीज देख रंग त्यारियाँ सावण लायों रंग, इस अवसर पर पुरूष घुड़सवारी का आनन्द लेते हैं।

शिवरात्रि :-

इस पर्व का हिन्दू संस्कृति में विशिष्ट स्थान है। यह पर्व यहाँ कई नगरों में बड़ी धूमधाम से फाल्गुन माह में मनाया जाता है। कई स्थानों पर मेले लगते हैं।

गणगौर :-

गणगौर का पर्व भी राजस्थान में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यह त्योहार चैत्र बदी एकम से आरम्भ होकर चैत्र शुक्ल तृतीया को समाप्त होता है। इस त्योहार को सधवा स्त्रियाँ अपने सुहाग की रक्षा के लिए व कुंवारी कन्या इच्छित श्रेष्ठ पति की कामना के लिए उत्साह और विश्वास के साथ श्रद्धापूर्वक मनाती हैं। स्त्रियाँ मिट्टी के गौरा–गौरी बनाती हैं। इनके जौ से आँख, नाक, कान आदि बनाकर उनकी पूजा करती हैं। इस अवसर पर गणगौर से सम्बन्धित गीत गाये जाते हैं। राजस्थान में गौर गीतों की संख्या सबसे अधिक है। इन गौर गीतों में शिव–पार्वती के लोक स्वरूप की कल्पना में सुखमय गृहस्थ जीवन की झाँकियाँ प्रस्तुत की गयी हैं। तीजगौर की विदाई के दिन राजकीय शोभा यात्रा का आयोजन होता है।

गणगौर के पर्व पर स्त्रियाँ गणगौर का पूजन तथा पुरूष गणगौर की सवारी निकालते हैं। सन् 1815 ई. में चित्रित ''गणगौर की सवारी'' नामक चित्र में गणगौर को सजाकर एक विशाल जुलूस के रूप में चित्रित किया गया है। स्त्रियाँ रंग–बिरंगे परिधानों में सामूहिक नृत्य और गीत गाती हुई जूलूस के रूप में सम्मिलित होती हैं। वृक्ष पूजन राजस्थानी स्त्रियों द्वारा परिवार के कल्याण और वृद्धि की कामना के फलस्वरूप किया जाता है। स्त्रियाँ पीपल के वृक्ष तथावट वृक्ष का विधि–विधान सहित पूजन करती हैं। राजस्थान के सांस्कृतिक जीवन में लोकगीतों में यहाँ की मर्यादा, अनुशासन, पारम्परिक वेशभूषा, प्रेम, प्रकृति के साथ तादात्म्य, घरेलू जीवन, वैभवपूर्ण जीवन जीने की लालसा परिलक्षित होती है। विभिन्न अवसरों, मेलों, त्योहारों, जन्मोत्सवों, विवाह इत्यादि संस्कारों में यहाँ के लोकगीत सम्पूर्ण वातावरण को रसमय कर देते हैं। पुत्र जन्म पर कांसे की थाली बजाने की परम्परा है। विवाह की ज्यो नार अवसर पर स्त्रियाँ गाली देती हुई अश्लील गीत (सीठने) गाती हैं। उस समय की सौन्दर्यवृत्ति को अभिव्यक्त किया है। राजस्थानी चित्रकारों ने सामाजिक जीवन को चित्रित करने में कोई कमी नहीं छोड़ी। चित्रकारों ने धार्मिक उत्सवों, त्योहारों, पर्वों, के साथ–साथ मनुष्य के रहन–सहन, आमोद–प्रमोद, जीवन पद्धति का मौलिक चित्रांकन किया है। घरेलू पात्र, खेल–खिलौने, वस्त्र–आभूषण, मनोरंजन के साधन शस्त्र आदि सभी में राजस्थान का सांस्कृतिक जीवन इतना सशक्त रहा है कि अनेक संघर्षों से गुजरते हुए भी वह अपनी अन्तश्चेतना को पर्यवेक्षित न कर सका और सांस्कृतिक विरासत को परिपुष्ट किया है।

आभार एवं सन्दर्भ :-

1. राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड :– कक्षा 9 व 10 की राजस्थान अध्ययन।
2. गोपीचन्द शर्मा :– राजस्थान की कला एवं संस्कृति
3. राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड :– कक्षा 11 व 12 की राजस्थान अध्ययन।

जेठाराम

मु.पो.–पाबुसर, तहसील–खिंवसर, जिला–नागौर (राज.)

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 107-118

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

GENDER ISSUES IN INDIAN WRITING IN ENGLISH

Jyoti Soni
(UGC NET December 2021)

ABSTRACT :-

This movement's primary focus is on promoting equality for women within the context of Indian culture and society more generally. In the same way that their counterparts do in other nations all around the world, feminists in India work for achieving gender equality. This includes the right to work for equal pay, the right to equal access to medical treatment and educational opportunities, as well as the right to equal political rights. In addition, Indian feminists have fought against culture-specific issues that arise within India's patriarchal society, such as inheritance laws and the practise of widow immolation known as Sati. Both of these issues have been a source of contention for Indian feminists. The purpose of this study is to explain the psychology of various characters found in some of the selected works by incorporating a number of distinct feministic theories. Even if they belonged to higher socioeconomic groups, the vast majority of women had been held captive by males at some point in their lives. Up until quite recently, women in many parts of the world, including Europe, the Middle East, and Asia, were unable to exert any sort of influence over the political, religious, or cultural activities that took place inside their own cultures.

Introduction :-

The term "feminism" is used to refer to a group of movements with the ultimate purpose of defining, developing, and safeguarding equal political, economic, and social rights and equal opportunities for women in Indian society. In India, feminism refers to this collection of movements. This movement's primary focus is on promoting equality for women within the context of Indian culture and society more generally. In the same way that their counterparts do in other nations all around the world, feminists in India work for achieving gender equality. This includes the right to work for equal pay, the right to equal access to medical treatment and educational opportunities, as well as the right to equal political rights. In addition, Indian feminists have fought against culture-

specific issues that arise within India's patriarchal society, such as inheritance laws and the practise of widow immolation known as Sati. Both of these issues have been a source of contention for Indian feminists. These are two instances of cultural standards that contribute to patriarchy, and both of them are problematic.

It is possible to separate the history of feminism in India into three distinct phases: the first phase, which began in the middle of the nineteenth century and was initiated when male European colonists began to speak out against the social evils of Sati; the second phase, which lasted from 1915 until Indian independence and was characterised by Gandhi's incorporation of women's movements into the Quit India movement and the beginning of independent women's organisations; and the third phase, which occurred after Indian independence and was characterised by the It has been noticed that in communities in which all people, regardless of gender, are treated similarly, women are plainly treated less equally than males. This is the case even in communities in which all members are treated equally. In our country, there is a big gap between the sexes in terms of many different factors. Around the time that the Vedic period was coming to an end, women gradually started losing their rights in social and religious contexts. The position of women in society continued to decline over the course of history, to the point that some families came to believe that the birth of a female child was a portent of ill fortune.

Harassment of women takes place under the pretext of numerous religious and societal norms across the world. In many various cultures, there are many distinct gender-based systems of norms and beliefs. Nevertheless, there is no one universal standard for what makes a masculine or feminine position in any civilization. This is because there are many different cultures in the world. The social roles that men and women are expected to perform in regard to one another are established by the cultural norms that are prevalent in a given culture. The establishment of a gender system is the end outcome of this process. Even though the Constitution of India gives men and women equal rights and advantages, the great majority of women in India do not make use of the rights and opportunities that are granted to them. This is despite the fact that the Constitution of India allows men and women equal rights and benefits. This is the case for a number of distinct reasons, each of which is unique.

Some of these problems include widespread poverty and illiteracy, as well as a patriarchal social order that is still prevalent in our Indian society. The information may be found in the website Wikipedia "The idea of gender inequality acknowledges that men and women do not have an equal standing in society and that gender plays a role in the experiences that people have throughout their lives. These differences can be attributed to the fact that the biology, psychology, and cultural customs of different people are all distinct from one another. While some of these viewpoints appear to have

been evolved as a result of social contact, others appear to have a basis in analysis. Studies have shown that men and women have very different lived experiences in a variety of domains, including education, life expectancy, personality, hobbies, family life, vocations, and political affiliations. These differences may be seen throughout a wide range of sectors. Depending on the culture, inequality between the sexes might be understood to mean a range of different things. In India, gender inequality is still something that has to be addressed. If one is to be a woman and born in India, she has to be mentally prepared to face discrimination on all levels of Indian society due to her gender. According to research conducted at Langston University "The equality of the sexes is closely linked to the idea of sustainable development, and the accomplishment of this goal is necessary to the full and complete realisation of human rights for all individuals. The establishment of a society in which women and men are accorded the same opportunities, rights, and legal standing across the board in all areas of human endeavour is the ultimate goal of efforts to promote gender equality. This is the society that will be the culmination of all efforts to promote gender equality. According to the entries in the English encyclopaedia, the term "gender inequality" refers to the disparity that exists between the position, power, and prestige that men and women have within groups, collectivities, and societies.

Citation As a result, the concept of gender inequality is important to consider for both men and women in equal measure. The terms "gender" and "sex" have historically been used synonymously with one another. Nevertheless, in modern times, their meanings are beginning to diverge more and more from one another, and it is critical to be conscious of the differences that exist between the two. It is more difficult to define the term "gender," despite the fact that it may relate either to the function that men or women play in society, which is referred to as a gender role, or to an individual's notion of who they are, which is referred to as their gender identity. Both of these concepts are discussed further below. The term "gender" refers to the social roles that men and women play in society, whereas "sex" refers to the biological differences between males and females, such as the genitalia and genetic variations. Similarly, "sex" refers to the biological differences between males and females, such as the genitalia and genetic variations. Since this is the case, it is reasonable to say that sexuality is an intrinsic trait that is shared by all human beings, but the concept of gender is something that has been invented by people.

In addition to poverty, illiteracy, a lack of jobs, facilities, social customs, beliefs, and practises, as well as a lack of social attitude, there is a lack of understanding about women. Women are able to work alongside men in any field, as Desai has demonstrated, provided that they are given the same opportunities as men. Because of this, her own thoughts like likewise hover about just domestic life and the people closest to her and surroundings also does not give favourable conditions for her

commitment in the outside work. If she is a bit behind in today's standards, it is not her fault; rather, it is the fault of traditions that have repressed them for generations on end. It is not her fault if she is running a little bit behind schedule; rather, the blame lies with the traditions. It is not difficult to uncover examples of bias of this type inside Indian society. The position of women in India has undergone substantial change throughout the course of history and across the numerous socioeconomic strata, religious traditions, and ethnic groupings that make up the country. In the years leading up to the nation's declaration of independence, women were routinely exploited both within and outside of the four walls of their houses.

In the current study, a complete overview of feminist literature in the English language is presented. Particular attention is paid to the bodies of work produced by Anita Desai and Shashi Deshpande for the purpose of conducting an in-depth investigation. The investigation of disparities between the sexes is at the core of the feminist theoretical paradigm. Some of the subjects that are examined within the context of feminism include discrimination, objectification (especially sexual objectification), oppression, patriarchy, stereotyping, the history of art, as well as modern art and aesthetics. The concept of "feminist analysis" refers to a school of thinking that looks at the world through the prism of the experiences that women have had in their own lives. The demand of a society in which men have colonised women on the basis of their sexuality is the problem that feminism seeks to solve. This is the worry that feminism tackles. Feminist theories that focus on gender inequality recognise the fact that women's locations in and experiences of social settings are not only different from those of men's but also unequal to what men go through in the same circumstances. These theories also acknowledge that women's experiences of social settings are not only distinct from those of men's but also unequal. The beginning of written English in India may be traced back to the first three decades of the 19th century; nevertheless, this period was one of very sluggish incubation. The beginning of written English in India can be traced back to this time period.

The Indian writing that is done in the English language is one of the voices that India utilises to speak about their own culture, heritage, and the modernization of values and system. This voice is one of the ways that India communicates about the modernization of values and system. It enables the potential of carrying out in-depth research on the state of mind and sensitivity of Indian people.

Despite the fact that she is expected to fulfil a variety of roles, a woman's primary responsibilities in the family are restricted to those of a mother, an ideal wife, and a homemaker in the vast majority of cultures. This is the case even though women are expected to perform a wide range of tasks. Because she is a wife and a mother, it is necessary for her to be submissive, patient, and self-sacrificing in order for her to live up to the expectations placed on her. In addition to this, the

great qualities of flexibility and adaptation that she possesses are the reasons why her life is so devoted and obedient. However, in patriarchal society, the distinctive personality that a woman possesses receives a comparatively low level of attention. As a consequence, women in these settings tend to minimise who they are. Women not only take part in the necessary process of fostering the future generations of mankind, but they also play highly crucial roles in every aspect of life. This is because women engage in the reproductive process. Women are an indispensable part of the human race and cannot be severed from it under any circumstances. In spite of the fact that females play incredibly important roles both inside and outside of their families, they are persistently seen as members of "the weaker sex," which implies that they are on a lower social level than their male counterparts. Despite the fact that they both have access to the same number of possibilities, this continues to be the case. At some point or another, women in every part of the world are going to have to deal with the problem of gender discrimination, which is a global phenomenon. It does not matter where they are from or what culture they come from; they are all frequently labelled as "weak," and their place in society is regarded as being below that of the males in their immediate surroundings. The researcher will make sincere efforts, within the confines of this dissertation, to explore the misery that is produced by gender discrimination, which is something that women encounter in every part of the world. In many contexts, a woman must suffer the misery of being discriminated against, despite the fact that it does not matter what race, religion, or region she belongs to. This is true despite the fact that she may be a member of any of these groups.

GENDER ISSUES IN INDIAN :-

The essence of gender issues, which centre on social and gender equality, is inherently multidisciplinary and global in scope. India, which is included in the category of the world's largest democratic country, is a place where it is a good endeavour for both men and women to participate in politics. There was a high-level meeting of the United Nations General Assembly in September 2015, at which 193 countries, including India, set 17 Sustainable Development Goals under Agenda 2030. Gender equality was included in these goals, which suggests that gender discrimination is not just a problem in India. This is also a significant problem in a number of other nations throughout the world.

Because women and men are what make up the building blocks of a wonderful society, it is imperative that there be equality between the sexes in order for civilization to progress. There is a provision for the right to equality in Article 15 of the Indian Constitution. However, there is also a society that is neither male nor female; this society is referred to as the third category, which is transgender. In India, different so-called communities have various ways of conceptualising transgender identity and expression. As a result of this circumstance, it becomes challenging for the

people that make up this society. A landmark decision was made by the Supreme Court of India on April 15, 2014 in the case of the National Legal Services Authority of India. In this case, the court declared that transgender people fall under the category of "third gender," which means that the fundamental rights granted by the Constitution of India have been made equally available to transgender people. This decision was made in an effort to reduce gender discrimination. Issues pertaining to women and girls in Indian politics are dissected in this chapter. The political system of women in India consists of them having the ability to make their own decisions at the social level. According to the study published by the Inter-Parliamentary Union (IPU) in 2020, the percentage of parliamentary seats held by women throughout the world is just 24.5 percent, which is a very low percentage considering the size of the female population. Women hold only 12.39 percent of the total parliamentary (both houses) seats in India, which highlights gender discrimination (according to the 2011 census, the total population in India is 2011. 1210.19 million, of which 586.48. Million approximately 48.5% are women). On the other hand, women hold only 12.39 percent of the total parliamentary (both houses) seats in Pakistan, which highlights gender discrimination. In this chapter, the gender issue that is presented in the depiction of women is discussed. Additionally, the challenges that are provided by gender discrimination are evaluated, and lastly, some ideas are offered to lessen the impact of gender issues.

OBJECTIVES :-

The primary goals of this body of work consist of the following :

- To investigate whether or not people are discriminated against on the basis of their gender.
- To familiarise people from all around the world with the idea of gender discrimination by concentrating on characters from a variety of countries and cultures

REVIEW OF LITERATURE :-

Both "One Night at the Call Centre" (2005) by Chetan Bhagat and "Stilettos in the Boardroom" (2010) by Shruti Saxena show that young workers have accepted and are enjoying the flexibility that is afforded to them by working in outsourced enterprises. The texts also demonstrated that there is a conflict between individuality and conventional social and familial behaviours. This conflict was shown to exist.

Butalia (2011) Chetan Bhagat was widely considered to be one of the most successful authors of popular literature. It is projected that three million copies of his works have been sold, making him the author in India who is currently selling the most copies (Sarkar; Shamsie).

Chakravarti (2006) Many feminist scholars in a variety of global contexts had pointed out that women were frequently seen as the repositories for a nation's, religion's, or community's "honour."

To put it another way, men were judged according to how well "their" women conform to agreed-upon norms of behaviour. To put it another way, women were often seen as the repositories for a nation's, religion's, or community's "honour" (Menon and Bhasin; Sarkar and Butalia).

METHODS :-

The Comparative and Analytical Approaches were chosen as appropriate research approaches for this particular investigation. The purpose of this study is to explain the psychology of various characters found in some of the selected works by incorporating a number of distinct feministic theories. All of these approaches are suitable for the research that is being presented here..

RESULT AND DISCUSSION :-

Women have a lower social position, are more likely to be exploited and oppressed, and have less control over their own lives in almost all class systems and the majority of established communities across the world. Even if they belonged to higher socioeconomic groups, the vast majority of women had been held captive by males at some point in their lives. Up until quite recently, women in many parts of the world, including Europe, the Middle East, and Asia, were unable to exert any sort of influence over the political, religious, or cultural activities that took place inside their own cultures. They do not own any property or inherit land and wealth, and they were treated no differently than property themselves. In ancient Assyria, the punishment for rape was the handing over of the rapist's wife to the husband of his victim, who could then use her however he saw fit. They do not own any property or inherit land and wealth. She is required to suffer the consequence for her husband's actions, despite the fact that she was never questioned about it. In certain societies, a practise known as "ritual widow murder" occurs when women are required to commit themselves or are murdered immediately after the passing of their spouses. Anthropologists have given this practise a name. Up until the turn of the twentieth century, this practise was widespread in India and China. In India, it was referred to as the Sati system.

Even in the so-called "educated" civilization of ancient Greece, which is purportedly where the idea of democracy first emerged, women were not granted ownership rights to property or political rights, and it was illegal for them to leave their houses after it became dark. In a similar manner, women in ancient Rome were not permitted to take part in any kind of social activity and were only permitted to leave their houses in the company of their husbands or other male relatives. Although it is common knowledge that the position of women in society has improved dramatically over the past several decades, the fact remains that male dominance and oppression are still prevalent in many regions of the universe. They are seen as nothing more than a commodity like other commodities in a house; property of the males of the family, and as owners, the men have the right to make decisions

for them. The women have no role whatsoever in determining their own lives, and the men have the right to make decisions for them because they are the owners. Their male owners are allowed to have intercourse with them on demand, which is also a right that they have. The majority of men and women in Egypt are of the opinion that it is okay for a man to beat his wife if she refuses to have sexual relations with him. The craving for power and control that many males have is a primary factor in the subjugation of women. Because men have an innate need to amass as much power and control as they possibly can, they resort to appropriating power and control that rightfully belongs to women.

They leave women unable to lead their own lives so that they may direct the lives of other women for them, and they deny women the right to make decisions so that they can make those decisions for them. They chose their courses of study, where they would live, who they would marry, and a variety of other aspects of their life. The subordination is not limited to the woman's present husband; rather, it may extend to her previous spouses as well as other members of the woman's family, including her parents, siblings, and in-laws. The subjugation of women within the context of the family is something that occurs everywhere on the planet, regardless of culture, religion, social status, or nationality. In spite of the broad presence of such violence, however, it is not generally acknowledged and has stayed hidden since the majority of women are socially and economically reliant on males. This is the reason why it has remained unseen. The violent acts committed against members of the home, whether it the wife or the kid, were seen as a kind of punishment, in particular as a means to establish and uphold one's position as the head of the household. In most parts of the world, including both developing countries and industrialised nations, the subjugation of women is the norm rather than the exception. In spite of the fact that it manifests itself in a variety of manifestations, including psychological, sociological, economic, and physical abuse, for example, the problem is frequently ignored, dismissed, or rejected.

The abusers use a variety of strategies to coercively gain and maintain power and control over the victims, which can result in rape, physical violence, and/or stalking by an intimate partner. The victims also reported at least one impact related to experiencing these or other forms of violent behaviour in the relationship, such as feeling afraid, being concerned for their safety, developing post-traumatic stress disorder (PTSD), needing medical care, being injured, needing crisis support, needing housing services, and needing victim advocacy services. Ignorance and the predominance of men are the two primary factors that contribute to the subjugation of women. The first step in ending an abusive relationship is recognising and admitting that the relationship has abusive characteristics.

Nobody ought to have to face the person(s) they care about while living in constant terror. In point of fact, very little is known about the lived experiences of women who are in relationships in

which they are subjugated to their partners. There are many different outcomes of subjection, some of which include physical injuries, mental health issues, social isolation, the development of a rising religion, and severe effects on both the children and the women's sense of self-worth. Among these results is a growth in faith. From a different perspective, the women fought to escape the bad labels given for being disrespectful to their men since they lived in traditional countries where it is expected of women to remain silent and the more faithful a woman is when she is silent. In addition, a number of studies conducted by feminists have uncovered four primary topics that pertain to the fundamental problems on the requirements and support for the subordination of women inside the home. These are topics that women drew on in their testimonies.

Women who live in rural locations are at an increased risk of experiencing a more severe kind of social isolation. These women have spent their whole lives in a culture in which their primary responsibility, whether it is before or after marriage, is to care for their family. Since the beginning of their childhoods, the women have been indoctrinated with the belief that they are not only physically but also socially inferior to males. Therefore, one may say that the slavery of women begins with the moment that she is born. The British author Doris Lessing, who is best known for her novel The Golden Notebook, identifies the concept of "breakdown" as a primary subject that runs throughout her work. This societal and political disintegration ultimately leads to the individual's downfall on a psychological level. Anna Wulf is the author that Doris Lessing has selected to act as her mouth piece so that she may speak her deepest sentiments. The inequalities that exist in relationships, sexuality, beliefs, occupations, and political systems all contribute to its development. Anna Wulf is a writer who is a single mom and relies on the money that she obtained from the publishing of her first novel, The Frontiers of War. However, following the release of her work, she hits a creative block and is unable to produce any additional novels.

However, I am unable to write the one and only type of novel that piques my attention; that is, a book driven by an intellectual or moral passion that is potent enough to generate order and a fresh perspective on life. It's because I have too many different interests. I have made up my mind that I will never write another novel.

There are six distinct parts of the novel that have been separated out. The first section is titled "Free Women," then there are sections labelled with each of the four primary colours, and the final section is titled "Golden Notebook." In these passages, the protagonist, Anna Wulf, writes down all that has happened to her. As a result of the breakdown and turmoil that exists in Anna's life, she maintains four separate journals as a means of avoiding further strife.

Anna explains to herself, "I have four notebooks: a black note- book, which is related to Anna

Wulf the writer; a red notebook, which is connected with politics; a yellow notebook, in which I build tales out of my experience; and a blue notebook, which attempts to be a journal."

The fact that violence against women in rural regions is so much less likely to be recorded may contribute to the widespread misconception that rural areas have lower rates of domestic violence than metropolitan areas do. The majority of the women who live in rural regions are either illiterate or have a lower level of education, and as a result, they are unable to support themselves financially. They don't let the attacks get to them and keep themselves occupied with chores around the house. As a result, their issues are neither reported nor addressed. Every single woman who chooses to remain in a violent relationship will do so for her own unique reasons. It's possible that her abuser made threats against her or her children, that she'd be forced into poverty if she left, that she'd been out of the workforce for years and lacked the skills and experience necessary to get a job, that she's a woman with few resources, or that she's a recent immigrant struggling with a language barrier. Any of these factors could be keeping her there. It's possible that she tried contacting the police or any other authority in the past and discovered that they were unable to assist her. It's possible that she's more concerned about getting through each day alive than planning her escape at this point. It's possible that she feels ashamed of what she's been through or guilty about breaking up with her lover. It is possible that there are several causes, and the situation is far more difficult than "simply leaving." There is no one solution to the question of why women remain in violent relationships, regardless of the particular reasons why they do so; there is also no general response.

Throughout her writing career, Kamala Das, an Indian author, has been a staunch advocate for the advancement of women's rights. In the study article entitled "Kamala Das: The Voice of Indian Woman's Quest for Liberation," written by Tawhida Akhter, the author discusses the function that Kamala Das plays in modern society. As someone who has personally experienced oppression, Das is determined to bring about a change in society and has turned to literature as a weapon to combat the threat posed by society. The poetess raises her voice in protest against the dominance of the male and the resulting diminution of the role of women. It is expected of the woman to play certain predetermined conventional roles, but her personal desires and goals are not taken into account in this scenario. It is symbolic of the protest of all females against the ego of men because of the vehemence of the demonstration, which is communicated via the use of conversational phrase and rhythm.

According to the most recent figures collected from all around the world, one in every three women may suffer physical or sexual assault in the context of an intimate relationship at some point in her lifetime. This is an average derived from national surveys carried out in both developed and

developing nations that are currently available.

It seems that the phrase "fiction is a method of thoroughly depicting destiny, feelings, situations, and interpersonal interactions" is much more suitable. Fiction is a means of completely explaining all of these things. This is due to the fact that well-written fiction does not only represent, explain, illustrate, or describe events; rather, it finally involves and captivates the reader. In this sense, it creates a form of emotional closeness between the reader and the fictitious characters, which enables the reader to approach the material from a variety of perspectives and permits a variety of interpretations. On the other hand, this only appears to be productive when the fiction in question professes to be realistic in some manner, such as by being historically accurate, politically relevant, or critically analysing something. In the article "Language as a Means to Break the Gender Inequality in Doris Lessing's African Works," written by Tawhida Akhter, the author discusses how an individual's personality is significantly influenced by the culture in which they were raised. She makes the argument that "the society has an important role in moulding the social and personal lives of its members," and she emphasises the importance of this fact. Women did not write as much as they do now for the simple reason that, to quote Virginia Woolf, "A woman must have money and room of her own if she is to create fiction." In the past, women did not have these things.

Money is a sign of power and independence, and having a room of her own provides a place for her to engage in introspective thought. In the past, women frequently engaged in these activities in order to cultivate their creative capacities and increase their level of personal independence.

CONCLUSION :-

One of the primary goals of contemporary writing all over the world has been to bring attention to the plight of oppressed individuals, particularly women, their physical and emotional exploitation, and the mental anguish they experience in their families as a result of being subjugated within their families. The natural occurrence of male dominance in a woman's life in a patriarchal culture, along with the resulting relegation of the woman to a subordinate position, appears to be what drove women authors from all over the world to take up the cause of women. These authors focused on the dual image of women to break the shackles of their traditional position and search for their identity as an individual. Rather than sacrificing at every step for the sake of their husbands and children for the sake of their fathers and brothers, these authors focused on the dual image of women to break the shackles of their traditional position. Historically, it has been expected of a woman to take main responsibility for ensuring the health and happiness of her family. Despite this, she is subjected to pervasive discrimination and is denied access to important resources including schools, hospitals, and employment..

REFERENCES :-

1. Akhter, Tawhida, and AjoyBatta. "Doris Lessing Towards a Social Change: A Psychoanalytical Survey of her Select Works." International Journal of Psychosocial Rehabilitation 24.08 (2020).
2. Showalter, Elaine. "Towards a Feminist Poetics" Women's Writing and Writing About Women. London: Croom Helm. 1979.
3. Spivak, Gayatri Chakravorty, and Graham Riach. Can the Subaltern Speak? London: Macat International Limited, 2016. Print.
4. Lessing, Doris. The Golden Notebook. New York: Simon and Schuster, 1962. Print.
5. Aessing, Doris. The Golden Notebook. New York: Simon and Schuster, 1962. Print.
6. Akhter, Tawhida. "Kamala Das: The Voice of Indian Woman's Quest For Liberation." International Journal of Innovative Research and Development (ISSN 2278–0211) 2.5 (2013).
7. World Health Organization, Department of Reproductive Health and Research, London School of Hygiene and Tropical Medicine, South African Medical Research Council (2013).
8. Akhter, Tawhida "Language as A Means to Break the Gender Inequality in Doris Lessing's African Works." Purakala 31.57 (2020)
9. Woolf, Virginia. The Diary of Virginia Woolf.Houghton Mifflin Harcourt, 1980.

Jyoti Soni, English Literature
Postel address -
Vijay Colony, Ward No.11, Shrimadhopur, Sikar, Rajasthan Pin Code - 332715
E.mail I'd - msjyotisoni1@gmail.com
Mobile no. - 8209315751

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 119-123

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

अध्यापकों की अध्येता बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति का अध्येता उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. महेश कुमार शर्मा
सहायक प्रोफेसर, शिक्षा संकाय,
आई.ए.एस.ई. (मानित विश्वविद्यालय), गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर।

प्रस्तावना :–

अध्यापक एवं समाज का चोली–दामन का सम्बन्ध है। अध्यापक का समाज पर सीधा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि अध्यापक ही नये नागरिकों का एक तरह से निमार्ण करते हैं, जिनमें कालान्तर में नये समाज का जन्म होता है। इस तरह वर्तमान समाज एवं भविष्य में बनने वाले दोनों सामाजिक घटकों से ही शिक्षक का प्रभावी सम्बन्ध है। इसी कारण शिक्षक की अहम भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है।

प्राचीन कालीन शिक्षा में आध्यात्मिकता पर विशेष बल था। शिक्षार्थियों का सर्वांगीण विकास, सुयोग्यता, सच्चरित्र, सात्विक वृत्ति शिक्षकों के माध्यम से ही सम्भव थी। उन अध्यापकों के मूल में सांस्कृतिक आध्यात्मिक चेतना का दीपक प्रज्वलित था, फलस्वरूप समाज में अध्यापक का चयन, उसके व्यवहार की प्रभावशीलता तथा समाज के विकास में उसके कार्यों की भूमिका विशिष्ट मिशाल के रूप में होती थी। आदिकाल से लेकर आज तक अध्यापक की भूमिका, उसके कार्य, उसकी जबावदारी एवं समाज की उसके प्रति अपेक्षा आदि तथ्यों में अधिक तेजी से परिवर्तन नहीं आया, लेकिन अब इस परिवर्तन की दिशा बदलकर भौतिकता पर केन्द्रित हो गई है।

शैक्षणिक उपलब्धियाँ किसी कक्षा विशेष में विद्यार्थियों ने कितनी मात्रा में ज्ञानार्जन या प्रगति की है, का उल्लेख करती हैं इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक थार्नडाइक ने कहा कि जब हम शैक्षिक उपलब्धि को जानना चाहते हैं तब इस बात को निश्चित करने में रुचि रखते हैं कि एक विशेष प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के बाद व्यक्ति नें क्या सीखा हैं।

इस प्रकार शोधकर्ता ने अध्यापकों की अध्येता बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति का अध्येता उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में विस्तारपूर्वक अध्ययन कर सोचा कि –अध्यापक–अध्यापिकाओं की अध्येता के बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति में क्या अन्तर है? अध्यापक–अध्यापिकाओं की अध्येता के बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति का अध्येता उपलब्धि के साथ क्या सम्बन्ध है? उक्त सभी प्रश्नों के समाधान हेतु शोधकर्ता ने ''अध्यापकों की अध्येता बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति का अध्येता उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन'' विषय पर शोध करने

का निर्णय लिया गया।

अध्ययन का महत्व :-

जिस प्रकार बालकों का पालण–पोषण या देखभाल की जायेगी, उसी के अनुरूप उनका विकास सम्भव है। यदि बालक को उचित वातावरण एवं समुचित जीवनोपयोगी सुविधाऐं प्रदान की जाये तो बालक का सर्वांगीण विकास होगा तथा मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। बालकों का विकास न केवल एक राष्ट्र बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए हितकर सिद्ध होता है, क्योंकि आज का बालक भविष्य का एक जिम्मेदार नागरिक होता है। प्रत्येक मनुष्य के लिए मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होना अति आवश्यक है। भोजन, वस्त्र तथा आवास जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण ही नहीं बल्कि अति आवश्यक भी है।

बालक जिस प्रकार के परिवार में रहता है वह उसका प्रत्यक्षीकरण करता है तथा प्रत्यक्षीकरण की क्रिया द्वारा अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है। जिन परिवारों की सुख–शान्ति, परिवारिक कलह, मतभेद, पृथक्करण तथा तलाक आदि कारणों से भंग हो जाती है उन परिवारों के बच्चे अधिक शिक्षा अर्जित नहीं कर पाते हैं। जो माता–पिता अपने बच्चों के सुख–दुख में प्रतिभाग करते हैं तथा उनके साथ आनन्दमयी, समय व्यतीत करते हैं उनके बच्चों की अच्छी उपलब्धि प्राप्त करने की संभावना रहती है। सामान्यतः यह देखा गया है कि भारत वर्ष में जो माता–पिता निर्धन व शिक्षित हैं वे अपने बच्चों के भविष्य के बारे में नहीं सोचते हैं, वे अनुभव करते हैं कि बच्चों को शिक्षित करने का दायित्व उन्हें स्कूल में प्रवेश कराने पर ही समाप्त हो जाता है।

बच्चों की शिक्षा पर उचित ध्यान न देने के कारण उनकी शैक्षिक प्रक्रिया असफल होने लगती है फलस्वरुप उनकी उपलब्धि प्रभावित होती है। जो बालक घर से अनिच्छापूर्वक स्कूल जाता है या स्कूल में धकेला जाता है, तो वह बालक संवेदन शून्य रहता है। इससे बालक की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न रहता है।

उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा अध्यापकों की अध्येता बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति का अध्येता उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने का निर्णय लिया गया है। क्योंकि इस प्रकार का अध्ययन कार्य आज तक बहुत ही कम हो पाया है।

अध्ययन का औचित्य :-

वर्तमान समय में केवल भारत में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में बालकों से जुड़ी विभिन्न समस्यायें हमारे समक्ष विद्यमान है। बालकों के विकास के लिए आवश्यक है उनसे सन्दर्भित समस्याओं को प्रत्येक व्यक्ति समझकर समाधान करने का प्रयास करे। बच्चें भविष्य के निर्माता होते हैं और यदि निर्माता ही समस्याग्रस्त हो तो हम समाज के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करें, यह असम्भव सा प्रतीत होता है। दुनियाभर में आज बालकों की समस्या को जानने, समझने एवं उनके निराकरण के प्रयास किये जा रहे है। बच्चों के अधिकारों के संरक्षण के लिये आवश्यक है समाज एवं राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति का रवैया इसके प्रति सकारात्मक हो तथा इनके पक्ष में प्रयास करने की प्रवृति जागृत हो इसके लिए आवश्यक है अध्यापक वर्ग इसके प्रति सचेत हो।

पूर्व में हुए अध्ययनों के अतिरिक्त इस दिशा में अलग–अलग चरों पर अनेक अध्ययन सम्पादित हुए, इस विषय पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। यह कार्य एक नवाचार शैक्षिक लक्ष्य पर विद्यालय उपयोगी, समाज उपयोगी, अध्यापक उपयोगी एवं विद्यार्थियों के लिए फलदायी होगा, जिससे हम अध्यापकों की अध्येता बाल

अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति के स्तर का पता लगाने एवं इस अभिवृत्ति का अध्येता उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है, का पता लगाने में सक्षम हो सकेंगे। किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगितात्मक पहलुओं पर निर्भर करती है। साथ ही इस संदर्भ में यह देखा जाता है कि अध्ययन समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। उपर्युक्त मानक रूपी दृष्टिकोण को मध्यनजर रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सार्थक तथा औचित्यपूर्ण है, क्योंकि बाल अधिकार आज के समय की महत्वपूर्ण आवश्यता है।

समस्या कथन :–

''अध्यापकों की अध्येता बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति का अध्येता उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अध्येता के बाल अधिकारों के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. अध्येता के उपलब्धि स्तर का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

1. अध्येता के बाल अधिकारों के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. अध्येता के उपलब्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान राज्य के चूरु जिले के माध्यमिक स्तर के 100 अध्यापकों तथा 500 अध्येताओं को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

शोधविधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वैध एवं विश्वसनीय होते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति मापनी।

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित बाल अधिकार मापनी का प्रयोग किया गया है।

अध्येता उपलब्धि मापनी :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा अध्येताओं की उपलब्धि देखने के लिए विगत वर्ष के परीक्षा परिणाम की दत्त तालिका का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान (M), प्रमाणिक विचलन (SD) एवं C.R.Value की गणना की जायेगी।

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण :–

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्ता ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है–

सारणी संख्या –T.IV.1

अध्येता के बाल अधिकारों के प्रति पुरूष एवं महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति के फलांको के सम्बन्ध में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

अध्यापक	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात मान (C.R..Value)	सार्थकता स्तर	
					.05	.01
पुरूष अध्यापक	50	19.58	7.74	2.95		सार्थक अन्तर हैं।
महिला अध्यापक	50	20.48	6.29			

(df=N_1+N_2-2=150+150-2=298)

विश्लेषण :-

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से अधिक है। इस आधार पर परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। अर्थात् अध्येता के बाल अधिकारों के प्रति पुरूष एवं महिला अध्यापकों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

सारणी संख्या–T.IV.2

अध्येता के उपलब्धि स्तर के फलांको के सम्बन्ध में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

अध्येता	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात मान (C.R..Value)	सार्थकता स्तर	
					.05	.01
पुरूष अध्येता	250	19.01	74.45	0.57	सार्थक अन्तर नहीं हैं।	
महिला अध्येता	250	21.76	76.26			

विश्लेषण :-

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से कम है। इस आधार पर परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अर्थात् अध्येता के उपलब्धि स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता :-

शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में निरन्तर अन्वेन्षण के परिणामस्वस्प समाज में एक नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के उद्देश्य को पूर्णता प्रदान की जा सकती है। शिक्षा जगत में निरन्तर अनुसंधान के माध्यम से विभिन्न शैक्षिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं को निश्चित रूप से परिभाषित करके उनके निराकरण का मार्ग दिखाया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में विद्यार्थियों के स्वयं अपने अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति को जानकर उन्हे इसके प्रति जागरूक करने हेतु अभिप्रेरित करने का एक सूक्ष्म प्रयास किया गया है। साथ ही अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर संरचनात्मक परिवर्तन को एक नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया जा सकेगा। वर्तमान समय में विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों एवं समाज के विभिन्न वर्गों को बालकों के अधिकारों को प्रति संवेदनशील व

सकारात्मक होने की आवश्यकता है। सम्भवतः इस प्रकार के शोध कार्य इस क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान करने का कार्य करेंगे।

शोधकर्त्ता इस प्रकार की समस्याओं पर भविष्य में निरन्तर कार्य करने का प्रबल इच्छुक है। शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर उर्ध्वगामी विकास हो इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षा से जुड़ी विभिन्न समस्याओं का पहचान कर उनके कारणों एवं तथ्यों की खोज की जाये। शोधकर्त्ता को आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत शोध कार्य से बालकों के प्रति विद्यालय, समाज, घर–परिवार सभी स्तरों पर सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास सम्भव होगा।

हिन्दी संदर्भ साहित्य :-

1. अरोड़ा, रीता, :– ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं साख्यिकी, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।
2. ओड़, एल.के :– ''शैक्षिक प्रशासन'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
3. अग्रवाल, उमेशचन्द, :– ''उपेक्षित बचपन' समसामयिकी महासागर, जनवरी 2009
4. भट्टाचार्य, जी.सी., :– ''अध्यापक शिक्षा'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, नवम संस्करण, पृ.सं. – 95
5. अस्थाना, विपिन, :– ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

सम्पर्क सूत्र :

9460563985, 7357573985

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 124-126

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारत में पंचायती राज : विकास एवं कार्यप्रणाली

Development and Mode of working of Panchayati Raj Structure in India

राम अवतार
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान

प्रस्तावना :–

भारत गांवों का देश है। भारत की आत्मा गांवों में बसती है और गांवों का विकास स्थानीय स्वशासन से ही संभव है। स्थानीय स्वशासन ग्रामों के शासन से संबंधित अवधारणा है। स्थानीय स्वशासन से तात्पर्य शासन की उस प्रणाली से है, जिसमें निचले स्तर पर लोगों को भागीदार बनाकर लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण को सुनिश्चित किया जाता है तथा लोगों को अपनी समस्याएं स्वयं हल करने के लिए सक्षम बनाया जाता है। स्थानीय स्वशासन पंचायती राज व्यवस्था को ही दूसरा नाम है। स्थानीय लोगों के द्वारा स्वयं पर किया गया शासन ही स्थानीय स्वशासन है। पंचायती राज व्यवस्था के द्वारा ही देश के प्रत्येक हिस्से में निवास करने वाले लोगों का विकास हो सकता है। प्रत्येक व्यक्ति के सर्वागीण विकास में ही देश का विकास निहित है। इस दृष्टिकोण से पंचायती राज की अवहेलना करने का अर्थ है–विकास की गति के एक पहिए को रोकना। किसी भी देश के लिए ग्रामों के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक विकोकोग नजर अंदाज करना सम्पूर्ण देश के विकास को अवरूद्व करने के समान है। अतः ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज को एक ही सिक्के के दो पहलू कहा जा सकता है। महात्मा गांधी ने पंचायत का शाब्दिक अर्थ गांव के लोगों द्वारा चुने हुए पांच व्यक्तियों की सभा से लिया है।

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में गठित केन्द्रीय सलाहकार परिषद को अधिक सशक्त बनाते हुए, अन्य विभागों के साथ इसका पूर्ण समन्वय हो। इसके निर्णय सभी विभागों को मंजू होने चाहिए। ग्राम सभा को अधिक प्रभावशाली बनाते हुए इन्हें सशक्त किया जाना चाहिए।

जिला स्तर पर गठित पंचायत का नाम स्वायतशासी जिला परिषद हों। छठीं सूची में डिस्ट्रिक्ट काउंसिल्स को अपने क्षेत्र में कार्यपालिका, विकास एवं वित्तीय के अतिरिक्त विधायी शक्तियां भी प्राप्त है। पचास प्रतिशत से अधिक जनजाति वाले क्षेत्रों में स्वायत शासनी उप जिला परिषद की स्थापना की जानी चाहिए।

पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम 1996 :–

ज्नजाति समुदाय की भावनाओं और दिलीप सिंह भूरिया समिति की सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए दिसम्बर 1996 में संसद में इससे संबंधित विधेयक पेश हुआ जो कि राष्ट्रपति के अनुमोदन के बाद 24 दिसम्बर 1996 को लागू हुआ। इसका नाम पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम 1996 रखा गया। यह अधि ानियम पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम 1996 रखा गया। यह अधिनियम पीसा या पेसा नाम से

पुकारा जाता है। यह उन आठ राज्यों में लागू है, जहां अनुच्छेद 244(1) के अन्तर्गत पांचली अनुसूची के प्रावधान प्रवर्तित है। छठीं अनुसूची में शामिल मिजोरम, आसाम, मेघालय, नागालैण्ड तथा त्रिपुरा के जनजाति क्षेत्रों पर यह लागूनहीं होता है। जनजाति संस्कृति को सुरक्षित रखना भी इसका लक्ष्य है। ग्रामसभा को सक्षत बनाकर प्रजातंत्र के मूल्यों का बढ़ाना भी इसका ध्येय है।

1996 के पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम 1996 के मुख्य प्रावधान निम्न है :-

जनजाति क्षेत्रों के लिए बनने वाले निम्न ग्रामसभा के सदस्य सभी व्यस्क पारम्परिक नागरिक होंगे तथा ग्राम की सभी योजनाओं का अनुमोदन इसके द्वारा किया जायेगा। गरीब लोगों के चयन का कार्य भी इसी को करना होगा। प्रत्येक योजना में व्यय राशि का ब्यौरा भी ग्रामसभा प्रदान कर सकेंगी।

यह ग्राम सभा बाजार–हाटर का प्रबंध करेगी। वन क्षेत्र से प्राप्त अनेक उपजों जैसे गोंद, तेंदुआ दि पर ग्राम सभा का स्वामित्व होगा। अनाधिकृत जमीन के कार्य का जिम्मा भी इसी को दिया गया।

ऐसे क्षेत्रों में महिलाओं को पचास प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया जाना अनिवार्य किया गया। सभी स्तर की संस्थाओं के अध्यक्ष जनजाति समुदाय के व्यक्ति ही हो सकते है।

मध्य स्तर तथा जिला स्तरीय पंचायतों में अगर जनजातियों के प्रतिनिधि निर्वाचित होकर नहीं आते तो राज्य सरकार कुल निर्वाचित सदस्यों के 1/10 स्थानों पर जनजाति के लोगों को मनोनीत करेगी।

इन क्षेत्रों में जमीन अधिग्रहण के मामलों को फैसला ग्राम सभा ही कर सकती है।

सर्वप्रथम मध्य प्रदेश राज्य ने अपने पंचायती राज अधिनियम में संशोधन कर इसे 5 दिसम्बर, 1997 को लागू किया। सन् 1998 में आंध्र प्रदेश, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र तथा उड़ीसा ने अपने पंचायती राज कानून संशोधित किए। राजस्थान ने इसे 26 जून, 1999 को राजस्थान पंचायती राज (उपबंधों को अनुसूचित क्षेत्रों में लागू होने के संबंध में उपांतरण) अध्या देश, 1999 जारी कर लागू किया था जिसे 30 दिसम्बर, 1999 को राज्यपाल की स्वीकृति मिलने से अधिनियम बनाया जा चुका है।

पंचायती राज की भूमिका एवं उत्तर दायित्व :-

भारत ग्रामों को देश कहलाता है। जिसकी अधिकांश आबादी गांवों मे रहती है। इसलिए देश के विकास की कल्पना गांवों के संग करना ही सार्थ हो सकता है। हमारे देश के गांवों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में पंचायती की महत्वपूर्ण भूमिका है। देश के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि यदि हमारी स्वाधीनता को जनता की आवाज की प्रतिध्वनि बनना है तो पंचायतों को जितनी अधिक शक्ति मिले, जनता के लिए उतना ही लाभदायक है। नेहरू जी के इस कथन को सार्थकता संवैधानिक संशोधन के द्वारा प्राप्त हुई है। संवैधानिक दर्जा मिलने से पंचायतों के संदर्भ में एकरूपता, वित्तीय सुदृढ़ता एवं व्यावहारिकता दिखाई देती है। वित्तीय अधिकारी को गारंटी भी इससे प्राप्त की गई है। इस प्रकार अब पंचायतों को सशक्त और प्रभावशाली विकास में योगदान निश्चित है। पंचायती राज व्यवस्था ने निम्नलिखित योगदान दिया है। पंचायती राज व्यवस्था को सामान्यतः Grassroot Democracy के नाम से जाना जाता है। इसने धरातल के स्तर पर प्रजातंत्र की अवधारणा को साकार किया है। जिससे विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया भी आसान हो गई है।

संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार 33 प्रतिशत स्थान महिलाओं के लिए सुरक्षित रखे गए है। फिर कुछ राज्यों ने जैसे मध्यप्रदेश, केरल, बिहार, राजस्थान ने इसे बढ़ाकर 50 प्रतिशत करके महिला सशक्तिकरण को

गति प्रदान की है। महिलाओं को आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त हुए है। इसी प्रावधानों के कारण महिलाएं पर्दे से बाहर आ सकी है।

देश में 1952 में लागू किए गये सामुदायिक विकास कार्यक्रम की असफलता का प्रमुख बिन्दु जन सहभागिता का अभाव था। इस अधिनियम के बाद केन्द्र और राज्य सरकारों के द्वारा योजनाओं का क्रियान्वयन पंचायतों के जरिये किया जाने लगा है जिससे विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला है देश की सबसे बड़ी योजना महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना का सफल संचालन इसे साबित करता है।

अनेक पंचायतों ने समाज सुधार के कार्य भी किए है। जैसे नशा खोरों पर प्रतिबंध, मृत्युभोज तथा दहेज प्रथा को बंद करना। समाज के सभी वर्गो को प्रतिनिधित्व मिलने से सामाजिक और आर्थिक स्तर में भी काफी सुधार हुआ है। प्राचीन समय की समस्याएं जातिवाद, भाई–भतीजावाद, वंशवाद, अंधविश्वास आदि को पंचायतों के द्वारा बहुत कम कर दिया गया है जोकि एक सराहनीय कार्य कहा जा सकता है।

आज की बढ़ती आबादी पर रोकथाम करना, भविष्य के लिए जरूरी है। पंचायतों के द्वारा इस क्षेत्र में भी कार्य किया जा सकता है। जैसे–जैसे अधिक संतानों वाला व्यक्ति चुनाव नहीं लड़ सकता है। उदाहरण–राजस्थान, हरियाणा। छोटा परिवार–सुखी परिवार अवधारणा में भी पंचायतों की भूमिका अहम है।

आरक्षण के प्रावधानों के कारण समाज के पिछड़े समूहों, शोषित समूहों को पर्याप्त राजनीतिक सहभागिता भी मिली है।

राम अवतार
पिता का नाम राम निवास
पता – वार्ड न. 2 बागावास, मेड़ता सिटी, नागौर – 341510
मो. नं. – 7728831776

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 127-130

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास का समग्र अध्ययन

समित कुमार सुडा, शोधार्थी
डॉ. महेन्द्र कुमार, प्रोफेसर, शोध निर्देशक
राजनीतिक विज्ञान विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान।

भूमिका :–

भारत में पंचायती राज की अवधारणा नवीन नहीं है। यहां प्राचीन संस्थाओं से सम्बन्धित अवधारणा को ही परिवर्तित स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है। पंचायती राज शब्द का अस्तित्व स्वतंत्र भारत में बलवन्त राय मेहता जी के 'लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण' प्रतिवेदन से हुआ है। जो अनवरत अपने अस्तित्व को स्थायित्व किए हुए हैं और शाब्दिक दृष्टि से पंचायती राज शब्द हिन्दी भाषा के दो शब्दों 'पंचायती' व 'राज' से मिलकर बना है। जिसका संयुक्त अर्थ होता है पांच जनप्रतिनिधियों का शासन।

पंचायती राज के उपर्युक्त ढांचे का लक्ष्य लोकतंत्र को सफल बनाना और विकास कार्यो को पूरा करना था। 1959 से लेकर अब तक पूरे देश में पंचायती राज का गठन हो चुका है। इतने विशाल देश में बहुत अधिक भेदों की वजह से प्रत्येक राज्य को अपनी सुविधानुसार पंचायती राज के गठन की स्वतंत्रता है। विभिन्न राज्यों में इन संस्थाओं को अनेक नामों से पुकारा जाता है। लेकिन इन संस्थाओं के गठन का स्वरूप लगभग एक जैसा ही है।

वर्तमान समय में विभिन्न प्रकार की पंचायती राज अवधारणाऐं हैं जो राजनीतिक नौकरशाही तथा सामाजिकता से सम्बन्ध हैं। कुछ राज्य में पंचायती राज की अवधारणा का अभिप्राय सामुदायिक विकास के उद्देश्य को प्राप्त करने का साधन मात्र से लिया जाता है।

पंचायती राज की दूसरी अवधारणा यह है कि पंचायती राज गांवों तक राजनीतिज्ञों के बीच अनुकूलता स्थापित करने के लिए लोकतंत्र का विस्तार मात्र है। पंचायती राज की तीसरी अवधारणा यह है कि नौकरशाही पंचायती राज को स्थानीय स्तर तक प्रशासन का विस्तार मानती है।

जवाहर लाल नेहरू के अनुसार – ''गाँव के लोगों को अधिकार सौंपना चाहिए। उनको काम करने दो चाहे वे हजार गलतियाँ करें। इससे घबराने की जरूरत नहीं, पंचायतों को अधिकार दो।''

भारतीय संविधान में 1993 के 73वें संविधान संशोधन द्वारा ग्राम सभा को संवैधानिक दर्जा मिल गया है। ग्राम सथा को पंचायती राज प्रणाली के एक आंतरिक भाग के रूप में स्वीकार किया गया है। इसे ग्राम या ग्राम समूह के लिये स्थापित किया गया है तथा इसमें ग्राम सभा क्षेत्र के निर्वाचन सूची के निवासी शामिल हैं। यह एक ग्राम की विधानसभा के रूप में कार्य करती है। ग्राम पंचायत कार्यप्रणाली के निरीक्षक के रूप में कार्य करती

है और निर्णय लेने की प्रक्रिया में जनसहभागिता को सुसाध्य बनाती है। ग्राम सभा बैठक की अध्यक्षता सरपंच या उसकी अनुपस्थिति में ग्राम पंचायत के उपसरपंच द्वारा की जायेगी। ग्राम पंचायत का सचिव ग्राम सभा के सचिव के रूप में कार्य करेगा। वह ग्राम सभा के संकल्पों को तैयार करेगा तथा उसे ग्राम पंचायत बैठक के समय अग्रिम कार्यवाही हेतु प्रस्तुत करेगा। ग्राम सभा का बैठक हेतु सदस्यों की संस्था के पांचवे या दसवें भाग द्वारा अलग–अलग राज्यों में कोरम निर्धारित है। राजस्थान में तो अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ी जाती एवं महिलाओं की अलग–अलग जनसंख्या के आधार पर दसवें भाग द्वारा कोरम होना अनिवार्य है। सरपंच तथा ग्राम पंचायत के सदस्यों का यह कर्त्तव्य होगा कि ग्राम सभा की बैठकों में स्थानीय निवासियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति को सुनिश्चित करें।

ग्राम सभा का महत्व ग्रामीण विकास में स्वंय ग्रामीण नागरिकों की भूमिका होती है। ग्राम सभा विकेन्द्रीकरण एवं लोकतंत्र का सबसे सुदृढ़ आधार के अंत ग्राम सभा विकास, लोकतंत्र और विकेन्द्रीकरण तीनों को प्राप्त करने में सफल है। इसके अलावा नागरिकों में निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता हैं ग्रामीण जनता में जागरूकता बढ़ती है। भ्रष्टाचार की सम्भावना कम रहती है। ग्रामीणों की साक्षरता में वृद्धि होती है।

सामाजिक रूढ़ियों में परिवर्तन होता है। सभी ग्रामीणों का एक जगह पर समन्वय तथा तालमेल होना, अपनी दुख–दर्द को पूछने का स्थान बनाना, आपसी सहयोग की भावना पैदा होना, जनता की मनोवृत्ति में परिवर्तन होना, नेतृत्व की क्षमता का विकास होना, नौकरशाही की दोषपूर्णता में बदलाव आना, ग्रामीण विकास में निजी सहयोग की प्राप्ति होना। प्रशासकों एवं नागरिकों में सामान्य सम्बन्ध स्थापित होना, भेदभाव एवं अस्पृश्यता की समाप्ति के प्रयास होना, जन प्रतिनिधियों को कार्यो के क्रियान्वयन करने के लिये दबाव डालना एवं कुछ क्षेत्रों में उनको सहयोग देना, योजनाओं का पूर्ण लाभ गरीबों को दिलवाना, जनता एवं ग्राम की अनेक समस्याओं के हल करने के लिये ग्रामीण मंच के रूप में विकास करना इत्यादि कारणों से इसका महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और इसमें हम गाँधी जी के सपनों को साकार होता हुआ देख सकते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ग्राम सभा :–

1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् स्थानीय स्वायत्व शासन के उत्साह से एक नये अध्याय का शुभारम्भ हुआ। 1948 में केन्द्रिय स्वास्थ्य मंत्री की पहल पर राज्यों का एक सम्मेलन राजधानी में आयोजित किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने कहा स्थानीय स्वायत्व किसी भी सच्ची प्रजातांत्रिक व्यवस्था का आधार है और होना चाहिए। हमारा कुछ ऐसा स्वभाव बन गया है कि हम उच्च स्तर पर ही लोकतंत्र की बात सोचते हैं। निम्नस्तर पर नहीं किन्तु यदि नीचे से नींव का निर्माण न किया गया तो सम्भव है कि लोकतंत्र सफल न हो सके।

संविधान के भाग–4 में नीति के निर्देशक तत्वों के अन्तर्गत अनुच्छेद 40 में कहा गया है कि – ''राज्य ग्राम पंचायतों का संगठन करने के लिये कदम उठायेगा और उनका ऐसी शक्तियाँ व अधिकार प्रदान करेगा जो उन्हें स्वायत्व शासन की इकाईयों के रूप में कार्य करने के लिये योग्य बनाने के लिये आवश्यक है।''

सभी राज्यों में ग्राम सभा की संरचना एक जैसी नहीं है – बिहार, उड़ीसा, राजस्थान में ग्राम पंचायत क्षेत्र के सभी व्यस्क निवासी ग्राम सभा के सदस्य माने जाते थे। इसके अतिरिक्त अन्य राज्यों में पंचायत क्षेत्र के वे मतदाता जिनके नाम राज्य की विधान सभा की सूचि में होते हैं वे ग्राम सभा के सदस्य भी माने जाते हैं। बंगाल

और उड़ीसा में वार्ड सभा और पल्ली सभा का प्रावधान वार्ड स्तर पर भी किया गया था जो राजस्थान में 6 जनवरी, 2000 के संशोधन द्वारा किया गया है।

जयप्रकाश नारायण ने पंचायतों के संदर्भ में एक पंचस्तरीय संरचना सुझाई जो इस प्रकार है –

1. प्रारम्भिक सामुदायिक स्तर पर शासन का सर्वोच्च निकाय ग्राम सभा होगी।
2. क्षेत्रीय स्तर पर कार्यपालिका पंचायत समिति होगी।
3. जिला स्तर पर जिला परिषद् कार्यपालिका होगी।
4. प्रान्तिय स्तर पर प्रान्तिय सभा गठित होगी।
5. समुदाय के राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्र सभा गठित होगी।

राजस्थान सरकार श्री सादिक अली की अध्यक्षता में एक अध्ययन दल का गठन 1964 में किया गया। इस अध्ययन दल ने भी पंचायती राज का मूल आधार ग्राम सभा को माना। संविधान सभा में ग्राम सभा की परिभाषा संविधान में 73वें संशोधन के द्वारा भाग 9 में जोड़े गई अनुच्छेदों में 243 बी में दी गई परिभाषाओं में 'ग्राम सभा' को परिभाषित किया गया है जिसमें ग्राम सभा से ग्राम स्तर पर पंचायत के क्षेत्र के भीतर समाविष्ट किसी ग्राम से सम्बन्धित निर्वाचक नामावली में रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों से मिलकर बना निकाय अभिप्रेत है अनुच्छेद 243क में ग्राम सभा का विश्लेषण यिका गया है जिसमजें ग्राम सभा, ग्राम स्तर पर ऐसी शक्तियों का प्रयोग और कृत्यों का निर्वहन कर सकेगी जो राज्यों के विधानमण्डलों द्वारा विधि द्वारा उपबन्धित किये जायें।

अतः भारतीय संविधान में ग्राम सभा के महत्व को इंगित किया गया है। भूरिया समिति की सिफारिश के अनुसार जनजाति क्षेत्र की ग्राम सभाओं को पंचायत अधिनियम 1966 द्वारा निम्न प्रकार के अधिकार दिये गये हैं –

1. ग्राम सभा पुराने रीति–रिवाजों का संरक्षण करेगी।
2. भूमि आवाप्ति एवं खनिज लायसेंस देने के पूर्व ग्राम सभा से अनापत्ति प्रमाण–पत्र लेना अनिवार्य होगा।
3. अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों की छीनी हुई भूमि का कब्जा ग्राम सभा के आदेश से तहसीलदार पुनः दिलवायेगा।
4. ग्राम सभा मद्य निषेध का निर्णय ले सकेगी।
5. लघु सिंचाई तालाबों का अधिकार ग्राम सभा का होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. डॉ. माहेश्वरी, एस.आर. भारत में स्थानीय प्रशासन, लक्ष्मीनारायण, आगरा, 1990
2. चौधरी, सी.एम. – ग्रामीण विकास : एक अध्ययन, इबिलाइन पब्लिकेशन, जयपुर, 1991
3. फड़िया, बी.एल. – भारत में लोक प्रशासन, साहित्य भवन, आगरा, 1988
4. गाबा, ओमप्रकाश – राजनीति विज्ञान कोष, बी.आर. पब्लिकेशन, कॉरपोरेशन, नई दिल्ली।
5. जैन, पुखराज, फड़िया, बी.एल. – भारतीय शासन व राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
6. जौहरी, जे.सी. – भारतीय राजनीति, विशान पब्लिकेशन, आगरा।
7. खन्ना, बी.एस. – पंचायती राज इन इण्डिया रूरल लोकल सेल्फ गर्वमेंट, दीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1989

8. गोस्वामी, प्रभाकर – राजस्थान में पंचायती राज, मनु प्रकाशन, जयपुर, 1983
9. सरकार, सुमित – आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992
10. शर्मा, हरिशचन्द्र – भारत में लोक प्रशासन, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, 1991
11. देसाई, बंसत (2005) – पंचायती राजय लोगों की शक्ति, हिमालय प्रकाश हाउस।
12. श्रीवास्तव, अरूण कुमार – भारत में पंचायती राज, आर.बी.एस.ए. पब्लिकशर्स, जयपुर, 1994
13. चतुर्वेदी मधुकर श्याम – प्राचीन भारत में राज व्यवस्था, रूप प्रिन्टर्स, जयपुर 1996
14. अब्राहम एम. फ्रांसिस प्रयनामिक्स ऑफ लीडरशिप इन विपेज इण्डिया, इण्डियन इंटरनेशनल पब्लिकेशर्स, इलाहाबाद, 1974
15. दयाल राजेश्वर – पंचायती राज इन इण्डिया, मैट्रोपोलियटन प्रकाशन, दिल्ली 1970

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 131-136

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर सोशल नेटवर्किंग के प्रभाव का अध्ययन

संगीता, शोधार्थिनी
डॉ० सीमा शर्मा, शोध निर्देशिका,
शिक्षा विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ।

सारांश :-

शोध अध्ययन में सर्वेक्षण एवं घटनोत्तर विधि का उपयोग किया गया है। इसमें माध्यमिक स्तर के सोशल नेटवर्किंग उपयोग करने वाले 150 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि के माध्यम से किया गया। शोध अध्ययन में मेरठ के शहरी क्षेत्र के सी0बी0एस0ई0 विद्यालयों को शामिल किया गया। शोध में सांख्यिकी गणना के लिए माध्य, प्रमाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का उपयोग किया गया। अंत में सांख्यिकी गणना करने पर छात्रों एवं छात्राओं के सामाजिक व्यवहार पर पड़ने वाले सोशल नेटवर्किंग के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

कुँजी शब्द :- माध्यमिक स्तर, सामाजिक व्यवहार, सोशल नेटवर्किंग।

प्रस्तावना :-

वर्तमान समय में मोबाइल फोन की प्रधानता समाज के हर क्षेत्र के कार्यों में विद्यमान है। हर व्यक्ति प्रत्येक कार्य के लिए फोन का उपयोग कर रहा है। जिसके विभिन्न प्रकार के प्रभाव उसके जीवन पर पड़ते है व्यक्ति का अधिकतर समय मोबाइल फोन पर ही व्यतीत हो रहा है। लोग मल्टीमीडिया एवं सोशल नेटवर्किंग का उपयोग विभिन्न कार्यों के लिए करते है जो उनके सामाजिक व्यवहार को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करते है।

माध्यमिक स्तर :-

यह प्राथमिक एवं उच्च स्तर के बीच का स्तर होने का कारण माध्यमिक कहलाता है, इस स्तर पर विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का गहन ज्ञान प्रदान किया जाता है, उनमें विभिन्न कौशल विकसित किए जाते हैं। इस स्तर पर बच्चों को उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए तैयार किया जाता है। विद्यार्थियों में स्वतंत्र चिंतन तथा निर्णय लेने की क्षमता का विकास किया जाता है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को अच्छा नागरिक बनने के गुणों से सम्पन्न करने का प्रयास किया जाता है ताकि उनके व्यक्तित्व का विकास हो सके। इस स्तर पर बच्चों का समाजीकरण होता है, समाज से सम्बन्धित बाते सिखाई जाती हैं।

व्यवहार :-

किसी व्यक्ति का किसी व्यक्ति, वस्तु, या क्रिया के प्रति की गई क्रिया अथवा प्रतिक्रिया व्यवहार कहा

जाता है। यह अच्छा या बुरा दोनों प्रकार का हो सकता है। समाज जो बाते मान्य होती है उसे अच्छा व्यवहार कहते है। इसके विपरीत जिस समाज में जिन बातों या कार्यों का विरोध होता है उससे सम्बन्धित किया गया व्यवहार बुरा व्यवहार कहलाता है।

सामाजिक व्यवहार :–

एक प्रजाति में दो या अधिक जीवों की परस्पर क्रिया–प्रतिक्रिया को सामाजिक व्यवहार कहा जा सकता है। समाज के लोग विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं, इन कार्यों को करने के लिए वे एक–दूसरे के सम्पर्क में आते हैं जिससे वे अपने व्यवहार से दूसरों को प्रभावित करते हैं। एक व्यक्ति की क्रिया व्यवहार करने पर दूसरा व्यक्ति प्रतिक्रिया व्यवहार करता है। इस प्रकार समाज के लोगों द्वारा आपस में किए गए व्यवहार को सामाजिक व्यवहार कहा जा सकता है।

सामाजिक व्यवहार के नियम :–

समाज में मनुष्य कई प्रकार की क्रियाएँ एवं प्रतिक्रियाएँ करता है। प्रत्येक मनुष्य समाज में मिलजुल कर रहना पसंद करता है। समाज मनोवैज्ञानिकों ने कुछ ऐसे निमयों को प्रतिपादित किया है जिससे सामाजिक अन्तःक्रिया होती है।

अनुकरण :–

किसी व्यक्ति का अन्य लोगों को देखकर वैसा ही व्यवहार करना अनुसरण कहलाता है। समाज में अक्सर अच्छे व्यवहारों को अनुसरण किया जाता है।

सुझाव :–

एक व्यक्ति का अन्य व्यक्तियों के समक्ष अपनी राय या विचार प्रकट करना सुझाव कहलाता है जिससे दूसरे व्यक्तियों की समस्या का समाधान हो जाता है। इस क्रिया में दो पक्ष होते हैं एक सुझाव देने वाला व दूसरा सुझाव लेने वाला।

सहानुभूति :–

किसी व्यक्ति के दुःख से दुःखी होकर उसके प्रति दया का भाव प्रकट करना सहानुभूति है, सहानुभूति में समान भावना का संचार सम्प्रेषण होता है एक व्यक्ति के दुखी होने पर दूसरा व्यक्ति उसकी स्थिति एवं भावना को महसूस करने के कारण उसकी सहायता के लिए तत्पर रहता है।

सोशल नेटवर्किंग :–

सोशल नेटवर्किंग शब्द दो मिलकर बना है सोशल तथा नेटवर्क जिसका अर्थ क्रमशः सामाजिक एवं संजाल है। यह एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जहाँ पर समाज के लोग परस्पर सूचनाओं का आदान–प्रदान करते है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स–यह एक ऑनलाइन स्थान है जहाँ एक उपयोगकर्ता एक प्रोफाइल बनाकर निजी नेटवर्क बनाता है जिससे वह अन्य लोगों के साथ जुड़ जाता है। इसके लिए मुख्यतः उपयोग होने वाली कुछ सोशल नेटवर्किंग साइट्स निम्नलिखित है फेसबुक, इंस्टाग्राम, यू–ट्यूब, व्हाट्सएप, ट्विटर आदि। आज मोबाइल फोन से प्रत्येक व्यक्ति व्हाटसएप चैट, वीडियों कॉल एवं ऑडियों कॉल के माध्यम से अन्य लोगों से जुड़ा है। व्यक्ति सामाजिक लोगों से जुड़कर हर प्रकार की सूचना प्राप्त कर सकता है एवं अपनी जानकारी को सोशल प्लेटफार्म पर अपलोड करके अन्य लोगों तक बहुत आसानी से कम खर्च में पहुँचा सकता है। इस प्रकार

सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से पूरा विश्व एक–दूसरे से जुड़ा है यह समाज का एक विशाल नेटवर्क है।

समाज में परिवार से लेकर राष्ट्र तक के विभिन्न कार्यों में सोशल नेटवर्किंग की महत्वूपर्ण भूमिका रहती है। इस प्लेटफार्म पर सभी व्यक्ति एक दूसरे से विभिन्न प्रकार की जानकारियों को साझा करते हैं। सोशन नेटवर्किंग मुख्य तौर पर विचारों, समाचार को साझा करने एवं नए/पुराने ब्रांड़ों का विपणन करने के लिए उपयोग किए जाते हैं कम्पनियाँ अपने उत्पाद का प्रचार बढ़ाने और अपने उपभोक्ताओं को अच्छी सेवाएँ प्रदान करने के लिए भी इस प्लेटफार्म का उपयोग करते हैं। आम जनता अपनी जानकारियों को बढ़ाने के लिए इसका उपयोग करती हैं इस प्रकार आम व्यक्ति से लेकर समाज की विकसित कम्पनियाँ एवं प्रत्येक व्यक्ति सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से अन्य लोगों से जुड़े है। समाज के हर क्षेत्र में इसका बढ़ चढ़कर उपयोग किया जा रहा है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :-

सोशल नेटवर्किंग आधुनिक युग के संचार के माध्यम हैं। यह विस्तृत नेटवर्क का जाल है जो पूरे विश्व को जोड़ता है। इसमें तीव्र गति से सूचनाओं का आदान–प्रदान होता है। किसी व्यक्ति, समूह, संस्था तथा देश को आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाने में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। इसकी सहायता से किसी देश में एकता एवं लोकतंत्र को स्थिर व शक्तिशाली बनाया जा सकता है। देश में अखंडता, धर्मनिरपेक्षता तथा समाजवादी गुणों में अभिवृत्ति संभव हो सकती है।

राजनीति में प्रत्येक राजनीतिक दल सोशल नेटवर्किंग से अच्छे सम्बन्ध बनाये रखना चाहता है। इन दलों के प्रवक्ता पार्टी के एजेंडे व कार्यों की जानकारी मीडिया के माध्यम से जनता तक पहुँचाने का प्रयास करते रहते हैं। 2014 के चुनाव में 'मोदी लहर' लाने में भी मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। वर्तमान प्रधानमंत्री मोदी जी ने अपनी पार्टी के एजेंडे व कार्यों की चर्चा खुले मंचों पर लगातार की तथा 'मन की बात' के माध्यम से भी रेडियो, टेलीविजन पर जनता को अपने संकल्पों से प्रभावित किया, जिसका सकारात्मक रूप मीडिया ने भी प्रस्तुत किया।

आर्थिक व सामाजिक विकास में भी सोशल नेटवर्किंग की भूमिका महत्वपूर्ण है। बेरोजगार व्यक्ति विभिन्न प्रकार के ऑनलाइन विडियों अपलोड करके धन कमा सकता है। विद्यार्थी सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से अपने सहपाठियों व शिक्षकों की सहायता लेकर ज्ञानवर्द्धन कर सकते हैं। देश–विदेश के ज्ञान से परिचित हो समाज का विकास हो सकता है।

ग्रामीण विकास तथा दूरस्थ शिक्षा में भी सोशल नेटवर्किंग की भूमिका खास है। कृषि से सम्बन्धित जानकारी किसानों को मिल जाती है तथा नई–नई तकनीकों, खादों, कृषि उपज की सुरक्षा के उपाय व दवाओं की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

सोशल नेटवर्किंग की सहायता से अब जनसाधारण तक सरकारी सहायता पहुँच पाई हैं। वरना उन्हें तो जानकारी भी नहीं होती थी कि उनके लिए सरकार क्या–क्या सहायता प्रदान कर रही है। यह लाभ केवल उच्च स्तर के लोगों तक सीमित रह जाता है।

मीडिया सामाजिक सांस्कृतिक परंपराओं व रूढ़ियों की जटिलता को समाप्त कर मिश्रित संस्कृति व नए मानव मूल्यों की स्थापना कर रहा है। वैश्वीकरण का पूरा श्रेय मीडिया को ही जाता है विश्व की हर घटना की

जानकारी पर बैठे–बैठे ही मिल रही है। राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर विचारों का आदान–प्रदान सरलता से हो रहा है। तीव्र गति से सूचनाओं की पहुँच मीडिया से ही संभव हो सकती है। समाज की समस्याएँ हो या भ्रष्टाचार हो या भ्रष्टाचार नारी सम्मान में कमी हो या अपराधों में वृद्धि समाज के हर वर्ग के व्यक्ति को इनके विरूद्ध आवाज उठाने का अधिकार प्राप्त है। सोशल नेटवर्किंग के जरिये नारियों के प्रति बढ़ते दुष्कर्मों का विरोध पूरा समाज एकजुट होकर करता है।

अध्ययन का औचित्य :–

सोशल नेटवर्किंग के सकारात्मक प्रभाव के अतिरिक्त नकारात्मक प्रभाव भी महसूस किए जा रहे हैं। वर्तमान समय में किशोर उम्र के बच्चों की बढ़ती आत्महत्या की दर सोशल मीडिया के उपयोग कर कोई सम्बन्ध है या नहीं यदि है तो कितना, इसके प्रभाव का निरीक्षण शोध अध्ययन करके ही पता लग पाएगा। सोशल नेटवर्क एवं मल्टीमीडिया के अधिक उपयोग के कारण डिप्रेशन, नींद न लेना, एक्साईज न करना जैसी समस्याएँ भी सामने आ रही है। साइबर बुलिंग में अधिकतर लड़कियों के शिकार होने के केस भी देखे जा रहे हैं। इंटरनेट के अधिक इस्तेमाल से घट रही ध्यान एवं एकाग्रता शक्ति की भी समस्या उत्पन्न हो रही है।

सोशल नेटवर्किंग के उपयोग करने के जहाँ कुछ फायदें हैं वहाँ नुकसान भी हैं। सोशल नेटवर्किंग के फायदे निम्नलिखित हैं :–

कनेक्टिविटी, जानकारी का स्रोत, अपडेट/सूचना, सहायता, जागरूकता, प्रतिष्ठा, ज्ञान वृद्धि/शिक्षा।

सोशल नेटवर्किंग के उपयोग से सम्बन्धित हानियाँ निम्नलखित हैं– वार्तालाप कौशल में कमी, स्मरण शक्ति में कमी, एकाग्रता प्रभावित होना, आत्मसम्मान पर नकारात्मक प्रभाव, डिप्रैशन तथा तनाव बढ़ना, गोपनीयता में कमी, बुरी आदतों का पैदा होना, असामाजिक तत्वों का प्रभाव, स्वास्थ्य का प्रभावित होना, आत्महत्या का कारण बनना।

इस प्रकार सोशल नेटवर्किंग के उपयोग करने से हमारी जीवन शैली से कितनी प्रभावित होती है। विद्यार्थियों के व्यवहार को यह किस तरह प्रभावित करती है। यह पता लगाना भी अति आवश्यक है क्योंकि माध्यमिक स्तर करियर चयन की नींव होता है। आज का विद्यार्थी कल का नागरिक व देश का निर्माता है। अतः सामाजिक व्यवहार पर सोशल नेटवर्किंग के प्रभावों के अध्ययन करने के लिए यह शोध अध्ययन औचित्यपूर्ण एवं सार्थक है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

सोशल नेटवर्किंग का उपयोग करने वाले छात्रों एवं छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :–

सोशल नेटवर्किंग का उपयोग करने वाले छात्रों एवं छात्राओं के सामाजिक व्यवहार के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन की परिसीमाएँ :–

1. उत्तर प्रदेश के जिला मेरठ के शहरी क्षेत्र तक सीमित रखा गया है।
2. केवल सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यालयों को शामिल किया गया है।
3. सोशल नेटवर्किंग का उपयोग करने वाले 150 विद्यार्थियों का चयन यादृच्दिक विधि से किया गया है।

4. माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 एवं 10 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

न्यादर्श चयन :–

सम्पूर्ण जनसंख्या में से 150 विद्यार्थियों के न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि के अर्न्तगत लॉटरी विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध विधि :–

प्रस्तुत अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। एकत्रित आँकड़ों का स्वरूप प्राथमिक है।

शोध उपकरण :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वनिर्मित उपकरण का उपयोग किया गया है।

U;kn'kZ	l[;k	e/;eku	ekud fopyu	ØkfUrd vuqikr eku	df	lkFkdrk Lrj	
						0-05 Lrj	0-01 Lrj
छात्र	75	603.28	64.25	2.27	148	सार्थक अन्तर नहीं है	
छात्राएँ	75	583.39	62.67				

$Df = N_1 + N_2 - 2$ 0.05 = 1.98

$75 + 75 - 2 = 148$ 0.01 = 2.61

व्याख्या :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में 150 विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर सोशल नेटवर्किंग के प्रभाव का अध्ययन किया गया। 75 छात्रों की प्रतिक्रियाओं का मध्यमान 603.28 तथा प्रमाणिक विचलन मान 64.25 प्राप्त हुआ।

इसके अतिरिक्त 75 छात्राओं की प्रतिक्रियाओं का मध्यमान 583.39 तथा प्रमाणिक विचलन 62.67 प्राप्त हुआ। सांख्यिकी गणना में क्रान्तिक अनुपात का मान 2.27 पाया गया जो स्वतंत्रता के अंश 148 में 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तरो पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.98 एवं 2.61 से कम है, इसलिए शून्य परिकल्पना को सार्थकता के दोनों स्तरो पर स्वीकृत किया जाता है, अर्थात् छात्र–छात्राओं के सामाजिक व्यवहारों पर सोशल नेटवर्किंग के प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मेरठ के शहरी क्षेत्र के सी0बी0एस0ई0 विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक व्यवहारों पर सोशल नेटवर्किंग के पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सुझाव :–

अभिभावकों को बालकों को टी0वी0 एवं सोशल नेटवर्किंग को देखने का समय निश्चित करना चाहिए तथा अपनी देख–रेख में उनको देखने का अवसर प्रदान करना चाहिए, जिससे उनके शिक्षण पर बुरा प्रभाव न पड़े।

मल्टीमीडिया एवं सोशल नेटवर्किंग द्वारा अधिकाधिक लोगों तक अपने विचारों का आदान–प्रदान करना चाहिए। इसके द्वारा होने वाले दुष्प्रभावों की जानकारी से विद्यार्थियों को समय–समय पर अवगत कराना चाहिए।

विद्यार्थियों को मल्टीमीडिया के माध्यम से इन्टरएक्टिव, समाचार–पत्र, पुस्तकों आदि को पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए, जिससे वे अधिकाधिक ज्ञान अर्जन कर सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. कुलश्रेष्ठ, एस0पी0 एवं प्रदीप सिंह दहल, शैक्षिक तकनीकी तथा आई0सी0टी0, मेरठ : आर0 लाल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
2. गुप्ता, एस0पी0 (2017), अनुसंधान संदर्भिका,, पुनः मुद्रित, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
3. https://en.wikipedia.org>wiki>social.behaviour.
4. https://www.hindikiduniya.com>amp
5. https://testbook.com

9690533672

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 137-143

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

दलित स्त्री अस्मिता और सुशीला डाकभौरे की कविता

डॉ. एन.आर. सजिला

असोसिएट प्रोफेसर, श्री. शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरूर, केरल – 676301

मूल शब्द :– इयत्ता, बिसात, अधिकार, महत्वाकांक्षा, कार्यक्षमता, स्वावलंबन।

> ''नारी के जीवन में कहीं अज्ञानता का अंधकार है तो कहीं अशिक्षा की बेडियाँ, कहीं आर्थिक स्वावलंबन की कमी है, तो कहीं पूर्णतः सक्षम, शिक्षित, स्वावलंबी होने के बाद भी मानसिक आधार पुरुष सत्ता के प्रति अधीनता का भाव है।'' – डॉ. सुशीला डाकभौरे

अस्मिता या अस्तित्व का मतलब होता है होने का अनुभव। उसका संबन्ध 'इयत्ता' से जोड़ा जा सकता है। व्यक्ति की आंतरिकता, जीवनदृष्टि, आत्माभिव्यक्ति–तीनों का समीकरण है अस्मिता। मनुष्य अपनी अस्मिता और अस्तित्व के लिए निरंतर संघर्षरत है। अपनी बिसात की चिंता उन्हें आत्मान्वेषण तक पहुँचाता है। उसका कारण परिवेश है। वह उन्हें क्रियाशील बनाते है। उससे प्रेरित वे समाज के हरेक कोने में अपने को प्रतिष्ठित करना चाहते हैं। कला, साहित्य, संगीत आदि ऐसे माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने को चिह्नित कर सकते हैं।

अस्मिता की अभिव्यक्ति का तीन लक्ष्य हैं– अस्वीकार, विरोध और विद्रोह। दलित साहित्य दलित यातना के इतिहास की व्याख्या करने वाला साहित्य है। सवर्णवादी सामाजिक–सांस्कृतिक श्रेष्ठता के आगे दलित लोग अपनी अस्मिता, अपनी आंतरिकता को नहीं समता एवं मानवता की प्रतिष्ठा चाहते हैं। उनके लिए अस्मिता की स्थापना का पहला कदम सवर्णों के द्वारा स्थापित महानता से मुक्ति है, साथ–साथ अपनी दीनता को छोड़कर जागने की प्रेरणा भी है।

हिन्दु समाज में स्त्री और दलित की स्थिति कई दृष्टियों से समान है। स्त्री साहित्य को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने के लिए कठिन मंजिलों से गुजरना पड़ा। दलित साहित्य के साथ दलित स्त्री–साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री अस्मिता को मिलाकर देखना चाहिए। 'दलित मुक्ति चेतना का विस्तार भारतीय जाति आधारित समाज व्यवस्था के वर्ण–जाति–स्त्री दासता की संस्कृति के प्रतिरोध के रूप में हुआ। आजकल दलित स्त्री उसके तिहरे शोषण की क्रूरतम हिंसात्मक प्रवृत्तियों को उजागर करके पितृसत्ता, धर्मसत्ता और वर्चस्व के समीकरण को चुनौती देती है।' (अनुशीलन : दलित साहित्य विशेषांक – फरवरी 2011, पृ. सं. 31)

अस्पृश्यता, लिंगशोषण, दरिद्रता आदि दलित स्त्री जीवन की विशेषताएँ हैं। जिस समय दलितों और स्त्रियों को साहित्य में अपना प्रामाणिक एवं विश्वसनीय अधिकार चाहिए था, उस बीच रजतरानी 'मीनू', मंजू ज्योत्स्ना, नीरा परमार, लीलाकुमारी, प्रेमलता चुटैल, कला मरम्मट और सुशीला डाकभौरे जैसी दलित लेखिकाओं

का आगमन हुआ। हिन्दी दलित कविता का स्त्रीवादी स्वर के पीछे गौतमबुद्ध, ज्योतिबाफुले, सावित्री बाफुले और अम्बेडकर आदि महात्माओं की वैचारिक प्रेरणा जरूर विद्यमान है।

दलित साहित्य की सर्वमान्य लेखिका डॉ. सुशीला डाकभौरे के चार काव्यसंग्रह– 'यह तुम भी जानो', 'स्वाति बूँद और खारे मोती', 'हमारे हिस्से का सूरज', और 'तुमने उसे कब पहचाना' नारी जागरण के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण रहनाएं हैं। प्रस्तुत संग्रहों की कविताओं में टाकभौरे जी दलित स्त्री की अस्मिता को तलाशती है, जिन्हें वे स्त्री की अशान, पहचान, जागरण तथा प्रतिरोध की स्थितियों के द्वारा प्रस्तुत करती है।

सदियों से शोषण के शिकार बनी भारतीय नारी की पहली स्थिति अज्ञान एवं अशिक्षा की है। शिक्षा जीवन का ध्येय है जिससे नारी परिवार में और समाज में शांति की स्थिति उपस्थित कर सकती है। एक समय ऐसा था जब शिक्षा सवर्ण एवं पुरुषों तक सीमित रहा तब स्त्री की स्थिति भयानक था। उससे भी भयानक था अशिक्षित दलित स्त्री की स्थिति। उसका अज्ञान उन्हें गूँगा बनाया। अपने ऊपर होने वाले शोषण का प्रतिरोध वह कर नहीं पाई। इस स्थिति का चित्रण टाकभौरे के शब्दों में :–

'माँ बाप ने पैदा किया था गूँगा
परिवेश ने लंगडा बना दिया
चलती रही, निश्चित परिपाटी पर
बैसाखियों के सहारे
कितने पड़ाव आए।' **(विद्रोहिणी)**

अपनी अज्ञानता के कारण दलित नारी घर से बाहर नहीं आ सकती, उनका कार्य केवल घर गृहस्थी चलाना मात्र रहा, बाहर की नौकरी भी उन्हें निषिद्ध रहा। वह दरवाजे के पीछे, पर्दे की ओट से संसार को देखती है :–

'आँख, कान, विचार स्वतंत्र है
बंधन है सिर्फ पाँवों में।'

वह स्वयं अपने पाँव को पकडे रहने देती है क्योंकि वह भयभीत है। सामाजिक गठबंधन के घेरे में जीने केलिए वह अभिशप्त है, बन्धनों को तोड़ना वह अपने लिए हितकर नहीं समझती है।

'लिखते समय कलम को झुका ले
बोलते समय बात को संभाल ले
और समझने केलिए
सबके दृष्टिकोण से देखे
क्योंकि वह एक स्त्री है।' **(स्त्री)**

'नारी के जीवन में कहीं अज्ञानता का अंधकार है तो कहीं अशिक्षा की बेड़ियाँ, कहीं आर्थिक स्वावलंबन की कमी है, तो कहीं पूर्णतः सक्षम, शिक्षित, स्वावलंबी होने के बाद भी, मानसिक आधार पुरुष सत्ता के प्रति अधीनता का भाव है।' (डॉ. सुशीला टाकभौरे – तुमने कब पहचाना, मन की बात, पृ. 16) मतलब यह है कि आर्थिक–मानसिक स्वावलंबन स्त्री के लिए अनिवार्य है। लेकिन दुर्भाग्य की स्थिति है कि स्त्रियों में आत्मविश्वास और आंतरिक प्रेरणा का अभाव है। सिर्फ परिवार को संभालना वह अपना काम समझती है :–

'घर परिवार के छोटे घेरे में
हर नारी स्वयं घिरती है,
रोजी रोटी तक जाकर
जीवन को धन्य समझती है।' **(प्रशंसनीय नारी)**

कवियित्री को इस बात पर आशंका है कि अपने ऊपर होने वाले शोषण को स्त्री कब पहचान सके ? अज्ञान का, धर्म का, पितृसत्ता का प्रतिबंध उनके उत्थान के राह पर खड़ा है। शालीनता, अनुसरण, लज्जा आदि भावों की आड में वह निशब्द है, जिसे वह परम्परा से अर्जित है।

'शालीनता की बात ने
गूंगा बनाया है,
अनुगामिनी की बात ने
पंगु बनी है वह
घूंघट की ओट और
आँखों की लाज ने
छीन ली है उससे
बहुत बड़ी दुनिया,
कब समझेंगी यह बात
रुनिया और मुनिया?' **(वह मर्द की तरह जी सकेगी)**

शारीरिक शक्ति में पुरुष से पीछे है तो भी महत्वाकांक्षा, हौसला, कार्यक्षमता में स्त्री आगे हैं। लेकिन इसमें वह अनभिज्ञ है :–

'कोयला खदानों में
हीर ढूँढा जाता है
मगर घर का हीरा
कोयला जैसा
जलाया जाता है।' **(तुमने उसे कब पहचाना?)**

इस स्थिति से स्त्री की मुक्ति का एकमात्र उपाय कवि मानती है 'शिक्षा'। अम्बेडकर ने स्त्री शिक्षा संबंधी जो सपना देखा, उसी तरह आज उसका प्रचार प्रसार तेजी से हो रहा है। बड़ी खुशी के साथ कवि रेखांकित करती है '–

'शोषित नारी जाग चुकी है
काट सभी बन्धन वह
प्रगति का पथ जान चुकी है।' **(प्रशंसनीय नारी)**

यह स्त्री की 'पहचान' की स्थिति है। पुरुष के विविध रूप–पिता, भ्राता, पति एवं बेटे के अधीन में एक खिलौना मात्र रहने वाली स्त्री अब अपनी अस्मिता को पहचानती है :–

'सजी संवरी मात्र गुडिया है

पुरुष समाज के लिए खिलौना
आश्रिता, अबला, बेबस, निराधार
न जी सकेगी, न मर सकेगी
रहन – सहन, रीति – रिवाज
परम्पराओं की बात, सब उसे
बेबस बनाए रखने की चाल है।'

भोग्या नारी पहचान सकती है पुरुष द्वारा, समाज द्वारा डाली गयी बेड़ियों और हंसते हुए देने वाली हर पीडा को। सुशीला जी की ये पंक्तियाँ स्त्री के जाग्रत मन का साक्षी है :–

'मैं कुछ बोलूं – तुमने स्वीकारा
अधिक बोलना – नकार दिया है।
मैं कुछ करूं – तुमने चाहा।
स्वयंपूर्ण बनूं। तो विरोध किया है।' **(लौटा दो मेरा विश्वास)**

लगातार नृशंसता एवं हिंसा को सहते–सहते उसमें शारीरिक बल का अभाव है साथ ही आर्थिक–धार्मिक स्वतंत्रता उनके मानसिक बल को दुर्बल बनाने में सक्षम हुआ है। 'साहस' नामक कविता में कवि स्पष्ट कहती है :–

'चेतना है हमारे बीच
सदियों से
पर, साहस का अभाव है।'

वह जानती है, पुरुष के अहं को रात–दिन सहती हुई अपने अहं को छिपाकर भावों के बंधनों में बंधी हुई नारी आदर्श नारी है पर वह दया और सहानुभूति से भरी शक्तिहीन, अधिकार हीन नारी मात्र है। वह निरंतर शोषण का शिकार रहेगी।

'विश्वास, भक्ति, प्रेम की सीता
बार – बार
धरती में दफनाई जाती है
इसलिए संसार में
पीड़ा की फसलें उग जाती है।' **(जानकी जान गयी है)**

वर्ग, लिंग, जातिगत चुनौतियों का सामना करना दलित स्त्रियों की निरंतरता है। शैक्षिक एवं आर्थिक सबलता के साथ–साथ आत्मविस्तार के लिए उन्हें निरंतर संघर्ष करने की जरूरत है। सुशीला जी की नारी जागरण सम्बंधी कविताएँ नारी को आत्मनिर्भर बनाने में, स्वरक्षित करने में समर्थ है।

'देखो कोई रोक न पाए
बढ़ते कदमों की रफ्तार
भीड़ से अलग
अपनी पहचान बनाना है।

भूख, गरीबी, अशिक्षा, शोषण आदि विषमताओं को जूझते दलित स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन जरूरी है। यह केवल सवर्ण मानसिकता में परिवर्तन से संभव नहीं, साथ–साथ दलितों को अपनी हीन भावना को छोड़ना पड़ेगा। उन पर विचारों की रोशनी फैलाना चाहिए, उन्हें अपनी क्षमता पर विश्वास दिलाना चाहिए। जब तक उन्हें अपने स्वत्व पर विश्वास न आएगा तब तक उन्हें मुक्ति नहीं मिलेगी। कवि की जागरूकता व्यक्त होने वाली ये पंक्तियाँ छायावादी नारी सौन्दर्य संकल्प से मेल खाती है।

'नारी तुम शक्ति हो
केवल समिधा नहीं
स्वयं पूर्ण महायज्ञ हो
केवल शरीर नहीं,
जिसका धर्म गलना –सड़ना
या मात्र, नहीं किसी की भूख मिटाना।' **(जल प्लावन करना है)**

अपने अस्तित्व और अस्मिता की रक्षा के लिए नारी को जागरूक, विद्रोही एवं क्रांतिकारी होना चाहिए। सुशीला जी की निम्नलिखित पंक्तियों में क्रांति की लहरें उमड आ रही है :–

'मैं नहीं बेबस मैं लाचार हूँ
मेरी शक्ति, माँ की शिक्षा
और पिता का प्यार है
अपनी रक्षा स्वयं कर सकती हूँ
समय आने पर, फौलाद की
तलवार भी बन सकती हूँ।'' **(नवनीत की पुतली)**

सुशीला जी की प्रतिरोधी कविताएं सागर से भी बडी रूढ़ियों, बेडियों को काटने का संदेश है। पेड़ों के बीच फैली अपनी जिजीविषा शक्ति को पुनः पनपकर संपूर्ण धर्ती को दंफ लेने की बात सोचने वाली वह घास की तरह व्याप्त होना चाहती है, स्वयं अपने को मील का पत्थर बनाना चाहती है :–

'सीता और सावित्री की बात
मैं नहीं कहती,
पर कह सकती हूँ–
चरित्रवान, निष्ठावान समाज में
बल होता है
संघर्ष में जूझने का,
सफलता तक टिके रहने का।'' **(आस्था)**

पुरुष प्रधान समाज में हमेशा दुर्गुण का दोष नारी पर है। पुरुष के दुर्गुणों पर मनु नाम की चादर डाली जाती है।

'वफा के नाम पर
अपने आप को एक कुत्ता

कहा जा सकता है,
मगर कुतिया नहीं।'
' ' '

'जब कुत्ता और कुतिया
एक दूसरे के पूरक है
तब कुत्ते को वफादार
कहने के साथ ही
चरित्र के नाम पर
'कुतिया' गाली क्यों दी जाती है?' **(गाली)**

सब कुछ वह सहती है। नारी होने की परीक्षा हर पल वह अनुभव करती है। फिर भी अधिकार और आत्मसम्मान की रक्षा के लिए संघर्ष करने की क्षमता उसमें है। दासत्व की जंजीर तोड़ने के लिए वह ज्वालामुखी भी बन सकती है।

'लोग भूकम्प की बात को
सहज मानते है,
स्त्री ज्वालामुखी हो सकती है,
यह भी तो सहज बात है।' **(स्त्री)**

बाजारीकृत समाज में स्त्री का देह शोषण हो रहा है। इस पर कवि का प्रतिरोधी स्वर इस प्रकार है :–

'चित्रकला ने छीने है कपड़े
वास्तुशिल्प ने मुझे ही उघाड़ा है,
अजन्ता एलोश से
खजुराहो तक पहुँचाया है।
कला और ज्ञान के नाम पर
मुझे यूँ देखकर
आँखों में वासना न बसाइए।' **(मेरी स्थिति)**

अपमानित दलित स्त्री के अस्तित्व को नगण्य मानने वाले पुरुष, परम्परा को चलते रहने में मौन रहते हैं। गाँव एवं शहरों की यही स्थिति है। 'अनुत्तरित प्रश्न' शीर्षक कविता में पुरुष के मौन, चिंतन एवं स्वामित्वपूर्ण बड़प्पन को लेकर कवि चिंताधीन दिखाई पड़ता है। अपने अपमानित अस्तित्व से उन्नत भविष्य को वह चाहती है। 'विद्रोहिणी' शीर्षक कविता में उसका विद्रोही रूप है। वह चीखती है :–

'आसमान की खुली छत चाहिए
मुझे अनन्त आसमान चाहिए।' **(विद्रोहिणी)**

सुशीला जी की स्त्री चिंताएँ सिर्फ दलित नारी को लेकर नहीं, संपूर्ण नारी को लेकर है जो आज भी दलितों की श्रेणी में है। लेकिन पुरुष सत्ता को हटाकर 'स्त्री स्वत्व' को मान्यता देने कवि का लक्ष्य नहीं है। वे नारी पुरुष समानता का आग्रह रखती है और नारी को स्वयंपूर्ण बनाने का आह्वान देती है। सामाजिक परिवर्तन

में नारी की भूमिका महत्वपूर्ण है। उनकी कविता में आत्मानुभूति की झलक है तो भी वे केवल व्यक्तिगत अनुभवों का बयान नहीं है। डॉ. भरत सगरे इस प्रकार लिखते हैं – 'स्वयम् भावुक नारी होकर भी व्यवस्था को वह नकारती है, विद्रोही बनकर दलित नारी को क्रांति करने को प्रेरित करती है। उच्च शिक्षित होकर भी 'झाडूबाली' में अपना अस्तित्व देखने वाली दलित कवयित्री है।' (दलित साहित्य : अनुसंधान के आयाम – डॉ. भरत सगरे, पृ. 92) स्पष्ट है कि सुशीला डाकभौरे दलित स्त्री जीवन के सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भों को उजागर करने वाली कवि है। अपनी अस्मिता की खोज में 'अस्मिता' की सामाजिक मान्यता को प्रतिष्ठित करने में वह प्रयत्नरत है।

सन्दर्भ एवं सहायक ग्रंथ :–

1. स्वाति बूंद और खारे मोती – डॉ. सुशीला टाकभौरे।
2. हमारे हिस्से का सूरज।
3. तुमने उसे कब पहचाना।
4. यह तुम भी जानो।
5. अनुशीलन दलित साहित्य : विशेषांक, फरवरी 2011
6. साहित्य भारती : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, अक्तूबर–दिसंबर 2010
7. दलित साहित्यम् – कवियूर मुरली, Current Books
8. दलित साहित्य प्रस्थानम् – के. सी. पुरुषोत्तमन – केरल साहित्य अकादमी।
9. आधुनिकता के आईने में दलित – सं. अभय कुमार दुबे।
10. दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र – ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन।
11. दलित विमर्श की भूमिका – कंवल भारती, इतिहास बोध प्रकाशन।
12. दलित कविता का संघर्ष – कंवल भारती, स्वराज प्रकाशन।
13. दलित साहित्य के प्रतिमान – एन. सिंह, वाणी प्रकाशन।
14. दलित साहित्य : अनुसंधान के आयाम – डॉ. भरत सगरे।

मो. नं. 9142367644

sajilassus@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 144-152

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

মল্লিকা সেনগুপ্তের কবিতা: প্রসঙ্গ নারীচেতনাবাদ

ড. উত্তম পালুয়া

সহকারী অধ্যাপক , বাংলা বিভাগ, গুরুচরণ কলেজ , শিলচর

র্তমান বিশ্বের অন্যতম গুরুত্বপূর্ণ আলোচ্য বিষয় নারীচেতনাবাদ। আজ সারা পৃথিবী জুড়েই চলেছে নারীচেতনা ম্পর্কিত নানা আলোচনা। সাহিত্য-দর্শন-সমাজতত্ত্ব ইতিহাস-রাষ্ট্রবিজ্ঞান ইত্যাদি মানবিক বিদ্যার শাখা-প্রশাখায় নারী াসঙ্গ অফুরন্ত জিজ্ঞাসা ও আগ্রহ ক্রমবর্ধমান। সভ্যতার সূচনালগ্ন থেকে আজ পর্যন্ত সমাজে পীড়ন ও অসাম্য চলছে ানাভাবে। যুগ যুগ ধরে সমাজে চলে আসছে পুরুষতন্ত্রের প্রবল প্রতাপ, লৈঙ্গিক বৈষম্য ও লৈঙ্গিক পীড়ন। এই সর্বগ্রাসী ীতৃতন্ত্রের বেপরোয়া মনোভাব থেকে আমাদের সমাজ মুক্ত হয়নি আজও। দিন দিন যেন শাণিততর হয়ে উঠছে রুষতন্ত্রের নিষ্টুর মূর্তি। নারীলাঞ্ছনার যে পর্ব পৃথিবীর নাট্যমঞ্চে পুরাকাল অভিনীত হয়ে চলেছে তা সমানভাবে দৃশ্যায়িত চ্ছে আজও। পুরুষের তৈরী ছাচে নারী বাধ্য হয়েছে নিজেকে ঢালাই করে নিতে। শতাব্দীর পর শতাব্দী ধরে চলেছে ই একই রীতির পুনরাবৃত্তি। সমবেত বর্বর পুরুষেরা নারীদের অন্ঃপুরে বন্দি করে রেখেছে আজীবন। নারী হল ভোগ্যবস্তু, ন্তান উৎপাদনের যন্ত্রমাত্র এবং পুরুষের সেবাদাসী নারী সম্পর্কিত এই হীনতার ভাবনাই পোষন করে এসেছে পুরুষ মাজ। তাই গণ্ডিবদ্ধ জীবনে নারীদের বেঁধে রাখা হয়েছে এতকাল। পিতৃতন্ত্রের নির্বোধ ও নিরেট কর্তৃত্ব দিয়ে। নারীরা ঞ্চিত হতে হতে ক্রমশ তারা পিছিয়ে পড়েছে শিক্ষা-সংস্কৃতি-রাজনীতি ও কর্মজগৎ-চিন্তাজগৎ থেকে। তাই দেখা যায় থিবীর সমস্ত ধর্মশাস্ত্র পুরুষরচিত, সেখানে নারীচরিত্র ঘোর কালো রঙে অঙ্কিত। কোনো নারী মহাকবি নেই- পুরুষের াতেই রচিত হয়েছে পৃথিবীর যাবতীয় মহাকাব্য। পুরুষের প্রবল প্রতাপ, শৌর্যবীর্যের আড়ালে চাপা পড়ে গেছে ান্তঃপুরচারিণী নারীদের কথা। বস্তুতই নারীদের বঞ্চনা-লাঞ্ছনার সত্যকার ইতিহাস লেখা হয়নি আজও। লেখিকা জ্যাতির্ময়ী দেবী তাঁর "এপার গঙ্গা ওপার গঙ্গা' উপন্যাসে তাই অত্যন্ত দুঃখ প্রকাশ করে বলেছেন-

> "কাপুরুষ তো ইতিহাস লেখে না। নারী কবি মহাকবি নেই। থাকলেও নিজেদের মান, লজ্জা, মর্যাদা, সম্ভ্রমহানির কথা লিখতে পারতেন না। সে ভাষা আজও পৃথিবীতে সৃষ্টি হয়নি।... রাণা রাজ্য পেয়েছেন। বীর বীরত্বের সম্মান পেয়েছেন। পুরুষের পৌরুষের শৌর্যবীর্যের জয়ধ্বনিতে পৃথিবী মুখর হয়ে আছে। কিন্তু পুরুষলাঞ্ছিত স্ত্রীপর্ব? চিরকালের সেই পর্ব?... যে পর্ব যুগ যুগান্তর ধরে পতি পুত্র পিতার স্বজাতির হাতে আছে। সেই চরম লাঞ্ছনা অপমানের পরম বেদনার ইতিহাস

কোথাও নেই।"

('আমার কথা ভূমিকাংশ)

অন্তেবাসী নারীর অকথিত সোপন ইতিহাস সত্যই লেখা হয়নি আজও। লেখিকা আধুনিক নারী-সমস্যার সঙ্গে রাণের নারী-সমস্যাকে এক করে দেখিয়েছেন। তিনি বার বার উল্লেখ করেছেন পুরকালের সেইসব নায়িকাদের কথা ারা চরম লাঞ্ছনার শিকার হয়েছিলেন। সীতা, সতী, অম্বা, বেদবতী, দ্রৌপদী, তপতীর মতো সুতারাও যেন একালের দশজননীর রক্তাক্ত ক্ষতবিক্ষত অপমানিতা আত্মা। পুরাণের এইসব নায়িকাদের মতো, ইতিহাসপ্রসিদ্ধ পদ্মিণী, কর্ণাবতীর তো একালেও, শত শত নারী লাঞ্ছিতা-ধর্ষিতা হচ্ছে নানাভাবে। নারী নির্যাতনের এই নিষ্ঠুর বর্বর-মানসিকতার যেন রিবর্তন হয়নি আজও। পুরুষতন্ত্রের এই বেপরোয়া মনোভাব ও রক্ষচক্ষুর শাসন করে শেষ হবে, নাকি শেষ হবে না াদৌ, চলতে থাকবে অনাগত ভবিষ্যতেও-লেখিকা জ্যোতির্ময়ী দেবী সেই আশঙ্কা প্রকাশ করে ব্যথিত হয়েছেন-

"চিরকাল এই চললো। চলবেও বুঝি অনন্তকাল ধরে। পুরুষের কাপুরষ বর্বরতা।
পশুরাও যা করে না।"

(তদেব, পৃ.১৫৪)

তবে আধুনিককালে বিকাশ ঘটেছে নারী চেতনার। ধীরলয়ে হলেও নারী আন্দোলন এখন চলছে নানা আন্দোলন এখন চলছে নানা দেশে। একদিকে সামাজিক ও রাজনৈতিক অধিকার প্রতিষ্ঠার লড়াই, অন্যদিকে সাহিত্য ও সংস্কৃতির নানা ক্ষেত্রে নারীর নিজস্ব পরিসর সন্ধান চলছে আজ দিকে দিকে। নির্মিত হচ্ছে নারীদের নতুন ভূবন। অন্ত:পুরচারিনী নারীরা ক্রমশ: ঘরের চৌহিদ্দি পেরিয়ে প্রবেশ করছে বৃহৎ বিশ্বের জ্ঞানরাজ্যে। শিক্ষা-সংস্কৃতি-রাজনীতি-কর্মজগতের বিভিন্ন ক্ষেত্রে নারী আজ স্বমহিমায় প্রতিষ্ঠিত। পিতৃতন্ত্রের রুদ্ধ অচলায়তন ভাঙার কাজে নারীরা আজ যেন পথে নেমেছে। তারা আজ প্রমাণ করতে যেন মরিয়া হয়ে উঠেছে-নারী বোবল পুরুষের ছায়াসঙ্গিনী, নর্মসহচরীমাত্র নয়-নারী হিসেবে তাদেরও স্বতন্ত্র মূল্য আছে। অধিকার আছে। মানবিক মর্যাদা আছে। আছে নিজস্ব জগৎ ও পরিসর নির্মাণের ক্ষমতা। কন্যা-জায়া-জননী কিংবা প্রেমিকা-বধূ-ভগিনী প্রভৃতি নানা ভূমিকায় নারীর স্বর্গীয় সুষমা আরোপ করেছে যে সমাজ, সেই অন্ধ ও বধির সমাজের বিরুদ্ধে দাঁড়িয়ে স্বাধিকার অর্জনের দাবিতে সরব হয়েছে আজকের নারীসমাজ। তারা আর পড়তে চায় না পিতৃতন্ত্র দ্বারা আরোপিত নারীত্বের মিথ্যে মুখোশ। তাই যেন নতুন প্রজন্মের মেয়েরা, নারী-কবি-সাহিত্যিকেরা পুরুষতন্ত্রেরই মুদ্রায় ফিরিয়ে দিচ্ছেন লাঞ্ছনার প্রত্যুত্তর। উগরে দিচ্ছেন তাঁদের অন্তরের যাবতীয় ঘৃণা, তাচ্ছিল্য ও পুঞ্জীভূত বেদনা। এতদিন যে নারীরা নিজেকে দেখেছে পুরুষের চোখ দিয়ে, বিচার করেছে পুরুষের দেওয়া মানদণ্ডে; সেই নারীরাই আজ যেন নিজেদের চোখে নিজেকে দেখতে শিখেছে। নিজেদের চাহিদা ও দৃষ্টিকোণ অনুযায়ী তৈরী করে নিচ্ছে স্বতন্ত্র নারী-পরিসর। কালের বিবর্তন ও সময়ের অগ্রগতির সঙ্গে সঙ্গে এভাবে আমাদের সমাজে নারীচেতনার অভিব্যক্তি ঘটেছে।

দেশ-বিদেশের সাহিত্যে নারীচেতনার বিকাশ ঘটেছে নানাভাবে নানা পর্যায়ে। ভারতবর্ষে নারীমুক্তি আন্দোলনের সূচনা হয় রেনেসাঁসের অভিঘাতে। এই নবজাগরণের মূলে ছিল ফ্রান্সের 'ফরাসী বিপ্লব' (১৭৮৯), ইউরোপের

শিল্পবিপ্লবের (১৭৫০-১৮৩০) প্রভাব। ফরাসী বিপ্লবের মধ্য থেকে স্বাধীনতা (Liberty), সাম্য (Equality) ও মৈত্রীর (Fraternity) যে বন্ধন সমাজের জনমানসে গড়ে উঠেছে সেখানে নারীরাও স্বমহিমায় ও স্বমর্যাদায় প্রতিষ্ঠা পেয়েছে। আর শিল্পবিপ্লবের ফলে পাশ্চাত্যের নারী সমাজ সর্বপ্রথম শ্রমবাজারে প্রবেশের সুযোগ পায়। সেইসঙ্গে এক নতুন শাসক, শোষন ও নির্যাতনের বিরুদ্ধে আন্দোলন গড়ে উঠে যার ঢেউ এসে লাগে ভারতবর্ষের বুকে। এই নারী আন্দোলন বিংশ শতকে আরেক নতুন মাত্রা পায় মননশীল ও যুক্তিবাদী নানা বিশ্লেষণের মাধ্যমে। ভার্জিনিয়া উলফ ১৯২৯ সালে প্রমাণ পূরন যে, নারীপ্রতিভা বিকাশের অন্তরায়ের কারণ নিহিত আছে সমাজের সামগ্রিক প্রেক্ষাপটে। দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধোত্তর কালে সমগ্র বিশ্বে নারীবাদী দর্শনের ক্ষেত্রে বৈপ্লবিক মতাদর্শ প্রচারিত হয়। এর সূত্রপাত ঘটান Simone de Beauvoir 'The Second Sex' (1949) গ্রন্থ রচনার মধ্য দিয়ে নারীচেতনাবাদ (Feminism) সম্পর্কিত এই পর্বে রচিত আরো কয়েকটি উল্লেখযোগ্য গ্রন্থ হ'ব-

১) Ketty Millet- এর 'The Sexual PPolities'

২) Belly, Friedan-এর 'The Feminine Mystique' (1963)

৩) Germaine Green এর 'The Female Eunch' (1970)

৪) Juliet Mitehell-এর 'Yeoman's Estate (1971) প্রভৃতি।

> অন্ধকার ঘাসে রোদ লাগাতে চেয়েছি, যে প্রতিবাদ ঢেকে রাখা হাঁড়ির মতো, বাংলা কবিতার হাটে সেই হাঁড়ি ভাঙতে চেয়েছি। অমরত্ব কখনও চাইনি।"
>
> ('শ্রেষ্ঠ কবিতা'র 'পূর্বকথা'র কিছু উচ্চারণ)

বস্তুতই মল্লিকার মতো কবির কাছে কবিতা শুধুমাত্র শিল্পিত প্রকাশ নয়, তা পুরুষতন্ত্রের বিরুদ্ধে, লৌঙ্গিক আগ্রাসনের বিরুদ্ধে নিরন্তর যুদ্ধের ঘোষণা। লৈঙ্গিক প্রতাপের দৃশ্য ও অদৃশ্য শৃঙ্খল কীভাবে আবহমান কাল থেকে মেয়েদের পাকে পাকে জড়িয়ে রেখেছে, তা স্পষ্ট করে তোলার জন্য তিনি কবিতাকে অস্ত্ররূপেই ব্যবহার করেছেন। তাই একে একে প্রকাশিত হয় এইসব প্রতিবাদ ও প্রতিরোধ ঋদ্ধ আর মানবিক বিকল্প সন্ধানী কবিতা-সংকলন- 'সোহাগ কাবরী (১৯৮৫), 'আমি সিন্ধুর মেয়ে' (১৯৮৮), 'হাঘরে ও দেবদাসী' (১৯৯১), 'অর্ধেক পৃথিবী' (১৯৯৩), 'মেয়েদের অ আ ক খ' (১৯৯৭), 'কথামানবী' (১৯৯৭), 'আমরা লাস) আমরা লড়াই' (২০০১), 'দেওয়ালির রাত' (২০০১), 'পুরুষকে লেখা চিঠি' (২০০২), 'ছেলেকে হিস্ট্রি পড়াতে গিয়ে' (২০০৫) ও মল্লিকার 'শ্রেষ্ঠ কবিতা' (২০০৫)।

এই গ্রামগুলির কবিতার মধ্য দিয়ে লেখিকা আমাদের এই বার্তা দিয়েছেন যে, পুরুষতন্ত্র নির্মিত নারীত্বের গতানুগতিক ও প্রচলিত ধারনাকে মেনে নিচ্ছেন না নতুন সংবিদ সম্পন্ন কবি এবং একালের মেয়েরা। নারী-নিগ্রহ ও নিপীড়নের যে কুটিলতম ও হিংস্রতম ইতিহাস সভ্যতার উষালগ্ন থেকে আজকের আধুনিকোত্তর কাল পর্যনিত অব্যাহত রয়েছে সেই ন্যক্কারজনক লাঞ্ছনার কথা মল্লিকা তুলে ধরেছেন তাঁর এইসব কবিতা-সংকলনের মধ্য দিয়ে।

'চল্লিশের চাঁদের আয়ু' কবিতা সংকলনে নারীর একান্ত নিজস্ব অভিজ্ঞতা, বিড়ম্বনা ও যন্ত্রণা নানাভাবে ব্যক্ত হয়েছে। 'সোহাগ কাবরী' সংকলনে আছে মেয়েদের শরীর কেন্দ্রিক অভিজ্ঞতা ও উপলব্ধির মন্থন-জাত ব্যক্তিগত ও

নৈর্ব্যাক্তিক স্বরের দ্বিরালাপ। বিবাহিত জীবনের অভিজ্ঞতা থেকে লেখিকা যৌন অনুষঙ্গ ও শরীরী তীব্রতার অজস্র কুণ্ঠাহীন বিবরণ তুলে ধরেছেন যা পুরুষ কবি বর্ণিত অকপট বাচনের প্রতিবাদ বলেই মনে হয়। বাংলা কবিতার আবহে মল্লিকা যেন নারীর ব্যতিক্রমী বয়ানকে নান্দনিক প্রতিষ্ঠা দিয়েছেন। নারীদের নিজের নিভৃততম অনুভুতি ও অভিজ্ঞতাকে ভাষারূপ দেবার সাহসী উপস্থাপনা শুরু হল মল্লিকার হাত ধরেই। তাঁর 'লোম', 'প্রতিরোধ', 'অগ্নি প্রদক্ষিণ', 'প্রোষিত ভর্তৃকা', 'জাহাজডুবি', 'সহবাস' প্রভৃতি কবিতা বাংলা কাব্যজগতে এক বিরল ব্যতিক্রম। দৃষ্টান্তস্বরুপ দু'একটি কবিতার উদ্ধৃতি তুলে ধরতে পারি-

(ক) "উরুর সীমানা অতিক্রম করে যে দেখেছে আরও/সে, আমার স্বামী, তাকে প্রতারণা করতে পারি না।" (প্রতিরোধ)

(খ) "দয়িত বিরূপ হলে কালসিটে পড়ে যায় আমার জঙ্ঘায়।" (প্রোষিতভর্তৃকা)

(গ) আমি কি জানতাম সারাটা রাত ধরে অতটা যেতে পারে শৃঙ্গার!/নরম একটুও হল না অনুনয়ে, জাহাজ শুধু দোল লাগল।" (জাহাজডুবি)

(ঘ) "নবদম্পতি, দেখো তোমাদের সঙ্গলকালে ডাকিনীরা যোনি ও লিঙ্গপথে ঢুকে যেতে পারে।" (জাদু সংস্কার)

আপাত দৃষ্টিতে এইসব কবিতা যৌন অভিজ্ঞতার কুণ্ঠাহীন প্রকাশ বলে মনে হতে পারে। কিন্তু বাংলা কবিতায় পুরুষ কবিদের যৌন অনুষঙ্গ ও শরীরী বর্ণনার অজস্র বিবরণের কথা মনে রাখলে মল্লিকার ঐসব পংক্তিকে প্রতিবাদ বলেই ধরে নিতে হয়। কেননা কবি পুরুষের চোখে নারীর একান্ত নিভৃত অভিজ্ঞতা ও আবেগ-গাঢ় সংরাগকে দেখেন নি- দেখেছেন নিজের চোখে। তাই মল্লিকার অকপট বাচন বিকোষ অভিনিবেশ দাবি করে। নারীপরিসর শুধু পীড়নের বৃত্তান্তে নেই, রয়েছে নারীর একান্ত নিভৃত সত্তার উন্মোচনেও। যৌন সম্পর্কের অভিজ্ঞতা ছাড়া নারী পাঠকৃতি যে অসম্পূর্ণ থেকে যায় তা সাহসের সঙ্গেই মল্লিকা তুলে ধরলেন তার কবিতার শিল্পভুবনে। 'আমি সিন্ধুর মেয়ে' কাব্যগ্রন্থের কবিতাগুলিতে নারীর এই জৈবিক অভিজ্ঞানগুলি কবিতার চিহ্নায়ন প্রকরণ হয়ে উঠেছে আরো জোরালোভাবে। সেইসঙ্গে কাব্যভাষাও ক্রমশ সূক্ষ্মসঞ্চারী হয়ে উঠেছে। 'সিন্ধু দ্রাবিড়', 'আগুনবাহক', 'রক্তচিহ্ন', 'কন্যা', 'স্বয়ংবরা মাটি', 'বাতাসের ছেল', 'অশ্বমেধ', 'পূর্বপুরুষের হাড়', 'আমার শিকড়' প্রভৃতি কবিতাগুলি মল্লিকার বহুস্ব নির্মাণ প্রকল্পের দৃষ্টান্ত যেন। সংশ্লেষধর্মী ইতিহাস পাঠের নির্যাস দিয়ে রচিত 'আগুনবাহক' কবিতায় কবি এই সত্য তুলে ধরেন-

> "সুপুরুষ এসেছিল, আসেনি নারীরা কালো মেয়েদের গায়ে তামার গগন এত দীপ্যমান দেখে ঘোড়সওয়ারেরা গর্ভে অগ্নি ঢেলে দিল, জন্মাল কার্তিক শুধু বীর যোদ্ধা নয়, রক্তের মিশ্রণ আমার সন্তান স্বামী সহোদর এরা আমারই গর্ভে হল নদীমাতৃক।"

এভাবেই মল্লিকা কবিতার বয়ানে তুলে ধরলেন ইতিহাসের নারীচেতনাবাদী পাঠ। নারীদের প্রকৃত ইতিহাস লেখা হয়নি বলে যেমন খেদ প্রকাশ করেছিলেন জ্যোতির্ময়ী দেবী, তেমনি মল্লিকাও ইতিহাসের নিবিড় পাঠে জানতে পেরেছেন নারীদের কোনো ইতিহাস নেই। ইতিহাস (history) চিরকাল ছিল- কিন্তু তা পুরুষের ইতিহাস (His Story) নারীদের ইতিহাস (Her story) রচিত হয়নি কোনো কালেই। 'ছেলেকে হিস্ট্রি পড়াতে গিয়ে' (২০০৫) শীর্ষক কবিতায় মল্লিকা

তাই অত্যন্ত শ্লেষ-শাণিত ভাষায় এই নির্মম সত্য ঘোষণা করেন-

"আমরা হিস্ট্রি থেকে জানতে পেরেছি
প্রথম মানুষ ছিল জাভাম্যান, ক্রোম্যাগনন
--- --- --- --- --- ---
ওরাই বানিয়েছিল ম্যানমেড এই সভ্যতাকে ছায়া ছায়া মানবীরা
পাশে ছিল, তবুও ছিল না এই আদিমানুষেরা সবাই পুরুষ
আমরা হিস্ট্রি থেকে জানতে পেরেছি পূর্বপুরুষেরা একা, একা
একা উত্তরপুরুষ উত্তরমানুষ নেই, পূর্বনারী নেই আমাদের
হিস্ট্রি তো শৌর্যবীর্যে ভরা 'হিজ স্টোরি' আমরা বুঝেছি নারী
ছিল না তখন, পুরুষ স্বয়ং লিঙ্গ এবং জরায়ু আমরা হিস্ট্রি থেকে
এরকমই জানতে পেরেছি আসলে হিজড়ে ছিল ইতিহাসবিদ।"

মল্লিকা এভাবেই ইতিহাসের পিতৃতান্ত্রিক নির্মিতিকে তীব্রভাবে প্রত্যাখ্যান করলেন। নারীদের দুঃখ-বেদনার পরম ইতিহাস যা যুগ যুগ ধরে চাপা পড়ে আছে পুরুষতন্ত্রের রুদ্ধ অচলায়তনে, সেই অকথিত গোপন ইতিহাসকেই লেখিকা যেন আমাদের সামনে মেলে ধরলেন। 'His Story'-কে 'Her Story' তে রূপান্তরিত করার বার্তা যেন ঘোষিত হল তাঁর কবিতায়।

মল্লিকার প্রতিবাদী স্বর ক্রমশ স্পষ্টতর হয়েছে 'রক্তচিহ্ন', 'কন্যা', 'স্বয়ংবরা মাটি', 'তেভাগার ডায়েরি', 'মাছের চাবুক', 'মারের আগমন', 'আম্রপালী' প্রভৃতি কবিতার শানিত বাচনে। যুগ যুগান্তর ধরে নারীরা কীভাবে লাঞ্ছনা ভোগ করে আসছে বর্বর পুরুষের হাতে সেই নিপীড়নের কথা সমস্ত যন্ত্রণা-দগ্ধ নারীদের হয়ে মল্লিকা ব্যক্ত করেছেন এভাবে-

"গণিকালয় মীনাবাজার তৈরী করে কারা? প্রতিযুগেই ইন্দ্র কেন
উর্বশীর অধীশ্বর হন? আম্রকালী প্রশ্ন করে, প্রশ্ন মুছে যায়-

বাংলা সাহিত্যে এই নারীচেতনার অভিব্যক্তি নানা পর্যায়ে নানাভাবে ঘটেছে। রামমোহন, বিদ্যাসাগর, মধুসূদন, রবীন্দ্রনাথ হয়ে স্বাধীনতা উত্তরকালের অসংখয় কবি-সাহিত্যিকেরা নারীমুক্তি আন্দোলনে তৎপর হয়েছেন। আশাপূর্ণা দেবী, জ্যোতির্ময়ী দেবী, মহাশ্বেতা দেবী, বেগম রোকেয়া থেকে শুরু করে বিশ-শতকের অন্তিম প্রহরে আবির্ভূত সুলেখা সান্যাল, দেবারতি মিত্র, বিজয়া মুখোপাধ্যায়, রমা ঘোষ, তসলিমা নাসরিন, সেলিদা হোসেন, মল্লিকা সেনগুপ্তের মতো অসংখ্য লেখিকারা নারীদের অকথিত ও অনালোকিত ইতিহাস আর আকর্ষিত জগৎকে পাঠকৃতির আধেয় করে তুলেছেন। পিতৃতান্ত্রিক অচলনায়তনে দলিত-মসিত নারীসত্তার যন্ত্রণার কথা কতরকমভাবে যে এঁদের রচনায় ধরা পড়েছে তার ইয়ত্তা নেই। বিশ্বের সর্বকালের সমস্ত যন্ত্রণা-দগ্ধ অপমানিত নারীদের হয়ে এইসব লেখিকারা কলম ধরেছেন। তাই তাঁদের রচনায় নারী স্বাধীনতা ও নারীমুক্তির সংগ্রামী স্বরটি বলিষ্ঠভাবে আত্মপ্রকাশ করেছে।

বাংলায় নারীমুক্তি আন্দোলনের স্বপ্নটি উপন্যাসে সর্বপ্রথম বলিষ্ঠভাবে আত্মপ্রকাশ করে আশাপূর্ণা দেবীর রচনায়।

তাঁর উপন্যাস ও গল্পগুলি মূলতঃ অবরোধবাসিনী নারীর আত্মকথা। ও প্রসঙ্গে তাঁর ট্রিলজি উপন্যাস- 'প্রথম প্রতিশ্রুতি' (১৯৬৪), সুবর্ণলতা (১৯৬৭), 'বকুলকথা' (১৯৭৪) অন্যতম। কালজয়ী এই উপন্যাসত্রয়ীর তিন নায়িকা সত্যবতী-সুবর্ণ আর বকুলের মধ্য দিয়ে নারীদের ধারাবাহিক সংগ্রাম ও ক্রমিক উত্তরণের চিত্রটিই তুলে ধরেছেন। যে অন্ত:পুর চিরদিনই অবহেলিত, স্তিমিত সেই অন্তঃপুরের অন্তরালের থেকে যেসব নারীরা ক্রমশ বেরিয়ে এসেছেন বহিঃবিশ্বে, যাঁরা বহন করে এনেছেন প্রতিশ্রুতির স্বাক্ষর, চিন্তা-চেতনা ও জ্ঞানের আলো-আশাপূর্ণা দেবীর এই উপন্যাস-ত্রয়ী সেই অনামী মেয়েদেরই ধারাবাহিক সংগ্রামের কাহিনি। লেখিকা জানিয়েছেন-

> "আজকের বাংলাদেশের অজস্র বকুল পারুলদের পিছনে রয়েছে অনেক বছরের সংগ্রামের ইতিহাস। বকুল-পারুলদের মা দিদিমা, পিতামহী আর প্রপিতামহীদের সংগ্রামের ইতিহাস।"
>
> ('প্রথম প্রতিশ্রুতি; পৃ.৭)

বিশ শতকের যে সব রমণীরা কবিতার মধ্য দিয়ে ফেমিনিস্ট ধারণা ব্যক্ত করেছেন তাঁদের মধ্যে উল্লেখযোগ্য হলেন- রাজলক্ষ্মী দেবী, কবিতা সিংহ, সাধনা মুখোপাধ্যায়, বিজয়া মুখোপাধ্যায়, চৈতালী চট্টোপাধ্যায়, তসলিমা নাসরিন, রমা ঘোষ, দেবারতি মিত্র। এঁদের কবিতায় নারীহৃদয়ের নানা সূক্ষ্ম অনুভূতির ঝংকার যেমন শোনা যায়, তেমনি যুগপৎ পুরুষপ্রেমি ও পুরুষবিদ্রোহী এক ভাস্বর স্বাধীন কবিকণ্ঠের সুরও ধ্বনিত হয়েছে। কবিতার ছত্রে ছত্রে ঘোষিত হয়েছে নারীদের স্বাধিকার অর্জনের দাবি ও নারী-পরিসর গড়ে তোলার বাসনা।

স্বাধীনতা-উত্তর বাংলা কবিতার জগতে মল্লিকা সেনগুপ্ত এক ব্যতিক্রমী নাম। তাঁর প্রথম কাব্যগ্রন্থ 'চল্লিকা চাঁদের আয়ু (১৯৮৩) দিয়ে মল্লিকা তাঁর ব্যতিক্রমী আবির্ভাব ঘোষণা করলেন। কবিতার ক্ষেত্রে প্রতিবাদী বর্ণমালা গড়ে তুললেন তিনি। তাঁর 'স্ত্রীলিঙ্গ নির্মাণ' কিংবা 'পুরুষ নয় পুরুষতন্ত্র'-এর মতো তীক্ষ্ণ প্রতিবাদী স্বসম্পন্ন প্রবন্ধ সংকলন দিয়ে মল্লিকা যেমন আমাদের বহু চিরাচরিত ধারণার মূলোচ্ছেদ করতে চেয়েছেন, তেমনি তাঁর কবিতাভূবনেও এমন এক সর্বাত্মক নারীচেতনার জাগরণ ও প্রতিষ্ঠার দাবি তিনি ঘোষণা করেছেন যা এর আগে সেভাবে শোনা যায়নি। তাঁর স্পষ্ট স্বীকারোক্তি-

> "আমার কবিতা ভুলে যাওযা. উপেক্ষিত, ইতিহাসে বিলুপ্ত এইসব মেয়েদের সুখদুঃখ আশা-আকাঙ্ক্ষা, বিশ্বাসভঙ্গ নিগ্রহ যন্ত্রণার অভিব্যক্তি। ... যে অভিজ্ঞানগুলো অনেকদিন চাপা পড়েছিল অসূর্যস্পশ্যা ঘাসের মতো, আমি সেই
>
> আম্রপালী পালিয়ে যায়, পেছনে তার সমাজ তাড়া করে
> আম্রপালী বাঁচতে চায়, সমাজ চায় প্রমাণ লোপ হোক"
> (আম্রপালী)

পুরুষতান্ত্রিক সমাজের চোখে এভাবে আঙুল দিয়ে মল্লিকা দেখিয়ে দিয়েছেন নারীজাতির প্রতি তাদের অমানুষিক বর্বরতা। আবহমান কাল ধরে উপেক্ষিত অন্তেবাসী নারীসমাজের পক্ষ থেকে কবি যেন বিদ্রোহ ঘোষণা করেছেন পুরুষতন্ত্রের বেপরোয়া মনোভাবের বিরুদ্ধে। একের পর এক লিখেছেন প্রতিবাদী কবিতা। যেন যুদ্ধক্ষেত্রে আতীর্ণ হয়েছেন তিনি,

তৈরী করেছেন নতুন নতুন প্রতিবাদী স্বর-

১) "ধর্মের কল পুরুষ নাড়ে
ধর্ম ছুঁড়ে ভীষণ মারে।"

২) "নারীবাদের একুশ শতক
মেয়েরা চায় নিজস্ব হক।"

৩) "বিবাহ মানে সারাজীবন
ভাঙাগড়ায় অবগাহন।"

৪) "পৃথিবী কত না বদলে গিয়েছে শুনছি
বদল হয়নি সেকালের মনোভঙ্গি।"

পিতৃতন্ত্রের নিষ্ঠুর পীড়নের বিরুদ্ধে শ্লেষ ও ক্রোধভরা প্রতিবাদ উপরের প্রতিটি কবিতা-পংক্তিতেই জোরালোভাবে ধ্বনিত হয়েছে।

সবশেষে উল্লেখ করা যেতে পারে মল্লিকার "কথামানবী" (১৯৯৭) কাব্যগ্রন্থের কথা এটাই কবির বিশ শতকে প্রকাশিত শেষ কাব্যগ্রন্থ। ইতিহাসের ছাই এবং ভস্মের মধ্যে নারী নামক যে আগুন চাপা পড়ে আছে 'কথামানবী' যেন তারই ভাষ্যকার। কথামানবী সেই নারী যে যুগান্তের অপমান আর অবহেলার পরেও ভালোবাসতে পারে, প্রতিবাদ করতে পারে; যে নতুন জন্ম নিয়ে ফিরে ফিরে আসে বিভিন্ন নাম নিয়ে, মিশে থাকে প্রতিটি ভারত কন্যার রক্তে। ঋগ্বেদ থেকে একুশ শতক পর্যন্ত নারীসত্তার আবহমান লাঞ্ছনার বিবরণ বয়ে আনে কথামানবী- কখনও দ্রৌপদী কখনও গঙ্গা, কখনও রাজিয়া সুলতানা, কখনও মেধা পাটকর, কখনও খনা, কখনও শাহবাবু হয়ে। আরও কত কত নামে পীড়ন সহ্য করেছে মেয়েরা- প্রত্নকথা ও ইতিহাস বিনির্মাণ করে কবিতার ভাষায় সেই চূড়ান্ত অপ্রীতিকর সত্য লিপিবদ্ধ করেছেন মল্লিকা।

আগুনের কমে হেঁটেছেন যেসব নারী-কবিরা, সাহসী পদক্ষেপ নিয়েছেন নারী-পরিসর গড়ার কাজেও নিজেকে করতে, পুরুষতন্ত্রের শেকল ভাঙতে যারা বদ্ধপরিকর মল্লিকা তাঁদেরই একজন।আগুনের পথেই অকুতভয়ে হেঁটে চলেছেন মল্লিকা। আদিগন্ত ভস্মরাশি থেকে নতুন মেয়েদের উঠে দাঁড়ানোর কথকতা করে যাচ্ছেন নিরবচ্ছিন্নভাবে। 'পুরুষকে লেখা চিঠি' কবিতা-সংকলনের কবিতাগুলি যেন নারী-পরিসর ও নারীর মর্যাদা প্রতিষ্ঠার এক একটি খতিয়ান। 'শিকার এবং শিকারি', 'অলকান্দা', 'চাতক', 'সোলাপ' মরশুমে', 'রাষ্ট্রপতিকে একটি মেয়ের চিঠি', 'আমি গুর্জরি মুসলিম মেয়ে', 'নারী ডট-কম', 'পিছড়ে বর্গ', 'ফুলদেবীর কথা', 'রেডলাইট নাচ', 'বালিকা ও দুষ্টুলোক', 'তহমিনা' প্রভৃতি কবিতাগুলিতে নারীবিশ্বের অজস্র অনুষঙ্গ এবং তাদের অন্তর্বৃত সংস্কৃতি, ইতিহাস, রাজনীতির যুগপৎ দহনকথা ও উত্তরণ আকাঙ্ক্ষা ব্যক্ত হয়েছে নানাভাবে। বাংলা কবিতায় জগতে এভাবেই মল্লিকা নারীর ব্যতিক্রমী ও প্রতিবাদী বয়ানকে নান্দনিক প্রতিষ্ঠা দিয়েছেন। ইতিহাস, প্রত্নকথা ও ঐতিহ্যের পুনর্নির্মাণ করে তিনি গড়ে তুলেছেন নারীর নিজস্ব জগৎ, নিজস্ব পরিসর, নিজস্ব কবিতার শিল্পভূবন। মল্লিকার প্রতিবাদী বর্ণমালা, প্রত্যয়ী উচ্চারণে তাই আমরা শুনতে পাই পুরুষতন্ত্র প্রতিস্পর্ধী কণ্ঠস্বর এবং নারীসত্তার স্বাতন্ত্র্য ঘোষণা-

"আমার কবিতা আলোর চাতক, অন্ধকারের মুনিয়া কবিতা আমার ঘরের যুদ্ধ,
যুদ্ধশেষের কান্না আমার কবিতা অসহায় যত পাগলি মেয়ের প্রলাপ আমার কবিতা
পোড়া ইরাকের ধ্বংসে রক্তগোলাপ আমার কবিতা ফুটপাথ শিশু, গর্ভে নিহত
কন্যা কবিতা আমার ঝড় দুর্যোগ মহামারি ধ্বস বন্যা আমার কবিতা বাঁচতে শিখেছে
নিজেই নিজের শর্তে
সেলাম সেলাম জিভ-কাটা খনা, ব্যাস, বাল্মীকি, দান্তে, আমার কবিতা আগুনের
খোঁজে বেরিয়েছে কাঠ আনতে।"

('আমার কবিতা আগুনের খোঁজে')

এভাবেই খনার উত্তর-কন্যা মল্লিকা আগুনের খোঁজে কাঠ আনতে বেরিয়েছেন। তাঁর দেখানো আলোকিত পথে নিশ্চিতই আরও শত কোটি মেয়েরা আগুনের খোঁজে বেরোবেন আর সেই ইন্ধন-সন্ধান নারীচেতনার পথকে আরো প্রশস্ত ও মসৃণ করবে। সমাজ-সাহিত্যের সর্বত্রই নারীরা লাভ করবে তার যথাপ্রাপ্ত অবস্থান মল্লিকার কবিতা ভুবন যেন তারই অভিব্যক্তি। নারীচেতনাবাদের সংগ্রামী উদভাসন।

মল্লিকার মতো সাহসী পদক্ষেপ ফেলেছেন আরো বেশ কয়েকজন নারী কবি। তসলিমা নাসরিন, দেবারতি মিত্র, চৈতালী চট্টোপাধ্যায়, বিজয়া মুখোপাধ্যায়, রমা ঘোষ, সংযুক্তা বন্দ্যোপাধ্যায়, সুতপা সেনগুপ্ত প্রমুখ কবিরা জায়মান নারীচেতনার বিচিত্র অভিব্যক্তি আমাদের কাছে তুলে ধরেছেন। তাঁরা এই সত্য প্রমাণ করেছেন যে, "কেউ নারী হয়ে জন্মায় না, সমাজই তাকে নারী করে তোলে।' নারীত্বের নতুন সংজ্ঞা আবিষ্কার করেছেন নারীচেতনাবাদী কবিরা। বিশ্বের সমস্ত যন্ত্রণাদগ্ধ নারীদের লাঞ্ছনার বিরুদ্ধে প্রতিবাদ জানিয়ে তাঁরা যেন এই মৌলিক অধিকার দাবি করেছেন-

"আমিও মানুষ বটে
সামাজিক যাতাকলে পিষ্ট হওয়া নারী
নামধারী শুধু/দ্বিপদী চিড়িয়া নই,
আমিও মানুষ।"

('শিকড়ে বিপুল ক্ষুধা'/তসলিমা নাসরিনের 'নির্বাচিত কবিতা':
১৯৯৩, পৃ. ৫৩)

এভাবে বাংলা কবিতায় নারীবিশ্বের আলোচনা করতে গিয়ে দেখা যায়, নারীচেতনাবাদী প্রত্যেক কবি-লেখকেরাই সচেতনভাবে মুছে ফেলতে চাইছেন প্রচলিত নারীত্বের অভিজ্ঞান। লৈঙ্গিক বৈষম্য, লৈঙ্গিক পীড়ন ও পুরুষতন্ত্রের প্রতাপের বিরুদ্ধে যুদ্ধ ঘোষণা করে নারীরা গড়ে নিতে চেয়েছেন নিজেদের স্বতন্ত্র পরিসর কবিতার বাচনের সাহায্যে তাঁরা গড়ে নিতে চেয়েছেন ইপ্সিত বিকল্প জগতের প্রতিবেদন। তাই এঁদের কবিতায় শোনা গেল সম্পূর্ণ এক নতুন সুর। বাচনের এক নতুন ভঙ্গি। নারীচেতনা সম্পৃক্ত কবিতার এক নতুন ভুবন। আমরা চাই জীবন ও সৃষ্টির ব্রত উদযাপনে নারী-পুরুষের সমবায়ী উপস্থিতি। নারী ও পুরুষ পরস্পরের সহযোগী সত্তা, জীবন ও মননের শরিক আর

সহযোদ্ধা-নারী পুরুষের এই সম্মিলিত জগৎ যেদিন তৈরী হবে সেদিনই সার্থক হবে আমাদের সব প্রচেষ্টা। শিল্পি কবি-সাহিত্যিকদের পূর্ণ হবে বাসনা। নরনারীর মিতালির মধ্য দিয়েই ভাস্বর হবে আমাদের নবায়মান লিঙ্গ নিরপেক্ষ আলোকিত পৃথিবী। আমাদের প্রার্থনা ভবিষ্যৎ পৃথিবী, অনাগত বিশ্ব নর-নারী উভয়েরই যেন নির্ভরযোগ্য বাসস্থান হয়ে উঠুক। তবেই সার্থক হবে আমাদের শিল্প-সাহিত্য সংস্কৃতির পাঠকৃতির আলোচনা।

তথ্যসূত্র

১) জ্যোতির্ময়ী দেবী- 'এপার গঙ্গা ওপার গঙ্গা' জ্যোতির্ময়ী দেবীর রচনা সংকলন-১, দে'জ পাবলিশিং, কলকাতা, নভেম্বর ১৯৯১।

২) আশাপূর্ণা দেবী- 'প্রথম প্রতিশ্রুতি' মিত্র ও ঘোষ পাবলিশার্স, কলকাতা

৩) 'স্বাধীনতা সংগ্রামে বাংলার মুসলিম নারী'- আনোয়ার হোসেন, প্রগতিশীল প্রকাশক, কলকাতা, প্রথন প্রকাশক: মে, ২০০৬

৪) 'নারীচেতনা মননে ও সাহিত্যে'- তপোধীর ভট্টাচার্য, পুস্তক বিপণি, কলকাতা, প্রথম প্রকাশ জানুয়ারি ২০০৭

৫) মল্লিকা সেনগুপ্ত, শ্রেষ্ঠ কবিতা, পূর্বকথা, দে'জ পাবলিশিং, ২০১১

Dr. Uttam Paluya

Assistant Professor, Department of Bengali, Gurucharan College, Silchar -788004, Cachar, Assam

Mobile No : 7002715079

E-mail : uttampaluya12345@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 153-159

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

रणेन्द्र के 'गायब होता देश' में आदिवासी अस्मिता और अस्तित्व का संघर्ष

आशारानी सुन्डी, शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
एस.सी.टी.एल.एल, कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेस–डीम्ड विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओड़िशा।

शोध सार :–

आदिवासी समुदाय देश के मूल–निवासी, जो सामूहिकता, सह–जीवित व सह–अस्तित्व पर विश्वास रखते हैं। आदिवासी अस्मिता और अस्तित्व का तात्पर्य आदिवासियों का देश के मूल निवासी के रूप में पहचान एवं वजूद बनाए रखना है। आदिवासियों के पास अपनी कोई संपत्तिया धरोहर यदि है तो वह जल, जंगल और ज़मीन। इसके ही इर्द–गिर्द इनकी ज़िन्दगी होती है, इनके बिना इनका जीवन अधूरा है क्योंकि इन्हीं जंगलों में इनका निवास होता है और इन्हीं जंगलों से इनके परिवार का पोषण होता है एवं शादी–ब्याह से लेकर जन्म–मृत्यु तक कोई भी संस्कार जंगल के बिना संभव नहीं है। जंगलों से कटना इनका अपनी जड़ों से कटने जैसा है, क्योंकि इनके लिए जंगल–पहाड़ ही देवी–देवता हैं। परन्तु इक्कीसवीं सदी के भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, औद्योगीकरण, अत्यधिक उत्खनन एवं आर्थिक विकास की अंधी दौड़ने शांत और एकान्त प्रिय आदिवासियों के जीवन को बुरी तरह प्रभावित किया। कल तक आदिवासी इस जल, जंगल और ज़मीन के मालिक थे, आज वे उसी से वंचित हो गए हैं। मुख्यधारा के सभ्य समाज के लोग विकास के नाम पर आदिवासियों के साथ छल कर उन्हें उनकी ही ज़मीन से बेदखल कर पलायन के लिए मज़बूर कर रहे हैं।

हिन्दी के प्रतिष्ठित उपन्यासकार रणेन्द्र अपने उपन्यास 'गायब होता देश' में मुण्डा आदिवासी समाज और उनकी संस्कृति पर भूमण्डलीकरण के यथार्थ प्रभाव को हैं। आदिवासियों का सरना–वनस्पति जगत गायब हो रहा है मरांग–बुरू बोंगा, पहाड़ देवता गायब हो रहे हैं, गीत गाने वाली, धीमी बहने वाली, सोने की चमक बिखेरने वाली, हीरों से भरी सारी नदियाँ इकिरबोंगा–जलदेवता का वास था, गायब हो रहे हैं। मुंडाओं के बेटे–बेटियाँ भी गायब होने शुरू हो गए। सोना लेक नदि सुम गायब होने वाले देश में तब्दील हो गया।

रणेन्द्र अपने उपन्यास 'गायब होता देश' में पूँजीवादी विकास की अंधाधुंध दौड़ में खनिज संपदाओं से परिपूर्ण देश के गायब होते चले जाने और वहाँ रहने वाले मूल निवासियों के भी गायब होने का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करते हैं। रणेन्द्र के उपन्यास का अध्ययन आनिया लूंबा के उत्तर–औपनिवेशिक साहित्यिक सिद्धान्त के आधार पर किया गया है। आज मानव के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती पर्यावरण और आधुनिकीकरण के बीच

सामंजस्य बैठाना है। रणेन्द्र अपने उपन्यास के माध्यम से हमारे समक्ष विकास बनाम मानव अस्मिता एवं अस्तित्व का ज्वलंत मुद्दा उठाते हैं। क्या विकास के लिए संस्कृति, प्रकृति और पर्यावरण का विनाश औचित्य पूर्ण है? आदिवासी अस्मिता एवं अस्तित्व का आधार है, उनकी संस्कृति। रीति–रिवाज, परम्पराएँ, जंगल, नदियाँ, पहाड़ी खान–पान। यदि ये विनष्ट हो जाएँ तो उनकी अस्मिता एवं अस्तित्व ख़तरे में पड़ जाएगी। रणेन्द्र अपने उपन्यास के माध्यम से आदिवासियों के साथ हो रहे छल को और उनकी ही ज़मीन से बेदखल कर पलायन के लिए मज़बूर हो रहे आदिवासी समाज का यथार्थ चित्रण करते हैं। वन अधिकार अधिनियम और पेसा जैसे सशक्त कानून अगर आदिवासी इलाकों में लागू हो जाएं तो आदिवासी जीवन दर्शन, संस्कृति और परंपरा का संरक्षण एवं संवर्द्धन के साथ इनकी अस्मिता एवं अस्तित्व के बचे रहने की प्रबल संभावना बढ़ सकती है।

बीज शब्द :– आदिवासी, अस्मिता, अस्तित्व, भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, औद्योगीकरण, उत्खनन।

आदिवासी समुदाय जो देश के मूल–निवासी हैं, आज सम्पूर्ण विश्व में चौथी दुनिया के रूप में पहचाने जाने लगे हैं। आदिवासी से तात्पर्य है देश के मूल निवासी, धरती एवं प्रकृति पुत्र जो उनके साथ ही पैदा हुआ, पनपा और आगे बढ़ा। आदिवासी ही देश का आदि पुत्र है, जो इस धरती पर पहले से निवास करता आया है। परन्तु आदिवासी मुख्यधारा के सभ्य समाज का कभी भी हिस्सा नहीं रहा है। आदिवासियों का प्रकृति से गहरा संबंध रहा है। प्रकृति को आलिंगन करने वाले आदिवासी सामूहिकता, सह–जीविता व सह–अस्तित्व पर विश्वास रखते हैं और प्रकृति में रहने वाले समस्त जीव–जन्तुओं से प्रेम करते हैं। आदिवासी सदियों से प्रकृति की रक्षा करता आया है, उसने कभी प्रकृति को नुकसान नहीं पहुँचाया, जितनी आवश्यकता थी उतना ही लिया प्रकृति से और अनावश्यक कभी भी कुछ ज्यादा नहीं लिया। इसलिए आदिवासियों को प्रकृति का संरक्षक कहा गया है। आदिवासी अस्मिता और अस्तित्व से तात्पर्य आदिवासियों का देश के मूल निवासी के रूप में पहचान एवं वजूद बनाए रखना है। प्रकृति से अभिन्न जीवन जीने वाले आदिवासियों के लिए जल, जंगल और ज़मीन ही उनके अस्मिता एवं अस्तित्व के द्योतक हैं। जंगलों से कटना इनका अपनी जड़ों से कटने जैसा है, क्योंकि इनके लिए जंगल–पहाड़ ही देवी–देवता हैं। इनके बिना इनका जीवन अधूरा है। हिन्दी साहित्यकार महुआ माजी कहती हैं–

"जंगल के बिना हम जिएंगे कैसे? झोपड़ी, खटिया बनाने की लकड़ी और रस्सी जंगल से आती है। साल पत्ते में हम और हमारे बोंगा, हमारे देशा उलीडियंग पीते हैं, खाना खाते हैं। जब धान नहीं होता, तब जंगली फल, मूल, कंद आदि खाकर ही तो हम पेट भरते हैं। उनके साथ–साथ लाह, तसर, गुटि, करंज के बीज, दोना पत्तल आदि बेचकर चावल, नमक आदि खरीद लाते हैं। साल की लकड़ी और पत्तों के बिना शादी–ब्याह से लेकर जन्म–मृत्यु तक का कोई भी संस्कार संभव है क्या? ... " (माजी 113)

परन्तु इक्कीसवीं सदी के भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, औद्योगीकरण, अत्यधिक उत्खनन एवं आर्थिक विकास की अंधी दौड़ ने शांत और एकान्त प्रिय आदिवासियों के जीवन को बुरी तरह प्रभावित किया। कल तक आदिवासी इस जल, जंगल और ज़मीन के मालिक थे, आज वे उसी से वंचित हो गए हैं। मुख्यधारा के सभ्य समाज के लोग विकास के नाम पर आदिवासियों के साथ छल कर उन्हें उनकी ही ज़मीन से बेदखल कर पलायन ले लिए मज़बूर कर रहे हैं। आर्थिक विकास की अंधी दौड़ और उपभोक्तावादी संस्कृति, अत्यधिक

उत्खनन, औद्योगीकरण एवं बाज़ारीकरण द्वारा मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति को खोखला कर दिया और समस्त पृथ्वी जगत को ख़तरे में डाल दिया। भूमण्डलीय ऊष्मीकरण के कारण हर वर्ष प्राकृतिक आपदाएँ आ रही हैं, धरती बंजर हो रही है, नदियाँ सूख रही हैं और बेमौसम बरसात से सृष्टि अस्त–व्यस्त हो गई है। आज एक रेखीय विकास में मोह विष्ट होकर मनुष्य जल, जंगल, ज़मीन और पर्यावरण को नष्ट करता जा रहा है, जिससे दुनिया में गंभीर पारिस्थितिक संकट उत्पन्न हो गयी है और मनुष्य को अपनी अस्मिता और अस्तित्व के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ रहा है।

आदिवासी जीवन को अपनी लेखनी का विषय बनाने वाले लेखकों में रणेन्द्र का नाम अग्रगण्य है। वे एक भारतीय प्रशासनिक अधिकारी रहे हैं और अब डॉ. रामदयाल मुण्डा शोध संस्थान के निदेशक के रूप में कार्यरत हैं। वे आदिवासी बहुल राज्य झारखण्ड से विशेष रूप से सम्बद्ध रहे हैं और वहाँ के आदिवासी समुदायों की सामाजिक– सांस्कृतिक विशेषताओं और अंतःसंबंधों से रुबरू होते रहे हैं। इसके अतिरिक्त वैश्वीकरण एवं विकास के प्रभावों के दृष्टा और अन्वेषक भी रहे हैं। इस क्रम में चिंतन–मनन की प्रक्रिया और अपने उद्भावित अनुभव जगत से उन्होंने आदिवासी जीवन को लेकर साहित्यिक अभियान चला रहे हैं। अपनी रचनाधर्मिता के द्वारा रणेन्द्र ने साहित्यिक क्षेत्र में भी अपनी एक अलग पहचान बनाई। अपने शब्दों में ग्रामीण इलाकों की दास्तान बुनने वाले रणेन्द्र अपने पहले ही उपन्यास 'ग्लोबल गाँव के देवता' से साहित्य जगत में चर्चा में आए थे। इसके बाद 'गायब होता देश' से इन्होंने अपनी रचनाधर्मिता का लोहा मनवाया। रणेन्द्र 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में आदिवासी समुदाय 'असुर' के जीवन का संतप्त एवं संक्षिप्त आख्यान प्रस्तुत करते हैं। तत्पश्चात् 2014 ई. में वे आदिवासी समुदाय 'मुण्डा' के जीवन संघर्ष को 'गायब होता देश– शीर्षक उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। सन् 2021 में वे 'गूंगी रुलाई का कोरस– उपन्यास के माध्यम से विभाजन की रक्त–रंजित आक्रामकता को रेखांकित करते हुए भारतीय संस्कृति को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की लय–ताल के साथ पुनः स्थापित करने का प्रयास करते हैं। 'रात बाकी एवं अन्य कहानियाँ ' तथा 'छप्पन छुरी बहत्तर पेंच' नामक कहानी संग्रह में भी आदिवासी जीवन की विसंगतियों का चित्रण है। उनकी कविताओं का संकलन 'थोड़ा सा स्त्री होना चाहता हूँ' नाम से प्रकाशित है।

'कांची' नामक त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका का संपादन भी इन्होंने किया है। हिन्दी साहित्य में अमूल्य योगदान के लिए उन्हें 2020 ई. में श्री लाल शुक्ल साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया। रणेन्द्र के लेखन की यह सफलता है कि वे अपने लेखन के जरिए इन्होंने आदिवासी समाज को देखने समझने का नज़रिया ही बदल दिया। वरिष्ठ भारतीय प्रशासनिक अधिकारी होने के साथ–साथ रणेन्द्र एक सशक्त रचनाकार हैं। इसलिए वे आदिवासियों के जीवन संघर्ष से भली–भांति परिचित हैं, यह संघर्ष उन्होंने अपनी रचनाओं में सफलता पूर्वक उकेरा है। आदिवासी जीवन के जो भी ज्वलंत मुद्दे हैं जैसे– अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, विस्थापन, घुसपैठ, स्त्री–शोषण इनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

रणेन्द्र अपने उपन्यास 'गायब होता देश' में मुण्डा आदिवासी समाज और उनकी संस्कृति पर भूमण्डली करण के यथार्थ प्रभाव को दर्शाते हैं। विकास के नाम पर उन्हीं की ज़मीन पर ज़बरदस्ती कब्ज़ा कर उन्हें बेदखल

कर पलायन के लिए मज़बूर करना। रणेन्द्र कहते हैं कि मुण्डाओं का देश सोने की तरह था। मुण्डाओं का कोक राह सोने के कणों में जगमगाती स्वर्ण रेखा, हीरों की चमक से चमचमाती शंख नदी, सफेद हाथी और इन सबसे बढ़कर हरे सोने, साल के जंगल यही 'सोनालेकनदिसुम'। कितना सुंदर था वह अपना सोना जैसा देश। रणेन्द्र गायब हो रहे आदिवासियों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करते हैं–

'लेकिन इंसान थोड़ा ज्यादा समझदार हो गया। उसने सिंग बोंगा की व्यवस्था में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। उसने लोहे के घोड़े दौड़ने के लिए शालवन की लाशें गिरानी शुरू कर दीं।.....उसने बंदरगाह बनाने, रेल की पटरियां बिछाने, फर्नीचर बनाने, मकान बनाने के लिए अंधाधुंध कटाई शुरू की। मरांग बुरू–बोंगा की छाती की हर अमूल्य निधि, धातु–अयस्क उसे आज ही, अभी ही चाहिए था। .....ज़रूरत से ज्यादा समझदार इंसानों की अंधाधुंध उड़ान के उठे गुबार–बवंडर में सोनालेक नदिसुम गायब होता जा रहा था। सरना–वानस्पति जगत गायब हुआ, मरांग–बुरूबोंगा, पहाड़ देवता गायब हुए, गीत गाने वाली, धीमी बहने वाली, सोने की चमक बिखरने वाली, हीरों से भरी सारी नदियाँ जिनमें इकिरबोंगा–जल देवता का वास था, गायब हो गई। मुंडाओं के बेटे–बेटियां भी गायब होने शुरू हो गए। सोनालेक नदिसुम, गायब होने वाले देश में तब्दील हो गया।' (रणेन्द्र 2–3)

वैश्वीकरण और औद्योगीकरण के दौर में उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण देश के मूल निवासी आदिवासी अपने अस्मिता एवं अस्तित्व के लिए कठिन संघर्ष कर रहे हैं। रणेन्द्र अपने उपन्यास 'गायब होता देश' में पूँजीवादी विकास की अंधाधुंध दौड़ में खनिज संपदाओं से परिपूर्ण देश के गायब होते चले जाने और वहाँ रहने वाले मूल निवासियों के भी गायब होने का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करते हैं :–

"अब तो वह केवल नाम के लिए मदुक मटोला रह गया था वहाँ एक नई–नकोरी चमचम करती कॉलोनी थी – ऐश्वर्या विहार। ऊँची चारदीवारी से घिरी, गगन चुम्बी अपार्टमेंट्स से अंटी हुई।" (रणेन्द्र 86)

रणेन्द्र की कहानी संग्रह 'छप्पन छुरी बहत्तर पेंच' झारखण्ड के उरांव जनजाति के विशेष संदर्भ में लिखी गई है। आदिवासियों को बहला–फुसलाकर अमीर लोग उनकी ज़मीन हथिया लेते हैं और आदिवासियों को कोल– बकलोल और नक्सली कहकर अपमानित कर उसकी अस्मिता पर प्रहार करते हैं :–

'साले! आदिवासी! कोल–बकलोल के पास एतना रुपया कहां से बे? जरूर नक्सली सभन का पैसा हेतु लोग कुरियर हो, कहीं पहुंचाने जा रहे हो.....।' (रणेन्द्र 43)

सरकार की त्रुटिपूर्ण नीतियाँ, असमानुपातिक आर्थिक विकास, शासन सत्ता की पूँजी–उन्मुख चिन्तन और औद्योगिक घरानों एवं बहुराष्ट्रीय निगमों की पूँजीवादी अभियानों ने विकास के नाम पर जल, जंगल और ज़मीन पर कब्ज़े पर अंधी अमानवीय लूट मचा रखी है और सदियों से शोषित–वंचित–दमित–उपेक्षित आदिवासियों को ऐसी कगार पर धकेल दिया है जहाँ मात्र दो विकल्प हैं – प्रतिरोध या सर्वनाश ! बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और पूँजीवादी उद्योगपतियों ने आदिवासी बहुल क्षेत्रों की ज़मीनों पर एकाधिकार कर लिया है। आदिवासी क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में खनिज संपदा, वन संपदा, प्राकृतिक संसाधन और मानवीय श्रम उपलब्ध हैं मगर ये बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने इनका अंधाधुंध दोहन और विनाश कर पारिस्थितिक संकट उत्पन्न कर रहे हैं। उपन्यासकार रणेन्द्र 'गायब होता देश' के माध्यम से भारतवासियों के समक्ष प्रश्न खड़ा करते हैं :–

"थोड़ी देर के लिए सोचिए बुच्चू! अगर लुटियन दिल्ली के नीचे कोयला निकल आए, इलाहाबाद सिविल लाइंस के नीचे बॉक्साइट, यूरेनियम, चंडीगढ़ के नीचे आयरन ओर लखनऊ, चेन्नई, बंगलुरू के नीचे तो क्या उजाड़ेगा लोग उसे? होगा वहाँ विस्थापन? नहीं, कभी नहीं। ऐसा कभी नहीं होगा। क्योंकि वहाँ रहने वाले एलीट सम्मानीय नागरिक हैं। भारतमाता के अपने खास बेटे। फिर हम क्या हैं? केवल लाभुक, कोई टार्जेट ग्रुप या फिर किसी शोध के लिए एक ठोकेस भर। क्या हैं हम? क्या मुआवज़ा के रजिस्टर के बस एक नंबर, या कि कल्याण विभाग के फाइल की फटी हुई झोली, फादर हॉफ मैन, वरियर एल्विन जैसों की किताबों की ब्लैक ऐंड व्हाइट तस्वीरें। क्या हैं हम? सच बात है कि उनकी नज़र में हम हैं ही नहीं। फिर यह हमारी सांस लेती हुई ज़िंदगी क्या है? .....क्या हम आपके सौतेले बेटे हैं भारतमाता?" (रणेन्द्र 263)

रणेन्द्र कहते हैं झारखण्ड बनने के बाद पता चला कि जहां कल तक बस्ती थी, रातों–रात उन लोगों को कहीं और पहुंचा दिया गया। वहाँ कि सीरियल एस्टेट कंपनी का साइन बोर्ड टांग कर उनकी जमीन को कंटीले तारों से घेर दिया गया। 'गायब होता देश' में रणेन्द्र ने उसी कहानी को कहने की कोशिश की है। ज़मीनों की लूट बड़ी निर्लज्जता तरीके से यहां की जा रही है। एक पान वाले ने 35 शादियां की। उन घरों में जहां कोई पुरुष उत्तराधिकारी नहीं था। इस कारण जो जमीनें उसके हाथ में आईं उसकी प्लॉटिंग करके उसने बेचा। इस तरह आदिवासी ज़मीन की लूट के जितने भी तरीके अपनाए जा सकते थे, वे अपनाए गए या आज भी अपनाए जा रहे हैं।

आदिवासियों की बेदखली न सिर्फ आर्थिक पक्ष में बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक दायरे में भी हो रही है। नई ताकतों से परिचय तथा आर्थिक परिस्थितियों में तीव्र गति से हो रहे परिवर्तन के फलस्वरूप आदिवासियों की सामाजिक संरचना भिन्न–भिन्न होती जा रही हैं। उनका पारिवारिक जीवन अस्त–व्यस्त होता जा रहा है। वे अपना सामाजिक नियंत्रण खो रहे हैं तथा उनमें सामाजिक तनाव बढ़ रहा है। विकास तथा आधुनिकीकरण का सामना करते हुए ये लोग अक्सर आत्म–सम्मान में कमी महसूस करते हैं। यह भावना तब और उग्र हो जाती है जब प्रभावशाली वर्ग उनकी संस्कृति के प्रति नकारात्मक रुख दिखाता है। आदिवासी समाज का शोषण कई तरीकों से किया जाता रहा है। कभी महाजनी शोषण, जमींदारी शोषण सबसे बड़ी थी। आज बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा इनके संसाधनों की लूट, सरकारों द्वारा बनाई जाने वाली आदिवासी विरोधी नीतियाँ, भ्रष्ट अधिकारी वर्ग, बड़ी राजनीतिक पार्टियों और माफिया के इशारों पर इस्तेमाल हो रही आदिवासी राजनीति इसकी बड़ी समस्या बनी हुई है।

आज मानव के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती पर्यावरण और आधुनिकी करण के बीच सामंजस्य बैठाना है। जिस तेजी से जंगलों की कटाई और पर्यावरण को कुचल कर हम तेजी से आर्थिक विकास की अंधी दौड़ में भाग रहे हैं, ऐसे में हम पारिस्थितिक तंत्र को हानि पहुँचा रहे हैं। रणेन्द्र अपने कथा–साहित्य के माध्यम से हमारे समक्ष विकास बनाम मानव अस्मिता एवं अस्तित्व का ज्वलंत मुद्दा उठाते हैं। क्या विकास के लिए संस्कृति, प्रकृति और पर्यावरण का विनाश औचित्य पूर्ण है? आदिवासी अस्मिता एवं अस्तित्व का आधार है, उनकी संस्कृति, रीति–रिवाज, परम्पराएँ, जंगल, नदियाँ, पहाड़ी खान–पान। यदि ये विनष्ट हो जाएँ तो उनकी अस्मिता एवं

अस्तित्व ख़तरे में पड़ जाएगी।

रणेन्द्र अपने उपन्यास 'गायब होता देश' के माध्यम से आदिवासियों के साथ हो रहे छल को और उनकी ही ज़मीन से बेदखल कर पलायन के लिए मज़बूर हो रहे आदिवासी समाज का चित्रण करते हैं। धरती पर आज जीवन चक्र को सुरक्षित रखने के लिए पर्यावरण को संतुलित एवं सुरक्षित रखना बेहद ज़रूरी है। इक्कीसवीं सदी के भूमंडलीकरण, औद्योगीकरण, अत्यधिक उत्खनन एवं आर्थिक विकास की अंधी दौड़ में न सिर्फ आदिवासियों को ख़तरा है बल्कि संपूर्ण मानव जीवन के अस्मिता एवं अस्तित्व पर ख़तरा मंडरा रहा है। आज हम जिस तेजी से आर्थिक विकास की अंधी दौड़ में भाग रहे हैं उससे पारिस्थितिक संकट और मानव अस्मिता एवं अस्तित्व ख़तरे में पड़ गया है।

आदिवासियों के अधिकारों का संरक्षण और प्रवर्तन के लिए आदिवासियों को संवैधानिक प्रावधान एवं कानूनी सुरक्षा मुहैया कराना अति आवश्यक है। अतः इस दिशा में एक प्रभावी राष्ट्रीय नीति का क्रियान्वयन किया जाना चाहिए ताकि आदिवासियों को भी मुख्यधारा से जोड़ा जा सके और ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए जिससे उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य और उनकी सर्वांगीण विकास की दिशा में कार्य करे। वन अधिकार अधिनियम 2006 और पेसा अधिनियम 1996 जैसे सशक्त कानून आदिवासी बहुल क्षेत्रों और राज्यों में लागू किया जाना चाहिए। इससे प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा एवं नियंत्रण तथा आदिवासियों का जीवन दर्शन, संस्कृति और परंपरा का संरक्षण एवं संवर्द्धन के साथ इनकी अस्मिता एवं अस्तित्व के बचे रहने की प्रबल संभावना बढ़ सकती है। आदिवासी दर्शन यही कहता है कि वे सिर्फ अपना नहीं सोचते बल्कि पूरी सृष्टि के कल्याण की बात करते हैं। वे मुख्यधारा समाज से ज्यादा सभ्य हैं। लोग उन्हें पिछड़ा मानते हैं, वे दरअसल ज्यादा समझदार हैं। उनके दर्शन, उनकी संस्कृति, उनकी परंपरा, उनकी आर्थिकी और उनके इतिहास को समझने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. माजी, महुआ, 'मरंग गोड़ानी लकंठ हुआ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम 2012, पृ० 113
2. रणेन्द्र, 'गायब होता देश', पेंगुइन, रैंडम हाऊस इंडिया, नई दिल्ली, प्रथम 2014, पृ० 2–3
3. रणेन्द्र, 'गायब होता देश', पेंगुइन, रैंडम हाऊस इंडिया, नई दिल्ली, प्रथम 2014, पृ० 86
4. रणेन्द्र, 'रात बाकी एवं अन्य कहानियाँ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृ. 20
5. रणेन्द्र, 'छप्पन छुरी बहत्तर पेंच', आधार प्रकाशन प्रा. लि., हरियाणा, 2020, पृ. 43
6. रणेन्द्र, 'गायब होता देश', पेंगुइन, रैंडम हाऊस इंडिया, नई दिल्ली, प्रथम 2014, पृ० 26
7. रणेन्द्र, 'ग्लोबल गाँव के देवता', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, दूसरा 2014
8. रणेन्द्र, 'गूंगी रुलाई का कोरस', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
9. रणेन्द्र, 'रात बाकी एवं अन्य कहानियाँ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
10. रणेन्द्र, 'छप्पन छुरी बहत्तर पेंच', आधार प्रकाशन प्रा. लि., हरियाणा, 2020
11. रणेन्द्र, 'झारखण्ड एन्साईक्लोपिडिया खण्ड–2', वाणी प्रकाशन, 2019

12. कुमार, विनोद, 'आदिवासी संघर्ष गाथा' प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2005
13. गुप्ता, रमणिका (सं०) 'आदिवासी विकास से विस्थापन' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय, 2014
14. मीणा, गंगासहाय, 'आदिवासी साहित्य विमर्श' अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम, 2014
15. लुगुन, अनुज (सं.) 'आदिवासी अस्मिता प्रभुत्व और प्रतिरोध', अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, 2018
16. गुप्ता, रमणिका, 'आदिवासी अस्मिता का संकट', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019
17. टेटे, वंदना, 'आदिवासी साहित्य परंपरा और प्रयोजन', नेशन प्रेस.कॉम इंडिया, 2021
18. मिश्रा, निशांत, 'रणेन्द्र के उपन्यास और आदिवासी जीवन का यथार्थ' 2018
19. गुप्ता, रमणिका, 'आदिवासी अस्मिता की पड़ताल करते साक्षात्कार', स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
20. गुप्ता, रमणिका, 'आदिवासी साहित्य यात्रा', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
21. देवी, महाश्वेता, 'जंगल के दावेदार', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
22. गुप्ता, रमणिका, 'आदिवासी लेखन एक उभरती चेतना', सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, 2014

मोबाइल नंबर – 6370616463
ईमेल – asharanisundi730@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 160-164

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

शिक्षा एवं समाज में मीडिया की भूमिका

DEEPA BHARTI
(NET) Ph.D Scholor
Department of Home Science, PURNEA UNIVERSITY, PURNEA (BIHAR)

मीडिया की उत्पत्ति वस्तुतः मनुष्य की जिज्ञासु प्रवृत्ति का हीं परिणाम है मानव स्वभाव से हीं जिज्ञासु प्राणी है तथा अपने आसपास घटित होने वाली घटनाओं को जानना चाहता है। जिसे व्यापक अर्थों में सूचना शब्द से परिभाषित किया जा सकता है। सूचनाओं को संप्रेषित करने के माध्यम की अनिवार्यता हीं मीडिया शब्द को जन्म दिया है।

भारतीय संविधान में प्रेस एवं मीडिया की स्वतंत्रता को अलग से परिभाषित नहीं किया गया है, परंतु इसे आर्टिकल 19(1) के वाक्य एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अंतर्गत ही रखा गया है। परंपरागत अर्थों में मीडिया के कार्य को तीन बिंदुओं के द्वारा समझा जा सकता है :–

– सूचना देना
– मनोरंजन प्रदान करना एवं
– शिक्षा देना।

सूचना देना :–

सूचना देना मीडिया का पहला महत्वपूर्ण कार्य है। सूचना ही शक्ति है, सूचना के इस बढ़ते प्रभाव की वजह से आज के विकसित समाज को "सूचना का समाज" कहा जाने लगा है, आज वास्तव में ज्ञानी वही है, जिसके पास सूचनाओं का अंबार है।

शिक्षा देना :–

शिक्षा देना मीडिया का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है। यहां शिक्षा का अर्थ औपचारिक शिक्षा नहीं है, बल्कि ज्ञान के समस्त रूप शिक्षा के अंतर्गत आते हैं। शिक्षा के लिए माध्यम की आवश्यकता होती है तथा मीडिया द्वारा संप्रेषित होने वाला प्रत्येक संदेश चाहे वह सूचना के रूप में हो या मनोरंजन के लिए उसमें शिक्षा का तत्व किसी न किसी रूप में अवश्य होता है।

मनोरंजन प्रदान करना :–

मीडिया का तीसरा महत्वपूर्ण कार्य है, मनोरंजन प्रदान करना वास्तव में मनोरंजन निष्क्रिय भाव नहीं है, बल्कि रचना, अभिव्यक्ति क्रियाओं में निहित है, प्रत्येक संचार माध्यम की अपनी संरचना होती है जिसके द्वारा मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं।

संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी के विकास में सूचनाओं के पहुंच एवं तीव्रता को अति विस्तृत कर दिया है, और इसी अनुक्रम में मीडिया की भूमिका में भी बहुआयामी परिवर्तन हुए हैं। जनमत पर आधारित आधुनिक लोक लोकतांत्रिक प्रणाली में मीडिया की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है जिसे लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में जाना जाता है।

वर्तमान में संचार मीडिया शिक्षा एवं हमारे सामाजिक क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण एवं सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में मीडिया की भूमिका :-

वर्तमान समय में फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब इत्यादि जैसे प्लेटफॉर्मो का छात्रों एवं अध्यापकों द्वारा व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा है। शिक्षकों, प्रोफेसरों एवं छात्रों के बीच यह काफी लोकप्रिय हो गया है। एक छात्र के लिए सोशल मीडिया बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि सोशल मीडिया उनके लिए जानकारी को साझा करने, जवाब प्राप्त करने और शिक्षकों से जुड़ने में सहायता प्रदान करता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से छात्र और शिक्षक एक दूसरे से जुड़ सकते हैं और इन प्लेटफार्म का अच्छा उपयोग करके जानकारी साझा कर सकते हैं।

आजकल कई शिक्षक एवं प्रोफेसर अपने व्याख्यानओं के लिए स्काइप, ट्विटर और अन्य मीडिया प्लेटफॉर्म पर लाइव वीडियो चैट आयोजित करते हैं। यह छात्रों के साथ–साथ शिक्षकों को भी घर बैठे किसी चीज को सीखने है तथा सिखाने में सहायता प्रदान करता है। सोशल मीडिया के माध्यम से शिक्षा को और अधिक आसान एवं सुविधाजनक बनाया जा रहा है, क्योंकि हम दिन के किसी भी समय सोशल मीडिया का उपयोग कर सकते हैं और कक्षा के बाद भी शिक्षक से प्रश्नों का समर्थन और समाधान ले सकते हैं, और यह अभ्यास शिक्षकों को अपने छात्रों के विकास को और अधिक बारीकी से समझने में मदद करता है।

कई शिक्षक यह महसूस कर रहे हैं, कि सोशल मीडिया का उपयोग उनके कार्यों को और आसान बनाता है। सोशल मीडिया पर आयोजित कक्षाएं और अधिक अनुशासित एवं संचारित होती है, क्योंकि वह जानते हैं कि हर कोई उसे देख रहा होता है। सोशल मीडिया छात्रों को ऑनलाइन उपलब्ध कराई गई शिक्षण सामग्री के माध्यम से उनके ज्ञान को बढ़ाने में मदद करता है। सोशल मीडिया के माध्यम से छात्र वीडियो और चित्र देख सकते हैं समीक्षाओं की जांच कर सकते हैं और लाइव प्रक्रियाओं को देखते हुए तत्काल अपने संदेह को दूर कर सकते हैं। ना केवल छात्र बल्कि शिक्षक भी इन उपकरणों का और शिक्षण सहायता का उपयोग करके अपने व्याख्यान को और अधिक रोचक बना सकते हैं। छात्र प्रसिद्ध शिक्षकों, प्रोफेसरों और विचारकों द्वारा ब्लॉक, आर्टिकल और लेखन पढ़कर अपना ज्ञान बढ़ा सकते हैं।

इस तरह अच्छी सामग्री व्यापक दर्शकों तक पहुंच सकती है। इस बात से अस्वीकार नहीं किया जा सकता है, कि यदि बुद्धिमानी से सोशल मीडिया का उपयोग किया जाए शिक्षा को और बेहतर और मजबूत स्थिति किया जा सकता है। सोशल मीडिया का उपयोग छात्रों को और बुद्धिमान बना सकता है। खासकर 2020 में आए वैश्विक महामारी कोविड–19 ने दुनिया भर में शिक्षा एवं शैक्षणिक प्रणालियों को प्रभावित किया कोविड–19 के प्रसार को कम करने तथा लोगों को सुरक्षित रखने के लिए की कोशिश में दुनियाभर की सरकारों ने अस्थाई रूप से शिक्षण संस्थानों को बंद करने का निर्णय लिया था। 30 सितंबर 2020 तक कोविड–19 महामारी से लगभग

1.077 बिलियन शिक्षार्थी वर्तमान में स्कूल बंद होने के कारण प्रभावित थे। यूनिसेफ की निगरानी के मुताबिक लॉकडाउन का असर दुनिया की लगभग 61.6 प्रतिशत आबादी पर हुआ। महामारी के दौरान सभी कॉलेज कोचिंग विश्वविद्यालय आदि बंद कर दी गई, क्योंकि विद्यार्थियों के जीवन की सुरक्षा उनकी शिक्षा से ज्यादा महत्वपूर्ण थी। और इस वैश्विक संकट में मीडिया ने अति महत्वपूर्ण और अविस्मरणीय योगदान दिया। स्कूल, कॉलेजों, कोचिंग संस्थानों, विश्वविद्यालयों द्वारा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसे– यूट्यूब, मोबाइल ऐप, वेबीनार इत्यादि का उपयोग करके शिक्षा देने का प्रयास किया गया। इस वैश्विक महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था बहुत ही लाभकारी सिद्ध हुई, इसके बिना विद्यालय पहुंचे छात्र–छात्राओं को घर पर ही उचित एवं उपयोगी शिक्षा प्राप्त हुई, इसलिए हम यह कह सकते हैं कि शिक्षा के क्षेत्र में जनसंचार मीडिया की भूमिका अति महत्वपूर्ण एवं इसकी भूमिका अतुल्य है।

आज विश्व में भारत को जो नई पहचान मिली है, वह संचार प्रौद्योगिकी में हो रही प्रगति से ही है। इलेक्ट्रॉनिक डाटा के रूप में किए गए संदेशों को अधिक सरल, सहज एवं रुचि कर बनाना आवश्यक है, यह तभी संभव है, जब सूचना एवं संचार तकनीकी की डिजिटल भाषाओं को उसी क्षेत्र में भाषा के अनुरूप लोगों तक सूचनाएं पहुंचाई जाए। जिससे देश के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य प्राप्त हो सके। विकास सहायक संचार समाज के जीवन स्तर में सुधार, शिक्षा के प्रसार, समाज, ज्ञान, जिज्ञासा एवं इच्छा इत्यादि को निरंतर और व्यापक स्तर पर ले जाती है, जो गरीबी उन्मूलन में सहायक है। इसके साथ–साथ हमें हमेशा यह भी ज्ञात होना चाहिए, कि भारत गांवों का देश है, और यदि गांव के लोग जागरूक नहीं होंगे तो देशक भी भी विकास की तरफ अग्रसर नहीं हो सकता है।

वर्तमान समय में इस बात को झुठलाया नहीं जा सकता है, कि गांव अब शहरों से पीछे नहीं है, जिसका सबसे बड़ा कारण है–संचार माध्यम (मीडिया)। संचार माध्यम जहां शहरों को विकसित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है, वही गांव को विकसित करने तथा लोगों में भी जागरूकता लाने का कार्य किया कर रहा है। गांव में सुविधाओं को पहुंचाने में संचार प्रौद्योगिकी एक उपयोगी उपकरण सिद्ध हो रहा है। जहां गांव के लोग पहले सुविधाओं से वंचित रह जाया करते थे, वही संचार मीडिया ने उन्हें एक नया आयाम एवं दिशा प्रदान किया है। सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, पुलिस प्रशासन आदि को संचार माध्यम से जोड़कर ग्रामीणों को सुविधा पहुंचाया जा रहा है।

गरीबी उन्मूलन में मीडिया की भूमिका अत्यधिक प्रभावी है। मीडिया के द्वारा रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, पत्रिकाएं, इंटरनेट इत्यादि संचार माध्यमों द्वारा लोगों में शिक्षा सूचना और चेतनपरक विकास कार्यक्रमों के माध्यम से मीडिया लोगों के जनजीवन में गुणवत्ता में सुधार करके नागरिकों को एक स्वस्थ समाज का निर्माण करके उनको अपने अधिकारों के प्रति सजग बनाकर, देश के विकास में सक्रिय भूमिका अदा करने तथा सभी स्तरों पर अपने दायित्वों का निर्वहन एवं जागृत करने में मीडिया की भूमिका अहम प्रभावी है।

आज हम सूचनाकृत के दौर में से गुजर रहे हैं, तथा डिजिटल इंडिया (Digital India) की परिकल्पना को प्राप्त करने के लिए तीव्र गति से अग्रसर हैं। वर्तमान सरकार का भी यही लक्ष्य है, कि सूचना एवं संचार तकनीकी दृष्टि को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाया जा सके, जिससे भारत स्पष्ट रूप से विश्व के साथ जुड़ सके और वैश्विक गांव की कल्पना को साकार कर सकें।

समाज में मीडिया की भूमिका :–

मीडिया संचार का एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा हम समाज में घटित हो रही किसी भी घटना, किसी भी प्रकार की जानकारी, शिक्षा एवं किसी भी प्रकार का विज्ञापन के प्रचार–प्रसार को बहुत ही जल्दी और सहजता से समाज के एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं। तकनीकी के विकास से पहले "मीडिया" शब्द का प्रयोग केवल किताबों, समाचार–पत्रों जिसे हम प्रिंट मीडिया के रूप में जानते हैं, के लिए होता था। परंतु अब टेलीविजन, फिल्में, रेडियो तथा इंटरनेट आदि भी मीडिया के प्रमुख अंग बन गए हैं। पहले जब मीडिया के यह सभी आधुनिक साधन नहीं थे, तो केवल प्रिंट मीडिया का ही उपयोग किया जाता था लोग साहित्य एवं लेखन के द्वारा ही अपने विचारों को प्रकट किया करते थे। जैसे कि भारत की आजादी के लिए चलाए जा रहे हैं आंदोलनों को सफल बनाने के लिए एवं इन आंदोलनों से लोगों को जोड़ने के लिए अनेक प्रकार के प्रिंट मीडिया का सहारा लेकर कई समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं का संपादन किया जाता था। इस तरह भारत के स्वतंत्रता में मीडिया का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

भारत को कोरोना वायरस महामारी से बाहर निकाला एवं पोलियो ग्रसित देशों की सूची से भारत को बाहर किया। इसके साथ ही "एड्स" जैसी जानलेवा बीमारी के प्रति लोगों में विद्यमान विभिन्न प्रकार की भ्रांतियों को मीडिया की मदद से ही दूर किया गया। इसके साथ–साथ हम यह भी जानते हैं कि हमारा देश भारत कृषि प्रधान देश है। और आज की मीडिया से हमारे देश के किसानों को भी बहुत लाभ मिल रहा है, क्योंकि टेलीविजन पर अनेकों ऐसे कार्यक्रम प्रसारित किए जा रहे हैं, जिससे किसानों को खेती करने की नई एवं वैज्ञानिक तकनीक से अवगत कराया जा रहा है। जिसका सीधा असर किसानों के फसल उत्पादन क्षमता पर पड़ रहा है।

आज के समय में मीडिया महिला सशक्तिकरण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। महिलाओं के प्रति हो रहे अन्याय, भेदभाव, दुर्व्यवहार इत्यादि को दूर करने में मीडिया वरदान के रूप में साबित हो रहा है। महिलाएं अपने ऊपर हो रहे किसी भी प्रकार के अनुचित व्यवहार को, सोशल मीडिया का उपयोग करके देश तथा समाज के सामने अपनी आवाज उठा सकती है, और अपने हक एवं अधिकार के लिए लड़ सकती है। इस तरह मीडिया आज हमारे समाज में सभी क्षेत्रों में बहुत ही बड़ा एवं महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। वर्तमान समय में मीडिया हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। मीडिया के वजह से ही आज समाज में पुराने विचारधाराओं के लोगों की मानसिकता बदली है और लोग आधुनिकीकरण की ओर अग्रसर हुए हैं, जिससे हमारा देश तरक्की की राह पर बहुत ही तेजी से आगे बढ़ रहा है। उपरोक्त कथनों से यह साबित किया जा सकता है, कि शिक्षा एवं समाज किसी भी क्षेत्र में मीडिया का अति महत्वपूर्ण योगदान है, और इसके अतुल्य योगदान से नकारा नहीं जा सकता है।

संदर्भ :–

1. वर्मा, ए. के. : प्रयोगात्मक A.A.C.R-2, रायपुर सेंट्रल बुक हाउस।
2. आशारानी वोहरा : भारतीय नारी दशा व दिशा, नेशनल, नई दिल्ली।
3. http://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news/analysis/nso-report-shows-stark-digital-divide-affects-education.

4. http:..www.india.gov.in
5. http://socialwelfare

ADDRESS :-
Dhiraj kumar Sah
Ram nagar, Polytechenic chowk
Ward No. 11, Near Raj 99 store
Purnea (BIHAR) Pin- 854301
MOB- 8873525662
E mail - deepa4bharti90@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 165-167

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

అక్కినపల్లి సుబ్బారావు నవలల్లో మూఢనమ్మకాలు వాటి ప్రభావాలు

యం. వెంకటేష్ నాయక్

పరిశోధక విద్యార్థి, , తెలుగు అధ్యయన శాఖ, శ్రీ వేంకటేశ్వర విశ్వవిద్యాలయం, తిరుపతి.

మూఢనమ్మకాలు అనేవి మన జీవనంలో ప్రధాన నమ్మకాలు. ప్రాచిన కాలం నుండి నేటి ఆధునిక కాలం వరకూ నమ్మకాలు అనేవి కొన్ని నమ్మదగినవిగా ఉన్నా మరికొన్ని నిరూపణకి సాధ్యం కాలేదు. ఇలా నమ్మలేని వాటినే మూఢనమ్మకాలని అనవచ్చు. ముఖ్యంగా ఈ మూఢనమ్మకాలు అనేవి గ్రామాలలో, చదువుకోని వారిలో, ఆదివాసీలు ఉండేటటువంటి ప్రాంతాలలో చూడవచ్చు. ఈ మూఢ నమ్మకాలు అనేవి మనిషిని మనిషిలాగ ఉండనివ్వకుండా వేరే లాగా ప్రవర్తించేలా ప్రభావం చేస్తాయి. ఈ సందర్భంగా ప్రముఖ కవి వేమన గారు తన పద్యము ద్వారా ఇలా చెబుతాడు....

"మర్మమెరుగకలేక మతములు కల్పించి
యుర్విజనులు దుఃఖమొందుచుండ్రు
గాజుటింటి కుక్క కళవళపడురీతి
విశ్వదాభిరామ.. వినుర వేమా...!!"(1).

ఈ విధంగా మూఢనమ్మకాలు అనేవి మన జీవితంలో ప్రత్యేకమైనటువంటి నమ్మకాలుగా మిగిలిపోయినాయి. ప్రస్తుతం ఈ ప్రపంచం చంద్రుడి మీద అడుగు పెడుతున్నప్పటికీ మూడు దారుల మధ్యలో ఉన్నటువంటి నిమ్మకాయని దాటలేకపోతున్నారు. ఈ విధంగా మూఢనమ్మకాలు అనేవి మనిషిని ఏవిధంగా ప్రభావితం చేస్తాయో మన రచయిత అక్కినపల్లి సుబ్బారావు గారి నవలల్లో మనము చూడవచ్చు. ప్రధానంగా మూఢనమ్మకాలు అనేవి దయ్యాలు, భూతాలు, దిష్టి తీయడాలు, రోడ్డు మధ్య నిమ్మకాయలు పెట్టడాలు, వాహనాలకు ఎండుమిర్చి కట్టడాలు , చేతులకు తాయత్తులు, బల్లి అరవడాలు, కుక్కలు మూలగడాలు ఇలా ఎన్నెన్నో సందర్భాలను మూఢనమ్మకాలుగా మన ప్రజలు నమ్ముతూ ఉంటారు. భారతీయులు తమ జీవితములో గ్రహాల ప్రభావం ఉంటుందని బలంగా నమ్ముతారు. ఋషులు కూడా గ్రహబలాలను పుంఖానుపుంఖాలుగా రాశారు. వివిధ గ్రహాలు అవి తమ జీవితాలపై చూపే మంచి చెడు ప్రభావాలను చాలా

విపులంగా రాశారు.. ఈ విషయాన్ని రచయిత అక్కినపల్లి సుబ్బారావు గారు 'నీళ్లలో చంద్రుడు' నవలలో ప్రసాద్ పాత్ర ద్వారా శారదకు ఇలా చెబుతూ "గ్రహాల స్థానాల బట్టి పెళ్లికి ఒక ముఖ్య కాలం నిర్ణయిస్తారు సిద్ధాంతులు. అంటే గ్రహాల స్థానం బట్టి ఈ దంపతుల వైవాహిక జీవితం ఆధారపడి ఉంటుంది. గ్రహాలు సరిగా ఉండకపోతే ముహూర్తాలు కుదరవు.

ముహూర్తాలు లేవన్నప్పుడు గుడిలో పెళ్లిళ్లు ఎలా సాధ్యం..? గుడి గ్రహాలకి అతీతమైనదా..? ఈ గుడిలో ఉన్న దేవుడు అనుకూలంగా లేని గ్రహాలు చెడు ఏమీ చేయకుండా రక్షణ ఇస్తాడా..?"(2) అంటూ తర్కించి చెబుతాడు. అయితే ఈ గ్రహాల ప్రభావాన్ని నాస్తికులు మరియు హేతువాదులు నమ్మరు. వీళ్లు అవన్నీ మూఢనమ్మకాలని ఇలానే కొట్టి పారేస్తున్నారు. వేమన మహాకవి వీటిని గట్టిగా విమర్శిస్తూ ఇటువంటి నమ్మకాలను తప్పుపడతాడు.

మన భారతీయులు గ్రహాల లాగానే సుడిగాలిని దయ్యంగా భావిస్తుంటారు. గాలి అనేది నలువైపులా లేదా ఎదురుగా రావడం మూలంగా సుడిగాలి పుడుతుందని సైన్స్ చెబుతున్నది. అంటే ఒక గాలి ఇంకొక గాలి ఎదురుగా ఢీ కొట్టినప్పుడు అది తిరుగుతూ వస్తుంది. దానిని సుడిగాలని మన శాస్త్రాలు కూడా చెబుతాయి. కానీ మన గ్రామీణ ప్రజలు పాతకాలం మనుషులు. కావున ఆ గాలి వచ్చినప్పుడు దయ్యాలు, భూతాలు వస్తున్నాయని చెప్పేసి భ్రమపడుతూ ఉంటారు. ఇటువంటి ఆచారం తరతరాలుగా కొనసాగుతూ వస్తున్నది. ఈ సందర్భాన్ని రచయిత అక్కినపల్లి సుబ్బారావు గారు 'ఆవలి అంచు' నవలలో ప్రసాద్ పాత్ర ద్వారా ఈ విధంగా వ్యక్తపరుస్తాడు "బొంగరంలా గిరగిరా తిరుగుతూ తన ఆకృతిని మార్చుకుంటూ దగ్గరగా ఉన్న చెట్ల రెమ్మల్ని, కాగితపు ముక్కల్ని, చిన్నచిన్న గుడ్డ పీలికల్ని, ఎండిపోయిన బరువు లేని ఆకుల్ని, కావలసినన్ని ఇసుక రేణువులని ఎగరేస్తూ శబ్దం చేసుకుంటూ తన ఇంటి వైపే వచ్చేసింది సుడిగాలి. కంటి రెప్పలన్ని ఆడించి కళ్ళల్లో ఇరుక్కున్న ఇసుక రేణువులను విదిల్చుకుని మండిపోతున్న కళ్ళని తులుముకుంటూ వెళ్లిపోయిన సుడిగాలి వైపు చూసాడు కృష్ణారావు. తన చిన్నతనంలో పెద్దవాళ్లు ఏవేవో చెప్పి పిల్లల్ని అనవసరంగా భయపెట్టేవారు. అందులో సుడిగాలి ఒకటి. సుడిగాలిలో నిలబడి కాగితం చించితే రక్తం కారుతుంది జాగ్రత్త. దానిలో దయ్యం ఉందని అనేవారు. అప్పట్లో పెద్దవాళ్ళని ఎదురు ప్రశ్నా వేసే ధైర్యం ఎవరికీ ఉండేది కాదు. ఆ బూటకపు నమ్మకాన్ని ఎదిరించేవారు కాదు. ఒక్కసారిగా ఆ పాత రోజులు గుర్తుకొచ్చాయి"(3). అంటూ సుబ్బారావు గారు ప్రసాద్ పాత్ర ద్వారా తెలియపరుస్తాడు. ఈ విధంగా ప్రజల్లో ఉన్న గుడ్డి నమ్మకాలు వాటి ప్రభావాన్ని గురించి చెబుతాడు.

ఈ విధంగా మూఢనమ్మకాలు నమ్మడం నమ్మకపోవడం అన్నది ఎవరికి వారి వ్యక్తిగతం. అయినా సమాజం కోసమో, ఇంట్లో వాళ్ల కోసమో, బంధువుల కోసమో కొన్ని చేసి తీరాల్సి వస్తుంది. ఈ విషయాన్ని రచయిత అక్కినపల్లి సుబ్బారావు గారు నీళ్లలో చంద్రుడు నవలలో సురేష్ పాత్ర ద్వారా ఇలా చెబుతాడు "గ్రహాలు, తంత్రాలు వగైరా అంటే నమ్మకం లేదు. అయినప్పటికీ నాన్న చనిపోయినప్పుడు వచ్చి యధావిధిగా కర్మకాండ చేశాను. తల్లి సంతృప్తి కోసం

నమ్మకాలను పక్కనపెట్టి తండ్రి కర్మకాండ యథావిధిగా చేశానని నాకు తెలుసు"(4). ఈ విధంగా మూఢనమ్మకాలపై విశ్వాసం లేకున్ననూ తల్లి కోసము మరియు ఇతర బంధువుల కోసం ఇక్కడ అటువంటి కార్యక్రమాలు చేయవలసి వచ్చిందని ఆ పాత్ర తెలియపరుస్తున్నది.

ఈ విధంగా చనిపోయిన వారికి కొందరు కర్మకాండ జరిగిన వెంటనే అస్తికలు నీళ్లలో కలుపుతారు. ఇది మరియొక మూఢనమ్మకం. మామూలుగా చనిపోయిన వారి అస్తికలు పవిత్రమైనటువంటి గంగ, యమున, సరస్వతి, గోదావరి, కృష్ణ, కావేరి వంటి పవిత్రమైన నదులలో కలిపే సాంప్రదాయం తరతరాల నుండి కొనసాగుతూ వస్తున్నది. ఈ రోజుల్లో చాలామంది కాశీకి వెళ్లి మరీ అక్కడున్న గంగా నదిలో కలిపి వస్తూ ఉంటారు. దూరం వెళ్లలేని వారు స్థానికంగా ఉన్నటువంటి నదులలో కలిపేస్తూ ఉంటారు. అలాగా నదుల్లో అస్తికలు కలిపితే చనిపోయిన వారికి మోక్షం ప్రాప్తి కలుగుతుందని మన భారతీయుల విశ్వాసం. ఈ విషయాన్ని రచయితకి అక్కినపల్లి సుబ్బారావు ఆవలి అంచు అనే నవల ద్వారా కృష్ణారావు పాత్రతో ఇలా చెప్పిస్తాడు "అన్నయ్యా..! ఎల్లుండి నాన్న అస్తికలు గోదావరిలో కలపడానికి వెళ్దాం అనుకుంటున్నాను వస్తావా..? అడిగాడు రామారావు"(5). ఈ విధంగా రచయిత మూడు నమ్మకాలను విమర్శిస్తూ తన అభిప్రాయాల్ని వ్యక్త పరుస్తాడు. ముఖ్యంగా భారతీయులకు ఎన్నో విశ్వాసాలు ఉన్నాయి. విశ్వాసం లేని మనిషి అంటూ ఉండడు. ఒకరి విశ్వాసాలు ఒకరికి నచ్చవచ్చు మరొకరికి నచ్చకపోవచ్చు. అంత మాత్రాన చేత వారిని విమర్శించరాదు. నేటి ఆధునిక సమాజం రోజురోజుకీ అభివృద్ధి చెందుతూ ఉన్నా మరోపక్క మూఢనమ్మకాలు అని కూడా పెరుగుతూనే ఉన్నాయి. రచయిత అక్కినపల్లి నవలల్లో ఇటువంటి మూఢనమ్మకాలు అనేవి తెలియపరుస్తూ వాటిని నమ్మకూడదనే ప్రయత్నం చేశాడని మనం చెప్పవచ్చు.

సందర్భాలు:

1. మూఢనమ్మకాలు - వికీపీడియా - వేమన పద్యాలు.

2. నీళ్ళలో చంద్రుడు - అక్కినపల్లి సుబ్బారావు - పుట సంఖ్య - 97.

3. ఆవలి అంచు - అక్కినపల్లి సుబ్బారావు - పుట సంఖ్య - 08.

4. నీళ్ళలో చంద్రుడు - అక్కినపల్లి సుబ్బారావు - పుట సంఖ్య - 55.

5. ఆవలి అంచు - అక్కినపల్లి సుబ్బారావు - పుట సంఖ్య - 49.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 168-172

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

DISCERNMENT OF SPIRITS IN CHRISTOPHER MARLOWE'S DOCTOR FAUSTUS

Anil Kumar Tiriya

Assistant Professor, P.G. Department of English

Berhampur University, Bhanja Bihar, Ganjam, Odisha

Abstract :-

The paper attempts to explore and analyse Discernment of spirits in Christopher Marlowe's Doctor Faustus. Christopher Marlowe, one of the university wits and the predecessor of Shakespeare wrote the Tragedy Doctor Faustus in 1588. The play deals with Ignatian Discernment of Spirits. The protagonist of the play Doctor Faustus discerns the good spirits and evil spirits; but because of his tragic flaw, he meets tragic end. St. Ignatius of Loyola formulated 14 Rules for discernment which are treasured in his book SpiritualExercises from section 313 to 327 are widely known as Ignatian Discernment of spirits. Loyola says that the Discernment of Spirits is the capability of being consciously aware of, perceiving and understanding the various motions caused in our souls by spirits and accept or reject them having the sight of their origin and end (Sp.Ex. 313). The purpose of discernment is to enable man to judge well and to have Redemption of soul from sin and evil. It leads man to happy and peaceful life. Sigmund Freud's Psychoanalytical Theory of personality can help man to understand Ignatian Discernment of Spirits in Doctor Faustus.The prayers, contemplation, meditation , reflection, retreat and examination of conscience are some means through which one can discern various spirits and take right decision in his life. This paper argues how Ignatian Discernment of Spirits influenced Christopher Marlowe and how he wrote the Tragedy Doctor Faustus to help people in their spiritual lives.

Keywords :- Spiritual Exercises, good spirit, evil spirit,Id, Ego, Superego, spirituality, contemplation, consolation, desolation, God and conscience.

Introduction :-

When we look around, we find many problems in the world. We read in the Newspaper that many farmers have committed suicide. We hear the news in T.V. that Terrorists have killed many

innocent people in the country in bomb blast in the name of Zihad. Naxalites are harassing people in the name of justice. Students are being mentally tortured and committing suicide on their failure in lives. It seems there is no one happy in the world. Most people are in depression and leading lonely and unhappy life. There is darkness in the world and the price of dark is ruling the world. It is really a serious problem. Is there any solution to this problem ? When we look for the solution, Christopher Marlowe's tragedy Doctor Faustus gives us the way to overcome this problem. Marlowe's Doctor Faustus highlights Ignatian Discernment of Spiritswhich helps us how to become aware of the various motions, impulses of good and evil spirits in our hearts and encourages us accept them if they are from good spirit and reject them if they are from evil spirit. Then what is Discernment of spirits which Marlowe teaches us through his Tragedy Doctor Faustus ? Discernment of spirits is a gift of God to all human. Beings in this world. It enables mankind to discern good and bad. God has given mankind the reasoning power and free will ; and man has the freedom of choice. Man can have Redemption from evil and have a happy life if he uses Ignatian Discernment of spirits.

St. Ignatius of Loyola, the founder father of the Society of Jesus formulated14Rules for Discernment which are widely known as Ignatian Discernment of spirits. He has written these rules in his book Spiritual Exercises from section 313 to 327. He has written these rules based on his experience of life . Loyola was born in Spain in 1491. He served as soldier and was wounded in a battle in 1521. While he was convalescing from his sickness, he underwent many impulses/motions of Good spirit and Evil spirit. He treasured his experiences of tackling these motions of spirits and developed 14 Rules for Discernment. He wrote down these rules of Discernment in his book Spiritual Exercises which was published in 1588. What is Ignatian Discernment of spirits ? Fr. Timothy Gallagher says that a process by which we become aware of the movements in our hearts, understand where they come from and either to accept them or to reject them. St. Ignatius of Loyola says that Discernment of spirits is the capability of being consciously aware of, perceiving and understanding the various motions caused in our souls by the spirits and accept or reject them having the sight of their origin and end (Sp. Ex. 313). He means the thoughts, imaginations, affective feelings, inclinations, urges, peace, warmth etc. caused in our souls and accept them if they are from Good spirit and leads you to good end and reject them if they are from Evil spirit and leading you to bad end.

Jesus says ''Beware of the false prophets, they come to you disguised as sheep, but inside they are wolves, you will recognise them by their fruits''(Mt.7;15-16)

Ignatian Discernment of spirits can be practised in everyday life. Prayers, contemplation, meditation, reflection, retreat and examination of conscience are some of the important means through which one can discern the various spirits and take the right decisions in one's life. Sigmund Freud's

psychoanalytical theory can interpret and analyse IgnatianDiscernment of spirits and the play Doctor Faustusin a better way. Freud's theory of Id, Ego and Superego can explain Good spirit, Evil spirit and human soul. Id represents evil spirit and speaks through senses and appeals for imagination and sensual pleasure. Superego represents Good spirit which speaks through conscience and appeals for morality in life. Ego is human being and human soul which focuses on reality. Ego tries to strike the balance between Id and Superego. People can be happy and prosperous in life if they strike balance in their lives. Ignatian Discernment of spirits has been explored and analysed in Christopher Marlowe's Doctor Faustus . The protagonist of the play Dr. Faustus suffers from internal conflict. He is pulled to opposite directions by the Good spirit and the Evil spirit. Dr. Faustus is ambitious and has inordinate affections, attachment toworldly things, so he meets damnation.

Christopher Marlowe might has been familiar with the book Spiritual Exercises of St. Ignatius of Loyola and so he has so nicely dealt the Rules for discernment in his tragedy Doctor Faustus. There are many events and instances in the play when the protagonist doctor Faustus is in dilemma. He tries to discerns the good and evil spirits, but because of his inordinate affections he meets damnation. In Act I Scenery I, when doctor Faustus is in dilemma to select the course of studies, the good spirit appears and suggests him to study Theology leaving Necromancy. But the evil spirit persuades him to study Necromancy which can give him name, fame, power, joy and prosperity.

Good Angel. Oh Faustus,lay that damned book aside,
and gaze not on it. Lest it tempt thy soul
and heap God's heavy wrath upon thy head !
Read, read the Scriptures :- that is blasphemy.
Evil Angel. Go forward, Faustus, in that famous art
wherein all nature's treasure is contain'd :
Be thou on earth as Jove is in the sky,
Lord and commander of these elements. (Act I Sc.I.)

In Act 2 Scene I, when Dr. Faustus thinks that he would be in the Hell forever and he should not think of God and Heaven anymore, the Good spirit and the Evil spirit reappear. The Good spirit suggests him to leave the study of Necromancy and asks him to pray to God for his mercy. The Evil spirit persuades him to continue to study Necromancy which can give him property and power.

Good Angel. Sweet Faustus, leave that execrable art.
Faustus. Contribution,prayer, repentance – what of them?
Good Angel. Oh they are means to bring thee unto heavens !
Evil Angel. Rather illusions, fruits of lunacy,

That makes men foolish that do trust them most.

Good Angel. Sweet Faustus , think of heaven and heavenly things.

Evil Angel. NO Faustus, think of honour and of wealth.(Act 2.Sc.I.)

In Act 2 Scene 2, when Dr. Faustus repents for the Agreement with Devil, The Good spirit and the Evil spirit appear before him. The Good spirit asks him to repent for his sins and suggests him to pray for the mercy of God. The Evil spirits threatens Dr.Faustus to meet the dire consequences if he repents.

Good Angel. Faustus, repent, yet God will pity thee.

Evil Angel. Thou art a spirit; God cannot pity thee.

Faustus. Who buzzethin my ears I am a spirit?

Be I a devil, yet God may pity me;

Aye, God will pity me, if I repent.

Evil Angel. Aye, but Faustus never shall repent. (Act 2. Sc.2.)

In Act 2 Scene 2, when Dr. Faustus scolds Mephistophilis for making him sinner and when he plans to repent sincerely for his sins, The Good spirit and the Evil spirit appear before him once again. The Evil spirit threatens Dr. Faustus saying that the devil will tear him to the pieces if he repents. The Good spirit tells him that the devil can not touch him if he really repents for his sins.

Good Angel. Think Faustus, upon God that made the world.

Meph. Remember this.

Faustus. Aye, go, accused spirit, to ugly hell !

Tis thou hast damn'd distressed Faustus' soul

Is't not too late ?

Evil angel. Too late.

Good angel. Never too late, if Faustus can repent.

Evil Angel. If thou repent, devil shall tear thee in pieces.

Good Angel. Repent,and they shall never raze thy skin. (Act.2 Sc.2.)

Christopher Marlowe shows us the ways to discern good and bad. He shows us how Evil and Good spirits work in our souls by their various tactics. It is our duty to be aware of them judge them and accept or reject them seeing their origin and end. We are having our shortcomings/ tragic flaws in our lives which prevent us from Discernment. If we are indifferent and detached from shortcomings/ tragic flaws, we can discern the Good spirit and Evil spirit and we can have redemption from Evil.

Conclusion :-

Christopher Marlowe wrote Doctor Faustus 430 years ago, but it is still relevant to the present

time. There are many problems in the world like terrorism, naxalism, exploitation, harassment, depression, suicide, unhappiness, loneliness, rape, murder and uneasiness. They are closely related to mental disorder. St. Ignatius of Loyola had developed the Discernment of spirits before 470 years and treasured it inSpiritual Exercises. He formulated it for people's good spiritual life. Christopher Marlowe was indeed influenced by Ignatian Spirituality, so he wrote the play Doctor Faustus basedon Christian Theology and Ignatian Spirituality. The play displays the internal conflict of the character. The protagonist Dr. Faustus is divided and pulled to opposite directions by the Good spirit and the Evil spirit. He has reasoning power, free will and freedom of choice, but because of inordinate affections, attachments or tragic flaw he meets damnation. Christopher Marlowe's tragedy Doctor Faustus can solve the present mental problems of the society. People can learn the lesson and by practising IgnatianDiscernment of spirits, they can save their souls and lead a happy and prosperous life.

Works Cited :-

1. Demage,Lewis,S.J. ,The Spiritual Exercises of St. Ignatius, Trans, Joseph F. Wanger, Ino, Newyork,1968.
2. Ganas, George E. S.J., The Spiritual Exercises of St. Ignatius, Gujarat Sahitya Prakashan, Anand, India, 1970.
3. Gallagher, Timothy, Discernment of Spirits : An Ignatian Guide for Everyday Living, US, Crossroad Publication Co., US, 2005.
4. Loyola, Ignatius, Spiritual Exercises, Spain,1548
5. Marlowe, Christoper, The Tragic History of Doctor Faustus in the complete Plays, Newyork, Penguin,1969.
6. Kostelac, Mary Elizabeth, Ignatian Discernment as seen in Shakespearean Tragedy, Washington D.C., Georgetown University, 2013.

Mob. No. - 9937396869

E-mail id - anilkumartiriya@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 173-178

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

A STUDY OF GENERATIONAL CONFLICTS IN STORIES AND NOVELS OF JHUMPA LAHIRI

Jyoti Soni
UGC NET DECEMBER 2021,

ABSTRACT :-

The unprecedented Indian-American is apparently keen to quickly clarify the amicable split. The family turns into an extreme front where evolution clashes with tradition, where Indian culture clashes with American culture, and where speculation clashes with system. American culture tends to turn to correspondence outside the home as a side interest. Indoors, exceptional Indian-Americans attempt to preserve their social and abusive heritage and are expected to protest according to Indian social characteristics.

For second-generation Indian Americans, "the energy of being in the middle is particularly emphasized." Like his family, the second generation Indian American divides his life. At home and in the surrounding area, they are seen for the compromising Indian lifestyle created by their family and more noticeably the area. Conflicts regularly emerge from the social conflict of American Open Door versus Indian Communalism. This paper revolves around this social struggle in Lahiri's Namesake.

KEYWORDS :- Generation, Conflict, Namesake

INTRODUCTION :-

The paper draws on the adherence to old and new views of first and second generation untouchables as can be found in Jhumpa Lahiri's The Namesake (2003). In this novel, Lahiri examines the spiritualist status of the essential outcasts Ashima and Ashok and the second-generation untouchables, Gogol, Sonia and Moushumi. Smartly reveals on an incredibly fundamental level how the nation's opportunity creates an environment for building character of home and closeness. In this time of movement, 'home' suggests its ephemeral quality, takeoff and ejection. To the specially trained, home is communicated more as an impression of being between two places rather than as a place out of place. In the novel, Ashima's impression of being at home is linked to the middle country, for example India. Furthermore, the selves of Gogol, Sonia and Moushumi must co-exist with the United

States, their formative stage.

In Lahiri's novel, the essential Untouchables, both male and female, who share a history and culture share the inseparable quality of relationships as they adjust to life in another country. They know what the lounge area says, their 'being'. They provide only a handful of host cultures to deter at home. Ganguly remained conscious of his links with Indian culture, through the spread of customs and mingling with his Bengali peers and frequent visits to India. Food is one of the various factors that helps spread the connection between Ashoka, Ashima and their country. Apparently when Ashok and Ashima need to make an urgent decision, they advise the people of their region: "Steps, each receiving, how little attention, unify the idea, Interview with Bengali colleagues " (64). They cling to their party and culture while trying to preserve their individuality. Like every leading pioneer, they believe their teenagers should learn American English, change teaching and great positions; In the interim they request him to practice the Indian Moral and Social Code at home. They go for a Kathakali dance performance or sitar show in the confirmation segment. When Gogol is in the third grade, they send him to Bengali language and culture every other Saturday, which is held at the house of one of his friends.

Jhumpa Lahiri's novel, The Namesake portrays the tussles and troubles of a Bengali couple who move to America in order to shape the simple appearance they are known to have. It tests a proper and rich construction of the social individual, rootlessness, customs and family concepts. In her fiction, memory, meditation, failure and longing are part of the obvious themes. His records portray people who have moved across countries longing for each other's lives, yet the extras there as shadows to help them investigate their unusual roots. This novel is a record of such experiences, a glimmering fragment of a micro family traveling between two universes.

In The Namesake, character is created by truly eliminating the importance of one's identity, name, and culture. Important characters in the story attempt to uncover the reasoning behind their parents, which they believe will influence their own openness to the overall people they have been raised in. The novel portrays the tussles and troubles of a Bengali couple, who move to America to make a regular appearance beyond everything they know much about. The story begins when Ashok and Ashima leave Calcutta to settle in America. When the principal opens we see that Ashima is pregnant and has fourteen days left for her proper transportation. She is battling mid-local sensibilities and harassment. She calls her husband Ashok, who is a doctoral student in electrical engineering at MIT. She doesn't name him, but instead evokes curiosity that has come to override it, which is for the most part "Are you focusing on me?" appears as (Lahiri, 2).

The tone of the novel is set entirely in the first district that the specially organized customs

and kinships that were vast for their social heritage in India would on the other hand come distinctly with the practices and components of the new land. Ashima never thinks of her best friend's name when thinking of her ideal partner, even though she knows very well what it is. She doesn't understand his name as fellow Bengalis don't. (Lahiri, 2). When Ashima is left in the middle, his normal relationship with the country really takes the lead. She imagines "It is wonderful that her young man would be brought up in a world where a great number of individuals either enter to get ahead or who fail spectacularly" (Lahiri, 4).

This was the essential time in his life when he rested alone while circumambulating by the untouchables. She struggles to adjust to her achieved social lifestyle as she is not yet isolated from a distant culture. She is lost in her liberal outlook and the requirements of living in Calcutta, where women return to their families to consider full partners in governance and replacement from guardians (Lahiri, 3). In the course of events Ashima finally brings forth a child. The standard naming cycle in their families is to have a senior who will give a name to the new young. They compose a letter to Ashima's grandmother in India. The letter never appears, and after a short time, the grandmother passes away. As indicated by Bengali culture, Ashoka proposed the name Gogol, a tribute to the eminent Russian producer Nikolai Gogol, to be the teen's pet name, not expected to be used by anyone other than the family. . Entering kindergarten, Ganguly tells his child that he will be known as Nikhil in school. A five-year-old article and intervention by the School Alliance introduced him to school as Gogol. This was the beginning of his investigation inside and out.

REVIEW OF RELATED LITERATURE :-

In Jhumpa Lahiri's The Namesake, the Bengali expatriate community has left Bengal and stood at another location in Boston to observe Durga Puja and Saraswati Puja and thus stay connected to their religion. Regardless, for characters such as Ashima, such festivals are less about religion and more about revising relationships with the old world – the home they have left behind. Ashima's life somewhere far away, shrouded in infamy, is full of great openness, fulfilled by terrible extraordinary times. [1]

Clearly, Gogol and Sonia, who are conceived of and brought up entirely in the West, find their family's extravagant inclinations exacerbate their exile status. Their self-trim as Westerners takes a blow every time they experience a particular piece of their parent either physical or immaterial. [2]

As often as possible second generation transients are progressive against their faltering position. Ganguly "celebrates, with coherent detail, the presentation of Christ, an event that children expect altogether more than the worship of Durga and Saraswati" (Lahiri, Namesake). Despite this, when Sonia, in her growing up years, refused to bring her Christmas presents about taking Hinduism classes

at school, "struggling that they were not Christian" (Lahiri, Namesake) . [3]

In 'The Namesake' she traces the presence of two generations of the Gangulis, a leading Bengali family, in America. One day it may even be considered that in the diaspora piece, the characters of the individuals are passionately attached to the place they are in and settled. Jhumpa Lahiri's imagination, they research this space-character's companion especially clearly. Furthermore his works exist as areas of a mixture of diaspora subjects, generations and social systems, and as larger spaces or 'third places'. [4]

These places can also be referred to as 'contact zones' – where social orders meet in the wrong deals. Such spaces generally do not highlight the geopolitical reality of progress and the diaspora in any event suggests a third space opportunity in a way that transcends local stability. In this way Jhumpa Lahiri's works express the generalities of a journey that eludes the longing of the subject which many consider comprehensible for mobilizing a distinctly cosmopolitan subjectivity. Many of the characters in his novels appear as elemental tenants of the room, which suggests early on in their common or social spheres. [5]

When caught in such questionable places, his characters make use of hybridization, a psycho-social method to feel at peace in their state of vagrancy. When this hybridization becomes frustrated with respect to a third place of a diaspora subject, it turns into a contraption, a system to help social contacts with respect to personal relationships, food, and customs. This speculative perspective implied by the maker is helpful in thinking of pieces of clothing, language, music, film, and food as spatial connectors among diasporas. [6]

The creator uses both language and images to express his ideas. The first is the language, the essayist uses English to understand it because so far most of the places are in America. Manufacturer basically the word Indian means Indian which cannot be loosed in English. The second is the picture, the creator uses the picture to express his ideas but the picture is only of a small scale. For example, she uses the sweatshirt which is a standard surface of India. If a woman can make a sweatshirt, it means she has grown up and is ready to marry a man. Annaprasan is a standard boundary in relation to Bengali youth. [7]

GENERATIONAL CONFLICTS IN STORIES AND NOVELS OF JHUMPA LAHIRI :-

In America the young man who is brought into the world in the workplace must have a name. Gogol is the Indian youth who is brought into the world in America. Her family is not aware of the name rule in America as told in the primary The shocking news is that they have been told by Mr. Wilcox, the compiler of medical center birth certificates, that they must choose a name for their child . Because they find that in America, a young person cannot be released from the workplace

without birth support. Furthermore, a name is needed to ensure birth (The Namesake, 2003:27).

Ashok decides to pass on his #1 Maker to his young adult self. He sees that Nikolai Gogol has saved her and her child as found in Ashima's essential embrace, noting that the name affects the life of her child, but that of her ideal mate (The Namesake, 2003: 28).). "I don't propose it," says Mr. Wilcox, "the law of renaming youth and renaming in America is reflected in the story." "You must appear under the careful point of convergence of an adjudicator, pay a fee. Managerial turmoil is constant" (The Namesake, 2003:27).

There are certain customs and limitations in the book. Within the confines of an Indian wedding, there are certain customs. The first is the ability to marry. To make the woman more beautiful, her makeup will be done. The woman's father will rise to a meter and move forward to meet the sidekick. The substance of the feminine essentials is off for Express Blooms. After marriage, the fulfillment of the partner's name is changed to the name of his life partner. Ashima Bhaduri's name was changed to Ashima Ganguly.

The importance of the social characteristics reflected in Jampalahiri's books is at a new turn of conflict events and the course of action of the society is so common. Her records, which are parts of a large-scale tapestry of "Indian" and "American" life, contain many conflicts of culture and character that radiate with social ramifications. The insistence is evident in Lahiri's novels considering the character's multiculturalism and character. In this evaluation paper, Excellent Motivates for Evaluating the Character of the Solitary examines the social theme among characters in books by the Humanist Group in the English Union. Lahiri's records look at another model of the truly American man. This war is carried out on culture, in line positions, in interstitial places.

When is there a social battle in which different gatherings have different ideas of engaging ways to manage acting. When does the battle of cultures take place in the novel "The Namesake" in which Gogol decides to name his most formidable name, Nikhil, in the middle of the year before going to Yale?

Incidentally, paying little respect to the way any record conveys surprising new turns of events or character situations, Earth as a collection is not used to it, unusually bound together. All records revolve around people from Bengali families visiting England or America. All are brilliantly haughty, coordinated depictions of the complex idea of the common program of these families; Life, love, and all that process of creating and furthering characters doesn't happen long after the lovemaking provocations.

The chief portrayed the individual Bella who faithfully adheres to American culture. Thus, multiculturalism in anthropology is the view that social divisions should be respected. Sociologists

use the term multiculturalism to describe a way to monitor the trend toward social hierarchy within a population. In this assessment, the culture and character of war are treated as an essential character in Lahiri's books by a humanistic survey.

Jampa Lahiri is a distinguished Indian American producer of Bengali origin. Her novel deals with the presence of Indian-Americans, especially Bengalis. In Lahiri's approach, she features characters who are brought up in the world in India and taken overseas when needed or characters who are brought up in the world in America but whose family comes from India. Jampa Lahiri portrayed the presence of Indians who migrated from India to foreign countries and monitored various issues of conflict culture and war character. In fact, the characters reveal that his character has an expedient connection with his Indian culture, so he is experiencing social conflict and has lost his individuality. In spite of the way that they live in America with another culture, they need their children or the second time of pilgrims to get to Indian culture. The second period of untouchables likes to use American culture since they were brought into the world in America. They are moreover brought up in American as American occupants, despite the way that they are genuinely Indian.

CONCLUSION :-

Ensuing to analyzing the first The Namesake to appreciate how the conflicts of social characteristics are reflected, the maker wraps up the result considering humanistic assessment, it might be assumed that in the late twentieth The social piece of America in the principal century is reflected in The Namesake Novel. Jhumpa Lahiri suggests character and depiction, setting, plot, subject as pictures to put his contemplations into the formation of an insightful work. She also gets a handle on the irrefutable underpinning of that time like social, money related, political, social, religion and science and development point. He has examined in amicable culture that the first of outsiders from India who move to America like to use Indian culture.

REFERENCES :-

1. Lahiri, Jhumpa, The Namesake. New Delhi: Harper Collins, 2003. Print
2. Contemporary Diasporic Literature. Ed. Manjit Inder Singh. Delhi: Pencraft International. 2019. Print
3. Keysar (2019). "American Religious Identification Survey (ARIS) 2008" (PDF). Hartford, Connecticut, USA: Trinity College.
4. Siegel. 2018. “In Paid Family Leave, U.S. Trails Most of the Globe”. The New York Times.
5. Huntington, Samuel P. 2017. American Politics: The Promise of Disharmony. Harvard University Press.
6. John, Oakland. 2017. American Civilization: An Introduction. London: Routledge.
7. Morelock, Jessica. 2016. Social Structure in America.
8. Huntington (2015). American Politics: The Promise of Disharmony. Harvard University Press.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 179-181

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्वीकरण से जनजातीय समाज में सामाजिक परिवर्तन

ओमप्रकाश जारोडिया

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र (विद्या संभल) राजकीय महाविद्यालय, हदां बीकानेर।

वैश्वीकरण वह वृहत प्रक्रिया है जिसने सम्पूर्ण विश्व के समाज के मध्य सामाजिक सम्बन्ध एवं उनकी अंतर्निभरता को प्रारम्भ किया। वैश्वीकरण एक नया प्ररिप्रेक्ष्य देता है कि हम दुनिया के अन्य समाजों के साथ कैसे सम्बन्ध रखें। विश्व के किसी भी क्षेत्र की समस्याएं हमारे जीवन को प्रभावित कर सकती है। अतः वैश्वीकरण ऐसे नये विश्व परिदृश्य को स्थापित करता है जिसमें आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि सभी संस्थागत क्षेत्रों में तीव्र बदलाव दिखाई देता है। राष्ट्र–राज्य इकाइयां इस प्रक्रिया में कमजोर पड़ रही है तथा राष्ट्रों की अंतनिर्भरता बढ़ रही है।

लगभग गत तीन दशकों से प्रचलन में आया 'वैश्वीकरण' शब्द आज पूरे विश्व में एक ऐसी आंधी है जिसने आधुनिकता एवं उत्तर–आधुनिकता को भी मात दे दी है। प्रारम्भ में आर्थिक संदर्भ में प्रयुक्त वैश्वीकरण की अवधारणा एल.पी.जी अर्थात् उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण का अंतिम तथा महत्वपूर्ण भाग बनी थी। बाद मे जल्दी ही वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने अपना स्वायत्त रूप ऐसा बनाया कि उसकी दखल ने राजनीति, संस्कृति, समाज, तकनीकी, सूचना–तकीनकी, संचार मीडिया, धर्म–संसार आदि को प्रभावित किया तथा इन सभी से वैश्वीकरण की प्रक्रिया भी प्रभावित होने लगी। अब तो सर्वत्र विश्व गाँव, विश्व शहर, विश्व दृष्टि, विश्व दिवस, विश्व बाजार आदि अनेक संदर्भ हैं जिनमें 'विश्व' विश्लेषण लगाने से वैश्वीकरण की प्रक्रिया का परिणाम परिलक्षित होता है।

अपनी रणनीति में लापरवाही बरत रहे थे, अपनी सुविधा की अर्थव्यवस्था चला रहे थे और तब संकट हमारे सिर पर आ ही गया।'

उधार दाताओं के विश्वास में कमी :–

भारत में कर्ज लिए थे, कर्ज भी कई तरह के थे फिर भी सब कुछ ठीक–ठाक ही चल रहा था। इधर देश का आंतरिक संकट गहरा गया। केवल 4 महीने की अवधि में नवंबर 1990 से 1991 तक दो बार केंद्र में सरकारी गिर गई। फरवरी 1991 में केंद्रीय बजट संसद में पेश नहीं किया जा सका और और भी कुछ ऐसी घटनाएं घटी जिनके कारण उधर दाताओं का भरोसा हमसे हट गया। हमारी उधारी को संदेह की दृष्टि से देखा जाने लगा। अब यह संभव नहीं रहा कि हमारे अल्पावधि के खर्च को आगे बढ़ाया जा सके। हमारी सारी कोशिश नाकामयाब रही न तो आगे कर्ज लेना हमारे लिए संभव रहा और न कर्ज की किश्त चुकाने की अवधि बढ़ाई जा सकी।

ढांचागत अनुकूलन :-

हमारे देश में वैश्वीकरण ढांचागत अनुकूलन के माध्यम से आया। जैसा कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक के काम करने का तरीका हैं उन्होंने भारत को स्थाईकरण का विकल्प दिया। अर्थशास्त्र में भी स्थाईकरण का वही मतलब होता है जो चिकित्साशास्त्र में। जिस तरह किसी मरीज की संकट पूर्ण अवस्था में चिकित्सक उसके स्वास्थ्य को स्थाई अवस्था में लाने का प्रयास करता है वैसे ही अर्थशास्त्र में भी अर्थव्यवस्था को स्थाई बनाने की कोशिश की जाती है। यह स्थाईकरण तब किया जाता है जब अर्थव्यवस्था संकट के दौर से गुजर रही होती है। आर्थिक स्थाईकरण के किसी भी कार्यक्रम के दो बुनियादी उसूल होते हैं। एक तो ये भुगतान की रकम जिसका चुकारा बाकी होता है, उसे डूबने नहीं दिया जाए और दूसरा यह है कि मुद्रास्फीति को रोक दिया जाए इस तरह के सही कारण में कर्ज को चुकाना और मुद्रास्फीति को तो समस्या समझ गया लेकिन इस त्थय पर कोई ध्यान नहीं दिया गया कि इससे गरीबी बढ़ जाएगी और लाखों लोग बेरोजगारी के शिकार हो जाएंगे।

अब इस नीति के परिणाम स्वरूप देश में उदारवाद और निजीकरण आये। सामान्य अर्थों में उदारवाद का मतलब आयातऔर निर्यात के नियमों में छूट। वैश्वीकरण से पहले हमारे यहां आयात पर बहुत बड़ा टैक्स देना पड़ता था। ऐसी कुछ पाबंदियां निर्यात में भी थी। अब ये सब नियम बहुत उदार बना दिए गए। उदारीकरण की नीति के अंतर्गत विदेशी निवेश में छूट भी होती है।

भादुड़ी और नैयर (1996) ने भारतीय वैश्वीकरण की व्याख्या तीन तत्वों से की है। वे कहते हैं कि इस प्रक्रिया में सबसे बड़ा तत्व व्यापार का है, दूसरा निवेश का और तीसरा वित्त का। इस प्रक्रिया द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोश और विश्व बैंक यह चाहते हैं कि यहां नई तकनीकी, सूचनाओं और सेवाओं का विस्तार हो।

वैश्वीकरण और उदारीकरण ने स्थानीय धन्धो और स्वदेशी उत्पादन को बड़ी ठेस पहुचाँई। हमारे यहां उत्तर–आधुनिक समाज का सूचना समाज अभी ठीक से विकसित नहीं हुआ है, तकनीकी तंत्र का ज्ञान भी अभी बहुत पिछड़ा हुआ है। हम दुनिया के विकसित देशों के बाजार में ठीक से प्रतियोगिता नहीं कर सकते। हमारा माल इस बाजार में टक्कर नहीं ले सकता। परिणामस्वरूप हमारे ही स्थानीय बाजार में हम उत्पादन नहीं बेच पाते। हमारे स्थानीय कारखाने एक के बाद एक बंद होने लगे हैं। मन्दी जानलेवा हो गई है। बेरोजगारी आसमान को छू गई है। भारतीय संदर्भ में आर्थिक वैश्वीकरण का अर्थ उदारीकरण, निजीकरण, व्यापार, निवेश, आयात और निर्यात से लिया जाता है।

हमें अंतरराष्ट्रीय दबाव में आकर अपने कर्ज को अदा करने के लिए अपने अर्थव्यवस्था में ढांचागत परिवर्तन करना पड़ा। इसके परिणामस्वरूप जो नई अर्थव्यवस्था आई उसे हम अवधारणात्मक रूप में क्या नाम देंगे? इस अर्थव्यवस्था की पहचान क्या है?

वैश्वीकरण का जनजातीय समाज पर प्रभाव :-

समाज के पिछड़े एवं कमजोर वर्गों, विशेषकर जनसंख्या वृद्धि के मुकाबले ये अवसर कम हैं।

साक्षरता एवं प्रारंभिक शिक्षा का स्तर तो जनजातीय समाज में भी बहुत बड़ा है किंतु उच्च शिक्षा, व्यवसायिकएवं तकनीकी शिक्षा का आज भी प्रसार बहुत ही कम होने से इन वर्गों को निजीकरण का आर्थिक लाभ पूरा नहीं मिल पा रहा है। आज शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में निजीकरण हो जाने से यह सेवाएं

महंगी हुई है जो कि कमजोर वर्गों की पहुंच के बाहर है। आरक्षण की नीतियों का केवल कुछ ही लोग लाभ उठा रहे हैं नए–नए निजी विश्वविद्यालयों, तकनीकी एवं व्यवसायिक महाविद्यालयों का प्रबंधन एवं संचालन नव धनाढ्य वर्गों के हाथों में होने से उनका लाभ भी उन्हीं को पहुंचता है तथा कमजोर वर्ग के लोग तो उनकी पहुंच से बाहर ही रह जाते हैं।

जो सांस्कृतिक एवं सामाजिक अवसर जनजाति समाज के लिए वैश्वीकरण से बड़े हैं। वे भी उन्हें केवल सीमांत स्थिति तक भी पहुंचाते हैं। उनका निर्वाह हो सके उतनी आमदनी नई अफसरों से मिलती है। वास्तविक लाभ तो वह बिचौलिए, व्यापारी या एजेंट काम ले जाते हैं जो प्राय स्वर्ण जातियों के ही होते हैं। क्योंकि उन्हें के पास पूंजी निवेश के साधन होते हैं।

उपभोक्तावादी संस्कृति एवं कर्ज के आधार पर जीवन–शैली चलाने की नई प्रवृत्ति ने जनजातीय समाज में भी असंतोष एवं व्यक्तिवादी स्वार्थ की भावना को बढ़ावा दिया है। उनमें भी सामुदायिक भावना का क्षय हुआ है।

संविदा पद्धति सामाजिक सेवाओं के प्रारंभ हो जाने से जनजाति समाज को केवल निर्वाह वेतन देकर उनका शोषण किया जाता है। हर समय उनकी नौकरी छीन जाने का खतरा बना रहता है।

विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र की नीतियों को भी वैश्वीकरण की नई आर्थिक दशा माना जाता है। भारत में इनके अपनाये जाने से यद्यपि सभी वर्गों को अधिक रोजगार एवं आर्थिक गतिविधियां तथा संपन्नता के नए अवसर मिलने की बात की जाती है किंतु किसानों मजदूरों एवं कमजोर वर्गों के लोगों को उस अनुपात में नहीं पहुंचते जिनके का हकदार होते हैं।

उपयुक्त विश्लेषण से यह तो स्पष्ट हो ही जाना चाहिए कि वैश्वीकरण पूंजीपतियो, नव धनाट्य वर्गों एवं स्वर्ण जातियों के लोगों के लिए लाभकारी एवं सकारात्मक साबित हुआ है। क्योंकि शैक्षिक, अवसर, रोजगार, आर्थिक संसाधनों में वृद्धि, सामाजिक कुरीतियां एवं सामाजिक असमानता समाप्त हुई, राजनीतिक क्षेत्र में भागीदारी एवं अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

जनजाति समाज के लोगों को यद्यपि इसके कुछ लाभ अवश्य हुए हैं, किंतु तुलनात्मक में अभी भी कमी नहीं हुई है –जैसे परंपरागत मूल्यों का हास एवं भौतिकवादी समाज हो गया। जिससे जनजातीय समाज अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को भूल गया है। कुटीर उद्योग धंधों पर कुठाराघात हुआ है।

References :-

1. Bhaduri, Amit and Nayyar, Deepak, (1996)
2. The intelligent Person's Guide to Liberalizatio. New Delhi:Penguin
3. Robertson, Ronald, (1992) Globalization : Social Theory and Global culture, London: sage.
4. Waters, Malcolm, (1998) Globalization, London Routledge.
5. Yogendra Singh, (2000) Culture Change in India, Rawat, Jaipur.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 182-184

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

रेगुलेटिंग एक्ट का भारतीय प्रशासन पर प्रभाव : ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में

Dr. Vikram Singh Deol

PROFESSOR IN HISTORY,

DR. BHIM RAO AMBEDKAR GOVERNMENT COLLEGE, SRI GANGANAGAR

ईस्ट इंडिया कंपनी मूलतः एक व्यापारिक कंपनी थी, जिसका ढ़ाँचा पूर्वी देशों के व्यापार के लिए बनाया गया था। इसके सर्वोच्च अधिकारी भारत से हजारों मील दूर इंग्लैंड में रहते थे, फिर भी, इसने करोड़ों लोगों के ऊपर राजनीतिक आधिपत्य जमा लिया था। इस असामान्य स्थिति के कारण ब्रिटिश सरकार के सामने अनेक समस्याएँ खड़ी हो गई, जैसे–ईस्ट इंडिया कम्पनी और उसके साम्राज्य का ब्रिटेन में बैठे कंपनी के अधिकारी किस तरह नियंत्रित करें? भारत स्थित अधिकारियों कर्मचारियों और सैनिकों पर कैसे अंकुश लगाया जाए? किस तरह बंगाल, मद्रास और बंबई में बिखरे हुए कंपनी के अधिकार–क्षेत्रों के लिए भारत में एक ही नियंत्रण–केंद्र स्थापित किया जाए?

किस प्रकार ब्रिटेन के उभरते उद्योगपतियों को लाभकारी भारती व्यापार और भारत की विशाल संपत्ति में हिस्सा देकर संतुष्ट किया जाए आदि। इन समस्याओं के समाधान और ब्रिटिश राज्य तथा कंपनी के अधिकारियों के पारस्परिक संबंधों के पुनर्गठन के लिए समय–समय पर अनेक अधिनियम और अध्यादेश पारित किये गये, जिनके द्वारा भारत में संवैधानिक विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। बंगाल में द्वैध शासन के अधीन कंपनी के कर्मचारियों ने बंगाल को दिल खोलकर लूटा, जिससे समस्त प्रशासन अस्त–व्यस्त हो गया और बंगाल का पूर्ण विनाश हो गया। 1772 में वारेन हेस्टिंग्स के भारत आने के पहले तक अंग्रेज व्यापारी बंगाल से लूटे हुए सोने के थैले लेकर इंग्लैंड लौटते रहे और अपनी फिजूल खर्ची से अभिजात वर्ग के मन में ईर्ष्या उत्पन्न करते रहे। पिट ज्येष्ठ ने इनको अंग्रेजी नवाबों की संज्ञा दी और आशंका व्यक्त की कि इस अपार धन से कहीं वे ब्रिटिश राजनीतिक जीवन को भ्रष्ट न कर दें। एच.एच. डाडवैल ने लिखा है : न केवल भारत में कुशासन द्वारा अंग्रेजी

नाम को बट्टा लगने का भय था, अपितु यह भी भय था कि इंग्लैंड में भारतीय व्यापार में लगे लोग, जिन्हें अपार धन उपलब्ध था, भ्रष्ट संसदीय प्रणाली के कारण गृह मामलों में प्रभावशाली तथा अनुचित शक्ति प्राप्त करने में सफल न हो जायें। इसलिए इंग्लैंड में यह माँग की जाने लगी थी कि कंपनी के मामलों में संसदीय हस्तक्षेप किया जाना चाहिए।

इंग्लैंड में कम्पनी की प्रशासनिक संरचना :–

इंग्लैंड में कंपनी के प्रशासन के दो मुख्य अंग थे–कोर्ट आफ प्रोप्राइटर्स तथा कोर्ट आफ डाइरेक्टर्स, जो कंपनी के मामलों पर नियंत्रण रखते थे। कोर्ट आफ प्रोप्राइटर्स के वे सदस्य जो छः माह से अधिक समय तक 500 पौंड से अधिक के शेयर धारक होते थे, वोट देकर कोर्ट आफ डाइरेक्टर्स का चुनाव करते थे। निदेशक का पद बहुत महत्वपूर्ण होता था और धनवान भागीदार शेयरों को एकाधिकार में लेकर निदेशक बनने का प्रयास करते थे। मतों का यह क्रय–विक्रय और इससे संबद्ध कुकर्म ब्रिटिश जनता या सरकार से छुपे हुए नहीं थे।

कम्पनी की वित्तीय स्थिति :–

बंगाल से दीवानी की अत्यधिक धन–वसूली की आशा में कंपनी के भागीदारों ने 1776 में लाभांश 6 प्रतिशत से बढ़ाकर 10 प्रतिशत और अगले वर्ष 12.5 प्रतिशत कर दिया। इतने अधिक लाभांश को देखकर अंग्रेजी सरकार ने संसद के अधिनियम द्वारा कंपनी को आज्ञा दी कि कंपनी दो वर्ष तक सरकार को 400,000 पौंड प्रति वर्ष देगी और फिर यह अवधि 1772 तक बढ़ा दी। किंतु 1771–72 में बंगाल में सूखा पड़ जाने के कारण फसलें नष्ट हो गईं। हैदरअली से संभावित युद्ध और कंपनी के कर्मचारियों की धन–लोलुपता कंपनी की वित्तीय स्थिति डावांडोल हो गई। कंपनी ने पहले ब्रिटिश सरकार को दिये जाने वाले 400,000 पौंड सालाना से छूट माँगी जिससे कंपनी पर ऋण की मात्रा बढ़ने लगी। 1772 में कंपनी ने वास्तविक स्थिति को छुपाकर 12.5 प्रतिशत लाभांश जारी रखा, जबकि कंपनी पर 60 लाख पौंड ऋण था।कंपनी को घाटे से उबारने के लिए डाइरेक्टरों ने बैंक आफ इंग्लैंड से 10 लाख पौंड के ऋण के लिए आवेदन किया। इससे ब्रिटिश सरकार को कंपनी की वास्तविक स्थिति को जानने का अच्छा अवसर मिल गया।

संसदीय जाँच समिति :–

नवंबर 1772 में ब्रिटिश सरकार ने कंपनी की कार्यविधि की जाँच करने के लिए दो समितियों की नियुक्ति की–एक प्रवर समिति, दूसरी गुप्त समिति। इन समितियों की जाँच में कंपनी के अधिकारियों द्वारा अपने अधिकारों के दुरुपयोग के कई प्रकरण सामने आये। जाँच समिति की रिपोर्ट के आधार पर भारत में कंपनी की गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए 1773 में ब्रिटिश संसद ने दो अधिनियम पारित किये–पहले ऐक्ट के अनुसार कंपनी को 4 प्रतिशत की ब्याज पर 14 लाख पौंड कुछ शर्तों पर ऋण दिया गया। दूसरा अधिनियम रेग्युलेटिंग ऐक्ट

था जिसके द्वारा कंपनी के कार्य को नियमित करने के लिए एक संविधान दिया गया।

सन्दर्भ ग्रंथ :–

1. "Regulating Act | Great Britain, Britannica.
2. The making of British India, Ramsay Muir Page.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 185-188

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना : स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के विशेष सन्दर्भ में

नारायण दास वैष्णव

अतिथि शिक्षक भूगोल, राजकीय कन्या महाविद्यालय खींवसर (नागौर)

जनसंख्या शिक्षा का प्रत्यय नवीन है जिसका सम्बन्ध जनसंख्या के आकार, वृद्धि अथवा ह्रास, संरचना, लैंगिक अनुपात तथा वैवाहिक आयु आदि के ज्ञान से है। इसी जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत जनसंख्या की वृद्धि और ह्रास के कारणों, उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी भी सन्निहित है। वस्तुतः जनसंख्या शिक्षा कुटुम्ब को छोटा या बड़ा रखने का परामर्श देने वाली शिक्षा से भिन्न है। जनसंख्या शिक्षा का सम्बन्ध सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक उत्थान से है तथा जनसंख्या नीतियों और कार्यक्रमों का राष्ट्र के विकास कार्यक्रमों से सम्बन्धित होना आवश्यक है। इस दृष्टि से जनसंख्या–शिक्षा जीवन स्तर को उच्च बनाने तथा सुखी जीवन की सम्भावनाओं की वृद्धि करने वाली शिक्षा है। राष्ट्र की प्रगति में जनसंख्या तथा उपलब्ध प्राकृतिक एवं भौतिक संसाधनों का क्या सम्बन्ध है, वे किस तरह एक दूसरे को प्रभावित करती हैं, इसका अध्ययन करना तथा सुझाव देना है।

प्रस्तुत शोध कार्य स्नातक स्तर के कला तथा विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं तथा स्नातक स्तर के शिक्षकों पर अधारित है। यह कार्य जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान तथा जनसंख्या शिक्षा की संचेतना सम्बन्धी परीक्षण के आधार पर किया गया है।

जनसंख्या शिक्षा वह शैक्षिक कार्यक्रम है जो परिवार, समुदाय, राष्ट्र और विश्व के संदर्भ में जनसंख्या की स्थिति का अध्ययन करने के लिए, विद्यार्थियों में उचित, तार्किक और दायित्त्वपूर्ण दृष्टिकोण तथा परिवेश का सामना करने के लिए यथोचित व्यावहारिक गुणों का विकास करता है। वर्तमान समय में स्नातक स्तर के विद्यार्थी तथा शिक्षक जनसंख्या वृद्धि तथा उससे उत्पन्न होने वाली समस्याओं के प्रति कितना जागरूक हैं? इसी का अध्ययन प्रस्तुत शोध कार्य में किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

1. स्नातक स्तर के कला वर्ग के छात्रों तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा कला वर्ग की छात्राओं का जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध विधि :-

प्रस्तुत शोध कार्य विवरणात्मक शोध के अन्तर्गत सर्वेक्षण प्रकार का अनुसंधान है। सर्वेक्षण अनुसंधान किसी समुदाय के कार्य, व्यवहार, वर्तमान स्थिति तथा भविष्य की प्रत्याशाओं का आंकड़ों के आधार पर लिया गया निर्णय है इस प्रकार सर्वेक्षण अनुसंधान एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी समुदाय की रचना तथा क्रियाओं के सामाजिक पक्ष के सम्बन्ध में गणनात्मक तथ्य संकलित किये जाते हैं।

जनसंख्या तथा प्रतिदर्श :-

जनसंख्या के रूप में गोरखपुर मण्डल के स्नातक कला तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को लिया गया है तथा चयनित महाविद्यालयों के शिक्षकों को भी प्रतिदर्श में शोध हेतु सम्मिलित किया गया है, जबकि विद्यार्थियों का चयन निर्धारित संख्या के अनुसार यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

इस अध्ययन के प्रतिदर्श में 70 शिक्षकों, 100 स्नातक विज्ञान वर्ग के छात्र, 50 स्नातक विज्ञान वर्ग की छात्रायें, 100 स्नातक कला वर्ग के छात्र, 50 स्नातक कला वर्ग की छात्रायें यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किए गए हैं।

प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ :-

परीक्षण द्वारा प्राप्त आकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, तथा मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

शोध कार्य में प्रयुक्त परीक्षण एवं मापनी :-

शोध कार्य के सम्पादन में विद्यार्थियों तथा शिक्षकों पर 'जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान सम्बन्धित परीक्षण' तथा 'जनसंख्या शिक्षा संचेतना मापनी' का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान परीक्षण में 32 पदों को तथा जनसंख्या शिक्षा संचेतना मापनी में 35 पदों को सम्मिलित किया गया है। परीक्षण तथा मापनी में प्रयुक्त कुछ पदों के उदाहरण निम्नवत हैं –

जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान सम्बन्धित परीक्षण :–

1. जनसंख्या के आधार पर भारत का विश्व में स्थान है –

   (क) पहला (ख) दूसरा (ग) तीसरा (घ) चौथा

2. भारत में जनसंख्य वृद्धि दर है –

   (क) 2.4% (ख) 3% (ग) 3.4% (घ) 3.8%

जनसंख्या शिक्षा संचेतना मापनी :–

1. जनसंख्या शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में जागरूकता उत्पन्न होती है –

सहमत	अनिश्चत	असहमत
( )	( )	( )

2. जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से जनसंख्या वृद्धि का जीवन स्तर पर पड़ने वाले ऋणात्मक प्रभाव का ज्ञान होता है।

सहमत	अनिश्चित	असहमत
( )	( )	( )

आंकड़ों का विश्लेषण तथा व्याख्या :-

पूर्वनिर्मित परिकल्पनाओं के आधार पर आंकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण निम्नवत है –

परिकल्पना–1 : स्नातक स्तर के कला वर्ग के छात्रों तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान में सार्थक अन्तर है।

$H_0 : m_1 = m_2$

$H_1 : m_1 \# m_2$

सारणी – 1

	n	mean	S.D	o m	oD	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
कला छात्र	100	10.57	4.13	0.41	0.92	0.18	.05 पर	.01 पर
विज्ञान छात्राएँ	50	10.40	5.82	0.82			नहीं है।	नहीं है।

परिकल्पना–2 : स्नातक स्तर के कला वर्ग के छात्रों तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान में सार्थक अन्तर है।

$H_0 : m_3 = m_4$

$H_1 : m_3 \# m_4$

सारणी – 2

	n	mean	S.D	o m	oD	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
कला छात्र	100	10.96	3.31	0.33	0.58	3.93	.05 पर	.01 पर
विज्ञान छात्राएँ	50	8.68	0.40	0.48			नहीं है।	नहीं है।

परिणाम तथा निष्कर्ष :-

परिकल्पना 1 के लिए क्रान्तिक अनुपात का मान 0.18 प्राप्त हुआ है। जो कि .05 तथा .01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात स्नातक स्तर के कला वर्ग के छात्रों तथा विज्ञान वर्ग की छात्रओं की जनसंख्य वृद्धि के ज्ञान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः पूर्व में निर्मित शोध परिकल्पना अस्वीकार की जायेगी तथा शून्य परिकल्पना $H_0 : m_1 = m_2$ स्वीकार की जायेगी।

परिकल्पना 2 के लिए क्रान्तिक अनुपात का मान 3.93 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता के .01 स्तर पर सार्थक है, अर्थात 99: स्थितियों में स्नातक विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा कला वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान में सार्थक अन्तर है। यहाँ पर विज्ञान वर्ग के छात्रों का मध्यमान अंक कला वर्ग की छात्राओं के मध्यमान अंक से 2.28 अधिक है। अतः विज्ञान वर्ग के छात्रों की जनसंख्या वृद्धि का ज्ञान कला वर्ग की छात्राओं से बेहतर है।

शोध कार्य का शैक्षिक निहितार्थ :–

प्रस्तुत शोध कार्य के प्राप्त परिणाम तथा निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की जनसंख्या वृद्धि से सम्बन्धित ज्ञान तथा जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना का स्तर स्नातक कला वर्ग के छात्र–छात्राओं से उच्च स्तर का है जबकि महाविद्यालय शिक्षकों का जनसंख्या वृद्धि सम्बन्धी ज्ञान तथा जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना का स्तर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों से उच्च स्तर का है। अतः यह आवश्यक है कि कला वर्ग के छात्र–छात्राओं में भी जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता के स्तर को और अधिक बढ़ाया जायें।

किसी राष्ट्र की जनसंख्या वृद्धि में उस राष्ट्र में निवासित व्यक्तियों की मनोवृति, मान्यतायें, परम्परायें एवं समस्यायें मुख्य रूप से जिम्मेदार होती हैं। भारत सम्पूर्ण विश्व के 2.6% भूभाग में स्थित है। जबकि जनसंख्या में सम्पूर्ण विश्व का 15.8% हमारे देश में है। जब हमारे पास 2.6% भूमि है तो हमारी आबादी भी 2.6% के आस–पास होनी चाहिए अर्थात हमारी आबादी 16 करोड़ होना चाहिए थी किन्तु इसके स्थान पर आबादी एक अरब से भी ज्यादे हो गई है। यह स्थिति देश के विकास का मार्ग अवरूद्ध कर देती है। देश वर्तमान में जितना विकास कर रहा है, उससे अधिक हमारी आबादी बढ़ जा रही है, जिससे विकास अपर्याप्त साबित हो रहा है। अतएव यदि राष्ट्र को विकसित, समृद्धिशाली बनाना है तो जनाधिक्य पर नियंत्रण लगाना होगा तथा युवा वर्ग के विद्यार्थियों में जनसंख्या वृद्धि तथा जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना उत्पन्न करनी होगा।

सन्दर्भ :–

1. कपिल : एच0 के0 : अनुसन्धान विधियाँ (1981) हर प्रसाद भार्गव, पुस्तक प्रकाशन, आगरा–4, पृ0 111–112
2. गुप्ता, एस0पी0 : सांख्यिकी विधियाँ (2009), शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0 298–299
3. भटनागर, आर0सी0 : शिक्षा अनुसंधान (2008) लायल बुक डिपों, मेरठ, पृ0 241
4. मालवीय, राजीव : शिक्षा के नूतन आयाम (2006) शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0 128–130
5. मलैया, के0सी0 : रमा शर्मा : जनसंख्या शिक्षा (2009) अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ0 71–73
6. सिंह, रामलोचन : जनसंख्या अध्ययन (2000) : चन्द्रप्रकाश एण्ड कम्पनी, हापुड (उ0प्र0) पृ0 57–58
7. आलोक : विश्व में बढ़ता खाद्यसंकट : सामयिक कारवाँ, अंक – 5 वर्ष–2, जुलाई–सितम्बर 2008 पृ0 11–12

नारायण दास वैष्णव पुत्र श्री बद्री दास वैष्णव

मु.पो.–पाल गांव, तहसील–लुणी, जिला–जोधपुर (राजस्थान)

मो.नं. – 7726046467

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 189-192

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

राजा + इन्द्र काव्य में नारी चेतना

डॉ. राजेन्द्र

असिस्टैंट प्रोफेसर, PUC. College Siktwala Distt. Muktsr Sahib (Pb)

सरल, सहज, शालीन ऊँचा कद काठी और आधुनिक भारतीय परिधान धारण किये हुए राजेन्द्र जी को देखकर ऐसा लगता है कि यथार्थ को पा लेना, उनकी अपनी व्यस्थता तो है ही, पर उनका अपना चिन्तन, स्वच्छ लेखन व भाषा के रूप में पारिभाषित होता है। जीवन से जुड़ी स्थितियों, परिस्थितियों, सच्चाईयों से संबंधित जो कुछ भी देखते है, उसे चिन्तन पक्ष पर अपनी स्वतन्त्र कलम से कागज पर उतार देते हैं।

आधुनिक काव्य लेखकों में राजेन्द्र जी अपना मूर्धन्य स्थान रखते है। उन्होनें बहुत कम समय में हिन्दी साहित्य जगत् में अपना विशेष स्थान बना लिया है। राजेन्द्र की पहचान उनका 'राजा+इन्द्र काव्य ग्रन्थ के कारण है। 'राजा+इन्द्र' नारी प्रधान काव्य ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ ग्रन्थकेतन प्रकाशन दिल्ली द्वारा प्रकाशित है। राजेन्द्र का दूसरा नाम धन्ना है। इस काव्य ग्रन्थ में विवस्वान्, मनु, इच्छवाकू, स्मृति, राजेन्द्र इत्यादि पात्र है। विवस्वान् ने मनु को उपदेश दिया था। मनु ने इच्छवाकू को उपदेश दिया था। इच्छवाकू के पश्चात् गुरू परम्परा छिन्न–भिन्न हो गई। गुरू परम्परा का नाश हो गया। 'राजा+इन्द्र' काव्य ग्रन्थ इसी परम्परा का ग्रन्थ है जिस में समाज को नई दिशा प्रदान की गई हैं। यह ग्रन्थ नारी की स्वतन्त्रता की और एक प्रयास है।

स्वतन्त्रता प्रत्येक व्यक्ति का बुनियादी अधिकार है। आधुनिक युग में इसे एक जीवन मूल्य के रूप में भी देखा जाता है। नारी की दास्तान अति प्राचीन है। वह कैसे सामंती ताकतों के घेरे में पिस रही है। पितृसत्ता उस का उत्पीड़न कैसे करती है। समाज में जो गुलामी की जंजीरे है उन जंजीरों को तोड़कर नारी आज समाज में अपनी अलग पहचान बना रही है। पर्दाप्रथा, बंधुआ मजदूरी, बाल–विवाह, दहेजप्रथा, अशिक्षा, सामंती जकड़ कुप्रथाएँ है। पितृसत्ता नारी का शोषण करती है। नारी आज इन जंजीरों को काटकर 'आधुनिकता के आईनें' मुक्ति की और अग्रसर शिक्षित, कुशल राजनीतिज्ञ और सामाजिक लैंगिक समानता को उद्घाटित करती है। महिलाओं को शैक्षिक और पेशेवर समानता के अवसर होने चाहिए। नारीवाद लैगिंक समानता भेदभाव, लैगिंक संतुलन को बनाये रखने के लिए है।

नारी अब स्वतंत्र हो गई है। अब वर्चस्ववादी संस्कृति संकट में नजर आ रही है। नारी धीरे–धीरे सत्ता में आ रही है। इस आधुनिक युग में नारी गुलामी की जंजीरों को तोड़कर स्वतन्त्रता का ध्वज फहरायेंगी।

''भयंकर सामाजिक जंजीरो की जकड़ है,
इस अन्याय को गुब्बारे की सी सुई की दौहरी मांग है।''(1)

नारी चेतना से आशय है नारी अपनी क्षमताओं को पहचाने और जागे जो लोग नारी पर अत्याचार कर

रहे हैं उनका विरोध करें, एक तरह से यही नारी चेतना है। जब नारी अपनी क्षमताओं को, अपनी शक्तियों को पहचानेगी तो जीवन में आगे बढ़ेगी और कई समस्याओं का समाधान करेगी।

इस संविधान के अनुच्छेद 19 में महिलाओं को स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान किया गया है ताकि वह स्वतंत्र रूप से भारत के क्षेत्र में आवागमन, निवास एवं व्यवसाय कर सकती है। अनुच्छेद 15–16 तथा 29 में विशेष रूप से स्पष्ट किया गया है कि ये धर्म, वर्ण, जाति, लिंग अथवा जन्मस्थान के आधार पर किसी नागरिक के साथ भेदभाव करने पर रोक लगाते है।

वैदिक काल के उपरान्त रामायण, महाभारत, बौद्ध तथा मध्यकाल से गुजरती भारतीय नारी की सामाजिक यात्रा आधुनिककाल तक कई उतार–चढ़ाव देख चुकी है। नारी सत्य, प्रेम और विश्वास का रूप है। सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की त्रिवेणी है। श्रद्धा, भक्ति, त्याग की जीती जागती तस्वीर है। जिस प्रकार धनुष से तीर निकलता है उसी प्रकार आज नारी दिन–प्रति–दिन प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रही है।

कालजयी कृत्ति वह है तो समयानुसार परिस्थितियों को बदल डालें। 'राजा+इन्द्र' ऐसी ही काव्य कृत्ति है। आधुनिक युग में नारी कैसे बदल गई है। वह डॉक्टर है, अध्यापक है, पत्रकार है, वैज्ञानिक है। वह अब अपने प्रति पूर्णरूपेण सूचेत है। मगर वह जो भी कार्य करती है उस को रहस्यमय ढंग से करती है। क्योंकि औरत चंचल होती है, प्रेममय होती है। अतः वह अपने कार्य को कुशलतापूर्वक कर लेती है।

''बदलती दुनियाँ में औरत,
अपना आप तो देखती है''।[2]

''मगर अपनी चंचलता से वह,
प्रेम रहस्यमय रखती है।[3]

औरत जीवन का सत्य जानती है :–

दहेज प्रथा, बाल विवाह, अशिक्षा उस के जीवन में अड़चन है। उस ने इन सभी कुरीतियों के प्रति संघर्ष किया है। जिस मुकाम पर आज के आधुनिक युग में वह पहुँची है उसकी मेहनत का नतीजा आज वह राजनीति में बढ़े–बढ़े पदों पर आसीन है। प्रशासनिक सेवाओं में अहम भूमिका निभा रही है। 'राजा+इन्द्र' काव्य में औरत शान्ति प्रति की और अहम भूमिका निभाती है।

क्योंकि वह जानती है जीवन का सत्य,
जो उसने जाना है।''[4]

पितृसत्तात्मक समाज में आज भी औरत कि निदां होती है। घर में पुत्री पैदा हो जाये तो मात्तम छा जाता है। औरत को अछूत माना जाता है। वैदिककाल से लेकर मध्यकाल में जो औरत पर्दे में रही और उसके साथ अन्याय और अत्याचार होता रहा है। इन सभी कुरीतियों की तरफ औरत ने आवाज बुलंद की और सफलता हाशिल की। आज औरत पर्दे से बाहर है और 'आधुनिकता के आईने में जी रही है। आज औरत शिक्षित हो गई है। वर्ग, वर्ण, लिंग, नस्ल में भेद कम हुआ है।

''निंदा, अस्पृश्यता, पर्दा इत्यादि,
उसके जीवन में यथार्थ सत्य है।''[5]

आज औरत संसार में मर्दों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। समाज में रहने के लिए, जन्म

लेने के लिए, पढ़ने के लिए, धर्म जाति, संस्कृति, सभ्यता के लिए अपना जो स्थान बनाया है उसे ही नारी कहा जाता है। आज नारी फिल्मों में, टी.वी. में, मीडिया में, ब्यूटी पार्लर में, सौन्दर्य प्रतियोगिताओं में अपनी अहम भूमिका निभा रही है।

''उसको संसार में रहने–जन्म लेने, पढ़ने के लिए,
अपनी जो संस्कृति, सभ्यता बनाई है,
उपरोक्त उसी का बीज है औरत।''(6)

आज औरत आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न है, सतर्क है। वह अपनी मेहनत से ऊँचे–ऊँचे पदों पर आसीन है। ये ही नहीं वह मजदूरी करके जैसे धान लगाती है, कपास की चुगाई करती है, और घर में भी अपने हस्तकला में निपुण नारियां आपना व्यवसाय बनाये हुए है। धर्म की दृष्टि से नारी ने चाहे कम रचना की हो परन्तु राजनीति में उसने अपने चिहं छोड़े है।

''आज आर्थिक दृष्टि से वह,
सतर्क है, धर्म से नहीं परन्तु राजनीति में जो अंश बिन्दू छोड़े है।'' (7)

राजा+इन्द्र काव्य ग्रन्थ में राजेन्द्र ने कानून, धर्म, दर्शन, निंदा, अस्पृश्यता, पर्दा जन्मस्थान के आधार पर, राजनीति सभी पर कुठाराद्यात किया है। शिक्षित नारी आज आाधुनिक युग में समाज के लिए एक 'आईना' बनती जा रही है।

आधुनिक युग में औरत मर्दों के साथ कंधे–से कंधा मिला कर चल रही है। आज औरत वस्तु नहीं रही। प्राचीन काल में जैसे देवदासी प्रथा, होती थी। औरत को मंदिरों में भेंट कर दिया जाता था और वहां के सामंत और पुरोहित लोग औरत का शोषण करते थे। आज समाज में बदलाव आ चुका है। नारी सतर्क हो चुकी है। आज औरत अपने आप को निम्नलिखित प्राणी नहीं समझती। आज आधुनिक युग में नारी ने स्वतन्त्रता की उड़ान भर दी है। आज वह अपनी मरजी से वर का चयन कर सकती हैं :–

''आधुनिक सृष्टि में मील पत्थर है चूँकि,
राजेन्द्र, औरत समाज में वस्तु नहीं,
आज वह निम्नलिखित प्राणी या फिर बैसहारा नहीं।'' (8)

आज आधुनिक युग में औरत शिक्षित हो गई है। प्रत्येक क्षेत्र में उसने अपने कार्य से लोहा मनवा लिया है। चाहे मीरा हो या कल्पना चाँवला। आज औरत बदल रही है। समाज में दिन–प्रति–दिन परिवर्तन हो रहा है।

''दुनियाँ जानती हैं उसका लोहा,
क्योंकि औरत बदल रही है।'' (9)

अतः निष्कर्ष स्वरूप हम 'राजा+इन्द्र' काव्य ग्रन्थ में देख सकते है कि नारी आधुनिकता की और अग्रसर है। सभी कुप्रथाओं के प्रति उसने जन–आन्दोलन छेड़ा हुआ है। आधुनिकता के आईनें में नारी दिन–प्रतिदिन प्रगति की और अग्रसर है।

स्वतंत्र भारत की नारी एक और पूर्ण रूप से स्वतंत्र है तो दूसरी और नहीं। वे समुदाय विकास के उच्च शिखर पर है। लेकिन स्त्री–पुरूष समानता का सपना अभी भी अधूरा है। ''लेकिन आज नारी के साथ शिक्षा चेतना तथा समाज के संवेदनशील एवं सजग पुरूष तथा संगठन भी खड़े है। अतः उसे अपने अधिकारों की

लड़ाई को ओर तेज करना होगा।'' राजा+इन्द्र काव्य ग्रन्थ में राजेन्द्र का नारी के प्रति दृष्टिकोण प्रेममय है। वैदिककाल में नारी, उपनिषद्काल में नारी, स्मृतिकाल में नारी, रामायण काल में नारी, महाभारत काल में नारी, मध्यकाल में नारी गुलाम हो रहीं। धीरे–धीरे आधुनिक काल में उस ने अधिक संघर्ष किया और गुलामी की जंजीरो को तौड़ना शुरू किया। नारी चेतना या स्त्री विमर्श को अंग्रेजी में फेमिनिज्म कहा जाता है।

नारी चेतना से आशय है नारी अपनी क्षमताओं को पहचाने और जागे जो लोग नारी पर अत्याचार कर रहे है। उनका विरोध करे।

एक तरह से यही नारी चेतना है। जब नारी अपनी क्षमताओं को, अपनी शक्तियों को पहचानेगी तो जीवन मे आगे बढ़ेगी और कई समस्याओं का हल करेंगी।

संदर्भ ग्रन्थं सूची :-

1. राजेन्द्र : राजा+इन्द्र : दिल्ली : ग्रन्थकेतन प्रकाशक प्रथम संस्करण 2017 : पृ0 18
2. राजेन्द्र : राजा+इन्द्र : दिल्ली : ग्रन्थकेतन प्रकाशक : प्रथम संस्करण 2017, पृ0 8
3. राजा+इन्द्र : पृ0 8
4. राजा+इन्द्र : पृ0 8
5. राजा+इन्द्र : पृ0 8
6. राजा+इन्द्र : पृ0 8
7. राजा+इन्द्र : पृ0 8
8. राजा+इन्द्र : पृ0 9
9. राजेन्द्र : राजा+इन्द्र : दिल्ली : ग्रन्थकेतन प्रकाशक : प्रथम संस्करण 2017, पृ0 9

VPO Kandhwala Amarkot.

Teh. Abohar Distt Fazilka Punjab, Pin 152116

Mob 9815844696

Email Id – rajender4696@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 193-197

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय साहित्य में स्त्रियों की भूमिका

सुधीर सिंह

शोध छात्र, हंडिया पी.जी. कॉलेज हंडिया, प्रयागराज, पिन–221503

भूमिका :–

भारतीय साहित्य में स्त्रियों की भूमिका समाज व राष्ट्र को विकास की तरफ अग्रसर करने में सहायक रही है यही कारण है कि भारतीय साहित्य में स्त्रियों को अग्रणी और मान सम्मान भी दिया जाता है। हिंदी साहित्य में स्त्रियों के लिए नारीवाद तथा मातृ सत्तात्मक शब्द प्रचलन ने खूब ख्याती बटोरा है। हालांकि जमीनी स्तर पर स्त्रीवादी विमर्श प्रदेश एवं भौगोलिक सीमाओं में अपने स्तर पर सक्रिय रहते हुए तथा हर क्षेत्र के स्त्रीवादी विमर्श को अपनी खास समस्या दर्शाते हुए साहित्य में अपना योगदान देते रही।

वास्तविकता यह भी है कि स्त्री विमर्श बीसवीं शताब्दी की देन है। बीसवीं शताब्दी में कुछ लोगों ने इसका प्रारंभ "सीमोन द बुआ" की "पुस्तक द सेकंड सेक्स" के प्रकाशन वर्ष से मानते हैं। और कुछ मैरी एल्बम की पुस्तक थिंकिंग अबाउट विमेन 1968 के प्रकाशन वर्ष से लेकिन अधिकांश विद्वान इस तरह के किसी वर्ग विशेष को स्त्री विमर्श का प्रस्थान बिंदु मानना उचित नहीं समझते है क्योंकि बीसवीं शताब्दी में और इससे पहले भी इसी की अलग पहचान के लिए तथा उसके स्वतंत्र अस्तित्व और उसके अधिकारों की समस्याओं को उठाया जाने लगा था।

उदाहरण के लिए "वर्जीनिया वुल्फ" ने अपनी पुस्तक में लिखा था। हाइट हाल के पास से गुजरते हुए किसी भी स्त्री को अपने अस्तित्व का बोध होते ही उनके चेतना में अचानक उत्पन्न होने वाले दरार और डर को लेकर आश्चर्य की बात दर्शायी गयी है।

भारतीय साहित्य में स्त्रियों की दशा अत्यंत दैनिय मानी जाती है। राजा राममोहन राय ने 1818 में सती प्रथा का विरोध करते हुए। सती प्रथा को गैर कानूनी घोषित कर ऐलान भी किया था। इसके पश्चात उन्होंने बाल विवाह विधवा विवाह और बहू पत्नी प्रथा के विरुद्ध लड़ते हुए। राजा राममोहन राय ने स्त्री के पक्षधर नजर आते हुए दिखाई पड़ते हैं। स्वामी विवेकानंद और स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी स्त्री पर जोर दिया। इस प्रकार अमेरिका से शुरू हुआ यह आंदोलन भारत में भी स्त्री जाति के चेतना का स्वरूप बन गया।

भारतीय साहित्य में स्त्रियों का योगदान :–

भारतीय साहित्य में स्त्रियों का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण रहा। तथा भारतीय महिलाओं को अत्यंत ही दया भरी ममता भरी संयमी और सहनशीलता से घर का सुख बरकरार रखते हुए पारिवारिक रिश्तो को ममतामयी सूत्रों से बांधती है, और यह अंततः पितृत्तात्मक दृष्टि से ही उत्पन्न हुआ है और आगे भी होता रहेगा। इसी शोषण

तो देखकर महिलाओं ने अपनी आवाज को लेखन शैली के माध्यम से पहुंचाना शुरू किया। जिन्हें हम लेखिका या लेखक कह सकते हैं। बरहाल स्त्री और पुरुष के बीच किसी किस–किस स्तर पर और किस–किस तरीके से समझो में भेदभाव को संस्थागत रूप से अनिवार्य कर दिया गया है इसका इतिहास गवाह के रूप में खड़ा है इसलिए यहां ना तो उसे भेदभाव की तहकीकात करने की जरूरत है नहीं उसे पर नए सिरे से प्रश्न करने की आवश्यकता।

साहित्य समाज का एक आईना होता है जो साहित्यकार योगी ने समाज से प्रभावित होकर साहित्य के बल पर तत्कालीन समाज को प्रभावित कर देता है वही साहित्यकार कहलाता है। नारी हमेशा से भारतीय सभ्यता और भारतीय साहित्य की केंद्र बिंदु बनी रहे हैं हिंदी साहित्य में नारी की स्थिति हमेशा से एक जैसी नहीं रही उसमें अनेकों उतार–चढ़ाव देखने को मिलते हैं। भारतीय संस्कृति में विद्यमान धार्मिक कथाओं क्या अंधविश्वासों के द्वारा भारतीय नारी युगो–युगो से उपेक्षित होती रही हैं। जिसका साक्ष्य हम वैदिक काल में नारी को पूजा करने यज्ञ करने और शिक्षा ग्रहण करने जैसे अनेक अधिकार प्राप्त हुए थे। परंतु आदिकाल तक आते–आते नारी पुरुष की संपत्ति बन कर रह गई आदिकालीन युग से यह स्पष्ट देखने को मिलता है कि भले ही नारी को स्वयंवर चुनने का अधिकार प्राप्त होता है परंतु नारी की स्थिति समाज में इसी प्रकार की है जैसे कोई मदारी कठपुतली को अपनी उंगलियों पर नचा रहा हो ठीक उसी प्रकार पुरुष भी नारी का शोषण करने से पीछे नहीं हटता है। भारतीय परंपरा के अनुसार नारी शक्ति का स्वरूप बताया गया है। भक्त कवियों के यहां भी स्त्री को लेकर अनेक भ्रांतियां विद्यमान हैं। जो आधुनिक युग में समाज और साहित्य का स्वरूप दर्शाता है।

प्राचीन भारत में स्त्रियों को कहीं अत्यंत श्रेष्ठ माना गया है तो कहीं काम वासना का स्वरूप दर्शाया गया है कहीं मुक्ति मार्ग में बाधक दर्शाया गया है कहीं त्याज और मूर्ख जैसी उपाधि भी दी गई है। आज भी हमारे समाज और साहित्य में कमोबेश स्त्री के प्रति यही अंतर विरोधी रवैया मौजूद दिखाई पड़ता है। स्त्रियों के प्रति पुरुषों के इसी विरोधाभास पूर्ण रवैया के कारण भारत में स्त्री विमर्श की लहर दौड़ पड़ी जो पश्चिम से उठकर भारतीय अन्य प्रांत तक पहुंच गई।

रामचरितमानस के अनुसार नारी को आदर्श माना गया है तथा संपूर्ण विश्व के लिए प्रेरणा का स्रोत भी रामायण है यशोदा के माध्यम से नारी की माता रूप का जो चित्र सूर्य दास जी ने खींचा है वह अपने आप में ही कदम अनूठा है। रीतिकाल में समाज का प्रत्येक वर्ग विलासिता के रंग में रंगा हुआ था। समाज में नर और नई दोनों का नैतिक पतन हो चुका थातत्व का कालीन कवि भी झूठी प्रशंसा और धन प्राप्त करने की ओर उन्मुख हो गए थे। सामान्य जनजीवन की समस्या से कोई संबंध नहीं था। यह तो केवल वही काव्य रचते थे जिससे आश्रय दाताओं को प्रसन्न कर सके, और नारी को केवल भोग्या के रूप में दर्शाते गए। परंतु आधुनिक काल तक आते–आते नारी तो केवल पुरुष की पैर की जूती बनकर रहने के बजाय सामाजिक जागृति के कारण नारी की स्थिति में इतना बदलाव आया है। जिसे आज आधुनिक काल में ना ही सती प्रथा जैसी कुछ विसंगतियां हुई हैं ना तो कन्या भ्रूण हत्या जैसी अपराध ऑर अन्य अपराधों में कमी देखने को मिलती है। आधुनिक कवियों ने समाज का नग्न चित्र अपनी रचनाओं में पेश करने का अत्यंत अनूठा स्वरूप प्रस्तुत किया है।

भारतीय स्थितियों और हिन्दी साहित्य में पहली बार मध्यकाल (भक्तिकाल) में मीराबाई के काव्य में और उनके व्यक्तित्व में दिखाई पड़ता हैं। और उनकी रचनाओं का मध्यकाल में महत्वपूर्ण प्रभाव हैं। महान कवयित्री

मीराबाई ने अपने भजनों में विरह की व्याकुलता और अपने ईश्वर से मिलने की अटूट् इच्छा व्यक्त हैं। मीरा बाई 15वीं शताब्दी की एक एसी विद्रोहिणी प्रतिभा थी जिसने नारी अस्मिता का अभूतपूर्ण इतिहास लिखा था।

महिलाओं को केवल भोग का साधन माना जाता था और उनकी सीमा केवल की चारदीवारी तक सीमित रख दी गई थी जिसे समय के साथ–साथ समाज व समाज की स्थिति में परिवर्तन होते हुए साहित्य लेखन का केंद्र बिंदु जो पुरुषों पर ही निर्भर था वह बदल कर अब बराबरी पर आ गया है।

प्राचीन भारतीय समाज नारी को बहुत सम्मान देता था। उस समय नारी की तुलना देवताओं से की जाती थी जैसे कि विद्या की देवी सरस्वती बुद्धि की देवी सरस्वती शक्ति के रूप में माता दुर्गा तथा लक्ष्मी के रूप में साक्षात माता लक्ष्मी का पूजन किया जाता था।

मध्यकाल में कवित्री "ताज" कृष्ण के प्रेम में पढ़कर अपने धर्म तक को छोड़ देने से नहीं चूकती हैं प्रेम जीवन का एक ऐसा तत्व है जो स्त्री को स्वतंत्रता देता है और प्रेम यदि ईश्वर से हो जाए तो मनुष्य सब कुछ छोड़ देता है ताज कहती हैं कि :–

"नंद के कुमार को कुबनी ताणी सूरत पर हौ तो तुरकानी हिंदू वानी हौ रहूगी मैं।'

भारतीय साहित्य में आधुनिक युद्ध स्त्री सरोकार की सारी लड़ाइयां एक मुहिम के रूप में नवजागरण काल के पूर्व समाज सुधार को द्वारा शुरू की गई एक आंदोलन रूपी मुहिम है जिसे राजा राममोहन राय मृत्युंजय विद्यालंकार ज्योतिबा फुले ईश्वर चंद्र विद्यासागर बहराम मलवारी महादेव रानाडे आदि ने स्त्रियों से जुड़े लगभग हर मुद्दे को उठाया और स्त्रियों को समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने का प्रयास किया है जो अपने आप में एक अनोखी जीत का प्रतीक है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री नाम लिखने की सूची इतनी है कि पूछिए मत बल्कि पढ़कर जान लीजिए जिसके अंतर्गत स्त्रियों ने उस समय की तमाम सीमाओं के बावजूद पुरुष वर्चस्व वादी व्यवस्था छोड़कर अपनी लड़ाई लड़ते हुए पूरा स्त्री जाति के लिए संघर्ष करती हैं इन नामों में रमाबाई रानाडे, पंडिता रमाबाई, सरस्वती, नवाब एजुकेशन, चौधरानी, सावित्रीबाई फुले, रुक्या, सरोजिनी नायडू, ज्योति माया देवी अबला घोष आदि का नाम शिरोमणि है जिन्होंने नई सामाजिक व्यवस्था में नवजागरण लाने हेतु अनेकों संघर्ष लड़े।

पश्चिमी सैद्धांतिको लेकर भारत में स्त्रियों की स्थिति और स्त्री पुरुष के संबंधों में आई जतलाता को उजागर करने की कोशिश में ही भारतीय स्त्रियों की और उनके साथ पुरुषों की भी ऐसी तस्वीर सामने आती है। जो पूर्णतया सही प्रतीत नहीं होती है यह हर देश में स्त्री संघर्ष का अपना इतिहास रहा है। जो अपने लिए एक अलग सैद्धांति की मांग करता है। इसके आधार पर ही वहां के स्त्री विमर्श को समझा जा सके ठीक इस बात को स्त्री विमर्श अनेक पैरोंकारों द्वारा महसूस किया गया था।

भक्ति कालीन समाज में इस्लामी आक्रमण कार्यों द्वारा निरंकुश शासनकर के नारी की स्थिति बद से बत्तर कर डाली थी। उनके राज्य में वेश्यावृत्ति पर्दा प्रथा और सती प्रथा आदि नारियों से जुड़ी विषमताएं समाज में कोड की भांति लगी हुई हैं। अधिकतर स्त्रियां कामवासना में लिप्त होने के कारण अपना सचित्र खो चुकी हैं। समाज के व्यभिचार को कम करने के लिए भक्त कवियों ने अपनी वाणी में पौराणिक आदर्श नारियों के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं नाथों के प्रभाव में ज्ञानमार्गी कवियों ने विलासिनी कामिनी एवं कुलटा नारियों की कड़े शब्दों में आलोचना की है वासना में लिप्त नारी का चित्रण कबीर दास के शब्दों में साक्षात देखने को मिलता है जो इस

प्रकार है–

अन्न न भावे नींद ना आवे गृह बन धरै ना धीर रे
कामीन को बालम प्यारा ज्यो प्यासे को निर रे।

हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श जिसमें नारी जीवन की अनेक समस्याएं देखने को मिलते हैं। हिंदी साहित्य में छायावाद काल से स्त्री विमर्श का जन्म माना जाता है महादेवी वर्मा के श्रृंखला की कुड़ियों के द्वारा नारी सशक्तिकरण का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। प्रेमचंद से लेकर आधुनिक युग के अनेक पुरुष लेखक ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाकर महिलाओं के लिए अनेकों संघर्ष लड़े है ।

स्त्री विमर्श पर साहित्यिक ज्वलंत मुद्दा यह है कि – समाज के दो पहलू स्त्री पुरुष एक दूसरे के पूरक होते हुए भी आज दोनों के प्रति मनमुटाव या एक दूसरे के अस्तित्व को पहचाना नहीं चाहते पुरुष समाज में महिला समाज को अपने बराबर के समान नहीं समझते हुए महिलाओं को नीचे की श्रेणी में रखा जाता है यही पक्षपात दृष्टि से शिक्षित नारियों को आंदोलन करने पर मजबूर कर दिया जाता है जो आधुनिक साहित्य में नारी के प्रति जालंत मुद्दा है जो दृष्टिगोचर के रूप में है।

हिंदी साहित्य में स्त्री लेखिकाओं का योगदान :-

हिंदी कथा साहित्य में नारी विमर्श का जोर आठवें दशक तक आते–आते एक आंदोलन के रूप में पूरे भारत में फैल चुका था आठवें दशक के महिला लेखिकाओं ने उल्लेख किया है कि उन्होंने नारी के मन की गहराइयों तथा अंतरड़वा तथा अनेक समस्याओं का अंकन करने के बाद संजीदगी से इसे लिखा है। जिसमें प्रख्यात लेखिकाओं के नाम निम्न है।

ममता, कालिया, कृष्ण अग्निहोत्री, चित्रा मृदुल, मानिक, मोहिनी मृदुला, गर्ग मृदुला, सिन्हा मंजुल, भगत मैत्री, पुष्पा, मृणाल पांडे, नासिरा शर्मा, दीप्ति खंडेलवाल, कुसुम, आंचल, हिंदू, जैन, सुनीता जैन, प्रभा खेतान, सुधा अरोड़ा, क्षमा शर्मा, अर्चना वर्मा, नमिता सिंह, अलका, राबी, जया, जादवानी, मुक्त, रमणिका गुप्ता इत्यादि।

20वीं शताब्दी के अंतिम दशक में स्त्री वादी विचार को पनपने का शुभ अवसर मिल गया। साहित्य में अपने तमाम अच्छाइयां एवं बुराईयों के साथ सभी वर्ग के शिक्षित नारियों ने बाहर निकलने का अवसर दिया। परिणाम स्वरुप स्त्री अपने वर्जित क्षेत्र में ठोस दावेदारी और स्वालंबन की दिशा में तीव्र प्रयासों से आगे बढ़ रही हैं।

निष्कर्ष :-

नारी आदि काल से ही पीड़ित एवं शोषित रही हैं पुरुष प्रधान समाज मान–मर्यादा की आड़ में सदा उसे दबाकर रखना चाहता है कभी घर का इज्जत का कर तो कभी देविका कर चार दीवारों के अंदर कैद ही रखना चाहता है इन्हीं परंपरागत चित्रात्मक बेड़ियों को लाघने के लिए स्त्री समाज प्रयासरत है।

स्त्री की दशाओं पर साहित्य में अनेक साहित्यकारों ने चिंता व्यक्त किया है और यथासंभव उसे दूर करने का प्रयास भी किया है। जिससे नारी की स्थिति में काफी परिवर्तन हुए हैं। आज की स्त्री समाज में अपनी भागीदारी ठीक उसी तरह निभा रहे हैं जिस तरह की पुरुष।

भारतीय हिंदी साहित्य में स्त्री राजनीतिक हो या सामाजिक, आर्थिक हो या सांस्कृतिक उसके बाद भी

पुरुष के भांति ही स्वतंत्रता चाहती हैं इसलिए वह पितृ आत्मक सत्ता का विरोध करते हुए पारंपरिक बेड़िया तोड़कर आकाश में पुरुषों की भांति उड़ना चाहते हैं।

शब्द ग्रंथ :-

1. साहित्य में नारी का योगदान, उमा अर्पिता, गद्य कोश, ऑनलाइन पत्रिका।
2. साहित्य में स्त्री दृष्टि अदिति भरद्वाज द वायर ऑनलाइन पत्रिका 8–3–2023
3. हिंदी काव्य में नारी की बदलती स्थिति, पवन कुमार, इग्नाइटेड माइंड जनरल, मई 2019
4. हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श, पंडित रविशंकर शुक्ल, इंटरनेशनल जनरल ऑफ एडवांस इन सोशल साइंस 2014
5. स्त्री विमर्श का भारतीय आईना, जनसत्ता दैनिक समाचार पत्र, संपादकीय 8 मार्च, सन 2016

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 198-202

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मृदुला गर्ग के समाज शास्त्रीय अध्ययन के सन्दर्भ में नाटकों का योगदान

रीना राठौर, शोधार्थी
डॉ. आदित्य कुमार गुप्ता, शोध निर्देशक,
हिन्दी विभाग, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा।

प्रस्तावना :–

मृदुला जी स्वातंत्र्योतर काल की उन लेखिकाओं में से एक हैं जिन्होंने सभी विधाओं में लेखन कार्य किया हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् के समय में जीवन मूल्य तेजी से बदले हैं। स्त्री साहित्यकारों की रचनाओं में यह बदलाव तीव्र गति से हुआ हैं। मृदुला जी भी उन रचनाकारों में सम्मिलत हैं जिन्होंने समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को लेकर रचनाएँ लिखी हैं। उनकी अन्य विधाओं के साथ ही नाटक भी युगबोध से परिचय कराते हैं। उन्होंने समकालीन नाटकों को एक नयी दिशा से जोड़ा है। जयशंकर प्रसाद जी के अनुसार नाटक को निम्न प्रकार परिभाषित कर सकते हैं– ''साहित्य की जिस विधा में अभिनेता मूल पात्र का अपने ऊपर आरोप कर उसी प्रकार आचरण करते हैं। जिस प्रकार उन ऐतिहासिक या पौराणिक या समसामयिक पात्रों ने किया। अगर मूल पात्र कल्पित है, तब भी नाटककार ने उनके जिन कार्य व्यापार की कल्पना की है, वैसा ही अनुकरण अभिनेता जिसमें करते हैं वही विधा रूपक या नाटक कहलाता हैं।''[1]

भरतमुनि ने भी नाटक के सम्बन्ध में कहा हैं–''लोकवृत्तानुकरण नाट्यमेतन्मताकृतम रूपं दृश्यतयोच्चते।''[2] अर्थात् जगत के भावों का अनुकरण ही नाटक कहलाता हैं।

मृदुला गर्ग के सभी नाटक मनुष्य की नियति को व्यक्त करते हैं। इनमें मानवीय रिश्तों के मध्य ठण्डेपन की स्थिति, नारी–पुरूष के बीच स्वतंत्र अस्तित्व की इच्छा, आपसी रिश्तों में तनाव, स्त्री–पुरूष के मध्य देह सम्बन्ध और साथ ही उत्पन्न अपराध बोध आदि को नाटक के प्रमुख विशय के रूप में अभिव्यक्ति मिली हैं।

मृदुला जी के अब तक प्रकाशित प्रमुख नाटक हैं–एक और अजनबी, जादू का कालीन, तीन कैदे जो उनकी प्रसिद्ध कहानी कितनी कैंदे का नाट्य रूपान्तरण हैं।

इन नाटकों में उन्होंने सामाजिक परिवेश को अभिव्यक्ति दी हैं तथा सामाजिक परिस्थितियों तथा विषमताओं का यथार्थ एवं सजीव चित्रण किया हैं। उनके नाटकों में सामाजिक यथार्थ बोध को निम्न रूप में प्रस्तुत किया जा रहा हैं–

1. **एक और अजनबी :–** मृदुला जी द्वारा रचित यह नाटक प्रेम के परिवर्तित सामाजिक रूप तथा नारी–पुरूष

संबंधों के उपहास तथा नारी मन के असंतोष तथा पाश्चात्यीकरण का बोध कराता हैं।

नाटक की कथावस्तु में शानी तथा इन्दर एक दूसरे से प्रेम करते हैं। लेकिन इंदर अपने उज्जवल भविष्य की कामना लिए शानी से विवाह करने की बजाय विदेश चला जाता हैं। वह शानी की बजाय पैसा कमाने को अधिक महत्त्व देता हैं जिससे शानी का मन बहुत दुःखी को जाता हैं। अपनी सहेली मणि के पूछे जाने पर वह उत्तेजित होकर कहती हैं–'' पहले उसके लिए था उसका कैरियर। उसकी अमेरिका जाने की धुन। स्कॉलरशिप क्या मिली, खुशी से पागल हो गया। मेरे बारे में एक बार नहीं सोचा।..... प्यार ? प्यार एक हवस हैं, जो क्षण–भर में शान्त हो जाती हैं। अगर वह सचमुच मुझे प्यार करता, तो अमेरिका जाना छोड़ नहीं सकता था?''[3]

शानी अपने माता–पिता द्वारा तय किये रिश्ते में बंध जाती हैं। शानी का पति जगमोहन उसी कम्पनी में असिस्टेंट मैनेजर हैं जहाँ पर इंदर विदेश से आकर मैनेजिंग डायरेक्टर बनता हैं। जगमोहन की इच्छा हैं कि उसका ट्रांसफर किसी ब्रांच ऑफिस में हो जाये, वह भी प्रमोशन के साथ इसलिये वह शानी को कहता हैं कि हम अपने घर पर बॉस को पार्टी देंगे। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए वह शानी से कहता हैं–''मैं सोच रहा था, तुम दो चार दिन के लिए घर चलो। खोसला साहब को खाने पर बुला लेंगे। ये लोग आपसी मिलने–जुलने को बहुत अहमियत देते हैं। फिर तुम जैसी मॉडर्न औरत। तुम से मिलकर बहुत खुश होंगे।''[4]

जब इंदर आता हैं तो जगमोहन शानी सें इंदर को परिचित करता हैं तो शानी उसे बताती हैं कि वे दोनों कॉलेज में एक साथ पढ़ा करते थे। तीनों मिलकर पार्टी करते हैं और शराब पीते हैं। जगमोहन उन दोनों को अकेले रखने का पूरा प्रयास करता हैं। इंदर उसके सामने ही शानी की कमर में हाथ डालकर नृत्य करता हैं फिर भी जगमोहन ऐसा प्रदर्शित करता हैं जैसे उसने कुछ देखा ही न हो क्योंकि वह तरक्की चाहता हैं। अन्त में वह इंदर तथा शानी को अकेला छोड़कर कैंप के लिए चला जाता हैं। इधर इंदर शानी से शारीरिक संबंध स्थापित करना चाहता हैं। शानी भी पूर्व प्रेमी के संसर्ग में दिवास्वपन देखती हुई खो जाती हैं। परन्तु कहीं न कहीं उसका नारी मन विद्रोह भी करता हैं वह स्वयं ही टूटे हुए स्वर में कहती हैं– ''नहीं, ऐसे नही। मैंने कुछ और चाहा था।''[5]

किन्तु फिर वह प्रेम में हार जाती हैं और समर्पण कर देती हैं। मृदुला जी इस नाटक के द्वारा कहती हैं– ''धीरे–धीरे जंग खाता सामाजिक आदमी उस मुकाम पर पहुंच जाता हैं, जहाँ उसके अपने सबसे निजी क्षण, स्त्री–पुरूष के बीच के आत्मिक दैहिक संबंध भी सामाजिक व्यवहार की बलि चढ़ जाते हैं।''[6]

नाटक में शानी एक स्वाभिमानी तथा आधुनिक विचारों वाली नारी के रूप में हैं। वह तब विवश हो जाता हैं जब इंदर चला जाता हैं और जगमोहन से उसका विवाह हो जाता हैं किन्तु उनके संबंध केवल दैहिक होते हैं अर्थात् उसे प्रेम की प्राप्ति नहीं होती हैं इसीलिये वह उसे अजनबी लगता हैं। जब इंदर विदेश से आता हैं तो उसे लगता हैं कि उसे प्रेम की पुनः प्राप्ति हो गई हैं किन्तु जब इंदर उससे यौन संबंध जोड़ने का प्रयास करता हैं तो वह भी उसके लिए एक और अजनबी बन जाता हैं।

नाटक में एक अन्य स्त्री–पुरूष भी हैं जो बिना विवाह के साथ रहते हैं। कुछ समय बाद ही स्त्री पुरूष को अकेला छोड़कर चली जाती हैं। यहाँ पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दिखाई पड़ता हैं। नाटक में अन्य पात्र भी हैं – शानी की सहेली मणि जो मन ही मन इंदर से प्रेम करती हैं। शानी की माता, एक बूढ़ी औरत और एक रजाई बनाने वाला तथा अन्य कुछ औरतें। ये सभी आते–जाते दिखाई देते हैं।

मृदुला जी ने इस नाटक में भारतीय रीति–रिवाजों को दर्शाते हुए आधुनिकता का पुट भी दिखाया हैं। आज की सामाजिक समस्या यही हैं कि मनुष्य न तो पुरानी परम्पराओं से पूरी तरह स्वतंत्र हुआ हैं और न ही उनको पूरी तरह अपनाना चाहता हैं। नाटक के पात्र भी इसी असमंजस में दिखाई पड़ते हैं। इस सम्बन्ध में दिनेश चंद्र वर्मा ने लिखा हैं–

'''मृदुला गर्ग के नाटकों के नारी पात्र भी अपनी तमाम आधुनिकता और यौन सम्बन्धों की स्वच्छन्दता के बावजूद विवाह की अनिवार्यता और यौन सम्बन्धों की पवितत्रता को प्रबल स्वर से स्वीकार करते हैं।''[7]

(2) जादू का कालीन :– मृदुला जी द्वारा लिखित प्रस्तुत नाटक में मृदुला जी ने बाल मजदूरों के शोषण तथा विवशता का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया हैं। मृदुला जी का यह नाटक हमें मनोरंजन के स्थान पर एक प्रमुख सामाजिक समस्या से परिचित कराता हैं। साथ ही इसकी विषय वस्तु के माध्यम से लेखिका ने समाज के निम्न वर्ग की दुर्दशा, बाल कार्मिकों की पीड़ा, सामाजिक स्वयंसेवी संगठनों के स्वार्थ, बाल विवाह, नारी की विद्रोहात्मक स्थिति आदि सामाजिक विषमताओं को यथार्थ अभिव्यक्ति दी हैं। कहानी में कालीन उद्योगों में कार्यरत छोटे–छोटे बच्चों को दिखाया गया हैं क्योंकि कालीन बनाने के लिए पतली–पतली अंगुलियों की आवश्यकता होती हैं। गरीब परिवार के लोग आर्थिक विवशता के कारण अपने बच्चों को काम करने के लिए शहर भेज देते हैं यहाँ पर कालीन के कारखाने में उन्हें कैसे काम करना पड़ता हैं इसका सजीव तथा मार्मिक वर्णन लेखिका ने किया हैं। कालीन बनाने में ये मासूम बच्चे कितना श्रम करते हैं। इसके विषय में लेखका ने शुरूआत में ही कहा हैं– ''हाथ से बने कालीन छोटे–छोटे कच्चे शेड में बुने जाते हैं। कच्ची जमीन को खोदकर खड़ा (वर्टिकल) लूम फिट किया जाता हैं। बच्चे लूम के पीछे बैठकर कालीन बनते हैं। लूम में पतली, सख्त, तारनुमा सुतली लगी होती हैं। मोम लगाकर सुतली को सख्त बनाया जाता हैं। ये सुतलियाँ दो परतों में होती हैं। बच्चे रंगीन ऊन को तारों के बीच घुमाकर गाँठ लगाते हैं, फिर चाकू से धागा काट देते हैं। चाकू हँसिए की किस्म का गोल होता हैं। कालीन उतना ही अधिक बढ़िया माना जाता हैं जितनी अधिक गाँठे उसके एक इंच में हो। इसलिए तार पास–पास लगाए जाते हैं। उनके बीच से सिर्फ पतली, लचकदार उंगलियाँ ही इधर–उधर जा सकती हैं। यही कारण हैं कि बच्चों से यह काम करवाया जाता हैं। बार–बार तारों के बीच से ले जाने पर उंगलियाँ अपनी लचक खोकर सख्त पढ़ने लगती हैं और तब वे बच्चे कालीन (दरी) बुनने के लिए बेकार हो जाते हैं। जरा–सी असावधानी से उँगली चाकू से भी कट जाती हैं। और, छिलती तो हर हाल में है ही।''[8]

नाटक में सूखाग्रस्त गाँवो में लोगों की मजबूरी का फायदा उठाकर कालीन कारखानों के मालिक उनको लालच देकर उनेक छोटे–छोटे बच्चों को काम दिलाने एवं उनका भविष्य सँवारने के बहाने शहर ले जाते हैं और उन्हें कारखानों में कालीन बनाने में लगाकर उनका शोषण करते हैं। नाटक का निम्न संवाद देखिये– ''सुपरवाइजर – एक – देख क्या रही है ? हाथ चला। रूक नहीं। जल्दी कर। जल्दी.....जल्दी.....जल्दी (संतो की उँगली कट जाती हैं और वह चीख पड़ती हैं) अलग रख, अलग रख। खून लग गया तो सत्यानाश कालीन का। धागा जलाकर दे कम्मों। (जला धागा उँगली मे भरता हैं) रही अनाड़ी की अनाड़ी। रोज धागे से उंगली काटती हैं। आज चाकू लगा दिया। चुप हो जा। बैठ जा, अपनी जगह। कम्मो, तू क्या कर रही है, शुरु हो जा। अरजेंट का ऑर्डर है। चल सन्तो, शुरू हो जा तू भी।''[9]

बाल मजदूरों की समस्या के साथ ही बालकों की मानसिकता का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया गया हैं

इसलिए वे बच्चे अपने ऊपर अत्याचार होने पर भी स्वपन देखने से बाज नहीं आते। काम से समय मिलते ही वे सपने देखने लगते हैं–

केशो : चल संतो, उड़ चल,
परियों के देस,
डॉलर देस में
जादू का डण्डा धूमा
जो चाहे माँग ले।
लिट्टी, दाल भात, लड्डू
चलेगी, संतो, परियों के देस में?''[10]

इस प्रकार कहानी में संतो, लाखन, केशो आदि अनेक बच्चे बालश्रम की पीड़ा से ग्रसित हैं। इसी प्रकार आगे केशो स्कूल जाना चाहता हैं तो समाज सेविका उसे स्कूल भेजने और भोजन आदि की व्यवस्था करने का लालच देकर शहर ले आती हैं और वहाँ पर उससे घर का काम करवाती हैं। आर्थिक विषमता से पीड़ित होकर ही संतों, जिसकी उम्र ग्यारह–बारह बरस होगी, की शादी एक अधेड़ जो कि एक बच्चे का बाप से कराने के लिए राजी हो जाते हैं और उसके बदले रूपये ले लेते हैं। इस प्रकार बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीति जो लगभग समाप्त हो गई है। उसका भी लेखिका ने यहाँ उल्लेख किया है।

(3) तीन कैंदें :- तीन कैंदें मृदुला जी द्वारा लिखित ऐसा नाटक है जो नाट्य संसार में नारी–पुरुष संबंधों के विषय में क्रांति उत्पन्न करता हैं। यह नाटक उनकी प्रसिद्ध कहानी 'कितनी कैंदे' का नाट्य रूपान्तरण हैं। इसमें मृदुला जी ने एक बलात्कारित युवती मीना की मनोदशा का चित्रण किया हैं साथ ही आधुनिक समाज में परिवर्तित मूल्यों के द्वारा नारी–पुरुष संबंधी को यथार्थ अभिव्यक्ति दी हैं। नाटक के मुख्य पात्र हैं– मीना तथा मनोज। अन्य गौण पात्र हैं। मनोज और मीना दोनों अपने अस्तित्व की तलाश में मग्न रहते हैं।

कहानी में मीना जिसका विवाह कुछ समय पहले ही इंजीनियर मनोज से हुआ हैं वह पति के साथ कोयना बाँध देखने जाती हैं। मनोज वहीं पर इंजीनियर हैं। मनोज रोंमाटिक किस्म का इंसान हैं किन्तु मीना हर समय डरी हुई तथा ठण्डी सी दिखाई देती हैं। मनोज उसे रिझाने के लिए बांध से सत्तर फुट नीचे अपने दफ्तर ले जाना चाहता हैं वह लिफ्टमैन की भी छुट्टी कर देता हैं। नीचे जाते समय अचानक लिफ्ट बंद हो जाती हैं और वे उसमें बंद हो जाते हैं जिससे मीना बहुत डर जाती हैं। ऐसे समय मे मनोज अपनी पत्नी के साथ रोमांस करना चाहता हैं पर वह ठण्डी तथा बुझी सी रहती हैं तब मनोज उस पर थप्पड़बाजी करना शुरू कर देता हैं क्योंकि वह सोचता हैं कि हिस्टीरिया का इलाज थप्पड़ से ही हो सकता हैं। इससे मीना उत्तेजित हो जाती हैं और मनोज को शारीरिक सुख देती हैं। इससे मनोज अचंभित हो जाता हैं। लिफ्ट बंद हुए ग्यारह घण्टे हो जाते हैं. अब उन्हें लगता हैं कि मौत अधिक दूर नहीं हैं। मौत के संत्रास से मीना मनोज को अपने ऊपर विवाह से पूर्व हुए बलात्कार का सारा घटनाक्रम सुना देती हैं। इसके बाद लिफ्ट खुल जाती हैं और वे लिफ्ट से बाहर आ जाते हैं और अपनी–अपनी पहचान की तलाश करने लगते हैं।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार मृदुला जी द्वारा लिखित ये नाटक समकालीन सामाज की विभिन्न समस्याओं को अभिव्यक्त

करते हैं। मृदुला जी के नाटक पढ़ने के बाद पाठक इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उन्होंने निम्न तथा मध्यवर्ग की सामाजिक परिस्थितियों का यथार्थ तथा खुला रूप अपने नाटकों में चित्रित किया हैं।

''सन् 1960 के बाद के सामाजिक परिवेश, बेकारी, मँहगाई, भ्रष्टाचार, अन्याय एवं शोषण का ही नहीं, वरन् कुण्ठा, संशय, अनास्था, घुटन, संत्रास, विघटन एवं उदासी भी सर्वत्र विद्यमान हैं। भ्रष्टाचार, चरित्र–हीनता, धनलोलुपता एवं भोगवादी प्रवृति के कारण सशक्त जीवन–मूल्य नष्ट–भ्रष्ट हो रहे हैं।[11]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. प्रसाद, जी. (2009), 'निर्मल वर्मा का रचना संसार' जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, पृ.सं. 58
2. उपरोक्त, पृ.सं. 58
3. गर्ग, मृदुला (दूसरा सं. 2016), 'कैद–दर–कैद', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 102
4. उपर्युक्त, पृ.सं. 115
5. उपर्युक्त, पृ.सं. 167
6. गर्ग, मृदुला, (1987), 'एक और अजनबी', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस', दिल्ली, पृ.सं. 08
7. वर्मा, डॉ. दिनेश चंद (1987), 'स्वतन्त्रयोत्तर हिन्दी नाटक, समस्या और समाधान, पृ.सं. 92
8. गर्ग, मृदुला (2015), 'जादू का कालीन', 'राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं. 07
9. उपर्युक्त, पृ.सं. 33
10. उपर्युक्त, पृ.सं. 30
11. कुकरेती, हेमंत, (2009), 'शंकर शेष के नाटकों में संघर्ष चेतना', आर्य प्रकाशन मण्डली, दिल्ली, पृ.सं. 100

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 203-207

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्राचीन भारतीय समाज में वैवाहिक मान्यता की स्थिति एवं विवाह के प्रकार

सचिन

सुपुत्र श्री वेदप्रकाश,

नेट, समाज शास्त्र, हिसार।

संसार की सभी सभ्यताओं में विवाह नामक संस्कार प्रचलित है। इनमें से कुछ सभ्यताओं में बहु–विवाह की प्रथा भी प्रचलित है, परन्तु भारतीय हिन्दू समाज में एक विवाह को ही सर्वोत्तम आदर्श माना गया है। प्राचीन भारतीय समाज में राजाओं की एक से अधिक पत्नियों का उल्लेख अवश्य मिलता है, परन्तु इन राजाओं की संख्या नगण्य है। राजा–महाराजा या धनिक वर्ग के लोग अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए या स्वयं को अन्य लोगों से बड़ा दिखाने के लिए बहु–विवाह कर लेते थे, परन्तु सामान्य जनता में एक–विवाह को ही सर्वोत्तम आदर्श माना जाता था।

विवाह के पर्याय :–

भारतीय संस्कृत साहित्य में विवाह संस्कार को सर्वोत्तम महत्ता प्राप्त है, इसलिए विवाह के लिए अनेक समानार्थी शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। ये शब्द इस प्रकार हैं–

1. **उद्वाह** – कन्या को उसके पितृगृह से स्वजनों की सहमति से ले जाना उद्वाह कहलाता है।
2. **विवाह** – विशिष्ट प्रकार के आयोजन करके कन्या को ले जाना विवाह कहलाता है।
3. **परिणय** – अग्नि की प्रदक्षिणा करके कन्या को स्वीकार करना परिणय कहलाता है।
4. **पाणिग्रहण** – अग्नि को साक्षी मानकर कन्या का हाथ ग्रहण करना पाणिग्रहण कहलाता है। ये सभी संस्कार विवाह नामक संस्कार का ही अंग है, इसलिए इन्हें विवाह संस्कार में ही सम्मिलित किया जाता है।

विवाह के प्रकार :–

प्राचीन भारतीय समाज में आठ प्रकार की विवाह–व्यवस्था प्रचलित थी। इन आठ प्रकार के विवाहों का सम्बंध वर्ण–व्यवस्था के साथ भी माना जाता है। मनुस्मृति में आठ प्रकार के विवाहों का इस प्रकार उल्लेख है–

ब्राह्मो दैवस्तथैवार्शः प्राजापत्यस्ता सुरः।
गान्धर्वो राक्षसचैव पैशाच चाष्टमोऽधमः।।[1]

अर्थात्–आठ प्रकार के विवाह होते हैं–ब्रह्म, दैव, आर्श, प्राजापत्य, आसुर, गन्धर्व, राक्षस तथा पैशाच। यह आठवाँ पैशाचिक विवाह अतिनिन्दित माना जाता है।

चतुरो ब्राह्मणस्याधान्प्रशस्तान्कवचो विदुः।
राक्षसं क्षत्रियस्यैकमासुरं वैश्य शूद्रयोः।।[2]

अर्थात्–ब्राह्मण के लिए प्रथम चार प्रकार के विवाह–ब्रह्म, दैव, प्राजापत्य विवाह को ही श्रेष्ठ बताया गया है। क्षत्रिय के लिए राक्षस विवाह, वैश्य और शूद्र के लिए असुर विवाह को श्रेष्ठ बताया गया है।

मनुस्मृति में वर्णित इन आठ प्रकार के विवाहों की अलग–अलग विशेष इस प्रकार हैं–

1. **ब्रह्म विवाह** – विद्वान तथा चरित्रवान युवक को निमंत्रित करके उसका वरण करना तथा उसे सम्मानपूर्वक वस्त्र–आभूषण आदि से अंलकृत कन्या प्रदान करना ब्रह्म विवाह कहलाता है।

आच्छाद्य चार्चयित्वा च श्रुतिशीलवते स्वयम्।
आहूय दानं कन्यायाः ब्राह्मो धर्मः प्रकीर्तितः।[3]

2. **दैव विवाह** – अच्छी प्रकार से यज्ञ–यागादि कराने वाले ऋतविज् का वरण करके उसे वस्त्र और आभूषण आदि से सुसज्जित कन्या प्रदान करना दैव विवाह कहलाता है।

चज्ञे तु विततते सम्यगृत्विजे कर्म कुर्वते।
अलंकृत्य सुतादानं दैवं धर्म प्रचक्षते।।[4]

3. **आर्श विवाह** – वरण किये गये युवक को एक–एक गाय–बैल अथवा दो–दो गाय–बैल लेकर विधि–विधान से उसे कन्या प्रदान करना 'आर्श–विवाह' कहलाता है। यहाँ पर यह भी उल्लेखित करना आवश्यक है कि कन्या के पिता द्वारा गाय या बैल का यह दान संकट की स्थिति में ही स्वीकार किया जाना चाहिए।

एकं गोमिथुनं द्वे वा वरादादाय धर्मतः।
कन्या प्रदानं विधिवदार्शो धर्मः स उच्चते।।[5]

4. **प्राजापत्य विवाह** – तुम दोनों मिलकर धर्म का आचरण करो। इस कामना के साथ वर को सम्मानपूर्वक वस्त्राभूषण से सुसज्जित कन्या समर्पित करना प्राजापत्य विवाह कहलाता है।

सहोभौ चरतां धर्ममिति वाचानुभाश्यः च।
कन्या प्रदानमभ्यर्च्य प्राजापत्यो विधि स्मृतः।।[6]

5. **आसुर विवाह** – कन्या के माता–पिता और स्वयं कन्या द्वारा वर से उसकी सामर्थ्य के अनुसार धन लेकर स्वेच्छा और प्रसन्नतापूर्वक उसे कन्या सौंपना 'आसुर' विवाह कहलाता है।

ज्ञातिभ्यो द्रविणं दत्त्वा कन्यायै चैव शक्तितः।
कन्या प्रदानं स्वाच्छन्धादासुरो धर्मः उच्यते।।[7]

6. **गांधर्व विवाह** – गांधर्व विवाह को गंधर्व विवाह भी कहा जाता है। आधुनिक समय में 'लव मैरिज' का सिद्धांत ही गंधर्व विवाह है। कन्या और वर द्वारा अपनी इच्छा से एक–दूसरे को पसन्द करके विवाह बंधन में बंध जाना गांधर्व विवाह कहलाता है। इस प्रकार का विवाह कामजन्य वासना की तृप्ति पर आधारित होता है।

इच्छयाश्न्योन्य संयोगः कन्यायाश्च वरस्य च।
गांधर्व सः तु विज्ञेयो मैथुन्यः कामसम्भवः।।[8]

7. **राक्षस विवाह** – कन्या के अभिभावक का वध करके अथवा उसके हाथ–पाँव आदि पर चोट मारकर अथवा उसके मकान को तोड़–फोड़ करके रोती अथवा गाली देती हुई कन्या को बलपूर्वक छीनकर अपने अधिकार

में करना राक्षस विवाह कहलाता है।

हत्वा छित्वा च भित्वा च क्रोशन्तीं रुदतीं गृहात्।
प्रसह्य कन्याहरणं राक्षसो विधिरूच्यते।।[9]

8. पैशाच विवाह – सोती हुई, नशीले पदार्थ के सेवन से अर्ध–मूर्च्छित अथवा प्रमादग्रस्त (मिरगी आदि रोगों से पीड़ित अथवा अर्धनिद्रा की स्थिति में पड़ी) किसी कन्या से निर्जन स्थान पर मैथुन करके उसे विवाह के लिए विवश करना पैशाच विवाह कहलाता है। इस विवाह को सबसे ऊधम श्रेणी का विवाह माना जाता है।

सुप्तां मत्तां प्रमत्तां वा रहो मत्रोपगच्छति।
स पापिष्टो विवाहानां पैशाचः प्रथितोऽधमः।।[10]

प्राचीन ग्रंथों में वर्णित इन विवाहों के अतिरिक्त विवाह की एक समानान्तर व्यवस्था भी समाज में प्रचलित थी। उपरोक्त वर्णित विवाह केवल एक ही पुरुष या एक ही स्त्री के वैवाहिक विधान से सम्बंधित हैं। इन विवाहों के अतिरिक्त एक विवाह (Monogamy), बहु विवाह (Polygamy), बहु पत्नी विवाह (Polygyny), बहु पति विवाह (Polyandry), द्विपत्नी विवाह (Bigamy), समूह विवाह (Group Marriage) आदि विवाह पद्धतियाँ भी प्रचलित थी। विवाह की इन पद्धतियों को इस प्रकार उल्लेखित कर सकते हैं–

1. एक विवाह – विवाह की इस व्यवस्था के अन्तर्गत एक पुरुष का विवाह एक ही स्त्री के साथ किया जाता है। इस विवाह में पति या पत्नी की आकस्मिक मृत्यु के उपरान्त भी दूसरे विवाह का निषेध किया गया है। प्राचीन धर्म शास्त्रों में इसी विवाह को श्रेष्ठ माना गया है तथा इसी विवाह को 'धर्म' कहकर भी संबोधित किया जाता था। इसलिए आज भी पत्नी के साथ में 'धर्मपत्नी' शब्द का विशेषण किया जाता है।

2. बहु विवाह (Polygamy) – जब एक पुरुष की एक से अधिक पत्नियाँ हों, या एक स्त्री के एक से अधिक पति हों, तो उसे बहु विवाह कहते हैं। अतः बहु विवाह के दो रूप प्रचलित हैं–बहु पत्नी विवाह (Polygyny) तथा बहु पति विवाह (Polyandry) बहु पत्नी विवाह के अन्तर्गत एक पुरुष की एक से अधिक पत्नियाँ होती थी। बहु पत्नी विवाह भारत के किन–किन क्षेत्रों में प्रचलित था, इस विषय में मोतीलाल गुप्त का कहना है–"एक स्त्री के संतानहीन होने की स्थिति में दूसरी पत्नी से विवाह की आज्ञा दी गई है। अनुलोम विवाह में भी बहु पत्नी विवाह प्रथा के प्रचलन में योग दिया है। बंगाल में कुलीनता को अधिक महत्व दिया जाता था, इस कारण वहाँ बहुपत्नी विवाह की प्रथा प्रचलित हुई। दक्षिण भारत में मालाबार तट पर रहने वाले नम्बूदरी ब्राह्मणों में भी इसी प्रकार बहुपत्नी विवाह का प्रयत्न हुआ। उन लोगों में अपनी जाति में विवाह करने का अधिकार केवल बड़े भाई को ही माना जाता था और अन्य छोटे भाइयों का अपने से निम्न अर्थात् नायर और क्षत्रिय कन्याओं से विवाह करना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में नम्बूदरी ब्राह्मणों में विवाह योग्य लड़कों की कमी और लड़कियों की अधिकता के कारण बहुपत्नी विवाह प्रथा प्रचलित हुई।[11]

बहुपत्नी विवाह के अतिरिक्त बहु पति विवाह की प्रथा के प्रचलन के उदाहरण भी मिलते हैं। इस बात के समर्थन में प्रायः महाभारत का उदाहरण दिया जाता है कि महाभारत में वर्णित द्रौपदी के पाँच पति थे। विवाह की इस पद्धति को समाज में अधिक मान्यता नही थी, परन्तु विभिन्न सामाजिक तथा भौगोलिक कारणों से विवाह की यह प्रथा भारत के विभिन्न स्थानों पर प्रचलित थी। इस प्रथा के सम्बंध में मोतीलाल गुप्ता कहते हैं कि–"उत्तर के खस राजपूतों, मालाबार के नायरों और कुर्ग निवासियों में बहुपतित्व की प्रथा पाई जाती रही है और ये

सांस्कृतिक समूह हिन्दू सामाजिक परिधि में आते हैं। बहुपति विवाह प्रथा उत्तरी भारत के देहरादून जिले के जौनसार–बावर परगना एवं टिहरी राज्य के खाई तथा जौनपुर परगनों में पाई जाती हैं। इन क्षेत्रों में जब सबसे बड़ा भाई विवाह करता है, तो इस प्रथा के अनुसार उसकी पत्नी उसके छोटे भाइयों की पत्नी हो जाती है।[12]

जहाँ तक समूह विवाह (Group Marriage) का प्रश्न है, संसार की सभ्य सभ्यताओं में इस प्रकार की प्रथा के प्रचलन के उदाहरण नहीं मिलते हैं। इस विवाह में लड़कों के एक समूह का विवाह लड़कियों के समूह के साथ कर दिया जाता है और यह समस्त समूह परस्पर एक–दूसरे के पति या पत्नी के रूप में जीवन–निर्वाह करते हैं। यह विवाह कहाँ पर प्रचलित था, इस संदर्भ में मोतीलाल गुप्ता कहते हैं–समूह विवाह तिब्बत, भारत तथा श्रीलंका के बहुपतित्व प्रथा वाले लोगों में पाया जाता है। समूह विवाह किन्ही वन्य जातियों में भी पहले पाये जाते थे। वर्तमान में इन विवाहों को असभ्य या अशोभनीय माना जाता है। संसार में किसी भी समाज में विवाह का यह प्रकार अधिक प्रचलित नहीं है।[13]

विवाह की उपरोक्त प्रथाओं में विभिन्न धार्मिक तथा सामाजिक नियमों का पालन किया जाता था। इन सामाजिक नियमों को भी विवाह के प्रकारों में सम्मिलित किया जाता है। ये विवाह इस प्रकार हैं–1. अन्तर्विवाह (Endogamy), 2. बहिर्विवाह (Exogamy), 3. अनुलोम विवाह (Anuloma) तथा 4. प्रतिलोम विवाह (Pratiloma Marriage)। अन्तर्विवाह के अन्तर्गत एक ही वर्ण में विवाह किया जाता है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि एक ही वर्ण में अनेक जातियाँ तथा उपजातियाँ पाई जाती हैं। इन सभी जातियों तथा उपजातियों में भी अपनी–अपनी जातियों तथा उपजातियों में विवाह–व्यवस्था का प्रचलन था। बहिर्विवाह (Exogamy) के अन्तर्गत व्यक्ति को अपने गोत्र या प्रवर (एक ऋषि की संतान) को छोड़कर दूसरे गोत्र या प्रवर में विवाह करना पड़ता है। अनुलोम विवाह के अन्तर्गत अपने से निम्न समझी जाने वाली जातियों में जब पुरुष का विवाह होता है, तो उसे अनुलोम विवाह कहा जाता है। इसी प्रकार जब उच्च कुलीन माने जाने वाली लड़की का विवाह जब निम्न समझे जाने वाले कुलों में होता है, तो उसे प्रतिलोम विवाह कहा जाता है। प्रतिलोम विवाह के बारे में मोतीलाल गुप्ता का कहना है कि–"हिन्दू समाज में कुछ मात्रा में प्रतिलोम विवाह सदैव प्रचलित रहे, परन्तु ऐसे विवाहों को अनुचित समझा जाता था और उनसे उत्पन्न संतान को चांडाल की श्रेणी में रखा जाता था।"[14]

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि प्राचीन भारतीय समाज में विवाह नामक संस्कार के अनेक रूप प्रचलित थे। विवाह के किसी संस्कार का एकाधिक रूप अब भी हमारे समाज में प्रचलित है या यूँ कह सकते हैं कि वर्तमान समय के विवाह संस्कार का स्वरूप इन प्राचीन वैवाहिक संस्कारों से ही अपनी भावभूमि ग्रहण करता है। विवाह संस्कार प्रत्येक युग में अपना महत्व रखता आया है तथा आगे आने वाले समय में भी इसका महत्व यथावत् रहने वाला है। विवाह–संस्कार को समाज के समक्ष सम्मान किया जाता है, अतः इस संस्कार को सामाजिक स्वीकार्यता प्राप्त होती है। विवाह सम्पन्न होने के पश्चात् वर–वधु 'दंपति' बन जाते हैं तथा उन्हें अपना जीवन साथ–साथ व्यतीत करने की सामाजिक स्वीकार्यता मिल जाती है।

प्राचीन काल में प्रचलित बहुपत्नि, बहुपति या समूह विवाह की प्रथा अब समाप्त हो चुकी है। वर्तमान काल में दैव विवाह, ब्रह्म विवाह या गंधर्व विवाह (Love marriage) ही अधिक प्रचलित हैं। निरन्तर बदलते हुए सामाजिक मूल्यों ने हिन्दू धर्म में प्रचलित सोलह संस्कारों को लगभग समाप्त कर दिया है, परन्तु विवाह नामक यह संस्कार अब भी मानव की बहुत बड़ी आवश्यकता बना हुआ है, जो इसके महत्व को इंगित करने के लिए

काफी है। आगे आने वाले समय में नई–नई पीढ़ियाँ अपने नये–नये जीवन–मूल्य स्थापित करेगीं, परन्तु विवाह नामक संस्कार को नहीं छोड़ पायेगीं। विवाह की आवश्यकता तथा महत्व को किसी भी युग में कम नहीं आँका जा सकता, इसलिए इस संस्कार की महत्ता यथावत् बनी रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ-सूची :-

1. मनुस्मृति, टीकाकार–रामचन्द्र वर्मा शास्त्री, प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2020, पृ०–103
2. वही, पृ०–103
3. वही, पृ०–104
4. वही, पृ०–104
5. वही, पृ०–104
6. वही, पृ०–104
7. वही, पृ०–104
8. वही, पृ०–104
9. वही,पृ०–105
10. वही, पृ०–105
11. भारत में समाज, मोतीलाल गुप्ता, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1997, पृ०–207–208
12. वही, पृ०–210
13. वही, पृ०–212
14. वही, पृ०–205

मो०– 9466715068

itsmesachinbangar@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 208-213

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

അരികുവൽക്കരിക്കപ്പെടുന്ന ഭിന്നശേഷി ജീവിതവും മാധ്യമ ധർമ്മവും- 'കൃഷ്ണഗാഥ 'യെ മുൻനിർത്തിയുള്ള വിശകലനം

Tinu Alex. K
Research Scholar, Department of Hindi,
Cochin University of Science & Technology

സമൂഹത്തിന്റെ ഭാഗവാക്കുപോലും ആവാതെ വീടിന്റെ ചുവരുകൾക്കുള്ളിൽ ജീവിതകാലം മുഴുവൻ ബന്ധിക്കപ്പെട്ട് ശാപം കണക്കെയുള്ള ജീവിതം ജീവിക്കാൻ വിധിക്കപ്പെട്ടവരാണ് ഭിന്നശേഷി സമൂഹം എന്ന് പറയുന്നത്.ഭിന്നശേഷി ഇരുപത്തിയൊന്നു വിധത്തിൽ ഉണ്ടെങ്കിലും ബുദ്ധിപരമായ ശേഷിക്കുറവ് വൈകല്യത്തിന്റെ ഏറ്റം ഭയാനകവും നിസ്സഹായവുമായ അവസ്ഥയാണ്.സത്യം, മിഥ്യ, ശരി- തെറ്റുകൾ തിരിച്ചറിയാനാവാത്ത അവസ്ഥ ഒരു സാധാരണ മനുഷ്യനെ സംബന്ധിച്ച് ചിന്തകൾക്കതീതമായ കാര്യങ്ങൾ തന്നെ. അതുകൊണ്ടുതന്നെ ഇത്തരം വ്യക്തികളെ, അവരുടെ കുടുംബത്തെ മുഖ്യധാരയിലേക്ക് കൊണ്ടുവരാനായി പൊതുസമൂഹം ആഗ്രഹിക്കുന്നുമില്ല. ശാപം കണക്കെയുള്ള ജീവിതം അവർക്ക് സമ്മാനിച്ചതും ഈ പൊതുസമൂഹം തന്നെ. അരികു വൽക്കരിക്കപ്പെട്ട് ജീവിതം ഹോമിക്കാനാണ് ഇത്തരം കുട്ടികളുടെയും മാതാപിതാക്കളുടെയും വിധി. സഹതാപവും, പുച്ഛവും, ദേഷ്യവും ഇടകലർന്ന നോട്ട ശരങ്ങളാൽ നീറിപ്പുഞ്ഞ് ജീവിക്കേണ്ടിവരുന്ന മാതാപിതാക്കളുടെയും ഇതൊന്നുമറിയാതെ മായികലോകത്ത് വിരാജിക്കുന്ന ഭിന്നശേഷി ജീവിതങ്ങളെയും നമുക്ക് ചുറ്റും കാണാൻ സാധിക്കുന്നതാണ്. ഒരു മനുഷ്യനെന്ന പരിഗണന പോലും നൽകാതെ ഒരു കോമാളി കണക്കെയാണ് ഇത്തരം ജീവിതങ്ങളെയും അവർക്ക് ജന്മം നൽകിയ മാതാപിതാക്കളെയും പൊതുസമൂഹം വീക്ഷിക്കുന്നത്. ഒരു നിശ്ചിത വിഷയത്തിൽ തങ്ങളുടെ അഭിപ്രായം രൂപപ്പെടുത്തുന്നതിൽ പൊതുസമൂഹത്തെ സ്വാധീനിക്കുന്നത്തിൽ മാധ്യമങ്ങൾ വളരെയധികം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു. ആശയരൂപീകരണം നടത്തുന്നതിൽ പൊതുസമൂഹം ഉറ്റുനോക്കുന്നത്

മാധ്യമങ്ങളെയാണ്, മാധ്യമ നിലപാടുകളെയാണ്. സമൂഹത്തിന്റെ ഉന്നമനത്തിനും പുരോഗതിക്കും വേണ്ടി നിലകൊള്ളുന്ന മാധ്യമങ്ങൾ തങ്ങളുടെ ധർമ്മം മറന്ന് പ്രത്യേക താൽപര്യങ്ങൾക്കനുസൃതമായി പ്രവർത്തിക്കുന്ന കാലമാണിന്ന്. ഓരോ വിഷയത്തിലും മാധ്യമങ്ങൾ എടുക്കുന്ന നിലപാടുകൾ ഇന്ന് പലപ്പോഴും വിമർശന വിധേയമാവാറുണ്ട്. ഭിന്നശേഷിയുള്ള ആളുകളുടെ പച്ചയായ ജീവിതം തുറന്നു കാട്ടുമ്പോൾ മനസിനുള്ളിൽ സഹതാപത്തിന്റെ അലയടികൾ ഉൽബോധിപ്പിക്കുന്ന തരത്തിലുള്ള പശ്ചാത്തല സംഗീതം പുറപ്പെടുവിച്ചുകൊണ്ട് ആളുകളെ ദയാവായ്പ്പിന്റെ പൊള്ളരം നിറഞ്ഞ ചട്ടക്കൂടിൽ ഒതുക്കി നിർത്തുവാനാണ് മാധ്യമങ്ങൾ ശ്രമിക്കുന്നത്. ഇത്തരത്തിൽ ഭിന്നശേഷിക്കാരുടെയുംഅവരുടെ മാതാപിതാക്കളുടെയും ജീവിത സാഹചര്യങ്ങളെ മുതലെടുത്തുകൊണ്ട് സഹതാപ തരംഗം സൃഷ്ടിച്ച് തങ്ങളുടെ റേറ്റിംഗ് കൂട്ടുന്നതിൽ പരക്കം പായുകയാണ് ഇന്നത്തെ മാധ്യമങ്ങൾ. ഇത്തരം നവീന മാധ്യമ സംസ്കാരത്തിന്റെ പൊള്ളത്തരങ്ങളെ പൊതുധാരയിലേക്ക് തുറന്നുകാട്ടുകയാണ് മലയാളത്തിന്റെ പ്രിയ എഴുത്തുകാരിയായ കെ. ആർ മീര തന്റെ ചെറുകഥയായ 'കൃഷ്ണഗാഥ' യിലൂടെ ചെയ്തിരിക്കുന്നത്.ഇവിടെ പ്രതിപാദിക്കുന്നത് വൃന്ദാവനത്തിൽ നന്ദഗോപരുടേയും യശോദയുടെയും പുത്രനായി വെണ്ണ കട്ടും ഗോപികമാർക്കൊപ്പം നൃത്തം ചെയ്തും ലീലകളാടിയും കുസൃതിക്കുരുന്നായി വളർന്നുവന്ന ചെറുശ്ശേരിയുടെ ശ്രീകൃഷ്ണനെ അല്ല, മറിച്ചു മാതാവ് നഷ്ടപ്പെട്ട സ്വന്തം അച്ഛന്റെ തണലിൽ കഴിയുന്ന ബുദ്ധിമാന്ദ്യം സംഭവിച്ച 'കൃഷ്ണ' യുടെ കഥയാണ്. ചെറുശ്ശേരിയുടെ 'കൃഷ്ണഗാഥ' നമ്മെ രസിപ്പിക്കുമെങ്കിൽ മീരയുടെ കൃഷ്ണഗാഥ നമ്മുടെ കണ്ണുകളെ ഈറനണിയിക്കും.

മലയാള സ്ത്രീപക്ഷ എഴുത്തുകാരികളിൽ തന്റേതായ വ്യക്തിമുദ്ര പതിപ്പിച്ച എഴുത്തുകാരിയാണ് കെ ആർ മീര. സ്ത്രീ ജീവിതത്തിന്റെ കാണാപ്പുറങ്ങളെ തുറന്നു കാട്ടുകയാണ് മീര തന്റെ രചനങ്ങളിലൂടെ. മീര സ്വയം കഥകളെ കുറിച്ച് പറയുന്നതു ഇങ്ങനെയാണ്...

1"ആരും എഴുതിയില്ലെങ്കിലും കഥ മനുഷ്യരിൽ നിന്നും മനുഷ്യരിലേക്ക് അതിന്റെ യാത്ര തുടരും.അതിന്റെ ആനന്ദത്തിന് പകരം വയ്ക്കാൻ യാതൊന്നും മാനവരാശി കണ്ടെത്തിയിട്ടില്ല. പറയാൻ ഒരു കഥയു ഇല്ലാതായാൽ മനുഷ്യൻ ദാരുണമായി മരിച്ചുപോകും." കഥയും മനുഷ്യ ജീവിതവും തമ്മിൽ ഇണ പിരിയാൻ ആവാത്ത ബന്ധമാണുള്ളത്. പച്ചയായ മനുഷ്യജീവിതങ്ങളാണ് നമുക്ക് മുന്നിൽ കഥകളായി രൂപാന്തരം പ്രാപിക്കുന്നത്.

മനുഷ്യ ജീവിതത്തിൽ ഗുരുവിനുള്ള പ്രാധാന്യം വളരെ വലുതാണ്. 'മാതാപിതാ ഗുരു ദൈവം ' എന്നാണല്ലോ വെയ്പ്പ്. ഗുരു മനുഷ്യനെ ദൈവത്തിങ്കലേക്ക് അടുപ്പിക്കുവാനുള്ള പ്രകാശമാണ്, വെളിച്ചമാണ്.മനുഷ്യനിലുള്ള അന്ധകാരത്തെ നീക്കി അറിവാകുന്ന പ്രകാശത്തെ നൽകുന്നവൻ. ഇന്ന് എല്ലാ ഗുരുക്കന്മാരും ഇതുപോലെയാണോ? 'സർവം കൃഷ്ണമയം'എന്നോതി കൃഷ്ണഗാഥ പഠിപ്പിക്കാൻ വന്ന നാരായണൻകുട്ടി ഗുരുവെന്ന വെളിച്ചത്തിനു അപമാനകരമാണ്. ശിഷ്യ യുടെ ഉടലിൽ നോക്കി അഷ്ടപദി പഠിപ്പിക്കുന്ന അധ്യാപകനിൽ കാമം അല്ലാതെ മറ്റെന്താണ് ഉള്ളത്? കൃഷ്ണയോട് നാരായണൻകുട്ടി പറയുന്നതിങ്ങനെയാണ്

2"ശ്ലിഷ്യതി കാമപി, ചുംബനി കാമപി, കാമപി രാമായതം രാമാ.."

സ്ത്രീകളെ ഉപഭോഗ വസ്തുവായി മാത്രം കാണുന്ന നാരായണൻകുട്ടി രാധയെ' ഫ്ലർട്ട്' എന്ന് വിശേഷിപ്പിക്കുന്നതിലൂടെ സ്ത്രീകളെ പ്രതി തന്റെ മനോഭാവം വ്യക്തമാക്കുന്നുണ്ട്. ഭിന്നശേഷിയുള്ള ഒരു കുട്ടിയെ സംബന്ധിച്ചിടത്തോളം പലവിധത്തിലുള്ള മനുഷ്യനിർമ്മിതമായ ആപത്തുകളെ അതിജീവിക്കേണ്ടതുണ്ട്. എന്നാൽ ഇവിടെ പ്രായത്തിനു പോന്ന വിവേകത്തിന്റേയും വിവേചനാശീലത്തിന്റെയും അഭാവം ഉള്ള കൃഷ്ണയ്ക്ക് നാരായണൻകുട്ടിയുടെ വിശ്വരൂപം എന്തെന്ന് പൂർണ്ണമായും മനസ്സിലാക്കുവാൻ കഴിഞ്ഞിട്ടില്ല.. കഴിയുകയുമില്ല. ഒരു ചെറിയ കുട്ടിയെ സംബന്ധിച്ചിടത്തോളം ശരി തെറ്റുകൾ വിവേചിച്ചറിയുവാൻ വളരെ പ്രയാസമാണ്. തന്നെ ചൂഷണം ചെയ്യുകയാണ്എന്നറിയാൻ തന്നെഅവൾക്ക് നാളുകൾ വേണ്ടിവരുന്നു.എന്നാൽ ബുദ്ധിപരമായി പ്രയാസങ്ങൾ നേരിടുന്ന ഒരു കുട്ടിയെ സംബന്ധിച്ചിടത്തോളം അവൾക്കത് മനസ്സിലാവുകയുമില്ല. അതുകൊണ്ടുതന്നെയാണ് അവളുടെ ഇളം മേനിയെ നാരായണൻകുട്ടി രണ്ടര ലക്ഷം രൂപ സമ്പാദിച്ചത്.

കഥയിൽ ഭിന്നശേഷിയുള്ള കുട്ടികൾ കുടുംബത്തിലും സമൂഹത്തിലും നേരിടുന്ന അതിക്രമങ്ങളെക്കുറിച്ചാണ് പറയുന്നതെങ്കിലും ഇത്തരം സംഭവങ്ങൾ നടക്കുമ്പോൾ മാധ്യമങ്ങൾ എടുക്കുന്ന നിലപാടുകളിലെ ശെരികേടുകൾ എഴുത്തുകാരി കൃത്യമായി ചൂണ്ടിക്കാണിക്കുന്നുണ്ട്.ഇന്ന് പല മാധ്യമങ്ങളും ലൈംഗികച്ചുവ നിറഞ്ഞ പല ചോദ്യങ്ങളും ചോദിച്ച്' അതിജീവിത 'മാരെ മാനസികമായി തളർത്തുന്നത് നാം കണ്ടിട്ടുണ്ട്.2006 ഇൽ പുറത്തിറങ്ങിയ ലാൽ ജോസ് ചിത്രം 'അച്ഛനുറങ്ങാത്ത വീട് ' എന്നതിലും പീഡിപ്പിക്കപ്പെട്ട ഒരു സ്കൂൾ വിദ്യാർത്ഥിനിയെയും മാധ്യമങ്ങൾ എങ്ങനെയാണ് വേട്ടയാടുന്നത് എന്നും തന്റെ മകൾക്കുണ്ടായ ദുരനുഭവം മറന്ന് ജീവിക്കാനാവാത്ത വിധത്തിൽ കൊണ്ടു ചെന്നെത്തിക്കുന്നതെന്നും നമ്മൾ കണ്ടതാണ്. അതിലും

സങ്കടകരമാണ് കൃഷ്ണയുടെ അവസ്ഥ.ഒരു ചെറു പെൺകുട്ടിയുടെ പോലെ നിഷ്കളങ്കമായി മറുപടി പറയുന്ന കൃഷ്ണ. ഇതെല്ലാം കേട്ട് വിഷമിച്ച് എന്ത് ചെയ്യണമെന്ന് അറിയാത്ത അവസ്ഥയിൽ ഇരിക്കുന്ന ഒരു അച്ഛനും.. മനുഷ്യത്വം എന്ന ഒരു പരിഗണന പോലും ഇല്ലാതെ ചോദ്യശരങ്ങളുമായി മുന്നോട്ട് അടുക്കുന്ന മാധ്യമങ്ങൾക്ക് മുന്നിൽ നിസ്സഹായനായി ഇരിക്കാനേ ആ അച്ഛന് കഴിയുമായിരുന്നുള്ളൂ. തന്റെ മകളുടെ കുട്ടിത്തം നിറഞ്ഞ സംസാരവും കാൽ അകത്തി വെച്ചുള്ള ഇരിപ്പും ഇതെല്ലാം കണ്ടും കേട്ടും പുച്ഛഭാവത്തോടെയും ലൈംഗിക ചുവയോടെയും ചോദ്യങ്ങൾ ചോദിക്കുന്ന റിപ്പോർട്ടർമാരും ആ അച്ഛനെ അസ്വസ്ഥനാക്കുന്നുണ്ട്. ഭൂമി പിളർന്നു പോയാലോ എന്നുവരെ അദ്ദേഹം ചിന്തിക്കുന്നുണ്ടാവാം.3"നെഞ്ചിനുള്ളിൽ ഓടക്കുഴലൊച്ച അയാൾക്ക് കേൾക്കാമായിരുന്നു. പക്ഷേ അയാൾക്ക് മാത്രം കേൾക്കാനുള്ള ഒച്ചയേ അതിനുണ്ടായിരുന്നുള്ളൂ. നെഞ്ചിലെ നിലയ്ക്കാത്ത മൂളലുമായി അയാൾ ഉദ്യോഗസ്ഥനെ അനുഗമിച്ചു. "

പിന്നീട് നടന്നത് മറ്റൊരു തരത്തിലുള്ള ചൂഷണമായിരുന്നു. നാരായണൻകുട്ടി കൃഷ്ണയുടെ ദേഹത്തെ മുറിവേല്പിച്ചപ്പോൾ മാധ്യമങ്ങൾ ചോദ്യശരങ്ങളായി മനസിനെ മുറിപ്പെടുത്തി പിച്ചിച്ചീന്തി. "ടൗണിൽ കൃഷ്ണ എന്തുചെയ്തു? കൊങ്കണ്ണുള്ള റിപ്പോർട്ടറായിരുന്നു അത്... എന്തൊക്കെ കണ്ടു? കറുത്ത കണ്ണട വെച്ചയാളുടെ സ്വരത്തിൽ പരിഹാസം പോലെയെന്തോ മുഴങ്ങി നിന്നു... ശരി. ഷർട്ടുകൾ കണ്ടു. എന്നിട്ട്? കൊങ്കണ്ണുള്ളയാൾ വീണ്ടും ചോദിക്കുന്നു.."എന്നിങ്ങനെ സ്വയം മുറിവേറ്റു എന്നുപോലും മനസിലാകാത്ത ഒരാളോട് ഇഴ പിരിച്ചെടുക്കുന്ന പോലെ ചോദ്യങ്ങൾ ചോദിച്ചു ഉറ്റവരെ കടുത്ത മാനസികസംഘർഷത്തിലേക്ക് നയിക്കുന്നതാണോ മാധ്യമ ധർമമെന്നത് നാം ചിന്തിക്കേണ്ടതുണ്ട്. ഇന്ന് മനുഷ്യന്റെ സ്വകാര്യ ജീവിതത്തിലേക്ക് പോലും അനുവാദമില്ലാതെ മാധ്യമ ക്യാമറകൾ കടന്നു ചെല്ലുന്നു. അവരുടെ സ്വകാര്യതയെ ഹനിച്ചുകൊണ്ട് ഒരു വേട്ടക്കാരൻ കണക്കെ പിന്തുടരുന്നു. അവിടെ മനുഷ്യത്വമില്ല.. പരസ്പരം സ്നേഹമില്ല, കരുതലില്ല.ഒരു ഭിന്നശേഷിക്കാരിയായ അതിജീവിതയോട് കൂടുതൽ ചോദ്യം ചോദിക്കുന്നതും കൊങ്കണ്ണ് ഉള്ള ഒരു വ്യക്തി തന്നെ എന്നുള്ളത് നമ്മുടെ അധഃപതനം എത്രത്തോളം ആണെന്ന് വിളിച്ചോതുന്നു.മാധ്യമങ്ങൾ കഴുകനെ പ്പോലെ സമൂഹത്തിൽ മുറിപ്പാടുകളുമെന്തി ജീവിക്കുന്ന കൃഷ്ണ യെ പോലെ ഉള്ളവരുടെ അടുത്തേക്ക് സൂക്ഷ്മതയോടെ വരുന്നു.. കാക്കകൂട്ടം ചിക്കി പെറുക്കുന്ന പോലെ മുറിവുകലിലേക്ക് തന്റെ കൂർത്ത ചുണ്ടുകളാകുന്ന ചോദ്യശരങ്ങൾ കൊണ്ട് മുറിവേല്പിക്കുന്നു. മാധ്യമങ്ങൾ എത്രമാത്രം തങ്ങളുടെ കർത്തവ്യങ്ങളിൽ നിന്നു വ്യതിചലിക്കുന്നു എന്ന് ഈ കഥയിലൂടെ വായനക്കാരന് മനസിലാക്കാൻ സാധിക്കുന്നതാണ്.

ഭിന്നശേഷിയുള്ള കുട്ടികളെ എങ്ങനെ വളർത്തണം, എങ്ങനെ അവരോട് പെരുമാറണം, എങ്ങനെ സമൂഹത്തിന്റെ ഭാഗമാക്കാം എന്നിങ്ങനെ ചിന്തിക്കേണ്ട മാധ്യമങ്ങൾ അവരുടെ ശേഷിക്കുറവിനെ പരിഹസിച്ചു നീതി നടപ്പിലാക്കാതെ അരികിലേക്ക് മാറ്റിയാണ് നിർത്തുന്നത്. ഇത്തരം കുട്ടികൾക്കെതിരായുള്ള അക്രമങ്ങൾ തടയിടേണ്ടതിനു സമൂഹത്തെ ബോധവൽക്കരിക്കുന്നതിനു പകരം മാധ്യമങ്ങൾ ചെയുന്നത് ഇത്തരം കുടുംബങ്ങളെ സമൂഹത്തിനു മുന്നിൽ അപമാനിക്കുകയും ആത്മഹത്യയുടെ വക്കിൽ എത്തിക്കുകയുമാണ് ചെയുന്നത്.പൊതു താല്പര്യമെന്ന നിലപാടിനോട് കീഴടങ്ങി നിൽക്കുക എന്നതാണ് മാധ്യമങ്ങൾ ചെയേണ്ടത്. ഇത് നടക്കണമെങ്കിൽ മൂലധന താല്പര്യങ്ങൾക്ക് അടിമപ്പെടാതിരിക്കണം. മാറിയ കാലത്ത് മാധ്യമങ്ങളിൽ മൂലധന ശക്തികളുടെ സാന്നിധ്യവും ശേഷിയും കൈകടത്തലും വർദ്ധിച്ച തോതിൽ ഉണ്ട്. സാമൂഹ്യ താൽപര്യത്തിനുപരി മാധ്യമത്തെ മൂലധന- ജാതി-മത സാമൂഹ്യ ശക്തികൾ നിയന്ത്രിക്കുന്ന സ്ഥിതി നിലവിലുണ്ട്. ലാഭത്തിനു വേണ്ടി മാത്രമാകുമ്പോൾ മാധ്യമങ്ങൾക്ക് അതിന്റെ ധർമ്മം പാലിക്കാൻ ആവാതെ വരും. അത്തരം മാധ്യമങ്ങൾ പ്രതിലോമകാരികളായി മാറുമെന്ന് സി.രാധാകൃഷ്ണൻ ഈ അടുത്തിടെ പറഞ്ഞത് വെറുതെയല്ല. മാധ്യമ ധർമ്മം മറന്നുള്ള ഇത്തരം പ്രവർത്തികൾ എത്രയോ കൃഷ്ണമാരേ നിശബ്ദരാക്കിയിരിക്കാം. ഇത്തരം വിചാരണകൾ കൂടി സഹിക്കാനുള്ള ത്രാണിയില്ലാതെ കൃഷ്ണയുടെ അച്ഛന്മാർ എത്രയോ പേർ നമ്മുടെ സമൂഹത്തിൽ ഉണ്ടാവാം.

അതിജീവിത,ഭിന്നശേഷിക്കാരിയായ അതിജീവിത എന്ന പേരോടുകൂടി അറിയപ്പെടാൻ താല്പര്യമില്ലാത്ത എത്രയോ കൃഷ്ണമാർ നമുക്കു ചുറ്റും വീടിന്റെ നാല് ചുവരുകൾക്കുള്ളിലായി കൊട്ടിയടയ്ക്കപ്പെട്ട് ജീവിക്കുന്നുണ്ടാവും. മാധ്യമങ്ങൾ എന്നാൽ സമൂഹത്തിൽ നടക്കുന്ന അനീതികളെ വെളിച്ചത്തു കൊണ്ടുവന്നു കുറ്റവാളികൾക്ക് തക്കതായ ശിക്ഷ നൽകാനായി പ്രയത്നിക്കേണ്ടവരാണ്. നീതിന്യായ വ്യവസ്ഥയും പോലീസും പോലും മാധ്യമങ്ങളുടെ ഇത്തരം ചാവേറുകൾക്ക് മുന്നിൽ നിശബ്ദരായി നിസ്സഹായരായി നിൽക്കാനേ കഴിയുന്നുള്ളൂ. ചോദ്യശരങ്ങളിൽ നിന്നും പോലീസുകാരൻ കൃഷ്ണയെ രക്ഷിക്കുന്നുണ്ടെങ്കിലും മാധ്യമങ്ങൾക്ക് തക്കതായ ശാസന പോലുംനൽകാനാവാത്ത സ്ഥിതിയാണ്. ഇരയ്ക്കെതിരായി വേട്ടക്കാരനുമൊപ്പം നിൽക്കുന്ന മാധ്യമങ്ങൾഇരയെ വലിച്ചുകീറുന്നു.നാരായണൻകുട്ടി ആത്മഹത്യ ചെയ്തുവെങ്കിലും അയാളെ പോലെയുള്ള നീചന്മാരെ സമൂഹത്തിൽ ഒറ്റപ്പെടുത്തണമെന്നോ തക്കതായ ശിക്ഷ നൽകണമെന്നോ എന്ന സമൂഹത്തോട് പറയുന്നതിന് പകരമായിജീവിച്ചിരിക്കുന്ന, ജീവിതത്തിന്റെ പടിവാതിക്കൽ മാത്രം എത്തിനിൽക്കുന്ന കൃഷ്ണയോട് അവളുടെ അവസ്ഥ മനസ്സിലാക്കുക പോലും ചെയ്യാതെ വൈകല്യത്തെ മുതലെടുക്കുകയാണ്മാധ്യമങ്ങൾ ചെയ്യുന്നത്. സ്ത്രീകൾക്കെതിരായുള്ള ലൈംഗിക കുറ്റകൃത്യങ്ങൾ നടക്കുമ്പോൾ മാധ്യമങ്ങൾ

ഇരയോട് ചോദ്യങ്ങൾ ചോദിക്കുമ്പോൾ പാലിക്കേണ്ട മര്യാദകളെക്കുറിച്ചും മാനുഷിക പരിഗണനയെ കുറിച്ചും ഓർമ്മിപ്പിക്കുന്ന എഴുത്തുകാരി സമൂഹത്തിൽ മാറ്റിനിർത്തപ്പെടുന്ന വിഭാഗം ആയ ഭിന്നശേഷിക്കാരെയും അവർക്കെതിരായി നടക്കുന്ന അതിക്രമങ്ങളും റിപ്പോർട്ട് ചെയ്യുമ്പോൾ പാലിക്കേണ്ട മാധ്യമ ധർമ്മത്തെ കുറിച്ചും സമചിത്തതയെക്കുറിച്ചും പുനർവിചിന്തനം നടത്തുവാൻ മാധ്യമങ്ങളെ പ്രേരിപ്പിക്കുകയുമാണ് തന്റെ ചെറുകഥയിലൂടെ ചെയ്തിരിക്കുന്നത്. മനസ്സിൽ കനല് പോലെ എരിയുന്ന ഒരു കഥയാണ് കൃഷ്ണഗാഥ എന്ന് എം മുകുന്ദൻ പറഞ്ഞതുപോലെ ഒരേസമയം ഈറനണിയിക്കുകയും പുനർവിചിന്തനം നടത്താൻ സമൂഹത്തെപ്രേരിപ്പിക്കുകയും ചെയ്യുന്നു.

കുറിപ്പുകൾ

1. മീര കെ.ആർ - കഥയെഴുത്ത്

2.മീര കെ.ആർ- കഥകൾ(കൃഷ്ണഗാഥ)പു.33,34

3.മീര കെ.ആർ - കഥകൾ(കൃഷ്ണഗാഥ)പു.35

alextinu99@gmail.com

Phone no- 8848175449

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 214-218

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हरियाणा में प्रमुख फसलों के उत्पादन तथा क्षेत्र का बदलता स्वरूप

सरिता देवी, सहायक प्रोफ़ेसर,
नीरज, सहायक प्रोफ़ेसर,
राजकीय महाविद्यालय, हिसार।

सार :

बढ़ती जनसँख्या के भरण पोषण व आधुनिक तकनीकी के कारण, सीमित भूमि संसाधन पर उन्नत बीज, रासायनिक खाद, विकसित सिंचाई के साधनों व विभिन्न कृषि तकनीको से अधिक उपज लेनी वाली फसलों को समय के साथ किसानों द्वारा अधिक महत्व दिया जाने लगा हैं। जिससे हरियाणा के शस्य प्रणाली में बहुत परिवर्तन हुआ। इस परिवर्तन के कारण चावल और गेंहू के उत्पादन क्षेत्र व उत्पादन में विगत 50 वर्षो में अद्भुत तरीके से वृद्धि दर्ज की गई। हरियाणा के फसल प्रारूप में आए इस परिवर्तन में हरित क्रांति का महत्वपूर्ण योगदान रहा। हरित क्रांति में देश की खाद्यान समस्या को दूर करने के लिए चावल व गेंहू जैसी फसल पर जरूरत से ज्यादा जोर दिया गया। जिसका नकारात्मक प्रभाव अन्य फसलों जैसे की बाजरा, जौ, गन्ना व दलहन पर पडा, जिससे इन फसलों का उत्पादन क्षेत्र भी समय के साथ कम होता गया। हरियाणा में सतत कृषि विकास के लिए, कृषि प्रणाली में सुधार की आवश्यकता हैं जिससे क्षेत्र में उगाए जाने वाली सभी फसलों का महत्व बढ़े। चावल तथा गेंहू के अतिरिक्त अन्य फसलों पर शोध कार्य हो ताकि क्षेत्र के किसान इन फसलों को उगाने के लिए प्रेरित हो क्योंकि फसल चक्र में इन फसलों का अपना महत्व हैं।

कुंजी – कृषि, फसल प्रारूप, हरित क्रांति व शस्य प्रणाली।

प्रस्तावना –

भारत देश की अर्थव्यवस्था प्रमुख रूप से कृषि पर आधारित हैं तथा देश की 60 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि तथा उससे सम्बधित क्रियाओं में जुड़ी हुए हैं। हरियाणा ना केवल देश के अनाज संचय में तथा 60 प्रतिशत बासमती चावल के निर्यात में अपनी भागीदारी रखता हैं। हरियाणा बासमती चावल के उत्पादन में प्रसिद्ध हैं इसके साथ गेंहू, चावल, बाजरा, जौ तथा दलहन के लिए भी प्रसिद्ध है।

विगत दशकों से हरियाणा की जनसंख्या बहुत तेजी से बड़ी हैं जिससे इस क्षेत्र के संसाधन पर दबाब बढ़ता जा रहा हैं। हरियाणा का क्षेत्रफल 44212 वर्ग किलोमीटर हैं तथा भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का

1.3 प्रतिशत हैं। जनगणना 2011 के अनुसार, हरियाणा की जनसंख्या 2,53,51,462 व्यक्ति हैं। बढ़ती जनसंख्या स्तर से सीमित भूमि संसाधन पर दबाब समय के साथ बढ़ता जा रहा हैं।

सीमित कृषि भूमि संसाधन पर बढती जनसंख्या के भरण–पोषण के लिए उन्नत बीज तथा तकनीकी का प्रयोग करके कृषि उत्पादन को बढना वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यक हो गया हैं। आधुनिक तकनीकी तथा बढ़ती वर्तमान समय की आवश्यकता के कारण हरियाणा के कृषि फसल प्रारूप में अद्‌भुत तरीके से परिवर्तन हुआ हैं। गेंहू तथा चावल के उत्पादन क्षेत्र तथा उत्पादन में बहुत ज्यादा बढ़ौतरी देखी गई। इस बढ़ौतरी का प्रमुख कारण हरित क्रांति माना गया। देश में हरित क्रांति का प्रारम्भ डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन के निर्देशन में सन 1960 में फसल उत्पादन को बढ़ाने के लिए किया गया। इस तकनीकी में उन्नत बीज, रसायनिक खाद, सिंचाई तथा विकसित उपकरणों का प्रयोग किया गया जिसका परिणाम ये हुआ कि हरियाणा में कुछ ही फसलों जैसे चावल व गेंहू पर विशेष ध्यान दिया गया जिससे उनका क्षेत्र और उत्पादन बढ़ा तथा अन्य फसल जैसे बाजरा, जौ, गन्ना तथा दाल का क्षेत्र तथा उत्पादन में गिरावट हुए।

अध्ययन क्षेत्र :

हरियाणा एक उतर भारत का स्थलरुद्ध राज्य हैं जो $27^0$37′ उत्तर से $30^0$55′ उत्तर तथा $74^0$27′ पूर्व से $77^0$36′ पूर्व में स्थित हैं। हरियाणा की मुख्य रूप से चार भौगोलिक विशेषता –

– यमुना–घग्गर मैदान
– शिवालिक पहाड़ी
– अर्ध–रेतीला मैदान
– अरावली श्रृखला

जलवायु :

हरियाणा की जलवायु महाद्वीपीय विशेषता वाली हैं। जहा ग्रीष्म ऋतू में सामान्य से अधिक गर्मी तथा सर्द ऋतू में सामान्य से अधिक सर्दी होती हैं। वर्षा ऋतू में, वर्षा हरियाणा के दक्षिण पश्चिम में 300 मिलीमीटर तथा उत्तर पूर्व में 1100 मिलीमीटर प्राप्त होती है। मानसून वर्षा के आधार पर यहा मुख्य रूप से दो फसल मौसम है : 1. खरीफ 2. रबी। खरीफ फसल की समय अवधि जुलाई से अक्टूबर तथा रबी फसल की समय अवधि अक्टूबर से मार्च है।

उद्देश्य :

– हरियाणा में प्रमुख फसलों के प्रारूप में परिवर्तन को प्रदर्शित करना।

आंकड़ा स्त्रोत –

यह शोध पत्र द्वितीय आंकड़ों पर आधारित हैं। शोध पत्र से संबधित आंकड़े हरियाणा सांख्यिकी सार 2020–21, आर्थिक तथा सांख्यिकीय विश्लेषण विभाग, हरियाणा, कृषि तथा किसान कल्याण रिपोर्ट 1966–67 से 2019–20 के द्वितीय आंकड़ों पर आधारित हैं।

(Table-1)

हरियाणा में प्रमुख फसलों के क्षेत्र तथा उत्पादन

वर्ष	चावल का सकल क्षेत्र '000 'हैक्टयर	चावल का उत्पादन '000' टन	गेंहू का सकल क्षेत्र '000' हैक्टयर	गेंहू का उत्पादन '000' टन	बाजरा का सकल क्षेत्र '000' हैक्टयर	बाजरा का उत्पादन '000' टन	जौ का सकल क्षेत्र '000' हैक्टयर	जौ का उत्पादन '000' टन	गन्ना का सकल क्षेत्र '000' हैक्टयर	गन्ना का उत्पादन '000' टन	दलहन का सकल उत्पादन '000' हैक्टयर	दलहन का उत्पादन '000' टन
1966-67	192.0	223	743.0	1059	893.0	373	182.0	239	150.0	510	1150.0	563
1970-71	269.2	460	1129.3	2342	879.6	826	108.6	124	155.7	707	1158.9	832
1980-81	483.9	1259	1479.0	3490	870.3	474	124.5	181	113.1	460	794.8	503
1990-91	661.2	1834	1850.1	6436	608.6	526	50.5	107	147.8	780	742.0	542
2000-01	1054.3	2695	2354.8	9669	608.3	656	44.1	118	143.0	817	157.0	100
2010-11	1243.3	3465	2504.0	11578	659.6	1183	37.3	130	84.5	604	175.6	153
2017-18	1422.0	4880	2530.5	12263	449.3	721	20.2	69	114.9	963	56.6	114
2018-19	1446.9	4516	2553.2	12573	424.7	878	15.5	58	108.7	850	85.4	93
2019-20(अ)	1559.0	5198	2533.9	11877	492.9	1201	12.1	47	96.3	773	74.3	65

स्त्रोत : हरियाणा सांख्यिकी सार 2020–21, आर्थिक तथा सांख्यिकीय विश्लेषण विभाग, हरियाणा।
अ –अनंतिम आंकड़े।

प्रमुख फसलों का क्षेत्र –

सन् 1966–67 में चावल का उत्पादन क्षेत्र 192 हजार हैक्टेयर था जो सन् 2019–20 में बढकर 1559 हजार हैक्टेयर हो गया, जो सन् 1966–67 वर्ष की तुलना में 8.1 गुना ज्यादा हैं। इसी समय अवधि में ही गेंहू का उत्पादन क्षेत्र में 743 हजार हैक्टेयर से 2533.9 हजार हैक्टेयर में बढ़ोतरी देखी गई, जो 3.5 गुना ज्यादा हैं। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार जौ के उत्पादन क्षेत्र में कमी दर्ज हुए है। सन् 1966–67 में 182 हजार हैक्टेयर से कम हो कर सन् 2019–20 में 12.1 हजार हैक्टेयर हो गया। इसी प्रकार से बाजरा क्षेत्र में भी कमी को दर्ज किया गया। बाजरा उत्पादन क्षेत्र सन् 1966–67 में 893 हजार हैक्टेयर से कम हो कर सन् 2019–20 में 492.

6 हजार हैक्टेयर हो गया जो पहले की तुलना में आधा रह गया। गन्ना क्षेत्र में प्रारम्भिक दस वर्षो में थोड़ी वृद्धि हुए, उसके बाद उत्पादन क्षेत्र में काफी परिवर्तन देखा गया। वर्तमान में गन्ना उत्पादन क्षेत्र कम हो कर 96.3 हजार हैक्टेयर है। इस प्रकार से दलहन उत्पादन क्षेत्र भी 1150 हजार हैक्टेयर से कम हो कर 74.3 हजार हैक्टेयर हो गया। आधुनिकी तकनीकी, उन्नत बीज, रासायनिक खाद तथा सिंचाई के उन्नत साधनों का प्रयोग बढने से अन्य फसलों का उत्पादन क्षेत्र, कम जोखिम वाली फसल चावल और गेंहू में परिवर्तित हो गया। हरित क्रांति के बहुत से सकारात्मक प्रभाव के साथ कुछ नकारात्मक प्रभाव भी पड़े जिसमे से एक ये था। किसानो ने चावल तथा गेंहू फसल पर विशेष ध्यान दिया तथा इन्ही के उत्पादन क्षेत्र को बढ़ाया जिससे अन्य फसलों के उत्पादन क्षेत्र में गिरावट देखी गई।

प्रमुख फसलों का उत्पादन :

पिछले 50 वर्षो में चावल उत्पादन में 23 गुना दर्ज हुए है। चावल उत्पादन, सन् 1966–67 में 223 हजार टन से बढ़कर सन् 2019–20 में 5198 हजार टन हो गया। इसी प्रकार गेंहू के उत्पादन में लगभग 11 गुना वृदि हुए। हरित क्रांति का सबसे ज्यादा प्रभाव इन्ही दो फसलों पर सबसे ज्यादा हुआ। सन् 2019–20 में गेंहू का उत्पादन बढ़कर 11877 हजार टन हो गया। बाजरा के उत्पादन में भी कभी उतार–चढ़ाव के साथ 3 गुना से ज्यादा बढ़ौतरी हुए। बाजरा उत्पादन, सन् 1966–67 में 373 हजार टन से बढ़कर सन् 2019–20 में 1201 हजार टन हो गया। जौ और दलहन के उत्पादन में लगातार कमी दर्ज हो रही है। नवीनतम आंकड़ो के अनुसार जौ का उत्पादन 47 हजार टन है तथा दलहन का उत्पादन भी कम होकर 65 हजार टन हो गया है। गन्ने के उत्पादन में भी कुछ खास वृद्धि नहीं हुई है। गन्ने के उत्पादन भी 510 हजार टन से थोडा बढकर 773 हजार टन ही हुआ।

निष्कर्ष :

कृषि क्षेत्र में चावल–गेंहू के बढ़ते उत्पादन क्षेत्र से वर्तमान समय में भूमि से सम्बधित समस्या बढ़ रही हैं, जैसे कि मिट्टी की गुणवत्ता का स्तर कम होना, भूमिगत जल में संक्रमण तथा भूमिगत जलस्तर का कम होना आदि। सिंचाई के लिए अत्यंत मात्र में भूमिगत जल का तथा जरूरत से ज्यादा कीटनाशक दवाई के प्रयोग से फसलों के पोषण तत्वों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा हैं। गेंहू तथा चावल की उच्च उपज तथा अच्छी फसल की कीमत तथा और भी विभिन्न सुविधाओं की कारण अन्य फसलों का क्षेत्र लगातार कम हो रहा हैं। इन समस्या को मध्य नजर हरियाणा में वर्तमान समय की शस्य प्रणाली को बदलना अत्यंत आवश्यक हो गया। हरियाणा में बाजरा, जौ, गन्ना और दलहन फसलों पर शोध कार्य होना बहुत जरूरी हैं ताकि चावल व गेंहू की तरह किसान इस फसलों की तरफ ध्यान दे। हरियाणा सरकार को भी कृषि सतत् विकास को ध्यान में रखते हुए कृषि के क्षेत्र में विविधता को बढना चाहिए।

संदर्भ सूची :

1. Ashalata (2014). Changing Pattern of Crops and Land use during post reform period in Haryana: A Geographical Analysis, International Journal Advances in Social Science and Humanities. ISSN-2347-7474. www.ijassh.com

2. Crop Diversification Program in Haryana, Punjab and Western Uttar Pradesh (2013-14), Sustainable agriculture with Increased Productivity and Profitability, Govt. of Haryana, Ministry of Agriculture, Department of Agriculture- Cooperation Crops Division, Krishi Bhawan, New Delhi-110011.
3. Duhan, P.K. and Soni (2022), Crop Diversification of Haryana, International Journal of Creative Research Thoughts, ISSN-2320-2882 Vol 10 Issue 8. www.ijcrt.com.
4. Rawat, S.D. and Bala, S. (2021). Changing Cropping Pattern in Haryana: A Spatio-Temporal Analysis of Major Food Crops. Internation Journal of All Research Education and Scientific Methods, ISSN-2455-6211, Vol 9, Issue 3. www.ijaresm.com.
5. Report on Haryana Agriculture and Farmer's Welfare, Indian Council of Food and Agriculture.
6. Working Group Report on Productivity Enhancement of Crops in Haryana (2013), Haryana Kisan Ayog, Government of Haryana.
7. Singh N. (2015) Agricultural Profile of Haryana, Agricultural Economics Research Centre, University of Delhi.
8. Statistical Abstract of Haryana (2022). Department of Economic and Statistical Analysis, Haryana, Publication No 1285. Govt. of Haryana.
9. Sunita, Sanjay, Kavita, Jitender Kumar Bhatia and Mehta, V.P. (2017). Changing Pattern of Area, Production and Productivity of Principal Crops in Haryana.Int. J.Curr. Microbiol.App.Sci. 6(12): 1654-1661. doi: https://doi.org/10.20546/ijcmas.2017.612.186.

M. 9466615339

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 219-230

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Women Empowerment through Social Media especially YouTube : with special reference to Folk Singers

Dr Shashi Punam, Associate Professor & Head, Department of Social Work,
Central University of Himachal Pradesh
Ms Anjana Gautam, Research Scholar,
Division of Humanities and Social sciences, Career Point University, Hamirpur, Himachal Pradesh

Abstract :

The present research paper analyses the YouTube channel of five such female folk singers who were living like an ordinary woman but through YouTube they got the opportunity to be empowered. These female folk singers have made significant contributions in their respective fields in bringing folk culture to the masses and reviving it through YouTube. Through YouTube, they got an identity in society. Reach out to these people through social media. As it is known, women can only be empowered if they can be socially empowered. All these female folk singers are now socially empowered. They are invited to many social and community events far and wide. Female folk singers today are financially empowered and have a large amount of views and watch hour on their YouTube channel along with a large amount of advertisements on their channel which also earns them good money. In addition to YouTube income, they are now invited to big events where they get good money. In this way, female folk singers have been able to become economically empowered. These folk singers are also invited for many public advertisements of the state and central governments. So now all these female folk singers are now politically empowered as well.

Key Words : Folk Communication, Hybrid Era, Video Streaming, Women Empowerment, Traditional Folk, YouTube.

Introduction :

Empowerment is not just a word, it is a whole process by which individuals are aware, functional and able and independent to do something by their own decision. Women play an important role in society. Therefore, empowerment of women becomes essential for any society. Empowerment of women implies a holistic and multidimensional approach. which believes in adequate and active participation of women in the mainstream of nation building. According to the Oxford English Dictionary, empowerment is the action taken to become empowered. UNIFEM, on the other hand, defines women empowerment as making all decisions in their lives by understanding their own worth, believing in their own abilities.

Research Objective :

- To understand Female Empowerment through powerful mediums like YouTube in the Hybrid Era.
- To study and analyse the popularity of young female folk singers on YouTube.
- Understanding how folk songs can be empowered Economically, Socially and Politically.

Research Methodology :

Case study is an important technique for working on any specific subject by focusing on the natural setting of that subject to know its individual and holistic. The present research paper "Women Empowerment through Social Media (YouTube). With special reference to Folk Singers" studies five young female folk artists from the northern part of India, through a case study. These five female folk singers were empowered through YouTube and today are at a new level. The YouTube channel of these female folk singers and the popularity of their most 05-05 popular video on YouTube have been studied. Data from YouTube (Reach, Wiews, Likes and Subscriptions) have been collected and analysed.

The following 5 female folk artists have been included in the study :-

S.No.	Folk Singers	Place
1	Maithili Thakur	Bihar
2	Malini Awasthi	Uttar Pradesh
3	Poonam Bhardwaj	Himachal Pradesh
4	Syed Areej Safvi	Jammu-Kashmir
5	D. Chandrakala	Uttrakhand

There are three important dimensions of Women Empowerment: Economic, Social and Political :

Economic Empowerment :

If a woman is economically self-reliant and her ability is strong, she is economically empowered. Equal participation and fair remuneration of women in the primary, secondary and tertiary sectors leads to economic empowerment. Women must be economically empowered. The basic fact of women's empowerment is that they should not be economically dependent on men but should control their own economy. For this, the woman has to be educationally and technically skilled.

Social Empowerment :

Social empowerment of women means that they can get all the rights like men. She should be able to act on an equal footing with men. She should participate in the decisions taken in the society.

From family to society, she should have equal rights in every affair. Social empowerment of women can be ensured only if they can play their role in public welfare, collective work, development and many other activities.

Political Empowerment :

Politics is an important medium of change in any society. Therefore, if the participation of women in the political process is ensured, an environment can be created in the society where the basic problems of women can be discussed. The role of women in political participation can act as a catalyst.

Women Empowerment through Folk Songs :

Folk art generally means art that exists traditionally among the general public. Folk art is a powerful medium of spontaneous expression of the masses. It is presented naturally without frills. It is connected to the customs and culture of the society. Folk songs are an important part of folk art. Folk songs are called songs of the general public which do not require any special knowledge. According to Acharya Hazari Prasad Dwivedi - 'Folk' is the class of human society which is void of aristocratic culture, classical scholarship consciousness as well as the ego of scholarship. It is always alive in the flow of folk tradition. Similarly, the word 'Song' refers to a work that is lyrical. Folk songs must have lyricism. Music and rhythm are important in folk songs.

Traditions like folk art or folk songs are important in social empowerment of women. Women are associated with customs and rituals and therefore their spontaneous expression is also hidden in these folk songs. A folk singer can empower herself as well as the society through her folk songs. The folk singer also serves as a catalyst for other women in the society. The folk singer also symbolically points out that customs and culture cannot be blamed for women's empowerment but it is these folk cultures that can lead to empowerment. In fact, in a diverse country like India, folk art can play an important role in women's empowerment.

Any woman is empowered by her literary, social, historical, religious and economic criteria. A genre like folk songs is an easy medium of expression for women in today's hybrid age. In this age of information, the contribution of technology is crucial. Therefore, messages or problems that women cannot express can be easily conveyed on platforms like social media through folk songs. The digital and smartphone era has brought about a huge change in society. Therefore, a simple and accessible medium like social media can play an important role in empowering women. The present research paper also aims to assess the presence and influence of selected folk singers on social media platforms, especially YouTube.

Analysis of folk singers (female) present on social media (YouTube) :

Five folk singers (female) namely Maithili Thakur, Malini Awasthi, Poonam Bhardwaj, Syed Ariz Safvi and D Chandrakala are analysed in this research paper. These are five female folk singers who are available on YouTube and today are appearing in the roles of a strong woman through YouTube.

Maithili Thakur :

Maithili Thakur was born on 25 July 2000 in Madhubani district of Bihar. Maithili is a folk singer. She is famous not only in Bihar but all over India. She sings Maithili and Bhojpuri folk songs including *Chhath Geet* and *Kajri*. She also gives voice to folk songs from other states. Maithili got recognition today through YouTube. Today Maithili is politically, economically and socially strong. Maithili has two younger brothers, named Rishav and Ayachi, who follow her elder sister's musical journey by playing tabla and accompanying her in singing. Along with studying Maithili, Rishav and Ayachi, They are also trained in Hindustani classical music, harmonium and tabla. In 2017, Maithili's fame rose when she participated in season one of Rising Star. Maithili was the first finalist of the show, performing the song 'Om Namah Shivaya', which made her straight into the final. She lost by two votes and finished second. After the show, their internet popularity grew **(Maithili Thakur: Latest News, Videos and Photos of Maithili Thakur | Times of India, n.d.).**

Maithili Thakur runs a total of 3 YouTube channels. The main channel is called Maithili Thakur. The second channel is called Maithili Epic and the third channel is called Maithili Life. Maithili Thakur uploads recordings of Maithili folk songs, devotional songs and old songs and also streams live videos. She sings Bhojpuri songs, Nirgun, Krishna Bhajan, Ram Bhajan, Sawan Geet, Kohbar (song sung during marriage), Vivah Geet, Kanyadan, Lullabies, Brahman Geet, Upanayan Folk Songs, Kajri Folk Songs, Traditional Sindoor Songs, Punjabi Folk Songs etc. Maithili Thakur, the main channel of Maithili, has a total of 42.1 lakh subscribers. The channel has received a total of 53,70,82,437 views. Maithili has uploaded/streamed a total of 992 videos on her channel so far. Maithili Epic has 51.6 K subscribers and 27,02,681 views. This channel has a total of 231 videos. Maithili' Life has 6.55 lakh subscribers, 212 total videos and 6,82,01,575 views (Table 1).

Table 1

S.No	Channel Name	Subscribers	Total Videos	Join Date	Total Views on Channel
1	Maithili Thakur	42.1 lakh	992	11/01/2014	53,70,82,437
2	Maithili Epic	51.6 K	231	11/09/2021	27,02,681
3	Maithili' Life	6.55 lakh	212	09/07/2019	6,82,01,575
Channel Link (Maithili Thakur)- https://youtube.com/@maithilithakur?feature=shared					
Channel Link (Maithili Epic)- https://youtube.com/@MaithiliEpic?feature=shared					
Channel Link (Maithili' Life)- https://youtube.com/@ThakurVlogs?feature=shared					

Source: Data (YouTube) is as of 25/08/2023.

Table 2

S. No	Video Name*	Video Length	Total Views	Total Comments (K)	Total Likes	Video Date
1	Aigiri Nandini (Stotram)	12:15	6,28,94, 670	71	17 L	18/10/2020
2	Jug jug (Sohar)	04:44	2,20,27,169	18	3.4L	18/09/2018
3	Radhe (Bhajan)	06:45	1,89,39,909	7.9	1.7 L	27/08/2021
4	HariNam (Bhajan)	06:01	1,32,75,765	07	1.6 L	11/04/20 20
5	Hamne..(Bhajan)	06:39	98,10,948	04	95K	17/04/2019

Data (YouTube) is as of 25/08/2023.

The video, Aigiri Nandini (Mahishasura Mardini Stotram) was uploaded in October. The 12 minutes 15 seconds video has received a total of 6,28,94, 670 Views, 71 Thousand Comments and 17 lakh likes. At the age of 23, Maithili is a celebrity today. She is setting a unique example of women empowerment. If you look at the top 5 videos uploaded in 2020, you can guess the popularity of Maithili. Maithili's videos have received more than 10 million views. In 2019, Maithili and her two brothers were also made brand ambassadors of Madhubani by the Election Commission. Today, Maithili is in a strong role. Folk songs on YouTube made her special from the common.

Analysis of Table 1 and Table 2 shows that at the age of 23, Maithili is politically, socially and economically strong today.

1. (Aigiri Nandini (Mahishasura Mardini Stotram) Maithili Thakur, 2020).

2. (Jug Jug Jiyo Tu Lalanwa (Sohar)- Maithili Thakur,Rishav Thakur and Ayachi Thakur, 2018).

3. (Radhe Kaun Se Punya Kiye (Krishna Bhajan) Maithili Thakur, 2021).

4. (Hari Naam Nhi to Kya Jina (Bhajan) Maithili Thakur, Rishav Thakur, Ayachi Thakur, 2020).

5. (Hamne Aangan Nahi Buhara (Bhajan) by Maithili Thakur, Rishav Thakur and Ayachi Thakur, 2019).

Malini Awasthi :

Malini Awasthi was born on February 11, 1967 in Kannauj, Uttar Pradesh. She sings folk songs in Awadhi, Bundelkhandi and Bhojpuri. Malini Awasthi is also a big name in *Thumri* and *Kajri*. Malini Awasthi also serves as a regular performer at the popular classical music festival, *Jahan-e-Khusro*. Malini is a popular A grade artist of All India Radio. Apart from India, she has also performed in the USA, England, Fiji, Mauritius and Holland.

She was also appointed brand ambassador for UP elections 2012 by the Election Commission. He also performed at the world's largest fair, the Kumbh Mela In 2016, the Government of India awarded him the civilian honour of Padma Shri. She is also the recipient of the Yash Bharti Samman of Uttar Pradesh in 2006. Malini Awasthi holds a postgraduate degree in Hindustani Classical Music from Lucknow. Malini is a disciple of Padma Vibhushan Vidushi Girija Devi of the Banaras Gharana, the legendary Hindustani classical singer **(Malini Awasthi : Face of Folk Music, 2013)**.

Malini Awasthi has 1.66 lakh Subscribers on her YouTube channel. So far, Malini has uploaded a total of 338 videos on her channel. Joined on April 9, 2011. This channel has received a total of 2,18,31,090 Views (Table 3).

Table 3

Serial No	Channel Name	Subscribers	Total Videos	Joining Date	Total Views
1	Malini Awasthi	1.66 Lakh	338	09/04/2011	2,18,31,090
Channel Link- https://youtube.com/@maliniawasthi?feature=shared					

Data (YouTube) is as of 25/08/2023.

Table 4

S. No	Video Name*	Video Length	Total Views	Total Comments	Total Likes (K)	Date
1	Nakta (Folk)	06:31	33,95,602	381	16	29/12/16
2	Phagun (Holi Folk)	04:30	17,36,757	134	6.6	16/04/13
3	Kajri	04:22	16,51,018	239	10	03/08/18
4	Folk Collection	36:39	12,37,892	245	7.6	02/07/17
5	Mirzapur (Kajri)	07:22	10,06,018	3.8k	3.8	23/03/17

Data (YouTube) is as of 25/08/2023.

If we analyse 5 popular videos of Malini Awasthi, Nakta (Folk) has got 33,95,602 Views, 381 Comments and 16 thousand likes. Pahugun (folk song sung in Holi) has received a total of 17,36,757 Views. Kajari has received a total of 16,51,018 views, 10 thousand likes (Table 4).

Padmashree Malini Awasthi is the most popular folk singer on YouTube. She has been awarded Sahara Awadh Samman (2003), Nari Gaurav 2000 and Kalidas Samman. Today she does not need any recognition. Malini Awasthi is living a socially, economically and politically strong life today. YouTube is a big contributor. Today, she is a source of inspiration for many young women in the country, including Uttar Pradesh.

1. (Malini Awasthi | Folk of India | Nakta Traditional Folk Songs, 2016).
2. (Malini Awasthi | Folk of India | Holi | Phagunva Me Rang Ras Ras Barse, 2013).
3. (Malini Awasthi | Kajri Song | Folk of India | Sawan | Monsoon Special Song, 2018).
4. (Malini Awasthi | Best Collection of Malini Awasthi Folk Songs, 2017).
5. (Mirjapur Kaela Guljar Ho by Malini Awasthi| Kajri Gauhar Jaan | #Malini_awasthi #Trending Video, 2017).

Poonam Bhardwaj :

Poonam Bhardwaj is a young folk singer from Himachal Pradesh. She was born on 24 March 1994 in Chamba district. Poonam Bhardwaj graduated from PG College Dharamshala and completed her MA in Music (Vocal) from Himachal Pradesh University. Poonam Bhardwaj had her early education at Girls Model School in Chamba. While studying, people recognized his talent after

singing folk songs in the competition. After that, she continued to perform her folk songs in various programmes. Poonam Bhardwaj has been awarded the 'Best Folk Singer' category of the 'Divya Himachal Excellence Award-2023' by 'Divya Himachal Media Group' **(Uniindia News Service, 2023).** Poonam Bhardwaj has a total of 27.4 thousand subscribers on her YouTube channel. Joined on January 19, 2016, the channel has a total of 27 videos. The channel has received 39,47,141 Views so far (Table 5).

Table 5

Serial No	Channel Name	Subscribers	Total Videos	Joining Date	Total Views
01	Poonam Bhardwaj	27.4 K	27	19/01/2016	39,47,142
Channel Link- https://youtube.com/@poonambhardwajofficial?feature=shared					

Data (YouTube) is as of 25/08/2023.

Table 6

S. No	Video Name	Video Length	Total Views	Total Comments	Total Likes	Date
1	Churahi Nati	07:59	4,98,243	513	8.5K	17/11/22
2	Last Wait	04:09	1,81,055	220	4.2K	01/01/23
3	Bhole Mere	03:29	13,887	47	348	27/04/23
4	Shiv Bhajan	03:58	6,690	92	641	03/08/23
5	Khajjiar	02:42	1930	20	143	29/05/23

Data (YouTube) is as of 25/08/2023.

Poonam's 5 popular videos include Churahi Nati, Last Wait, Bhole Mere, Shiv Bhajan and live videos of Khajjiar. These five videos have received between 4 lakh and 2 thousand views. All these videos are uploaded from 2022 to 2023. Poonam Bhardwaj is a big name among the folk singers of Himachal Pradesh. Through YouTube, today, she is at a new height. Apart from her YouTube channel, she also performs on many other platforms (All India Radio, and State Government Public Service advertisement). Today she is in the role of a strong woman. Along with her own development, she teaches folk music to other girls. Poonam Bhardwaj gained fame from YouTube with the famous Himachali folk song *Gudak Chamkua Bhauya Megha Ho*. Her songs are also heard on other social media including YouTube. Poonam Bhardwaj is also known as *Pahari Mastani*. A mashup of Pahari songs, Shiva Mere, Punjabi film, Punjabi album and all the folk songs of Himachal have been graced by Poonam with her voice.

Poonam Bhardwaj has sung Punjabi folk songs besides Himachal folk songs. Poonam Bhardwaj has sung the song Teri Yaad Satave... from a Punjabi film Dream USA. In addition, most of

his songs on YouTube have received more than a million views. Poonam's folk song Shiva Mere has nine million views. Poonam Bhardwaj is a teacher by profession. Poonam also runs Hillywood Group and Blue Orange Media Solutions. Thus, it can be seen that Poonam Bhardwaj is living a socially and economically empowered life.

1. (CHURAHI NATTI(OFFICIAL VIDEO)|| POONAM BHARDWAJ ||RK SONI|| TRINETRA HOUSE||LATEST PAHARI SONG 2022, 2022).
2. (LAST WAIT(OFFICIAL VIDEO)|| POONAM BHARDWAJ ||BABLU BOBBY|| TRINETRA HOUSE||LATEST PAHARI SONG 2023, 2023)
3. (Bhole Mere Saami I Poonam Bhardwaj I Gaddiyali Shiv Bhajan I, 2023).
4. (Latest Shiv Bhajan Kashi Me Shambhu L Poonam Bhardwaj New Song Ll JKB Music L Hillywoodstudioz, n.d.).
5. (Poonam Bhardwaj Live I Khajjiar Live Show I Poonam Bhardwaj Live Show Khajjiar 2023, 2023).

Syed Areej Safvi :

Syed Ariz Safvi was born on August 7, 1995 in Srinagar, Kashmir. Safavi is the first woman from Kashmir to sing and perform *Ladishah*. Areej was honoured by the ELFA Award in 2021. Ladishah was considered a male dominated style but Safavi changed this perception too. Ladishah is a kind of folk song that is presented through humour and satire. This folk song comments on social and political situations. Safavi got this popularity through his YouTube channel. Now they are broadcast on many channels in Kashmir. Safavi wrote his first Ladishah in 2019 against Omar Abdullah and Mehbooba Mufti **(Hussain, 2020).**

Syed's YouTube channel is called Areejological and has 83.1 thousand subscribers. There are 169 videos in total on this channel. Joined in 2014, the channel has received a total of 1,23,75,774 Views (Table 7).

Table 7

Serial No	Channel Name	Subscribers	Total Videos	Joining Date	Total Views
1	Areejological	83.1K	169	30/01/2014	1,23,75,774
Channel Link- https://youtube.com/@Areejological?feature=shared)					

Data (YouTube) is as of 25/08/2023.

Table 8

S. No	Vidco Namc*	Vidco Length	Total Views	Total Comments	Total Likes (K)	Vidco Date
1	Ladishah Aaw	03:43	1,71,563	380	5.1	15/02/20
2	Kashmiri Melody	00:27	1,71,457	401	5	12/01/21
3	Ladishah (Marriage)	02:48	1,19,470	349	4.9	14/07/21
4	Ladishah (Corona)	02:22	1,00,207	214	2.5	06/06/20
5	Ladishah (Women)	03:20	98,990	349	1.9	08/03/20

Data (YouTubc) is as of 25/08/2023.

Syed's 5 popular Ladishah videos have 1. 71,563 Views to 98,990 Views. Syed sings Ladishah on marriage, social, economic and cultural aspects of women. Today, Safavi is acting as a catalyst for all women in the role of a strong woman. Through folk songs on YouTube, Safavi has reached a new height. Folk songs can be a powerful medium in places with uneven conditions like Kashmir.

1. (LADISHAH AAW, 2020).
2. (KASHMIRI MELODY in SNOW, 2021).
3. (LADISHAH on MARRIAGES: Issues & Trends #Learn #Kashmiri #Marriages #Blooper, 2021).
4. (LADISHAH on CORONAVIRUS, 2020).
5. (LADISHAH on WOMEN'S DOH, 2020).

D. Chandrakala :

D Chandrakala is a young folk singer from Uttarakhand. She is a resident of Kumalgaon in Thal area of Pithoragarh district in Uttarakhand. She received her early education from the village and higher education from Lucknow. Chandrakala has been fond of writing since childhood. She also used to participate in cultural programs in school and today she has established herself as a strong woman. She has also established her own distinct identity through YouTube by preserving the hill folk culture and dialect. D Chandrakala is currently working as a teacher in Lucknow, Uttar Pradesh. Despite working in Uttar Pradesh, she is still attached to her hill culture. Today, Chandrakala is presenting an example of women empowerment. She is also seen as a role model for other women in Uttarakhand **(Sunil, 2022).**

Chandrakala's YouTube channel has a total of 39.3 thousand Subscribers and 17,73,051 Views. So far, there are a total of 43 videos on the channel. This channel was joined on 04 September 2016 (Table 9).

Table 9

Serial No	Channel Name	Subscribers	Total Videos	Joining Date	Total Views
1	D. Chandrakala	39.3 K	43	04/09/2016	17,73,051
Channel Link- https://youtube.com/@d_chandrakala?feature=shared					

Data (YouTube) is as of 25/08/2023.

Table 10

S. No	Video Name*	Video Length	Total Views	Total Comment	Total Likes (K)	Video Date
1	Kumauni Jhoda	06:05	8,39,794	1.5K	17	29/08/19
2	Teri Meri (Folk)	04:20	4,41,744	888	10	25/02/21
3	Siliguri kaa (Folk)	07:27	1,22,942	335	3.6	16/01/22

4	Phoolan sa (Folk)	05:13	46,851	206	1.7	01/05/21
5	MacchiPani (Folk)	04:06	37,896	197	1.7	17/01/23

Data (YouTube) is as of 25/08/2023

Kumauni Jhoda, Teri Meri (Folk),Siliguri kaa (Folk), Phoolan sa (Folk) and MacchiPani (Folk) are 5 popular videos of chandrakala. The video has Views ranging from 37,896 to 8, 39,794. Chandrakala sings Kumaoni songs. On her official YouTube channel she releases videos transcribed in her own words. Chandrakala's previously released song 'Meri Maya' was also well received. This song is among the well-known songs of singer Chandrakala. Chandrakala is also a nature lover so can be seen in his folk songs. Apart from being a strong woman herself, she is acting as an inspiration for the girls of Uttarakhand.

1. (Kumauni Jhoda | Dhan Ki Bali | Cover Kumauni Folk Recreated and Song by Chandrakala, 2019).
2. (Teri Meri Maya | Uttarakhandi Song by Chandrakala, 2021).
3. (Silgadi Ka Pala Chala | Chandrakala | Kumaoni Traditional Jhoda | #Pappukarki #Birthday #Tribute, 2022).
4. (Phoolon Sa Chehra Tera | Cover by Chandrakala | Udit Narayan | Venkatesh | Karishma|Movie Anari 1992, 2021).
5. (Machhi Pani Si Jyu | Narendra Negi Ji | Cover by Chandrakala #Gadwali #Uk, 2017).

Conclusion :

The preservation of folk songs has been of great importance at cultural and social levels. The fabric of rural society was maintained through folk songs. Due to lack of technical knowledge and illiteracy, folk songs can play a major role in educating women. In the context of the above mentioned female folk singers, they are connected to the people through their folk songs. They (Female Folk Singers) are inspiring and raising awareness for other women in the community. It is because of these folk arts that women folk singers have gained social summons as well as an identity. Through these folk songs, rural women can be made aware and empowered. Malini Awasthi and Maithili Thakur are famous not only in their states but in the entire country through folk songs.Socially, economically They are in the role of empowered women today. Folk singers from Uttarakhand and Himachal Pradesh, D Chandrakala and Poonam Bhardwaj, respectively, are emerging as folk lyricists. While Kashmir, which is struggling with hybrid warfare like now Syed Areej Safvi is another new name who is singing to the public like Ladishah now even though she is a woman. Today she has made her mark in the room of a strong folk singer.

In the modern era of podcasts, blogging, features, fashion, etc., women are showcasing their art on YouTube as well as making their own livelihood. Viewed in the context of the above selected 5 female folk singers, they represent their respective states. YouTube has chosen folk song as a profession with expression through folk singing. Therefore, folk songs are considered to be the most powerful and influential genre of folk literature. Folk songs Folk songs are an important component of

folk auspiciousness. The possibilities of women empowerment through a powerful medium like YouTube cannot be denied.

References :

1. Aigiri Nandini (Mahishasura Mardini Stotram) Maithili Thakur. (2020, October 18). Www.youtube.com. https://youtu.be/DEGcIi9aij8?feature=shared
2. Bhole Mere Saami I Poonam Bhardwaj I Gaddiyali Shiv Bhajan I. (2023, April 27). Www.youtube.com. https://youtu.be/DXEjdHtJTEk?feature=shared
3. Churahi Natti(Official Video)|| Poonam Bhardwaj ||Rk Soni|| Trinetra House||Latest Pahari Song 2022. (2022, November 17). Www.youtube.com. https://youtu.be/JyuS8jrgRI0?feature=shared
4. Hamne aangan nahi buhara (bhajan) by Maithili Thakur, Rishav Thakur and Ayachi Thakur. (2019, April 17). Www.youtube.com. https://youtu.be/XIn_3bUNskI?feature=shared
5. Hari Naam Nhi to Kya Jina (Bhajan) Maithili Thakur, Rishav Thakur, Ayachi Thakur. (2020, April 11). www.youtube.com. https://youtu.be/aTIbwtHqMTg?feature=shared
6. Hussain , A. (2020, November 25). Meet 25-year-old Syed Areej Safvi, first Ladishah girl from Kashmir. Hindustan Times. https://www.hindustantimes.com/india-news/meet-25-year-old-syed-areej-safvi-first-ladishah-girl-from-kashmir/story-56D9ImzAaz7o278IViK8BP_amp.html
7. Jug Jug Jiyo Tu Lalanwa (Sohar)- Maithili Thakur,Rishav Thakur and Ayachi Thakur. (2018, September 18). Www.youtube.com. https://youtu.be/BNd-PUhd0Vw?feature=shared
8. Kashmiri Melody in Snow. (2021, January 12). Www.youtube.com. https://youtu.be/zv_QTAqOl4E?feature=shared
9. Kumauni Jhoda | Dhan ki bali | cover kumauni folk recreated and song by chandrakala. (2019, August 29). www.youtube.com. https://youtu.be/ar3n5DGvUu0?feature=shared
10. LADISHAH AAW. (2020, February 15). Www.youtube.com. https://youtu.be/XRAtsUW-Lzc?feature=shared
11. LADISHAH ON CORONAVIRUS. (2020, June 6). Www.youtube.com. https://youtu.be/AjwkrqEmTFU?feature=shared
12. LADISHAH on MARRIAGES: issues & Trends #learn #kashmiri #marriages #blooper. (2021, July 14). www.youtube.com. https://youtu.be/uRTasc4TBgQ?feature=shared
13. Ladishah on Women's Doh. (2020, March 8). Www.youtube.com. https://youtu.be/k0RwF8mjE9M?feature=shared
14. Last wait(official video)|| Poonam Bhardwaj ||bablu bobby|| trinetra house||latest pahari song 2023. (2023, January 1). Www.youtube.com. https://youtu.be/-RMIbd8ZuKM?feature=shared
15 Latest shiv bhajan Kashi Me Shambhu l Poonam Bhardwaj new song ll JKB Music l hillywoodstudioz. (n.d.). Www.youtube.com.Retrieved August 25, 2023, from https://youtu.be/-Fwaz5NBssE?feature=shared
16. Machhi Pani Si jyu | Narendra Negi Ji | Cover by Chandrakala #gadwali #uk. (2017, January 23). www.youtube.com. https://youtu.be/CWN4Bd-zLtA?feature=shared
17. Maithili Thakur: Latest News, Videos and Photos of Maithili Thakur | Times of India. (n.d.). The Times of India. Retrieved August 25, 2023, from https://m.timesofindia.com/topic/maithili-thakur

18. Malini Awasthi : Face of Folk Music. (2013, September 26). Web.archive.org. https://web.archive.org/web/20130926022545/http://malineeawasthi.com/main.php?v=profile
19. Malini Awasthi | Best Collection Of Malini Awasthi Folk Songs. (2017, July 2). Www.youtube.com. https://youtu.be/TgAWzMdCi88?feature=shared
20. Malini Awasthi | Folk Of India | Holi | Phagunva me rang ras ras barse. (2013, April 16). Www.youtube.com. https://youtu.be/2GaU_Q15Ft4?feature=shared
21. Malini Awasthi | Folk Of India | Nakta Traditional Folk Songs. (2016, December 29). Www.youtube.com. https://youtu.be/Rc57Osz3-54?feature=shared
22. Malini Awasthi | kajri Song | Folk Of India | Sawan | Monsoon special song. (2018, August 3). www.youtube.com. https://youtu.be/QxfNczuJHnU?feature=shared
23. Mirjapur Kaela Guljar ho By Malini Awasthi| Kajri Gauhar Jaan | #malini_awasthi #trending video. (2017, March 23). Www.youtube.com. https://youtu.be/XmhxdpZTiBQ?feature=shared
24. Phoolon sa chehra tera | Cover by Chandrakala | Udit narayan | Venkatesh | Karishma|Movie Anari 1992. (2021, May 1). Www.youtube.com. https://youtu.be/h8qsXucDdq8?feature=shared
25. Poonam bhardwaj live I Khajjiar live show I Poonam bhardwaj live show khajjiar 2023. (2023, May 29). www.youtube.com. https://youtu.be/6C8ZCWE_8iw?feature=shared
26. Radhe Kaun se Punya kiye (Krishna Bhajan) Maithili Thakur. (2021, August 27). Www.youtube.com. https://youtu.be/cNXesWWF3MI?feature=shared
27. Silgadi Ka Pala Chala | Chandrakala | Kumouni Traditional Jhoda | #pappukarki #birthday #tribute. (2022, January 16). Www.youtube.com. https://youtu.be/6-XgTEAbwZ0?feature=shared
28. Sunil. (2022, November 30). Uttarakhand: Young singer Chandrakala's beautiful Pahari song released -. Devbhumi Darshan (Hindi). https://devbhoomidarshan17.com/41288-2-uttarakhand-beautiful-new-pahari-song-baanj-ka-bot-of-young-singer-chandrakala-of-pithoragarh-release/
29. Teri Meri Maya | Uttarakhandi song by Chandrakala. (2021, February 25). Www.youtube.com. https://youtu.be/EYHo0RmdtTA?feature=shared
30. Uniindia News Service. (2023). The Deputy CM honoured 11 personalities of HP with the HEA 2023. Http://www.uniindia.com/~/The-Deputy-Cm-Honored-11-Personalities-of-Hp-With-The-Hea-2023/States/News/2969097.Html. http://www.uniindia.com/~/the-deputy-cm-honored-11-personalities-of-hp-with-the-hea-2023/States/news/2969097.html

shashipunam@hpcu.ac.in, 9418636222

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 231-236

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Cyber Terrorism– An emerging military threat

Dr. Makhan Singh Manjhu

Associate Professor, Dept. of Defence Studies, Govt. College, Hisar

Introduction :-

Cyber terror has been an emerging military study since the last two decades. From hacking Instagram, Facebook accounts to the bank account, hackers have advanced and evolved their education in their field. Almost everyday, someone loses the control over their social media profiles due to hacking. Hacking is the little child of cyber terrorism. The threat posed by cyberterrorism has grabbed the attention of the masses. Journalists, politicians,and experts in a variety of fields have popularized a scenario in which sophisticatedcyberterrorists electronically break into computers that control dams or air traffic controlsystems, wreaking havoc and endangering not only millions of lives but national security it self.

This paper aims to review the idea of disorder and expands an understanding of reason they conduct the exercises they do. Understanding the military rea of the aggressor will admit concern of the type of attack they can plan and the effect they are inclined try and solve. It higlights the main aims of the mind of a subversive so concerning understand the reasons of operating aforementioned insolent conduct. It looks at the main inspirations of radical groups and examines their use of the Internet for differing facets of a subversive campaign in the way that publicity and conscription. It will grant the miscellaneous strategies that have existed secondhand and by virtue of what the Internet has determined a new time for terrorists to conduct their campaigns and in what way or manner it has existed suitable by ruling class for their purposes. It analyzes the potential danger of a computerized attack by radical arrangements and by means of what they can use the Internet and Cyber Space to attack a target accompanying identical results to a normal tangible attack. The paper will concisely explain few of the likely defences against this form of disorder. This paper tries the existence of the computerized disorder danger, present and future. It starts by outlining reason high-tech disorder uneasiness has entranced so many family, delimits what qualifies as “high-tech disorder” and what does not, and charts high-tech disorder’s appeal for terrorists. The paper before looks at the evidence two together for and against Western society’s exposure to computerized attacks, falling back on a variety of current studies and informations to exemplify the types of fears that have happened meant and to

evaluate either we need expected so worried. The end looks to the future and maintains that we must wait alert to actual emergencies while not flattering sufferers of excessive fears.

In westerly institutions, most fault-finding foundation is networked through calculatings, the potential danger from cyberterrorism is very startling. Hackers, even though not stimulated apiece alike aims that encourage terrorists, have explained that individuals can attain to delicate news and to the movement of critical duties. Terrorists, not completely theoretical, take care of accordingly trail the hackers' lead and before, bearing crippled into administration and private calculating methods, disable or not completely cripple the military, fiscal, and duty areas of progressive savings. The increasing reliance of our peoples on data processing has designed a new form of exposure, giving terrorists the chance to approach marks that would alternatively be completely certain, to a degree social armament plans and ground monitors of aircraft wholes. The more technologically grown a country is, the more weak it enhances to cyberattacks against allure foundation.

What is cyberterrorism?

Dorothy Denning, a professor of computer science, has put forward an admirablyunambiguous definition in numerous articles and in her testimony on the subjectbefore the House ArmedServices Committee in May, 2000 :

"Cyberterrorism is the convergence of cyberspace and terrorism. It refers to unlawful attacks and threats of attacks against computers, networks and the information stored therein when done to intimidate or coerce a government or its people in furtherance of political or social objectives. Further, to qualify as cyberterrorism, an attack should result in violence against persons or property, or at least cause enough harm to generate fear. Attacks that lead to death or bodily injury, explosions, or severe economic loss would be examples. Serious attacks against critical infrastructures could be acts of cyberterrorism, depending on their impact. Attacks that disrupt nonessential services or that are mainly a costly nuisance would not."

First, as just noted, much of the discussion of cyberterrorism has beenconducted in the popular media, where journalists typically strive for drama and sensationrather than for good operational definitions of new terms. Second, it has been especiallycommon when dealing with computers to coin new words simply by placing the word "cyber,""computer," or "information" before another word. Thus, an entire arsenal of words—cybercrime,infowar, netwar, cyberterrorism, cyberharassment, virtual warfare, digital terrorism,cybertactics, computer warfare, cyberattack, and cyber-break-ins—is used to describe what some military and political strategists describe as the "new terrorism" of our times.

It is important to distinguish between cyberterrorism and "hacktivism," a term coinedby scholars to describe the marriage of hacking with political activism. ("Hacking" ishere understood to mean activities conducted online and covertly that seek to reveal,manipulate, or otherwise exploit

vulnerabilities in computer operating systems and othersoftware. Unlike hacktivists, hackers tend not to have political agendas.) Hacktivistshave four main weapons at their disposal: virtual blockades; e-mail attacks; hacking andcomputer break-ins; and computer viruses and worms.

Computers — the weapons of the cyberterrorist :

Following on from the discussions above, it becomes obvious that the most likely 'weapon' of thecyberterrorist is the computer. Thus, one might ask, are we arguing that one should restrict access tocomputers, just as access to explosives is restricted? Not quite, but close. We believe that thestockpile of connected computers needs to be protected. There are many laws that define how oneshould protect a firearm from illegal/dangerous use. The mandatory use of trigger locks, thoughcontroversial, has been put forward to prevent danger should the gun end up in the wrong hands. Similarly, powerful explosives like C4 are not simply sold over the counter at the corner store.

Explosives and cannons are absolutely not completely agreeing to computers. A better agreement power arises the idea of an 'appealing annoyance'. For example, a proprietor shares some accountability for harm made by a pool on welcome possessions — it is regarded an appealing nuisance, and essentially, the naive bear be obviated from absolutely being engaged and damaged. Thus, there are many instances of regulations that previously confer damage finished by/to a mediator from the deliberate/unintentional misuse regular of allied/personal belongings. The request of these societies or the description of 'misuse' concerning computers appears unsure. However, skilled is a need for clear standards and flags that require drivers of abundant networks of Internet-related calculatings to exercise appropriate due alertness in their maintenance and safety. To this end, we believe that skilled is an essential need for description of a minimum standard of freedom for calculating networks. The description of aforementioned a standard has far reaching associations not only for the utility of America's electronics institution, but the protection of companies and actually of the nation itself.

By formalizing a manufacturing best practice direction, associations will have a clear understanding of what must carry out. Clearly, aforementioned a direction is a mobile target, but allure beginning would admit the constitute of a genuine and healthy posture against two together terrorist warnings and different mean individuals. Such a set of minimum guidelines would should be surely and affordably supported by the safety/use merchants themselves, alternatively depending individual consumers needs/necessities to drive the best practice directions.This is to some extent a novel idea. International guidelines have happened grown in different areas place security and protection are a concern. Consider the air carrier manufacturing. There are worldwide directions for airport security; in cases place these flags are due, results range from warnings to forbidden travel. The needs for specific changes, and how a due quickness standard maybe designed are issues of future research. However, apparently clear that aforementioned guidelines are urgently wanted.

The future of cyber terrorism :

It seems fair to say that the current threat posed by cyberterrorism has been exaggerated.No single instance of cyberterrorism has yet been recorded; U.S. defense and intelligencecomputer systems are air-gapped and thus isolated from the Internet; the systems run byprivate companies are more vulnerable to attack but also more resilient than is often supposed;the vast majority of cyberattacks are launched by hackers with few, if any, political goals and no desire to cause the mayhem and carnage of which terrorists dream. Why so much concern has been expressed over a relatively minor threat?

The reasons are many. First, as Denning has noticed, "high-tech disorder and cyber attacks are racy immediately [Cyber disorder is] novel, original, it captures crowd's imagination." Second, the communications industry repeatedly forsakes to equate hack and cyber disorder and embellish the warning of the latest by reasoning from fake similarities in the way that the following: "If a sixteen-period-old grant permission this, before what manage a well-supported subversive group do?" Ignorance is a third determinant. Green disputes that computerized disorder merges two spheres—terrorism and electronics that many society, containing most lawmakers and senior presidency bureaucrats, do not fully accept and thus likely to fear. Moreover, few groups are eager to exploit this unintelligence. Numerous electronics associations, still dizzy from the collapse of the high-tech bubble, have wanted to engage general research grants by change themselves as inventors in computer protection and accordingly essential subscribers to national protection. Law enforcement and protection advisors are similarly well motivated to have us trust that the warning to our nation's freedom is harsh. A fourth reason is that few legislators, either not enough honest conviction or from a desire to fuel public tension about disorder in order to advance their own schedules, have risked the duty of person of doom. And a having five of something determinant is uncertainty about the very signification of "high-tech terrorism," that has disorganized all and likely rise to innumerable parables. Verton contends that "al Qaeda [has] proved itself to have a never-ending appetite for new science" and supplies many citations from bin Laden and added al Qaeda heads to show their acknowledgment concerning this new cyberweapon. In the wake of the 9/11 attacks, bin Laden reportedly present a affidavit to an redactor of an Arab regular, continuous publication containing information demanding that "hundreds of Muslim physicists were accompanying him the one would use their information . . . ranging from calculatings to radios against the infidels." Sheikh Omar Bakri Muhammad, a advocate of container Laden and frequently the conduit for welcome ideas to the Western realm, asserted in an interview with Verton, "I would warn those the one doubt al Qaeda's interest in high-tech-armaments to take Osama container Laden very seriously. The after second memo from Osama container Laden . . . was plainly addressing utilizing the electronics so that demolish the economy of the entrepreneur states."

Conclusions :-

The face of up-to-date disorder is always changeful and it inquires new arrangements of completing activity attacks, hype campaigns and conscription. Cyber Space in absolutely a new district of a front line and individual that radical arrangings are striving to exploit. There are many benefits to the subversive to use the Internet for a myriad of essential clothes to assert a subversive campaign. This danger must not be missed, as many associations move more extents of history and foundation to calculating control and networked schemes, the confidence on before is always growing. Unfortunately this confidence generates a reasonably smooth mark . The radical not any more needs to concerning matter affiliate with organization the alike country, remove imposed controls on a system the site of an attack if it is transported through high-tech scope. Information is far more approachable and vacant directly, entity a subversive take care of exploit. Taking a photograph of a military concoction will raise trace and risk alerting the experts to the subversive or that an attack is being projected. Looking at the alike location on a calculating would leave the subversive entirely unknown and unfound.

Terrorists in the way that Younis Tsouli, the shameful Terrorist 007, have enhance essential to radical arrangements. Tsouli was not a mercenary that offered much strength to conduct a tangible attack, but he was dedicated to the al-Qaeda cause. He start innumerable websites and television giving forums to advance a supporting-al-Qaeda communication and diabolize the US and UK. He conducted from a London flat and was financed by another subversive, interestingly the one he never indeed join. Tsouli was seized accompanying heaps of files and videos accompanying subversive indoctrination and preparation sexually transmitted disease, that he was the main center in spreading and putting on line. It was evaluated that welcome arrest as a big blow for al-Qaeda, nearly some alive field chief. It is not all trouble though, by utilizing photoelectric way, the terrorists can leave a sign and be listened or jailed established photoelectric evidence. It can more be used to monitor radical 'blast' as an intellect-assemblage finish. Like some form of attack, a high-tech attack is inclined leave few form of sign or evidence that if correctly listened or collected maybe secondhand as a counter radical finish. There is likewise few potential to use computerized way to attack the terrorists back, nevertheless this has few moral crises and is not inside the purview concerning this paper.

Defence against Cyber Terrorism will distinct little form continuous high-tech defence and freedom. It is still main to comprehend the radical psychology and by means of what they are inclined use the medium for their purpose. It must be administered as one the wider force guardianship and comprehend the large potential for compromise. It is very absurd one would take a abundant paper file, accompanying well delicate news beneficial to a subversive, outside a secure commission, but this appears expected neglected when that news and over and over more is grasped on a 5cm USB stick. It is not only bureaucracy that demands enhanced freedom if the defence against Cyber Terrorism

search out succeed. The frequently secondhand comment, TPIBKAC, The Problem is between Keyboard and Chair what skilled is no patch for lunacy endure.Having accompanied various laboratories on Cyber Defence, individual extent of concern is that many 'masters' trust Cyber Terrorism absolutely won't occur. It is idiotic to create it off, not completely it concede possibility now be more 'potential than question', but it is foolish to expel it from risk appraisal. Firstly, it concede possibility have previously, we don't see the one concede possibility affiliate with organization place ready to attack a SCADA system, in the second place we are growing our confidence on these orders and their attraction as a aim evolves. Without doubt, the up-to-date subversive needs the cyberspace nearly the AK47 and it is a determinant we would forget at our danger.

The threat of cyber terrorism is silent and still emerging to expand. It has spread its tentacles to advanced hacking till date. Any great cyber terror has not been recorded or taken any action against but it is a possinilty that in the times to come, terrorists would trace and attack via this mode. This is a serious and sensitive issue as it could lead to danger of the entire nation. Hence, understanding of computers and networking should be taken good care of. In near future, the problem would even make more sense as everything today can be performed virtually. Hence, cyber terrorism is a new and expanding topic which needs to be under our information timely.

References :-

1. E. Waak, The Global Reach of Privacy Invasion, Humanist, November/December: http://www.thehumanist.org/humanist/articles/waakND02.htm
2. www.terror.net: How Modern Terrorism Uses the Internet, by Gabriel Weimann (SpecialReport 116, February 2004)
3. Huizing, Harry: Cyber Terrorism Briefing Note, COE DAT, Ankara, 2008
4. Record, Jeffery: Bounding the Global War on Terrorism, Strategic Studies Institute, US Army War College, Leavenworth, 2003
5. M. Bogdanoski, A. Risteski, & S. Pejoski, (2012, November). Steganalysis—A way forward againstcyber terrorism. In Telecommunications Forum (TELFOR), 2012 20th (pp. 681-684). IEEE.
6. Denning, D., "Cyberterrorism", Testimony before the Special Oversight Panel of TerrorismCommittee on Armed Services, US House of Representatives, 23 May 2000.
7. Collin, B., 1997. The Future of Cyberterrorism, Crime and Justice International, March 1997, pp.15-18.

msmanjhu@gmail.com,
Mob No. 9416625855

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2023 Page No. : 237-239

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिन्दी दलित कहानियों की स्त्री पात्र में अंतर्द्वंद्व

डॉ. तपस्या चौहान

दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डी.ई.आई.), दयालबाग, आगरा–282005

शोध सारांश :–

दलित साहित्य दलितों की पीड़ा, संघर्ष व अस्मिता के प्रश्नों को प्रस्तुत करता है। यह लगभग प्रत्येक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है तथा निरन्तर इसकी वृद्धि हो रही है। कहानी, उपन्यासों के साथ–साथ गद्य की प्रत्येक विद्या में इसकी रचना की जा रही है। हिन्दी दलित कहानियों में भी नित नयी–नयी स्वानुभूतिपरक रचनाएं लिखी जा रही हैं। अतः प्रस्तुत शोधपत्र में हिन्दी दलित साहित्य की प्रचलित कहानियों के स्त्री पात्रों में अंतर्द्वंद्व को विश्लेषणात्मक, वर्णात्मक, विवरणात्मक तथा व्याख्यात्मक शोध विधि द्वारा तटस्थ निष्कर्षों को प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है।

बीज शब्द – दलित, पात्र, अंतर्द्वंद्व।

प्रस्तावना :–

हिन्दी दलित कहानियां दलित समाज की व्यथा को उजागर करती हैं जो अस्पृश्यता, अंधविश्वास, वर्ण–भेद, ऊँच–नीच की भावना, आर्थिक विपन्नता, तथा शोषक अर्थात् आधिपत्य समाज द्वारा शोषण से उत्पन्न वेदना की एक आवाज है यह लंबे समय से चलती आ रही है उसने अब एक क्रांति का रूप धारण कर लिया है। यह क्रांति है अपने अधिकारों व स्वाभिमान की। दलित समाज द्वारा रचना के माध्यम से अपने स्वर को चहुँ ओर प्रसारित किया जा रहा है।

यदि कहानी के तत्त्वों के विषय में चर्चा की जाए तो कहानी में कथावस्तु के साथ पात्र व चरित्र–चित्रण, कथोपकथन, देशकाल एवं वातावरण, भाषा–शैली व उद्देश्य महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं यह कहानी को सार्थक व उद्देश्यपूर्ण रचना बनाते हैं। पात्र कहानी का महत्त्वपूर्ण अवयव है जो कहानी की कथावस्तु व अन्य तत्त्वों को साथ लेकर रचना को सार्थक बनाता है। सामान्यतः कहानी में प्रधान व गौण दो प्रकार के पात्र होते हैं। प्रधान पात्र कथावस्तु के केन्द्र की भूमिका निभाता है जो नायक/नायिका के आदर्श, नैतिक, रूपवान, बुद्धिमान, विवेकशील, विनम्र, सहृदयी, तेजस्वी, उत्कृष्ट गुणों से युक्त व्यक्ति का प्रतिमान स्थापित करते हैं, जबकि गौण पात्र साधन मात्र रह जाते हैं। पात्रों द्वारा ही कथावस्तु सक्रिय व गतिशील रहकर कहानी को उद्देश्य तक पहुँचाती है। यदि दलित साहित्य के पात्रों के विषय में चर्चा करें तो यहाँ प्रधान पात्र व गौण पात्र तो हैं किन्तु दलित कहानियों का पात्र रूपवान, बलवान, सर्वगुण सम्पन्न न होकर पीड़ित, कुंठित, दुःखी व शोषित दिखायी देता है।

मुख्य :-

हिन्दी दलित कहानियों में स्त्री व पुरुष दोनों को ही प्रधान पात्र के रूप में स्थापित कर स्वपीड़ा को शब्दबद्ध किया है। 0दलित रचनाकारों की स्त्री पात्र रूपवान व विभिन्न उत्कृष्ट गुणों से युक्त न होकर संघर्ष की पर्याय हैं। विषम व विपरीत परिस्थितियों से शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित दलित कहानी की नायिका अथवा स्त्री पात्र का धैर्य तथा साहस के साथ सामना करना उसकी विशेषता है। स्त्री जीवन अत्यंत चुनौतिपूर्ण होता है यह तो सर्वविदित है। वह जीवन के विभिन्न उतार–चढ़ावों में विरोधी इच्छाओं की टकराहट अर्थात् द्वंद्व के बीच फंसी दिखायी देती है। जब परिस्थिति विशेष में दो विपरीत इच्छाएं मानव हृदय में एक दूसरे के प्रति विद्रोह करती हैं तो वह स्थिति अंतर्द्वंद्व की ही होती है। अंतर्द्वंद्व की यह स्थिति मानव हृदय अर्थात् अंतस्तल में विशेष परिस्थितियों में उत्पन्न होती है। इसी प्रकार की विशेष अथवा विषम परिस्थितियों का सामना करती हुई हिन्दी दलित कहानियों की स्त्री पात्र दिखायी पड़ती है।

'मोहनदास नैमिशराय' की कहानी 'अपना गांव' की स्त्री पात्र छमिया उर्फ कबूतरी का अंतर्द्वंद्व इस उद्धरण द्वारा प्रस्तुत है–''आधी रात बीत गई थी, पर कबूतरी की आंखों में नींद न थी। वह बार–बार अपने शरीर पर खुरदरे हाथ की अंगुलियों तथा हथेली पर स्पर्श पाती। कपड़े पहनने के बाद भी उसे अपना शरीर नंगा ही महसूस हो रहा था।''[1]

कबूतरी द्वारा ठाकुर की अवहेलना करने पर पूरे गांव में उसे निर्वस्त्र कर घुमाया जाता है। उसके साथ घटित यह घटना छमिया (कबूतरी) की आत्मा तक को छलनी कर देती है। वह उसके साथ हुए दुर्व्यव्हार को व उन परिस्थितियों से पीछा छुड़ाना चाहती है किन्तु बार–बार इस घटना की स्मृतियां उसकी व्याकुलता को पुनः ताजा कर देती है। उसकी व्याकुलता व आप बीती के मध्य अंतर्द्वंद्व कबूतरी के हृदय में निरन्तर चलता रहा। शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित दलित नायिका केवल अनपढ़ ही नहीं अपितु पढ़ी–लिखी भी अंतर्द्वंद्व से विचलित दिखाई देती है।

बदबू कहानी की स्त्री पात्र संतोष पढ़ी–लिखी व समझदार है किन्तु विवाह के पश्चात् ससुराल में उसे सास के साथ सवर्ण मोहल्ले के पखाने सास व पति के दबाब में साफ करने जाना पड़ा। जहां उससे पखाना साफ करने के बदले प्रत्येक घर से खाने के लिए कुछ न कुछ मिलता। संतोष का भाई जब उसकी ससुराल में मिलने आता है तो वह बहुत खुश होता है क्योंकि–

''जिसके घर में इतने प्रकार की सब्जियां एक साथ बनती हों, उसके क्या कहने! अब संतोष पति और सास के सामने कैसे बताये कि यह सब वह और उसकी सास मोहल्ले के पखाने साफ करने के बदले जुटाकर लायी है। बस, वह उस समय मौन व्रत धारण करके रह गयी।''[2]

उसके मन–मष्तिष्क में यही अंतर्द्वंद्व चल रहा था कि वह सत्यता अपने बड़े भाई को कैसे बताये, और बताये या न बताये।

वर्तमान युग में यूं तो हजारों लोग मिल जाते हैं यह कहते हुए कि वह जाति व्यवस्था अथवा छूआछूत नहीं करते किन्तु बातों ही बातों में सरनेम द्वारा जाति का पता लगाना आज के दौर का फैशन है। इसी प्रकार की समस्या से उत्पन्न अंतर्द्वंद्व को दर्शाती है 'रजतरानी मीनू' की कहानी 'हम कौंन हैं' की स्त्री पात्र 'उमा'– ''उसने तो कभी सोचा भी नहीं। अज्जू इस तरह से प्रश्न करेगी। आखिर ऐसे प्रश्न उसके जेहन में डाले किसने?

क्या यह अंग्रेजी स्कूलों की पश्चिमी संस्कृति है या मनु–स्मृति काल की वापसी?''[3] यथार्थ की पृष्ठभूमि पर लिखी गयी कहानी की स्त्री पात्र के हृदय में विचलन उसकी पुत्री अज्जू द्वारा किया गया सरनेम के संदर्भ में प्रश्न अंतर्द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न कर देता है। उसे समझ नहीं आता है कि वह अपनी मासूम बच्ची को सरनेम (जाति) कैसे बताये।

स्त्री की भिन्न–भिन्न मनोदशाओं व अंतर्द्वंद्व को देखा जा सकता है हिन्दी दलित कहानियों में। उदाहरणार्थ–''मोबाइल में एक मैसेज ब्लिंक कर रहा था। मैसेज बॉक्स में जगह पाने को आतुर। मधु ने एक बार सोचा पड़ा रहने दो। पर न जाने कोई जरूरी मैसेज हो।''[4]

मधु स्वास्थ्य को लेकर असमंजस में थी। उसे लग रहा था कि जो उसके शरीर में बदलाव आ रहें हैं कहीं कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या तो नहीं है। मोबाइल में आई रिपोर्ट उसके जीवन में न जाने सकारात्मकता लायेगी या नकारात्मकता। यही अंतर्द्वंद्व चल रहा था उसके मन में।

जयप्रकाश कर्दम ने भी सरबतिया नामक स्त्री पात्र के हृदय में उत्पन्न अंतर्द्वंद्व को अपनी कहानी 'पगड़ी' के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

''खुशी के इस मौके पर वह खुश रहना चाहती है लेकिन इस सवाल ने उसकी खुशी में खलल डाल दी थी। वह दुविधा में डूबी थी।''[5]

उसकी दुविधा थी कि घर के उत्तरदायित्व वह निभा रही थी। अपने पुत्र की सगाई पर गांव के लोग पगड़ी की रस्म में उसके पति को पगड़ी न देकर सरबतिया को देने का निर्णय लेते हैं क्योंकि उसका पति शराबी व निट्ठल्ला है। किन्तु वह अंतर्द्वंद्व में फंसी है क्योंकि पगड़ी घर के मुखिया को दी जाती है और घर का मुखिया तो मर्द होता है। स्त्री पात्रों में अंतर्द्वंद्व मात्र लेखिकाओं द्वारा ही नहीं अपितु लेखकों द्वारा भी अत्यंत जीवंतता से प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष :–

अनेक उद्धरणों के विश्लेषण के पश्चात् निष्कर्षतः यह तो सिद्ध है कि इन कहानियों में दलित लेखक व लेखिकाओं ने दलित स्त्री के जीवन में आयी विषम परिस्थितियों से उत्पन्न अंतर्द्वंद्व को यथार्थ व सत्यता की कसौटी पर उद्घाटित करते हुए उसकी वेदना, व्याकुलता, विवशता को प्रस्तुत किया है। दलित स्त्री का अपने स्वाभिमान व अस्मिता की प्राप्ति के लिए संघर्ष व तड़प को सहज ही देखा जा सकता है। समाज व परिवार में रहकर अनेक भयाभय परिस्थितियों के बीच अस्मिता व अधिकारों की प्राप्ति हेतु मानसिक द्वन्द्व स्पष्टतः देखा जा सकता है। उनके हृदय में उठने वाली अनेक विचारों की गुत्थियों के मध्य परस्पर टकराहट अंतर्द्वंद्व को ही दर्शाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. मोहनदास नैमिशराय : आवाजें : श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली : सं–2011, पृ. 33
2. सूरजपाल चौहान : नया ब्राह्मण : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली : सं–2009, पृ. 22
3. रजतरानी मीनू : हम कौन हैं : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली : सं–2012, पृ. 20
4. रजनी दिसोदिया : चारपाई : स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली : सं–2014, पृ. 22–23
5. जयप्रकाश कर्दम : खरोंच : स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली : सं–2013, पृ. 91
6. बोहल शोध मंजूषा, दलित विशेषांक, सं. 2022, पृ. 101

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

डॉ. तपस्या चौहान

पति - श्री रोहित राय चौहान

आवास - 15/167 सोरों कटरा , शाहगंज, आगरा - 282010, उत्तर प्रदेश।

विषय - हिंदी साहित्य एवं भाषा विज्ञान।

संगोष्ठी - लगभग 20 से अधिक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता एवं शोध पत्र प्रस्तुति।

प्रकाशन - आधा दर्जन से अधिक शोध पत्र अंतरराष्ट्रीय पीर रिव्यूड रिसर्च जर्नल में प्रकाशित एवं प्रकाशाधीन, अनेक साझा काव्य संकलन में कविताएं प्रकाशित, अनेक कहानियां प्रकाशित एवं प्रकाशाधीन।

संपादन - आवाज रचनाकारों की (पुस्तक) , तिरंगा (मासिक पत्रिका) मिट्टी हिंदुस्तान की (पुस्तक)

सम्मान - स्वर्ण एवं रजत पदक, वीरागंना ज्योतिबा फुले सम्मान, मुंशी प्रेमचंद सम्मान, शिक्षा जगमग दीप- ज्योति सम्मान2022, गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर स्मृति सम्मान, विश्व हिंदी रत्न सम्मान 2023, भामाशाह धर्मार्थ सम्मान, साहित्य गौरव सम्मान 2023, भवानी प्रसाद मिश्र सम्मान, केदारनाथ सिंह सम्मान, राष्ट्रीय वीरांगना सम्मान, गीना देवी शोधश्री सम्मान-2023

पद - संपादक, लेखक।

मो. नं. - 82796 17919, 9756660990

ईमेल - tapasarya67@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।

ISSN 2395:7115